जवाहिरुल हदीस

लेखक

शैखुल हदीस हज़रत अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी
अलैहिर्रहमतु वर्रिज़वान



नाशिर
आज़मी बुक डिपो

तक़सीम कार
मोहम्मदी बुक डिपो

"जवाहिरुल ह़दीस" क्या है

यह मेरे नये पुराने छोटे बड़े मज़ामीने ह़दीस का एक मजमुआ है। जिसका कुछ ह़िस्सा फ़रज़न्द मौलवी फ़ैज़ुल ह़क़ साहब ने जमा किया था। और कुछ मज़ामीन फ़रज़न्द मौलवी ज़फ़रुल ह़क़ साहब को मैंने बरजस्ता इमला करा दिया। इस तरह यह मजमुआ एक सौ चालीस उन्वानों पर दो सौ से ज़ाइद ह़दीसों मय तशरीहात व तबसरा व फ़वाइद व मसाइल के रंगारंग गुल्हाए मज़ामीन का एक गुलदस्ता है जो मेरे इन दोनों नवासों की मेहनतों का समरा है। मौला तआला इन दोनों को और मेरी तमाम औलाद को ज़ुर्रीयते त़य्यबा बनाये। और इन सबको बरकाते दारैन नसीब फ़रमाये। और मेरी इस ह़क़ीर क़लमी ख़िदमत को मक़बूले आलम व नाफ़ेउल ख़लाइक़ बनाकर मेरे लिए और मेरे वालिदैन व मशाइख़ व असातिज़ा व तलामिज़ा व मुरीदीन के लिए ज़ख़ीरए आख़िरत व वसीला–ए– मग़फ़िरत बनाये। आमीन!

रहमतों का नुज़ूल हो जाए
मेरा हर ख़ार फूल हो जाए
बारगाहे रसूल में या रब
मेरा तोह़फ़ा कबूल हो जाए

अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी
घोसी,27,रमज़ान 1403 हि0

इन्तिसाब

और

ईसाले सवाब

मैं अपनी इस किताब के ज़रीये उन तमाम उ़ल्माऐ दीन और फुक़हा व मुहद्दिसीन की अरवाहे त़य्यबा को ईसाले सवाब करता हूँ, जिनके नोके क़लम की सियाही शहीदों के ख़ून का दर्जा रखती है।

नाज़ेरीन किराम भी फातिहा पढ़ कर इस किताब का मुतालआ करें इन्शा अल्लाह ख़ैरो बरकत पायेंगे।

ख़ाकपाऐ उ़ल्माऐ किराम

अ़ब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी

फ़ेहरिस्ते मज़ामीन

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

फ़रिश्ते पर बिछा देते हैं

हदीस :– कसीर बिन कैस का बयान है कि हज़रत अबू दरदा सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हु के पास दमिश्क़ की मस्जिद में बैठा हुआ था। तो उनके पास एक आदमी आया और कहा कि ऐ अबू दरदा! मै आपके पास मदीनतुर्रसूल से एक हदीस सुनने के लिए आया हूँ। जिसके मुताल्लिक मुझे ख़बर मिली है कि आप इस को रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं। मैं इसके सिवा किसी और ज़रूरत से नहीं आया हूँ। यह सुनकर हज़रत अबू दरदा ने फ़रमाया कि मैंने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते सुना कि जो शख़्स इल्म तलब करने के लिए किसी रास्ते में चलेगा तो अल्लाह तआला उसको जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चलायेगा। और यक़ीनन फ़रिश्ते तालिबे इल्म की ख़ुशनूदी के लिए अपने परों को बिछा देते हैं। और बेशक आसमान व ज़मीन की तमाम मख़लूक़ात और पानी के अन्दर की मछलियाँ यह सब उसके लिए दुआऐ मग़फ़िरत करती हैं।

और यक़ीन रखो कि आलिम की एक आबिद पर वही फ़ज़ीलत है जो चौदहवीं रात के चाँद को तमाम सितारों पर फ़ज़ीलत हासिल है। और बिला शुबा उल्मा अम्बिया के वारिस हैं और हज़रात अम्बिया अलैहिमुस्सलाम ने किसी को दिरहम व दीनार का वारिस नहीं बनाया है बल्कि उनकी मीरास तो इल्म ही है तो जिसने इल्म हासिल किया उसने बहुत बड़ा हिस्सा पा लिया। (इस हदीस को तिरमिज़ी व अबू दाऊद व इब्ने माजा व दारमी ने रिवायत किया है– मिशकात जिल्द 1, सफा 34)

फवाइद व मसाइल : इस हदीस से यूँ तो बहुत से मसाइल साबित होते हैं मगर मुन्दरजा ज़ैल फ़वाइद व मसाइल पर ख़ास तौर से रौशनी पड़ती है।

1. एक मुसलमान ने सिर्फ़ एक हदीस सुनने के लिए मदीना मुनव्वरा से मुल्के शाम का सफ़र किया। इससे मालूम होता है कि अगले मुसलमानों में इल्मे हदीस हासिल करने को कितना ज़ौक़ व शौक़ और किस क़दर जज़्बा व इश्क़ था। कि बावजूद कि उसदौर में सफर की मुश्किलात इन्तिहाई होशरुबा और परेशान कुन थीं। फिर भी लोग इल्मे दीन के लिए

इतना दुश्वार गुज़ार सफर करने से नहीं घबराते थे। लेकिन आजकल क मुसलमान वअ्ज़ की मजलिसों और मदारिसे इस्लामिया में चन्द क़दम चल कर जाने और इल्मे दीन की बातें सुनने से घबराते और कतराते हैं।

इस सूरते हाल को आज कल के मुसलमानों की कम नसीबी और महरुमी के और क्या कहा जा सकता है? खुदावन्द करीम हम मुसलमानों पर रहम फ़रमाये और हम को हमारे असलाफ़ के मुक़द्दस तरीक़ों पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये। आमीन।

2. जो इल्मे दीन हासिल करने के लिए किसी रास्ते में चलेगा अल्लाह तआला उसको जन्नत के रास्तों में से एक रास्ते पर चलायेगा। हदीस के इस टुकड़े में इल्मे दीन के उन तालिबे इल्मों के लिए बहुत ही अज़ीम बशारत है जो अपने वतन से दूर जा कर मदारिसे इस्लामिया में इल्म दीन हासिल कर रहे हैं। अल्लाह तआला ने उन लोगो को जन्नत के किसी रास्ते पर चलाने का वादा फ़रमा लिया है। गोया इल्मे दीन के तलबा जन्नत का सफ़र करने वाले मुसाफ़िर हैं। अब ज़ाहिर है कि ऐसे मुबारक सफ़र यानी जन्नत के मुसाफिर कितने मुअज़्ज़िज़ और किस क़दर लाइक़े ताज़ीम व क़ाबिले एहतिराम हैं। मगर अफ़सोस कि आज कल के मुसलमान मदारिसे दीनिया के इन तलबा को इन्तिहाई हिक़ारत से देखते हैं। और बजाऐ उनकी ख़ातिर व मदारत और दिल जोई करने के उन पर फब्तियाँ कसते और उनकी दिल आज़ारी करते रहते हैं।

मुस्लिम अ़वाम की इस ज़हनियत को हम आज कल के मुसलमानों की ईमानी कमज़ोरी और दीन में बद ज़ौक़ी के सिवा और क्या कह सकते है।? खुदावन्द करीम मुसलमानों को ईमानी जज़्बा और इस्लामी ज़ौक़ अता फ़रमाये। आमीन।

3. " इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा की खुशनूदी और रज़ा जोई के लिए फ़रिश्ते अपने परों को बिछा देते हैं।"

हदीस के इस टुकड़े का मतलब यह है कि फरिश्ते उन तालिबे इल्मों की इज़्ज़त अफ़ज़ाई और उनकी खातिर मदारत के लिए इन्तेहाई शफ़क़त और जोशे रहमत के साथ माइल और मुतवज्जह हो जाते हैं। यह ऐसा ही मुहावरा है जैसे उर्दू में बहुत ज़्यादा ख़ातिर मदारत और ताज़ीम व तकरीम को आँखें बिछा देना कहते हैं। कि जब कोई किसी की बहुत ज़्यादा ताज़ीम

और ख़ातिर दारी करता है तो कहा जाता है कि फ़लाँ शख़्स ने फ़लाँ के लिए अपनी आँखें बिछा दीं। खुलासा यह है कि फरिश्ते इल्मे दीन के तलबा की इन्तेहाई ताज़ीम व तकरीम और उनकी इज़्ज़त अफ़ज़ाई करते हैं कि यह तलबा एक ऐसी इबादत में मशगूल हैं कि उनकी रज़ा जोई और ख़ुशनूदी से ख़ुदा वन्द कुद्दूस ख़ुश होगा। जो हर इबादत का मक़सदे आला बल्कि नसबुल ऐन है।

4. एक आलिम एक जाहिल इबादत गुज़ार से इतना ही अफ़जल है कि चौदहवीं रात के चाँद को तमाम सितारों पर फ़ज़ीलत हासिल है। अल्लाहो अकबर! इस हदीस में उ़ल्माए किराम के हक़ में उनके मरातिब व दरजात की बुलन्दी का पता चलता है। क्यों न हो कि एक दूसरी हदीस में हज़रत अ़ब्दुल्ला इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु अन्हु ने इरशाद फ़रमाया कि " रात में घड़ी भर इल्मे दीन का पढ़ना और पढ़ाना उस रात में सारी रात जाग कर इबादत करने से बदरजह बेहतर है "। (मिशकात, जिल्द 1, सफ़ा 36)

इस तरह एक दूसरी हदीस में है कि हूज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मस्जिदे नबवी में सहाबा किराम की दो मजलिसों में से गुज़रे एक मजलिस में लोग इबादत और ज़िकरे इलाही कर रहे थे और एक मजलिस में लोग इल्मे दीन पढ़ने और पढ़ाने में मशगूल थे। यह देख कर आपने इरशाद फरमाया कि " तुम दोनों ही अच्छे कामों में लगे हो लेकिन जो लोग अल्लाह तआ़ला से दुआ़एं माँग रहे हैं अल्लाह तआ़ला अगर चाहेगा तो उनकी मुरादें उनको अता फ़रमायेगा। और अगर चाहेगा तो उनकी मुरादें उनको नहीं देगा। लेकिन दूसरी मजलिस में जो इल्मे दीन सीखने और सिखाने में मशगूल हैं यह लोग चूँकि इल्मे फ़िक़ह सीख रहे हैं और जाहिलों को इल्मे दीन की तालीम दे रहे हैं लिहाज़ा यह लोग उन इबादत गुज़ारों से बहुत अफ़ज़ल हैं। और मैं खुद दुनिया में इसी लिए भेजा गया हूँ कि लोगो, को इल्मे दीन की तालीम दूँ। यह फ़रमा कर हुजूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इल्मे दीन पढ़ने और पढ़ाने वालों की मजलिस में बैठ गये।

इसी तरह एक हदीस में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स मेरी उम्मत को ऐसी चालीस हदीसें पहुँचा देगा। जिनका, दीनी मसाइल से ताअ़ल्लुक़ है तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसको उस क़ब्र से फ़क़ीह बना कर उठाएगा। और मैं उसकी शफ़ाअ़त करूँगा।

5. उल्माऐ किराम के लिए आसमान व ज़मीन और दरयाओं की मछलियाँ भी दुआए मग़फिरत करती रहती हैं। हदीस शरीफ के इस टुकड़े से साबित होता है कि बहुत क़वी उम्मीद है कि अल्लाह तआला उन तमाम मख़लूक़ात की दुआओं को रद नहीं फ़रमायेगा। और ज़रुर इन्शाअल्लाह तआला उ़ल्माऐ किराम की मग़फ़िरत हो जाएगी।

6. उ़ल्माऐ किराम अम्बिया किराम के जानशीन और वारिस हैं। और हज़राते अम्बिया अलैहिमुस्सलाम की मीरास इल्मे दीन ही है। जो उल्माऐ किराम को मिली है। लिहाज़ा साबित हुआ कि उ़ल्माए किराम बिला शुबा निहायत ही वाजिबुल एहतिराम और लाइके ताज़ीम हैं इस लिए अज़रुऐ हदीस तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि उ़ल्माए किराम की कम अज़ कम इस हैसियत से तो एहतिराम करते ही रहें कि यह हस्तियाँ अम्बिया अलैहिमुस्सलाम के वारिस व जा नशीन है। और उ़ल्माए किराम पर भी लाज़िम है कि वह अपने अज़ीम मरातिब व दरजात का हर वक़्त ख़्याल व एहसास रखें। और हरगिज़ हरगिज़ कोई ऐसा ना ज़ेबा काम न कर बैंठें जिससे उनके बुलन्द दरजात व मरातिबे आ़लिया के सफ़ेद व शफ़्फ़ाफ़ दामनों पर कोई बदनुमा दाग़ लग जाए।

7. वाज़ेह रहे कि कुरआन व अहादीस में जहाँ जहाँ उ़ल्मा व इल्मे दीन के तलबा की फ़ज़ीलतों का ज़िक्र आया है इनसे मुराद वही तलबा हैं जो सही इस्लामी अक़ाइद व आमाले सालेहा के पाबन्द हैं और जो नेक नीयती यानी अल्लाह व रसूल की रज़ा जोई के लिए इल्मे दीन पढ़ते और पढ़ाते हैं। क्योंकि बद अक़ीदा और गुमराह मौलवियों और बदकार आ़लिमों और बदनियत तालिबे इल्मों की न तो कोई अज़मत व फ़ज़ीलत है न लोगों कि लिए दोनों जहान में कोई एहतिराम इज़्ज़त है बल्कि हर मुसलमान पर लाज़िम है कि ऐसे लोगों से नफ़रत का इज़हार व बेज़ारी का ऐलान करता रहे जैसा कि मौलाना रुम अलैहिर्रहमा फ़रमाते हैं कि

दुश्मने दीने नबी रा ख़ुवार दार
बहरे ऊ मिम्बर मुनह बरदार दार

यानी दीन के दुश्मन(बद अक़ीदा मौलवियों और बदकार आ़लिमों) को ज़लील व ख़्वार करते रहो। और उन लोगों के लिए मिम्बर न रखो। बल्कि उन लोगों को (अगर ताक़त हो) तो सूली पर चढ़ा दो। मतलब यह है कि

बद दीन मौलवियों का क़तअ़न ऐज़ाज व इकराम न करो। बल्कि उनसे नफ़रत व बे ज़ारी का ऐलान व इज़हार करते रहो। जैसा कि सल्फ़ व सॉलेहीन का तरीक़ा है कि मुहद्देसीन किराम गुमराह तालिबे इल्मों को अपनी दर्सगाहे हदीस से निकाल दिया करते थे। और उनको अपने पास बैठाना जाइज़ नहीं समझते थे। और अलल ऐलान तालीमे नुबुव्वत पर अमल करते थे। कि " इय्याकुम व इय्याहुंम" यानी अपने को उनसे और उन लोगो को अपने से बचाये रखो। वल्लाहु तआ़ला अअ़लम।

तालीमे दीन देने वाले उ़ल्मा

हदीस :— हज़रत अबू उमामा बाहिली रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है वह कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला रहमत नाज़िल फ़रमाता है कि और उसके फ़रिश्ते और आसमानों ज़मीनों वाले यहाँ तक कि चींटियाँ अपने बिल में और मछलियाँ सब दुआऐ रहमत करती हैं। उस के लिए जो लोगों को भलाई की तालीम देता है। (मिश्क़ात, जिल्द,1 सफा, 34)

तशरीह़ :— हदीस मजकूरा का ख़ुलासा मतलब यह है कि इन आ़लिमों का रुतबा बहुत ही बुलन्द और बाला और अ़जमत वाला है जो दर्स व तदरीस या मवाइज़ व तक़रीर या तहरीर व तस्नीफ़ के ज़रीआ़ लोगों को नेक आमाल और दीन व दुनिया की भलाईयों की तालीम व तलक़ीन करते रहते हैं। कि अल्लाह तआ़ला उन ख़ुश नसीबों पर अपनी रहमतों की बारिश नाज़िल फ़रमाता है। और ज़मीन व आसमान की तमाम मख़्लूक़ात यहाँ तक कि चीटियाँ अपने सूराख़ों में ओर मछलियाँ पानी में उन नेक बख़्त आलिमों के लिए रहमतों और बरकतों की दुआऐं माँगती हैं। ऐसे लोगों की ख़ुशबख़्तियों सआदतों और दरजात की बुलन्दी का क्या कहना ? सुब्हानल्लाह सुब्हानल्लाह!

काश! मुसलमान इन तमाम उ़ल्माऐ किराम के मनासिब जलीला व मरातिबे रफ़ीआ़ को पहचान कर मुदररिसीन व मुक़र्रेरीन इज़ाम व मुसन्नेफ़ीन इस्लाम का अदब व एहतिराम और उन हज़रात की क़द्रदानी व क़द्र शनासी की सआ़दतों से सरफ़राज़ हों और फ़लाहे दारैन की करामतों से मालामाल हों।

अगले ज़मानों के अ़वाम तो अ़वाम, ख़ुल्फ़ा व सलातीने इस्लाम उ़ल्माऐ हक़ की ख़िदमत और उन आ़लिमों की कफ़श बरदारी को अपनी निजाते

आख़िरत का ज़रीआ समझ कर सिद्क़ दिल से उनकी ख़िदमत गुज़ारी करते थे। ख़लीफ़ा हारुन रशीद सलतनत अब्बासिया का पुर शिकोह और नामवर बादशाह अपने शाही महल में मुहद्दिसीन व फ़ुकहा को दावत दे कर एक ना बीना मुहद्दिस हज़रत मुआविया ज़रीर अ़लैहिर्रहमा के हाथ धुलाया करता था। और हिन्दुस्तान का बादशाहे आदिल सुल्तान औरंगज़ेब आ़लमगीर हज़रत मुल्ला जीवन रहमतुल्लाह अलैह की जूतियाँ भरे दरबार में सीधी करता था। इसी तरह शाहजहाँ बादशाह और सुल्तान महमूद गज़नवी उ़ल्माए किराम का जो अदब व एहतिराम करते थे अगर उनका तज़किरा तहरीर किया जाए तो एक दफ्तर तैयार हो जाऐगा। इसी तरह हिन्दोस्तान के उमरा और बड़े बड़े जागीरदारान हमेशा उ़ल्मा किराम के ख़िदमत गुज़ार और मुतीअ़ फ़रमांबरदार रहे हैं।

लेकिन हिन्दोस्तान में अंग्रेज़ों की हुकूमत हो जाने के बाद अंग्रेज़ों के ऐजेन्टों ने उ़ल्माए किराम के ख़िलाफ़ मुसलसल ऐसे करीह परोपगन्डों का सिलसिला जारी कर दिया और कुछ बेदीन मुलहिद मग़रिब ज़दा लोगों ने अंग्रेज़ों की शह पा कर उल्माऐ किराम के ख़िलाफ़ ऐसी बकवासों का तूफ़ान बरपा कर दिया। कि मुस्लिम अ़वाम का एक तबक़ा उ़ल्माऐ किराम से दूर हो गया। लेकिन बहर हाल अब भी जिन मुसलमानों के सीने में दीनदारी का नूरानी जज़्बा मौजूद है वह आज भी उल्माए किराम का अदब व एहतिराम करते ही रहते हैं। क्योंकि वह ख़ूब समझते हैं कि उ़ल्माकिराम के बग़ैर हमारे दीन व ईमान की बक़ा व हिफ़ाज़त ग़ैर मुमकिन है। अल्लाह तआ़ला उन नेक और दीन दार मुसलमानों और उ़ल्माऐ हक़ की इमदाद व नुसरत और उन की हिफ़ाज़त और हिमायत फ़रमाये। आमीन।

तलबा और दीनी मदारिस

हदीस : – हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत का बयान है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख्स इल्म की तलाश में कोई रास्ता चलेगा तो अल्लाह तआला उसके बदले में उसको जन्नत के रास्ते में चलना आसान फ़रमा देगा। और जो क़ौम अल्लाह के घरों(मस्जिदों,मदरसों) में से किसी घर में जमा होकर किताबुल्लाह की तिलावत करेगी और एक दूसरे को उसका दर्स देगी तो उस क़ौम पर सकीना(क़ल्बी इत्मीनान) नाज़िल होगा। और रहमते हक़ उनको ढाँप लेगी। और फरिश्ते उन लोगों पर साया करेंगें। और अल्लाह तआला अपने मुक़र्रब फ़रिश्तों के पास उनका तज़किरा फ़रमायेगा। ओर जिसका अमल उसको (सआदत तक) पहुँचने से सुस्त रफ़्तार कर देगा। उसका नसब व ख़ानदान उसको तेज़ रफ़्तार नहीं करेगा। (मिशकात, जिल्द,1 सफ़ा, 33)

तबसरा : – इस हदीस से इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा और दीनी मदारिस के तक़द्दुस और उनके बुलन्द दरजात और मरातिब पर चन्द तरीक़ों से रौशनी पड़ती है जो निहायत ही फ़िक्र अंगेज़ ओर इन्हिाई इबरत आमोज़ हैं उम्मीद है कि मुसलमान इन ईमान अफ़रोज़ तजल्लियों से हिदायत का नूर हासिल करके अपने ज़ाहिर व बातिन को नूरे ईमान से मुनव्वर करेंगे। वह नूरानी तजल्लियात दर्जे ज़ैल हैं।

1. सफर करके इल्मे दीन हासिल करने वाले तालिबे इल्मों को अल्लाह तआला जन्नत के रास्तों पर चलना आसान फ़रमा देगा।

2 इल्मे दीन के मदारिस में तलबा व मुदर्रेसीन पर सकीना नाज़िल होता है।

3. मलाइका आसमानों से उतर कर उन पर अपने नूरे निकहत का साया डाल देते हैं।

4. खुदावन्द कुद्दूस अपने मुक़र्रब फ़रिश्तों के मजमअ् में उन खुश नसीबों के ज़िक्रे जमील का खुतबा इरशाद फ़रमाता है।

5. जो शख़्स अपने इल्मो अमल से दुनिया व आख़िरत की सआदतों की बरकत न हासिल कर सका वह सिर्फ़ अपने नसब व ख़ानदान की बुलन्दी से हर गिज़ हरगिज़ इन बुलन्द मरातिब व दरजात की सआदतों को नहीं हासिल कर सकता।

हदीस के मज़कूरा बाला अनवार से हर मुसलमान को लाज़िम है कि वह ईमानी रौशनी हासिल करे और यह एतिकाद रखे कि इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा और इल्मे दीन पढ़ाने वाले मुदर्रेसीन के दरजात व मरातिब और उनके अजरो सवाब का दरजा बहुत ही बुलन्द है। लिहाज़ा इन लोगों को इन्तेहाई मुहब्बत व अक़ीदत से देखना और उनका अदब व एहतिराम बजा लाना और उन लोगों के साथ हुस्ने सुलूक और बेहतर से बेहतर बरताओ करके इन लोगों के दिलों को खुश कर देना यह दुनिया व आख़िरत की बहुत बड़ी सआदत, और खुदा वन्द कुद्दूस की रज़ामन्दी व खुशनूदी का निशान बल्कि दर हक़ीक़त अपनी मग़फ़िरत का बहुत ही बड़ा सामान है।

मगर अफ़सोस सद अफ़सोस कि आज कल के बाज़ मुसलमानों का तर्ज़े अमल यह है कि दीनी मदारिस के तलबा व उलमा की तहक़ीर व तज़लील और उन ग़रीबों पर ताअ्न व तशनीअ् और उनकी ऐब जोई बल्कि उन लोगों पर इफ़्तिरा परदाज़ी को मुसलमानों का एक तबक़ा फ़ैशन समझता है। जो ग़रीब तलबा व उलमाए किराम की दिल शिकनी व ईज़ा रसानी के गुनाह के साथ साथ दर हक़ीक़त रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुक़द्दस हदीसों की तकज़ीब और उन के साथ तमसखुर व इस्तेहज़ा ख़तरनाक गुनाह है कि जो जहन्नुम के अमीक़ ग़ार में गिरा देने वाला है। (मआज़ल्लाह)

आप खुद ही अपनी ईमानी निगाहों से देख कर अक़्ले सलीम की बसीरतों से सोच कर फ़ैसला कीजिए कि जिन हस्तियों को साहिबे मेराज सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुक़द्दस व मोहतरम फ़ज़ाइल व कमालात का जामेअ् और बुलन्द दरजात व मरातिब वाला फ़रमा रहे हैं। उन मोअज़्ज़िज व मोहतरम हज़रात की तहमीक व तज़हीक और उनकी तहक़ीर व तज़लील करना यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुक़द्दस फ़रमानों को झुटलाना नहीं है तो और क्या है ? और अल्लाह व रसूल के फ़रमानों को झुटलाना और उनका मज़ाक उड़ाना यह इल्हाद व इन्कार के ख़न्दक़ में गिरकर जहन्नुम में चले जाने का सामान नहीं है तो और क्या है ? खुदावन्द करीम हर मुसलमान को इल्हाद व इन्कारे शरीअत की भयानक ज़ुल्मतों और अज़ाबे जहन्नुम की लानतों से महफ़ूज़ रखे। आमीन

अगर बद किस्मती से किसी एक आलिम या तालिबे इल्म की अदना सी कोई लग़ज़िश नज़र आ गई तो आम तौर पर देखा जाता है कि उसको

आड़ बनाकर बाज़ मुसलमान फ़ौरन तमाम आलिमों और तालिबे इल्मों को अपनी लानत व मलामत के तीरों का निशाना बना डालते है। और तबर्रे बाज़ी और दुश्नाम तराज़ी का ऐसा तूफ़ान बरपा कर देते हैं कि थोड़ी देर के लिए इन की इन्सानियत रुख़सत और उनकी शरारत का अफरियत बरहना होकर नाचने लगता है।

अल्लाहु अकबर! ज़रा सोचिऐ तो कि कौन सा तबक़ा है ? जिसमें अच्छे और बुरे लोग नहीं होते, मगर यह कहाँ की अक़्ल मन्दी और दानाई है कि दरख़्त के एक फल को अगर सड़ा देख लीजिए तो यह फ़ैसला कर दीजिए कि दरख़्त के तमाम ही फल सड़े हुए हैं। बदख़्शाँ का हर पत्थर लाल ही नहीं होता। मगर उन्ही बदख़्शाँ की कन्करियों में कुछ लाल बदख़्शाँ के दाने भी हुआ करते हैं। इसी तरह समझ लीजिए कि तबक़ा–ए– तलबा व उल्मा में कुछ अच्छे होते हैं और कुछ बुरे भी हुआ करते हैं। मगर चन्द बुरों को देखकर सब को बुरा कह देना यह कोई अक्लमन्दी और दानाई की बात नहीं है। बहर हाल हर मुसलमान के लिए यह अक़ीदा रखना लाज़िमी है कि फ़रमाने मुसतफ़वी के मुताबिक दीनी मादारिस के तलबा व उल्मा के मरातिब व दरजात बहुत ही बुलन्द व बाला हैं। लिहाज़ा हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं है कि इस मुक़द्दस तबक़े की तहक़ीर व तज़लील की जाए। बल्कि हत्तल इमकान उन लोगो का ऐज़ाज़ व एहतिराम करना दर हक़ीक़त ईमान का निशान और खुदा और खुदा के रिज़वान व ग़ुफ़रान का बहुत बड़ा सामान है।

हदीस का आख़िरी जुमला कि " जो अपने इल्मों अमल से सआदत की बुलन्द मन्ज़िलों पर नहीं पहुँच सका वह महज़ अपने ऊँचे नसब व ख़ानदान की बदौलत इन सआदतों की बुलन्दियों पर नहीं पहुँच सकेगा।

इन में उन शुयूख व सादात कहलाने वाले लोगों के लिए बहुत बड़ा ताज़यान–ए– इबरत है जो इल्मो अमल से बिल्कुल तहेदस्त होने के बावजूद हर वक़्त अकड़ फूँ करते रहते हैं। कि हम फ़लाँ बुज़ुर्ग की औलाद में से हैं। और फ़लाँ खानदान से तअल्लुक़ रखते हैं लिहाज़ा बहरहाल हम सब से ऊँचे और सब से ज्यादा बुलन्द मर्तबा वाले हैं। याद रखिये कि यह नज़रिया ज़मानए जाहिलियत का वह बुत है जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तोड़ कर हमेशा के लिए फोड़ कर इतनी गहरी क़ब्र में दफन कर दिया कि क़यामत तक उस बुत को सर उठाना नसीब नहीं हो सकता।

लिहाज़ा जो लोग नस्ब व ख़ानदान के तफ़ाखुर को सर बुलन्द कर रहे हैं दर हक़ीक़त वह फ़रमाने मुस्तफ़वी के ख़िलाफ़ अलमे बग़ावत बुलन्द कर रहे हैं मगर याद रखिये कि जिस तरह लात व उज़्ज़ा के बुतों को दुनियाऐ इस्लाम में क़ियामत तक सर उठाने का मौक़ा नहीं मिल सकता उसी तरह रंग व नस्ल व खानदान व नसब के फ़ख़र व तफ़ाखुर के बुतों को भी कभी सर बुलन्दी नसीब नहीं हो सकती। लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि अपने बाप दादा के कमालात पर फ़ख़्र करने के बजाए खुद इल्म व अमल का पैकर बनकर सर बुलन्द हो और " इन्ना अकरमाकुम इन्दल लाहि अतक़ाकुम" को अपने लिए लज़िमुल ईमान ओर वाजिबुल अमल बनाए। यानी अल्लाह के नज़दीक वही सब से इज़्ज़त व शराफ़त वाला है जो सब से ज़्यादा परहेज़गार हो ख़्वाह वह शैख़ व सैय्यद हो या किसी दूसरी क़ौम या ख़ानदान से हो। वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

ताlिबे इल्म को मुजाहिद का सवाब मिलता है

हदीस :— अन अनस क़ाला क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम मन ख़रजा फ़ी तलाबल इल्मे फ़ हुवा फ़ी सबीलिल्लाहि हत्ता यरजओ, (रवाहुत्त तिरमिज़ी)

तर्जुमा :— हज़रत अनस रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो इल्म की तलब में अपने घर से निकला वह अपने लौटने के वक़्त तक जिहाद में रहता है।(इस हदीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है)

हदीस : — अन अबी सईदुल ख़ुदरी क़ाला क़ाला रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम इन्नन नासा लकुम तबई व इन्ना रिजालन यातूनकुम मिन अक़तारिल अरदि,यत फक्क़ाहूना फ़िद्दीने फ़इज़ा अतूकुम फ़ासेतू सुवाबेहिम ख़ैरन। (रवाहुत्त तिरमिज़ी)

तर्जुमा :— हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से मन्कूल है कि उन्होंनें कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तमाम लोग तुम सहाबा की पैरवी करने वाले हैं और यक़ीनन

कुछ लोग ज़मीन के अतराफ़ से तुम्हारे(सहाबा) के पास इल्म दीन हासिल करने के लिए आयेंगे तो जब वह लोग तुम्हारे पास आयें तो उनके साथ भलाई करने की वसीयत करता हूँ। लिहाज़ा तुम लोग मेरी इस वसीयत को कबूल करो।(इस हदीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया।)

तशरीह :— मज़कूरा बाला दोनों हदीसों में इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा के सवाब और उनके मरातिब व मदारिज का बयान है। जो बिला शुबा बहुत ही इबरत खेज़ व नसीहत आमोज़ है। गौर कीजिए कि एक मुजाहिद अपने घर को छोड़ कर हथियारों का बोझ उठाये हुए मैदाने जंग में अपना सर हथेली पर रख कर कुफ़्फार से जंग करता है। और खून रेज़ लड़ाई लड़ते हुए ज़ख़्मी भी हो जाता है। और दर्द की तकलीफ़ और ज़ख़्मों के दर्द व करब से तड़पता भी है पहाड़ों और घाटियों के दुश्वार रास्तों जंगलो बियाबानों और रेतीले मैदानों और कुफ़्फ़ार की बस्तियों से भी गुज़रता है। भूक व प्यास की अज़ीयत भी बर्दाशत करता है। हर वक़्त दुश्मन का ख़ौफ़ साये की तरह सर पर मंडलाता रहता है। गर्ज़ बेपनाह शदाइद व मसाइब के बाद अजरो सवाब का मुस्तहक होता है मगर इल्मे दीन हासिल करने वाला तालिबे इल्म जो सिर्फ़ दीनी किताबें उठाये हुए घर से निकलता है और हर वक़्त अमन व अमान व राहत व सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारता है। मगर फिर भी यह तालिबे इल्म अल्लाह तआला को इतना प्यारा होता है कि जो अजरो सवाब एक जिहाद करने वाले मुजाहिद को मिलता है अल्लाह तआला अपने फज़लो करम से ऐसा ही अजरो सवाब उस तालिबे इल्म को भी अता फ़रमाता है। इससे जाहिर है कि इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा खुदावन्द कुद्दूस की बारगाहे अज़मत में कितने महबूब व मकबूल हैं। और उन तालिबे इल्मो के मरातिब व दरजात किस क़दर बुलन्द व बाला हैं।

दूसरी हदीस मे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने गैब की ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाया कि ऐ सहाबा! वह दिन आने वाला है कि रुए ज़मीन के अतराफ़ से लोग इल्मे दीन की तलब में दूर दूर से तुम्हारे पास आयेंगे। ताकि वह दीनी उलूम हासिल करके अपने वतन में और ज़मीन के दूसरे हिस्सों में जाकर इस्लाम की तबलीग़ करें। और लोगों को सिराते मुस्तकीम पर चलने की हिदायत करें। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मैं उन तालिबे इल्मों के साथ नेक सुलूक और अच्छे बर्ताव करने की वसीयत

करता हूँ। मेरे उम्मतियों पर लाज़िम है कि मेरी इस वसीयत पर अमल करें। और इन तालिबे इल्मों के साथ नेक सुलूक और अच्छा बर्ताव करे।

उनकी हर क़िस्म की राहत रसानी का सामान करते रहें । रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत को ध्यान में रखकर पूरी ईमान दारी और दयानत दारी के साथ उन तालिबे इल्मो को एजाज व इकराम करते रहें। कभी हरगिज़ हरगिज़ ऐसा न होने पाए कि किसी बद सुलूकी से उन तालिबे इल्मों की दिल शिकनी हो जाए। और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत पर अमल न हो सके क्योंकि एक मुसलमान की इससे बढ़ कर बदबख़्ती और क्या होगी ? कि वह अपने रसूल की वसीयत से रु गरदानी कर बैठे। आजकल बहुत से मुसलमान अपनी शामते आमाल से इल्मे दीन हासिल करने वाले तलबा को बड़ी हिक़ारत की नज़रों से देखते हैं बल्कि उन तालिबे इल्मो का मज़ाक़ उड़ाते और उन लोगों को कौम पर एक बोझ समझते हैं। उन से बद दिली व बे नियाज़ी का इज़हार करते हैं। ऐसे लोगों को होश में आ जाना चाहिये। कि वह उन तालिबे इल्मों की तहक़ीर व तज़लील नहीं कर रहे हैं बल्कि अपने रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत को ठुकरा कर और उससे रुगरदानी करके अपने नामा–ए– आमाल को गुनाहों की सियाही से काला करके अपनी दीनी व इस्लामी ज़िन्दगी को तबाह व बर्बाद कर रहे हैं यह सोचने की बात है कि जो शख़्स अपने प्यारे रसूले मकबूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वसीयत को ठुकरा देगा भला वह कब इस काबिल रहेगा कि क़ियामत के दिन हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में हाज़िर होकर शफ़ाअत की इल्तेजा कर सके।

मुसलमानों! सुन लो कि तुम्हारी दोनों जहान की सलाह व फलाह का राज़ इसी में मुज़मर है कि तुम अपने प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की नसीहतों और वसीयतों पर अमल करते हुए उल्माऐ दीन और दीनी मदारिस के तलबा का एज़ाज़ करते रहो। और उन अल्लाह वालों के साथ हुस्ने सुलूक करके उन हज़रात के वक़ार और एहतिराम का ध्यान रखो। इसी में तुम्हारी भलाई और दीन व ईमान की सलामती है। खुदा वन्द कुद्दूस तमाम मुसलमानों को इस की तौफ़ीक बख़्शे। आमीन। वल्लाहु तआला अअ्लम।

फ़क़ीह साहिबे ख़ैर हैं

हदीस :– हज़रत अमीरे मुआविया रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसके साथ अल्लाह तआला ख़ैर का इरादा फ़रमाता है तो उसको दीन में फ़क़ीह बना देता है। और मैं हर नेअ़मत को तक़सीम करने वाला हूँ। और अल्लाह तआला उसका अ़ता फ़रमाने वाला है। (मिशकात, जिल्द, 1, सफ़ा, 32)

तबसरा :– इस हदीस में ख़ैर से मुराद दीन व दुनिया की भलाई व नेअ़मतें हैं। लिहाज़ा हदीस शरीफ़ का मतलब यह हुआ कि जिस शख़्स को तुम देखो कि दीन के मसाइल का आ़लिम है तो समझ लो कि यह वह खुश नसीब आदमी है कि जिसे अल्लाह तआला ने दीन व दुनिया की तमाम नेअ़मतें और सारी भलाईयाँ अ़ता करने का इरादा फ़रमा लिया है। और इस हदीस का आख़िरी हिस्सा " इन्नमा अना क़सिमुन वल्लाहु योअ़ती" में " क़ासेमुन" और "योअ़ती" दोनों का मफ़ऊल महज़ूफ़ है और इल्मे मआ़नी का क़ायदा है कि जहाँ मफ़ऊल इतना आ़म होता है कि उसके अफ़राद का शुमार दुश्वार हो तो उस मफ़ऊल को हज़्फ़ कर दिया जाता है और हर शख़्स का ईमान व अक़ीदा है कि अल्लाह तआला छोटी बड़ी चीज़ों का अ़ता फ़रमाने वाला है। यक़ीनन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हर छोटी बड़ी चीज़ों के बाँटने वाले हैं क्योंकि जो "योअ़ती" का मफ़ऊल है वही "क़ासिम" का भी मफ़ऊल है। वरना कलाम बे रब्त हो जायेगा।

यह और बात है कि यहाँ हदीस में फ़िक़्ह का तज़किरा है इस क़रीना से यहाँ योअ़ती और क़ासिम का मफ़ऊल महज़ूफ़ इल्मे दीन को बनाया जायेगा। कि इल्मे दीन का अ़ता फ़रमाने वाला तो अल्लाह तआला है। मगर इसकी तक़सीम करने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। जिस तरह कि तमाम नेअ़मतों को अ़ता फ़रमाने वाला अल्लाह है और उन तमाम नेअ़मतों की तक़सीम करने वाले रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं।

अहले सुन्नत व जमाअ़त का यही अक़ीदा है कि हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुदावन्द क़ुद्दूस जल्ला जलालहु के नायबे मुकर्रम व ख़लीफ़ाऐ आज़म हैं। और अल्लाह तआला तमाम नेअ़मतों को अ़ता फ़रमाने वाला है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही तमाम

नेअ्मतों को उसके हुक्म से क़ासिम और बाँटने वाले हैं। आला हज़रत अलैहिर्रहमा ने क्या ख़ूब फ़रमाया है।

रब है मोअ्ती यह हैं क़ासिम
रिज़्क उसका है खिलाते यह हैं

अल्लाहुम्मा सल्ले अला सय्येदिना व मौलाना मुहम्मदिन व अला आलेहि व असहाबेहि व बारिक वसल्लिम।

दो आदमी क़ाबिले रश्क हैं

हदीस :– हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु से रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि क़ाबिले रश्क सिर्फ़ दो ही शख़्स हैं। एक तो वह जिसको अल्लाह तआला ने माल दिया और वह उसको अपने अहलो अयाल पर हक़ के तौर पर ख़र्च करता है और दूसरा वह आदमी जिसको अल्लाह तआला ने इल्मे दीन अता फ़रमाया तो वह उसके मुताबिक फ़ैसला करता है और दूसरों को इल्मे दीन सिखाता है। (मिशकात, जिल्द, 1 सफ़ा, 32)

तबसरा :– रश्क हमेशा किसी बड़ी नेअ्मत पर हुआ करता है इस हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया में सब से बड़ी नेअ्मतें यही दो हैं जो रश्क के क़ाबिल हैं। एक यह कि अल्लाह तआला किसी को माल अता फ़रमाये और वह उसको अपने बाल बच्चों और अहलो अयाल पर इस तरह ख़र्च करे एक पैसा भी नाहक़ और नाजाइज़ न हो। बल्कि हक़ के तौर पर और जाइज़ तौर पर ही ख़र्च करे। दूसरे यह कि अल्लाह तआला किसी को इल्मे दीन मरहमत फ़रमा कर आलिम बना दे तो वह हमेशा इल्मे दीन के मुवाफ़िक़ और उसके मुताबिक़ ही हर मामला में फ़ैसला करे और दूसरों को भी इल्मे दीन सिखाए और हरगिज़ हरगिज़ उसमें बुख़्ल न करे।

यह हदीस उन उल्माऐ किराम के लिए बड़ी तसल्ली का सामान है जो सेठों की दौलत और अपनी मुफ़लिसी और ग़रीबी को देखकर कबीदा खातिर बन कर कुढ़ते रहते हैं। उन्हें यह सोचना चाहिये कि अगर सेठों को अल्लाह तआला ने माल व दौलत देकर क़ाबिले रश्क बनाया है तो हम आलिमों को भी अल्लाह तआला ने इल्मे दीन की दौलत से मालामाल फरमा कर क़ाबिले रश्क बना दिया है। और आलिमों को चाहिये कि हजरत मौला

अ़ली रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु के इस शेर को अक्सर विर्दे ज़बान बनाये रखें। जो उन्होने मालदारों को देखकर इरशाद फ़रमाया कि :–

रदी़ना किस्मत ल जब्बारे फ़ीना
लना इल्मु व लिल जुह्हालि मालु
फ़इन्नल माला यफ़नी अ़नक़रीबिन
व इन्नल इल्मा बाकि़न ला यज़ालु

यानी अल्लाह तआ़ला की इस तक़सीम पर हम खुश हैं कि उसने जाहिलों को माल दिया ओर हम आ़लिमों को इल्म अ़ता फ़रमाया। क्योंकि माल तो अ़नक़रीब फ़ना हो जाने वाला है मगर इल्म वह दौलते ला ज़वाल है कि यह हमेशा बाकी रहने वाली दौलत है।

लिहाज़ा उल्माऐ किराम को चाहिये कि वह कभी भी सेठों से मरऊ़ब न हों और न ही एहसासे कमतरी में मुबतला हों क्यों कि सेठों के पास अगर सोने चाँदी की दौलत है तो हम आ़लिमों के पास इल्मे दीन की दौलत है। हम को अगर दुनिया के लिए सेठों की दौलत की ज़रुरत है तो सेठ सहिबान को अपने दीन के लिए हमारी दौलते इल्म की एहतियाज है।

इस लिए सेठों की बिल्डिगों की हाज़िरी और उनकी खुशामद और चापलूसी करके हरगिज़ हरगिज़ अपने इल्मे दीन को ज़लील नहीं करना चाहिये। बल्कि खुदावन्दे कुद्दूस की रज़्ज़ाकी पर ईमान रखते हुए सबरो क़नाअत करके अपने इल्म की इज्जत को महफूज़ रखना चाहिये। इन्शा अल्लाह तआला खुद सेठो के दिल को रब्बुल इज़्ज़त जल्ला जलालुहू उ़ल्माऐ किराम की तरफ़ माइल फ़रमा देगा और अपने ख़ज़ानऐ ग़ैब से उल्माऐ किराम को इस तरह रिज़्क पहुँचा देगा कि दुनिया वा़ले उसको सोच भी नहीं सकते। हमारे उ़ल्माऐ सलफ़ का हमेशा यही तरीक़ा रहा कि वह उमरा व सलाती़न की तरफ़ तवज्जोह नहीं फरमाते थे बल्कि उमरा व सलातीन खुद उल्माए रब्बानीनं के आस्तानों पर नज़रें पेश करने के लिए हाज़िर हुआ करते थे। और उ़ल्मा अपनी कनाअ़त और इस्तिग़ना की बदौलत उन उमरा व सलातीन की तरफ़ क़ोई इल्तिफ़ात व तव्वजोह नहीं फ़रमाया करते थे। मगर परवरदिगारे अ़ालम उन क़नाअत पसन्द और साबिर आलिमों को ग़ैब से इस तरह रिज़्क पहुँचा दिया करता था कि उमरा व सलाती़न उन आ़लिमों और दुरवेशों की खुराक़ व पोशाक और उन की मेहमान नवाज़ियों और उन की

ख़ैरात व सख़ावत को देखकर हैरान रह जाया करते थे।

आज भी अगर उ़ल्माऐ किराम " हिरस् व तमाअ्" को बरतरफ़ करके सबरो कनाअत का रास्ता इख़्तियार करलें तो अल्लाह तआला ग़ैब से उन आ़लिमों को रिज़्क का सामान पैदा फ़रमा देगा। और उन आलिमों को सेठों और दुनियादार मालदारों की खुशामद ओर चापलूसियों की कोई ज़रुरत ही बाक़ी न रहेगी। क्या ख़ूब फ़रमाया है किसी अहले दिल ने –

ऐ क़नाअत! तू निगरम गरदाँ
कि ब राये तू हेच नेअ्मत नीस्त

मरने के बाद इल्म का सवाब

हदीस :– हज़रत अ़बू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने बयान किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि इन्सान जब मर जाता है तो उसके अ़मल का सिलसिला मुन्कतअ् हो जाता है। मगर तीन इल्मों के सवाबों का सिलसिला जारी रहता है।

1. उसके सदकाऐ जारिया का सवाब।
2. उस इल्म का सवाब कि लोगों को उससे नफ़ा पहुँचता रहे।
3. औलादे सॉलिहा कि उसके लिए दुआ करती रहे।

तशरीह :– सदका जारिया से मुराद उसकी वक्फ़ करदा चीज़े हैं मसलन मस्जिद व मदरसा, सरायों और मुसाफ़िर खानों की इमारतें कुओं वग़ैरह की तामीरात या दीनी कुतुबख़ानों की इमारात, या दीनीं किताबों का वक्फ़ कर देना कि उ़ल्माऐ किराम व तलबा उससे इल्मी फवाइद उठाते रहें। इल्म से मुराद या तो शागिर्दों को पढ़ा कर तैयार कर देना या कोई दीनी किताब तस्नीफ़ कर देना कि जिससे लोग दीनी फ़ायदा हासिल करते रहें। नेक औलाद से मुराद वह कि माँ बाप के मरने के बाद फ़ातिहा व ईसाले सवाब करते रहें। कि मरने वाला मर गया और मरने के बांद उसके तमाम आमाले सालिहा का सिलसिला ख़त्म हो जाता है कि वह न अब नमाज़ पढ़ता है न रोज़ा रखता है। न सदका देता है न कोई दूसरा सवाब का काम करता है । लेकिन ज़िन्दगी में उसने कोई चीज़ वक्फ़ करदी है या कोई इल्म छोड़ कर मरा है। या नेक औलाद छोड़ कर वफ़ात पा गया है तो वह अगरचे खुद कोई अ़मल नहीं कर रहा है मगर उसकी कब्र में इन चीजों का सवाब बराबर

पहुँचता रहेगा। इस लिए ज़रुरत है कि अहले दौलत मुसलमान अपनी ताक़त भर ज़रुर कोई न कोई सदक़ाए जारिया करके दुनिया से सफ़र करें। इस ज़माने में ख़ास तौर से मदरसों की तामीर और मज़हबी किताबों का कुतुब ख़ाना कायम करके उसको वक़्फ़ कर देना बेहतरीन सदक़ाए जारिया है।

और ग़रीब मुसलमानों को चाहिये कि अपनी औलाद को इल्मे दीन पढ़ायें ताकि इल्मे दीन सीखकर उनकी औलाद सालेह बने। और वह अपने माँ बाप के लिए ईसाले सवाब व फातिहा व दुआए मग़फ़िरत करके अपने वालिदैन की क़ब्रों में सवाब का ज़ख़ीरा और ख़ज़ाना भेजते रहें। मगर निहायत अफ़सोस रन्ज व क़ल्क़ होता है कि मालदार मुसलमान शादी ब्याह और नामवरी की फ़ुजूल रस्मों में अपनी दौलत को ख़ूब दिल खोलकर ख़र्च करते हैं मगर सवाबे आख़िरत के लिए न कोई सदक़ाए जारिया करते हैं न दीनी कामों में अपनी दौलत लगाकर सवाबे आख़िरत की दौलत और दीन व दुनिया की बरकत हासिल करते हैं।

वाज़ेह रहे कि अपनी औलाद को इल्मे दीन पढ़ाना इसका अजरो सवाब बहुत बड़ा है एक हदीस में आया है कि जो शख़्स कुरआने मजीद का इल्म हासिल करके उसपर अमल करे तो कयामत के दिन उसके माँ बाप को ऐसा ताज पहनाया जायेगा जिसकी रौशनी सूरज से भी ज़्यादा अच्छी होगी। इससे अन्दाज़ा करलो कि खुद इल्मे कुरआन मजीद पढ़ने वाले को जो कुरआन पर अमल करेगा अल्लाह तआला उसको कितने बड़े बडे अज़ीम अजरो सवाब से सरफ़राज़ फ़रमायेगा।

इस लिए मालदारों से तो इसकी कोई उम्मीद नहीं है मगर ग़रीबों को चाहिये कि वह अपने बच्चों को कालिज व यूनिवर्सिटी की तालीम नहीं दिला सकते तो अपने बच्चों को मदारिसे इस्लामिया में दाख़िल करके उन्हे इल्मे दीन ज़रुर पढ़ायें। और अजरो सवाब से मालामाल हों वल्लाहो तआला अअ्लम।

जहन्नम में चक्की चलाने वाला

हदीस :- हज़रत उसामा बिन ज़ैद रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन एक आदमी को लाकर जहन्नम में डाल दिया जायेगा। तो उसकी अन्तड़ियाँ निकल पड़ेंगी। और वह चक्कर लगाता और उन अन्तड़ियों को रौन्दता होगा। जिस तरह गधा अपनी चक्की चलाता और उसके गिर्द घूमता रहता है तो अहले जहन्नम उसके पास जमा होकर उससे कहेंगे कि ऐ फलाँ तेरा क्या हाल हैं? क्या तू हमें अच्छी बातो का हुक्म और बुरी बातों से मना नहीं करत था? तो वह कहेगा कि मैं तुम लोगों को अच्छी बातों का हुक्म दिया करता था मगर खुद उन बातों पर अ़मल नही किया करता था। और मैं तुम लोगों को बुरी बातों से मना करता था। मगर खुद बुरी बातें किया करता था।

तबसरा :- यह हदीस उन वाइज़ों के लिए बहुत बड़ा ताज़ियानए इबरत है जो गला फाड़ फाड़ कर मुसलमानों को आमाले सॉलेहा की तरग़ीब का वाअ़ज़ फरमाते रहते हैं मगर खुद कभी कोई नेक अ़मल नहीं करते। इसी तरह मुसलमानों को गुनाहों से बचने की बहुत ज़्यादा ताकीद करते हैं लेकिन खुद रात दिन उन्हीं गुनाहों में मुलव्विस रहते हैं। अल्लाह तआला हमारे उ़ल्माऐ किराम और वाइज़ों को हिदायत दे और वह जो कुछ कहते हैं उन पर उनको भी अमल की तौफ़ीक़ बख़्शे। और जहन्नम में चक्की चलाने के अज़ाब से महरुम रखे। आमीन । वल्लाहु तआला अअ़लम।

बद अ़मल वाअ़ेज़ीन

हदीस :- हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मैंने शबे मेअ़राज में देखा कि कुछ लोगों के होंठ आग की कैचियों से काटे जा रहे हैं। तो मैंने दरयाफ़्त किया कि ऐ जिबरईल! यह कौन लोग हैं ? तो उन्होनें कहा कि यह आप की उम्मत के वाअ़ेज़ीन हैं जो लोगों को तो नेकी करने का हुक्म देते हैं और खुद अपनी ज़ातो को भूले हुए हैं। और दूसरी रिवायत में है कि यह आप की उम्मत के वह वाअ़ेज़ीन हैं जो लोगों से ऐसी बाते कहते हैं जिन को वह खुद नही करते और अल्लाह की किताब पढ़ते हैं और उस पर अ़मल नहीं करते।

तबसरा :– लोगों को अच्छी अच्छी बातों का हुक्म देना, और खुद उन बातों पर अमल न करना यह बहुत ही मायूब बात और गुनाह का काम है। कुरआन मजीद में खुदावन्द कुद्दूस ने इरशाद फ़रमाया कि –

" अतामुरुनन नासा बिल बिर्रे व तन सौना अनफुसाकुम व अन्तुम ततलूनल किताब "।

यानी क्या तुम लोग दूसरों को नेकी का हुक्म देते हो और अपनी ज़ातों को भुला बैठे हो। हालाँकि तुम लोग किताबे इलाही की तिलावत करते हो।

एक जगह कुरआन मजीद में अल्लाह अज़्ज़ावजल्ला ने लग्व(बेकार) शोअ़राऐ जाहिलियत की मज़म्मत करते हुए फ़रमाया " तकूलूना माला तफ़अलून" यानी वह ऐसी बातें कहते हैं जिन पर खुद अमल नहीं करते।

बहर हाल इस दौर के उन मुक़र्रेरीन के लिए जो शरीअ़ते मुतहरा की पाबन्दी नहीं करते इस हदीस में बहुत बड़ा इबरत का सामान है और ऐसी शदीद वअ़ीद है कि जिसको सुनकर हर मुसलमान लरज़ा बरअन्दाम हो जाता है। और हकीकत यह है कि आज कल के वाअेज़ीन के मुवाइज़ और तक़रीरों में जो असर व तासीर की कमी हो गई है उसका एक बहुत बड़ा सबब यह है कि अक्सर वाअ़ेज़ीन बे अमल बल्कि बद अमल हो चुके हैं। इसलिए उनके वाइज़ो के असरात सामेअ़ीन के कुलूब पर बहुत कम पड़ते हैं। अगर सल्फ़ सॉलेहीन और पुराने बुज़ुर्गाने दीन की तरह दौरे हाज़िर के वाअ़ेज़ीन भी पैकरे इल्मो अमल बन कर वअ़्ज़ फ़रमायें तो यकीनन उनके मवाइज़ में वह तासीरात रुनुमा होंगी लोग सामने जोशे तअस्सुर से सर धुनने लगेंगे। और उनकी दुनियाऐ दिल में वह इन्क़िलाब पैदा हो जायेगा कि वह चश्मे ज़दन में कामिलुल ईमान और सालेहुल अमल बन जायेंगे। बुर्ज़ुगों ने सच फ़रमाया कि अज़दिल खेजद व बर दिल रेजद। यानी :–

दिल से जो बात निकलती है असर रखती है
पर नहीं ताकते परवाज़ मगर रखती है

लिहाज़ा मुक़र्रेरीन और वाअ़ेज़ीन से निहायत हमदर्दाना और मुख़्लिसाना गुज़ारिश है कि वह रोज़ा व नमाज़ वग़ैरह फ़राइज़ की पाबन्दी करें। और कोई ऐसा काम न करें जिससे अवाम के दिलों में उल्माए किराम से बद ज़नी और बद अक़ीदगी पैदा हो। क्योंकि कुछ बेदीन व मुलहेदीन इस कोशिश में लगे हुए हैं कि अवाम को उल्माए किराम से बद ज़न करके दीन व मज़हब

से बेज़ार कर दें। और उन्हे ला मज़हब कम्यूनिस्ट बना डालें। यह रुसी हुकूमत के ऐजेन्टो का मक़सद और नसबुल ऐन है।

दूसरे तबलीग़ी और वहाबी जमाअत के लोग इस ताक में रहते हैं कि सुन्नी आलिमों की कुछ कमज़ोरियाँ उन्हें मिल जाएँ तो वह उनका चर्चा करके अवाम को सुन्नी उल्माऐ अहले सुन्नत को चाहिये कि वह इन ख़तरात को पेशे नज़र ज़्यादा से ज़्यादा अपने मामलात की इस्लाह कर लें ताकि उनका वजूद अवाम के लिए बाइसे इस्लाह और मोजिबे हिदायत बन जाए।

बद नीयती से इल्म पढ़ने वाला जहन्नमी है

हदीस :– हज़रत कअ़ब इब्ने मालिक कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो इस लिए इल्म तलब करे ताकि आलिमों का मुक़ाबला करे। या इस लिए इल्म हासिल करे ताकि जाहिलों से झगड़ा करे। या इसलिए इल्म पढ़े ताकि लोगों को अपनी तरफ़ माइल करे तो उन सभों को अल्लाह तआला जहन्नुम में दाख़िल कर देगा।

हदीसः– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स उस इल्म को जो रज़ाए इलाही हासिल करने का ज़रीआ है इस नियत से हासिल करे ताकि उसके ज़रिये दुनिया का सामान पा लें। तो क़यामत के दिन वह जन्नत की खुश्बू भी नहीं पायेगा।

तशरीहे हदीस :– मज़कूरा बाला दोनों हदीसो में इल्म से मुराद इल्मे दीन है। यानी जो शख़्स इल्मे दीन को अल्लाह व रसूल की ख़ूशनूदी की नियत से हासिल न करे बल्कि इस नियत से पढ़े कि कुछ मालूमात हासिल करके उल्मा से लड़ झगड़ कर उनका मुक़ाबला करे या जहिलो से हुज्जत व तकरार करें। उन पर अपनी बड़ाई और बरतरी ज़ाहिर करे। या उस इल्मे दीन को दुनिया कमाने का ज़रीआ बनाये तो ऐसी बुरी नियतों से इल्मे दीन हासिल करने वालों को ख़ुदावन्द, कह्हार व जब्बार अपने क़हरो ग़ज़ब से जहन्नम में दाख़िल फ़रमा देगा। और उन लोगों को जन्नत से दूर कर देगा कि उन लोागों को जन्नत की ख़ुशबू भी नसीब नहीं होगी।

खुलासा यह है कि इल्मे दीन हासिल करने वाले का अजरो सवाब बहुत बड़ा है जैसा कि इससे पहले बहुत सी हदीसें नक़ल की जा चुकी हैं।

मगर वाज़ेह रहे कि इल्मे दीन हासिल करना उसी वक्त और उसी हालत में बाइसे अजरो सवाब होगा जब कि उसकी नियत बख़ैर हो। यानी वह इल्मे दीन इस नियत से हासिल करे कि खुद भी उस पर अमल करके सआदते दारैन हासिल करे और उम्मते रसूल को भी हिदायत का रास्ता बता कर उनको सिराते मुस्तक़ीम पर चलाने और हर किस्म की गुमराहियों और बद आमालियों से बचाने की कोशिश करता रहे। और हरगिज़ हरगिज़ इल्मे दीन को दुनिया कमाने और आलिमों से बहस करने और जाहिलों से झगड़ने और अवाम में अपनी मक़बूलियत और शोहरत हासिल करने की नियत से हासिल न करे।

बहर हाल मतलब यह है कि इल्मे दीन हासिल करने में अल्लाह व रसूल की रज़ा की नियत करे। इसके सिवा हरगिज़ कोई फ़ासिद नीयत न करें जब तो वह इल्मे दीन बाइसे अजरो सवाब और जन्नत में ले जाने वाला अमले ख़ैर होगा। वरना सरासर बाइसे वबाल व निकाल होगा।

लालच उ़ल्मा के दिलों से इल्म को निकाल देगा

हदीस :– हज़रत सुफ़यान सौरी रहमतुल्लाह अलैहि रावी हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रदियल्लाहु तआला अन्हु ने हज़रत कअ़ब रदियल्लाहु तआला अन्हु से पूछा कि " इल्म वाले कौन लोग हैं ? तो उन्होंने कहा कि जो लोग इल्म पर अमल करते हैं। फिर हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु ने पूछा कि वह कौन सी चीज़ है जो उ़ल्मा के दिलों से इल्म को निकाल फेंकेगी? तो हज़रत कअ़ब ने फ़रमाया कि दुनिया का लालच। (मिशकात, जिल्द, 1 सफ़ा, 37)

तबसरा :– हदीसे मज़कूरा का ख़ुलासा व मतलब यह है कि दर हक़ीक़त आलिम कहलाने के मस्तहिक़ और हक़दार वही लोग हैं जो इल्मे दीन पढकर उसपर अमल भी करें। और वह आलिम जो बे अमल या बद अमल हों वह हरगिज़ हरगिज़ हक़ीक़ी मअ़नों में आलिम कहलाने का मुस्तहिक़ नही है। हज़रत शैख़ सअ़दी अलैहिर्रहमा ने क्या ख़ूब फ़रमाया है जो इसी हदीस का तर्जुमा है कि –

इल्म चन्दाँ कि बेशतर ख़्वानी
चू अमल दरे तू नीस्त नादानी

आँ तही मग़ज़ रा चे इल्म व ख़बर
कि बरोहिज़म अस्त या दफ़्तर

यानी इल्म जितना और जिस क़दर भी ज़्यादा तुम पढ़ लो लेकिन जब तुम उस पर अमल न करो तो तुम नादान और जाहिल ही रहो। उस बेवक़ूफ़ को क्या ख़बर है कि उसके ऊपर लकड़ियाँ लदी हुई हैं या किताबों का बोझ है।

मतलब यह है कि जिस तरह एक गधे के ऊपर लकड़ियँ लदी हों या किताबें लदी हों दोनों बोझ गधे के हक़ में बराबर हैं। यही मिसाल आलिमे बे अमल की है कि इस पर किताबें लदी हुई हैं मगर उन किताबों से कोई फ़ायदा नहीं पहुँच रहा है।

हज़रत अमीरुल मोमिनीन फ़ारुके आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु ने दूसरा सवाल हज़रत कअ़ब से यह किया कि वह कौन सी चीज़ है जो उ़ल्मा के दिलों से इल्म और उसकी बरकतों को निकाल फेंकेगी? और उ़ल्मा पर इल्म और उसके अनवार व बरकात का कोई असर व निशान बाक़ी न रह जाएगा। तो हज़रत कअ़ब रदियल्लाहु तआला अन्हु ने यह जवाब दिया कि वह "तमाअ़" है यानी जब उ़ल्मा कि दिलों में हिरस व लालच की नहूसत घर कर जायेगी तो उनके दिलों से इल्मे दीन और उसकी बरकतों के अनवार व बरकात निकल जायेंगे। और वह जाहिलों की तरह दुनिया तलबी में लग जायेंगे। फिर वह बराय नाम आलिम रह जायेंगे। और दर हक़ीक़त उनमें और जाहिलों के अमल व किरदार में जर्रा बराबर फ़र्क बाक़ी न रह जायेगा।

अ़मलियात

रोज़ाना एक हज और एक उमरा

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स नमाज़े फज्र बा जमाअत अदा करके फिर बैठ कर सूरज तुलूअ होने तक ज़िक्र करता रहे फिर दो रकअ़त नमाज़ नफ़्ल पढ़ ले तो उसको एक हज और एक उमरा का सवाब मिलेगा। आपने यह भी तीन मरतबा फ़रमाया कि पूरा पूरा। (यानी हज व उमरा का सवाब पूरा पूरा मिलेगा।)(मिश्कात, जिल्द, 1 सफ़ा, 89)

तबसरा :– छोटी से छोटी इबादत पर अल्लाह तआ़ला बड़े से बड़ा सवाब अता फ़रमा दे यह उसका फ़ज़ले अज़ीम है। ग़ौर कीजिए कि सिर्फ़ दो रकअ़त नमाज़े इश्राक़ पर एक हज और एक उमरा के बराबर सवाब अता फ़रमा देना। यह उसका फ़ज़्ल ही तो है। वरना कहाँ दो रकअ़त नमाज़े इश्राक़? और कहाँ मक्का मुकर्रमा जाकर दौलत खर्च करके और तवील मशक़्क़त उठाकर हज व उमरा अदा करना? भला दोनों बराबर कैसे हो सकते हैं? मगर चूँकि अल्लाह तआ़ला के रसूल का यह इरशाद है इसलिए इस पर यक़ीन हर मुसलमान के लिए लाज़िमुल अमल और वाजिबुल ईमान है।

मगर याद रखिये कि दो इबादतों के सवाब में बराबरी होने से यह लाज़िम नहीं आता कि हर ऐतिबार से वह दोनों इबादते बराबर हो जायेंगी। यह बिल्कुल सही है कि नमाज़े इश्राक़ पर एक हज और एक उमरा का सवाब मिलेगा। मगर दोनों बराबर होने से मरातिब व दरजात में बुलन्दी और चीज़ है। दोनों में बड़ा फ़र्क़ है। फिर दोनों के सवाब का क़ीमत और मिक़दार में बराबर होने से कैफ़ियत और क़द्र व क़ीमत में बराबर होना लाज़िम नहीं आता। उसको यूँ समझें कि एक तोला सोना और एक तोला लोहा वज़न और मिक़दार में दोनो बराबर हैं मगर क़द्रो क़ीमत में हरगिज़ दोनों बराबर नहीं। इसी तरह एक पाव हलवा और एक पाव सत्तू वज़न और मिकदार और पेट भर देने के मामले में तो दोनों बराबर हैं मगर क़दरो क़ीमत और लज़्ज़त की कैफ़ियत में हरगिज़ दोनों बराबर नहीं तो इस तरह समझ लो कि दो रकअ़त नमाज़े इश्राक़ और मक्का मुकर्रमा जाकर हज व उमरा करना। दोनों का सवाब अगरचे फ़ज़ले खुदावन्द से बराबर है मगर मरातिब और दरजात और क़द्र व मनज़िलत में नमाज़े इश्राक़ और हज व उमरा दोनो हरगिज़ बराबर

नहीं। इस लिए बिला शुबा हज व उमरा का सवाब बहुत ही इज़्ज़त व अज़मत वाला और निहायत ही क़द्रो मन्ज़िलत वाला है और इन दोनों के सवाब की अज़मत और बुज़ुर्गी के बुलन्द से बुलन्द दरजात व मरातिब अल्लाह व उसके रसूल ही को मालूम हैं।

लेकिन बहर हाल नमाज़ इश्राक़ का सवाब हज व उमरा के बराबर है अगरचे मरातिब व दरजात में हज व उमरा से कम है। फिर भी नमाज़े इशराक़ का बहुत बड़ा सवाब है। और यह एक ऐसी आसान इबादत है जिसको हर मुसलमान बिला किसी ख़र्च और बग़ैर किसी मशक़्क़त के अदा कर सकता है लिहाज़ा इस पर अमल करके उसके सवाब को हासिल करना हर मुसलमान के लिए बहुत बड़ी सआदत है। मौला तआला सबको इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन

ख़ुफ़िया सदक़े की ताक़त

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहो तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान को पैदा फ़रमाया तो ज़मीन हिलने लगी, तो अल्लाह तआला ने उस पर पहाड़ों को पैदा फ़रमाया। तो वह बरक़रार हो गई। तो फ़रिश्तों को पहाड़ की ताक़त से बहुत तअज्जुब हुआ और उन्होंने अर्ज़ किया कि ऐ परवरदिगार! क्या तेरी मख़लूक़ात में पहाड़ से ज़्यादा ताक़तवर कोई चीज़ है? तो इरशाद फ़रमाया कि हाँ ! लोहा है। तो फ़रिश्तों ने कहा कि क्या लोहे से भी ताक़तवर कोई मख़्लूक़ है? तो फ़रमाया कि हाँ आग है। तो फ़रिश्तों ने कहा कि क्या तेरी मख़लूक़ में आग से ज़्यादा ताक़तवार कोई चीज़ है ? तो फ़रमाया हाँ पानी। तो फ़रिश्तों ने फ़रमाया कि क्या पानी से भी ताक़तवर कोई मख़लूक़ है? तो फ़रमाया कि हाँ हवा है । तो फरिश्तों ने कहा कि क्या तेरी मख़लूक़ात में हवा से भी बढ़कर ताक़तवर कोई चीज़ है? तो फ़रमाया कि हाँ इब्ने आदम का वह सदक़ा जिसको वह अपने दाहिने हाथ से इस तरह दे कि बायें हाथ से भी छुपाए।(यानी ख़ूब छिपा कर सदक़ा करे)

तबसरा :– हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि पहाड़, लोहा, आग, पानी, हवा, यह सब अगरचे बहुत ही ताक़तवर मख़लूक़ात में से हैं मगर बलाओं और मुसीबतों को जिस तरह इब्ने आदम का छुपा हुआ सदक़ा टाल

देता है उसको न पहाड़ टाल सकते है न लोहे के औज़ार और हथियार, न आग के अलाव, न पानी के सैलाब, न आंधियों के तूफ़ान, लिहाज़ा साबित हुआ कि उन सबसे ज्यादा ताक़तवर चीज़ मुसलमान का वह सदक़ा है जिसको इस तरह छुपा कर दे कि दाहिने हाथ से दे तो बायें हाथ को उसकी ख़बर न हो। क्योंकि बलाओं और मुसीबतों को टालने और दफ़ा करने में सब से बढ़ कर ताक़तवर यही सदक़ा है क्योंकि बरस हा बरस का अपना और अपने बुर्जुगों का यही तर्जुबा है कि प्लेग या कालरा या चेचक वग़ैरह की बलाओं और वबाओं का ज़ोर हुआ। या सैलाब आ गया या तवील मूसला धार बारिश का सिलसिला शुरु हो गया तो अवाम व हुकूमत की पूरी कोशिश और तदबीरों और हर क़िस्म के इलाज़ व मुआलिजा के बावजूद यह वबाऐं और बलाऐं दफ़ा नहीं हुईं। मगर जब सदक़ात किये गये तो अरहमुर राहेमीन का ऐसा रहम व करम ज़ाहिर हुआ कि देखते देखते एक दम यह सारी वबाऐं और बलाऐं दूर हो गईं। क्यों न हो कि सारी बलाओं और वबाओं और मुश्किलात का सबब खुदावन्द कुद्दूस का क़हर व ग़ज़ब ही है और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इरशादे गिरामी है कि " अस्सदक़तो तुतफ़ी ग़दाबर रब" यानी सदके से ख़ुदा के ग़ज़ब की आग बुझ जाती है। यानी बन्दों के सदक़ा करने से ख़ुसूसन छुपा कर सदक़ा देने से खुदावन्द कुद्दूस अपने क़हरो जलाल को ज़ाहिर फ़रमाने के बजाए ख़ुश होकर अपने रहमो करम की तजल्ली फ़रमाता है और उसके रहमो करम का ज़ुहूर होते ही सारी बलाऐं और वबाऐं दूर हो जाती हैं। वल्लाहु तआला अअ़्लम।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम का जज़्बए इबादत

हदीस :— हज़रत हकीम बिन हुज़ाम रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! कुछ चीज़ें(नेकी की) मैं जाहिलियत में किया करता था। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि तुम इन कामों के ऊपर मुसलमान हुए जो नेकी के काम तुमने पहले किये थे। तो मैंने कहा कि खुदा की कसम जाहिलियत में जो नेकी के काम मैंने किये थे। इस्लाम में उन में से इक को भी नही छोडूँगा।

हकीम बिन हिज़ाम :— इस हदीस के रावी हज़रत हकीम बिन हिज़ाम सहाबी हैं उनकी कुन्नियत अबू ख़ालिद है। यह उम्मुल मोमिनीन हज़रत ख़दीजा रदियल्लाहु तआला अन्हा के भतीजे हैं। हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु की तरह बीच ख़ानए काबा में पैदा हुए थे। असहाबे फ़ील के वाकिये से तेरह साल बाद इन की पैदाइश हुई। ज़मानए जाहिलियत और दौरे इस्लाम दोनों ज़मानों में इनका शुमार अशराफ़ व सरदाराने कुरैश में रहा। फतह मक्का के दिन 8 हिजरी में मुसलमान हुए। बहुत ही अक़्लमन्द व परहेज़गार इन्तिहाई फ़ाज़िल व दीनदार थे। ज़मानऐ जाहिलियत में भी इबादत के तौर पर एक सौ गुलामों को आज़ाद किया। और इस्लाम लाने के बाद ज़ब यह हज को गये तो कुरबानी के लिए एक सौ ऊँटों को इस शान से हमराह ले गये कि हर ऊँट को धारी दार कपड़े का झोल पहनाए हुए थे। और एक हज़ार बकरियाँ भी कुरबानी के लिए मिना की कुरबान गाह में लाए थे। और मैदाने अरफ़ात में उनके साथ उनकी एक सौ बान्दियाँ थी। जिन के गले में चाँदी के तौक़ थे। और उन पर यह इबारत नक़्श की हुई थी कि " उत्क़ा उल्लाहे अन हकीम बिन हिज़ाम" यानी यह सब अल्लाह तआला के लिए आज़ाद हैं और उनको आज़ाद करने वाला हकीम इब्ने हिज़ाम है।

मक्का मुकर्रमा दारुन नदवा जो ज़मानए जाहिलियत में कुरैश का पार्लियामेन्ट हाऊस था उन्हीं की मिलकियत में था। जिसको उन्होंने हज़रत अमीरे मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु के हाथ एक सौ दिरहम में फ़रोख़्त

किया। तो हज़रत इब्ने ज़ुबैर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा ने फ़रमाया कि अफ़सोस! तुमने कुरैश की एक इज़्ज़त को बेच दिया। तो आपने फ़रमाया कि " ज़हबतिल मकारिमो इल्लत तक़वा" यानी इस्लाम में तक़वा के सिवा सब एज़ाज़ और इज़्ज़ते ख़त्म हो गईं। 54 हिजरी में आप ने मदीना मुनव्वरा के अन्दर वफ़ात पाई।

तशरीह :– मुहक्केकीन शारेह हदीस के नज़दीक इस हदीस का मतलब यह है कि कुफ़्र की हालत में अगर किसी ने नेक काम किया और फिर वह मुसलमान हो गया। और इस्लाम ही पर उसका ख़ात्मा हो गया। तो कुफ़्र और इस्लाम के दोनों ज़मानों में जो नेकी के काम किये सबका सुवाब उसको मिलेगा।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु तआला अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़बाने मुबारक से यह बशारत सुनकर एक सौ गुलामों को आजाद किया। और एक सौ ऊँट मिसकीनों की सवारी के लिए बतौर सदका के मरहमत कर दिये। क्योंकि वह जमानए जाहिलियत मे इतने ही गुलामों को आज़ाद और इतने ही ऊँट ख़ैरात कर चुके थे।

हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु तआला अन्हु का यह जज़्बए इबादत हर मुसलमान के लिए क़ाबिले तक़लीद है। काश हम मुसलमानों को उन मुकद्दस सहाबाए किराम के तरीक़ए अमल और जज़्बए इबादत की तौफ़ीक नसीब हो। वल्लाहु तआला अअ्लम।

दुरुदो सलाम

दुरुद शरीफ पढ़ना बेहतरीन इबादत है। अल्लाह तबारक व तआला का इरशाद है कि " इन्नल लाहा व मलाऐकतोहु युसल्लूना अलन नबी, या अय्योहल लजीना आमनू सल्लू अलैहि वसल्लेमु तस्लीमा।

यानी बेशक अल्लाह और उसके तमाम फ़रिश्ते दुरुद भेजते हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर। ऐ ईमान वालो तुम भी दुरुद भेजो उन पर और सलाम भेजो जैसा कि सलाम भेजने का हक़ है।

इस आयते करीमा में युसल्लूना(दुरुद भेजते हैं) की तफ़सीर में हज़रत अल्लामा मुल्ला अहमद जीवन (उस्ताद आलमगीर बादशाह) रहमतुल्लाह तआला अलैह ने तहरीर फ़रमाया कि :–

" बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते हुज़ूर की शान बढ़ाने का एहतिमाम करते हैं तो ऐ ईमान वालो तुम लोग भी हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की शान बढ़ाने में एहतिमाम करो।

इस आयत में अल्लाह तआला के दुरुद भेजने का मतलब है कि अल्लाह तआला अपने हबीब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। और उनके दरजात को बुलन्द से बुलन्द तर फ़रमाता है और फ़रिश्तों के दुरुद भेजने से यह मुराद है कि यह लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत के लिए मग़फ़िरत माँगते हैं। और मोमिनीन के दुरुद भेजने के यह माने हैं कि यह लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बुलन्द मरातिब व दरजात और उन पर रहमते इलाही के नुजूल की दुआऐं करते हैं।

आयते करीमा और उसकी तफ़सीर से ज़ाहिर हो गया कि जनाब रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अज़मते शान और उनके दरजात व मरातिब का बयान खुदावन्द कुद्दूस का खुतबा और फ़रिश्तों का मुक्द्दस वज़ीफ़ा है। और मोमिनीन का बकमाले ताकीद हज़रत हक़ जल्ल जलालुहू ने दुरुद व सलाम भेज कर हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की अज़मते शान का एहतिमाम करने का हुक्म फ़रमाया है। इससे ज़ाहिर हुआ कि दुरुद शरीफ़ कितनी अज़ीमुश्शान इबादत है।

बिलाशुबा इस आयते करीमा से साबित होता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरुद व सलाम भेजना फ़र्ज़ है। चुनाँचे अक्सर उल्माऐ किराम का यही क़ौल है कि जिस तरह कलिमए शहादत पढ़ना सारी उम्र भर में एक बार फ़र्ज़ है उसी तरह दरुद व सलाम भी तमाम उम्र में एक बार पढ़ना फ़र्ज़ है। और शिफ़ा शरीफ़ में क़ाज़ी अबूबक्र का यह क़ौल मनकूल है कि अल्लाह तआला ने हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम पर दुरुद व सलाम पढ़ने को तमाम ईमान वालों पर फ़र्ज़ फ़रमा दिया है। और कोई वक्त और तादाद मुकर्रर नहीं फ़रमायी है। और इमाम करख़ी ने फ़रमाया कि जब जब और जितनी बार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम आये तो हर मरतबा दुरुद व सलाम पढ़ना वाजिब है।

बहर हाल हर मोमिन को चाहिये कि बकसरत दुरुद व सलाम पढ़ता रहे। और हरगिज़ हरगिज़ इस मुकद्दस वज़ीफ़े से ग़ाफ़िल न रहे।

दुरुद शरीफ़ के बारे में ब कसरत अहादीसे मुबारका में ताकीदें और

तरह तरह की फ़ज़ीलतें और बशारतें वारिद हुई हैं। हम इस खुसूस में चन्द अहादीसे करीमा नक्ल करते हैं। खुदावन्द कुद्दूस हम को और तमाम मुसलमानों को दुरुद व सलाम पढ़ने की तौफ़ीक़ और उसके फ़ज़ाइल व बरकात की दौलतों से मालामाल फ़रमाये। आमीन।

हदीस (1) हज़रत अबूहुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मुझ पर एक बार दुरुद भेजेगा अल्लाह तआला उस पर दस बार रहमतें नाज़िल फ़रमायेगा।

अल्लाहु अकबर! कैसा बुलन्द मरतबा है दुरुद शरीफ़ पढ़ने वाले का कि एक बार दुरुद शरीफ़ पढ़ने वाले मुसलमान पर दस मरतबा अल्लाह तआला अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाता है।

हदीस (2) हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो मुझ पर एक मरतबा दुरुद शरीफ़ भेजेगा। अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमायेगा। और उसके दस गुनाह माफ़ हो जायेंगे। और उसके दस दरजात बुलन्द कर दिये जायेंगे।

हदीस (3) हज़रत इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन तमाम लोगों में सब से ज़्यादा मेरे क़रीब वह शख़्स होगा जो सब से ज़्यादा मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ता होगा।

क़ुरबे दरबारे नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम :–

सुब्हानल्लाह ! अहले ज़ौक़ के नज़दीक दुरुद शरीफ़ के फ़ज़ाइल में इस हदीस् कि मिस्ल दूसरी हदीस् नहीं है क्योंकि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कुर्ब से बढ़कर मुसलमान के लिए कोई दूसरी फ़ज़ीलत नहीं। कौन नहीं जानता कि मोमिन के तमाम कमालात व दरजात और दुनिया वा अख़िरत की सारी तरक़्क़ियात का दारो मदार दरबारे नबवी का कुर्ब ही है। जो मुसलमान जिस क़दर बारगाहे नुबुव्वत में मुक़र्रब होगा उसी क़द्र फ़ज़ीलत व अज़मत की मेअ्राज उसको हासिल होगी। क्योंकि जो शख़्स हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से जितना ज़्यादा कुर्ब हासिल करेगा उतना ही ज़्यादा खुदाऐ तआला का मुक़र्रब बन्दा होगा। और जो मुसलमान खुदावन्द कुद्दूस का मुक़र्रब हो जाएगा उसको कौन सी

बुज़ुर्गी और फ़ज़ीलत व अज़मत की मेअ्राज न हासिल होगी ?

हदीस (4) और इन्ही इब्ने मसऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह के कुछ ऐसे फ़रिश्ते हैं जो ज़मीन में सैर फ़रमाते रहते हैं और मेरी उम्मत का सलाम मेरे पास पहुँचाते रहते हैं।

सआदतों के बादशाह :– अल्लाहु अकबर! बारगाहे रिसालत में सलाम का नज़राना पेश करने वाले मुसलमान कितने ख़ुशनसीब और सआदतों के बादशाह बल्कि शहंशाह हैं कि वह जहाँ से भी जिस जगह से भी और जितनी मरतबा भी बारगाहे अक़दस में सलाम पढ़ते हैं उनका हर हर सलाम ख़ुदा के फ़रिश्ते बसद इज़्ज़त व एहतिराम अपने साथ लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दरबार में हाज़िर होते हैं। और इस तरह अर्ज़ करते हैं कि या रसूलल्लाह ! आपके उम्मती जिसका फलाँ नाम है और उसके बाप का फलाँ नाम है उसने फलाँ जगह से इतनी इतनी बार सलाम पढ़ा है। अल्लाहु अकबर! सलाम पढ़ने वाले का नाम फ़रिश्तों की ज़बान से दरबारे रिसालत में ज़िक्र किया जाए और रहमते आलम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने गोशे मुबारक से इस तरह समाअत फ़रमायें। ज़रा सोचिए तो सही कि उस मुसलमान का ख़ुश नसीबी और सआदत का मुक़ाम कितना बुलन्द होगा ?

हदीस (5) हज़रत अबी बिन कअ्ब रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है उन्होनें कहा कि मैं ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! मैं बकसरत आप पर दुरुद शरीफ़ पढ़ता हूँ तो कितना वक़्त मैं आप पर दुरुद शरीफ़ पढ़ने के लिए मुक़र्रर करलूँ? तो आप ने फ़रमाया कि तुम जिस क़दर चाहो। तो मैंने कहा कि दिन का चौथाई हिस्सा ? तो आप ने फरमाया कि तुम जिस क़दर चाहो। अगर ज्यादा करोगे तो बेहतर ही होगा। तो मैं ने कहा दिन का आधा हिस्सा? तो फरमाया कि जिस क़दर चाहो अगर तुम ज़्यादा करोगे तो तुम्हारे लिए बेहतर ही होगा। तो मैंने कहा कि दिन का दो तिहाई हिस्सा? तो आपने फ़रमाया कि तुम जिस क़दर चाहो। अगर तुम ज़्यादा करोगे तो तुम्हारे लिए बेहतर होगा। तो मैंने कहा कि पूरा दिन भर मैं आप पर दुरुद पढ़ने ही के लिए मुक़र्रर कर दूँ? तो आप ने फ़रमाया कि जब तो तुम्हारे मक़ासिद के हुसूल के लिए यही क़ाफ़ी हो जाएगा। और तमाम गुनाहों की

मगफिरत हो जाएगी।

हाजत रवाई और मगफ़िरत की गारण्टी :– इस हदीस में निहायत वज़ाहत के साथ यह तसरीह है कि अगर कोई मुसलमान अपने तमाम वज़ाइफ़ व औरादं को मौकूफ़ करके दिन रात के पूरे औक़ात में सिर्फ़ दुरुद शरीफ़ ही पढता रहे। तो उसको कोई फ़िक्र लाहिक़ ही नहीं होगी। और उसके तमाम मक़ासिद हासिल और उसकी तमाम मुरादें और तमन्नाएं पूरी हो जायेंगी। और उसके तमाम गुनाह भी मुआफ़ हो जायेंगे। तो मालूम हुआ कि दुरुद शरीफ़ पढ़ना दूसरे और वज़ाइफ़ से अफ़ज़ल है। क्योंकि दुरुद शरीफ़ पढ़ने के यह दोनों फ़ाइदे किसी दूसरे वज़ीफ़ा के बारे में बयान नही किये गये हैं। लिहाज़ा इन फ़वाइद के लिहाज़ और इन खुसूसियात की वजह से बिला शुबाह दुरुद तमाम दूसरे औराद वज़ाइफ़ से अफ़ज़ल व आला है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए जिसके पास मेरा ज़िक्र हो और उसने मुझपर दुरुद शरीफ नहीं पढ़ा। और उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए कि उस शख़्स की मगफ़िरत होने से पहले ही रमज़ान गुज़र गया। और उस आदमी की नाक भी मिट्टी में मिल जाए कि उसके पास उसके वालिदैन या दोनों में से एक बुढ़ापे को पहुँचे और वालिदैन की रज़ा जोई और ख़िदमत गुज़ारी ने उस आदमी को जन्नत में नही दाख़िल किया।

तीन बद नसीब आदमी :– हदीस मज़कूरा बाला में हूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तीन मनहूस और बदबख़्त इन्सानों का ज़िक्र फ़रमाकर उनकी ज़िल्लत व ख़्वारी का ऐलान और उनकी हिरमाँ नसीबी और बदबख़्ती का बयान फ़रमाया है जो हस्बे ज़ैल है :–

1. वह शख़्स कि उसके सामने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम लिया गया या आप का ज़िक्रे जमील किया गया और उसने सुनकर दुरुदो सलाम नहीं पढ़ा।

2. वह शख़्स कि उसे रमज़ान शरीफ़ का महीना मिला। और उसने रोज़ा रखकर तरह तरह के दूसरे आमाले सॉलेहा करके अपने जन्नत मे जाने का सामान नहीं किया। और रमज़ान शरीफ़ का महीना यूँ ही उसकी

गफ़लत व लापरवाही में गुज़र गया।

3. वह शख़्स कि उसने अपने माँ बाप या उन दोनों में से एक को बुढ़ापे की हालत में पाया। और वह उन की रज़ा जोई और ख़िदमत गुजारी करके जन्नती न बन सका।

मज़कूरा बाला इन तीनों बद नसीबों के लिए इरशाद हुआ कि "रग़िम अनफ़हू" यानी उन सभों की नाक मिट्टी में मिल जाए। या इन सभों की नाक मिट्टी में मिल गई। नाक के मिट्टी में मिल जाने का मतलब यह है कि यह लोग ज़लील व ख़ुवार ख़ाइब व ख़ासिर हो जायें। या ज़लील व ख़ुवार हो गये। "रग़िम अन्फ़हु" जुमला दुआईया भी हो सकता है और जुमला खबरिया भी। बहर हाल इन तीनों को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नामुराद व ख़ाइब व ख़ासिर फ़रमाते हुए इन तीनों बद नसीबों से बेज़ार और नाराज़गी का ऐलान फ़रमाया है।

हदीस (7) हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होनें कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बहुत बड़ा बख़ील है वह शख़्स कि उसके पास मेरा ज़िक्र किया गया और उसने मुझ पर दुरुद शरीफ़ नहीं पढ़ा। इस हदीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है।

साहिबे मिरक़ात ने इस हदीस में फ़रमाया कि "अलबख़ीलु" पर अलिफ़ लाम तारीफ़ जिन्स के लिए है जिससे मुराद कामिल दरजे का बख़ील है और "मन" से पहले "अल्लज़ी" इस्मे मौसूल ज़ाइद है जो ताकीद के लिए है।

साहिबे मिरक़ात की इस तशरीह की रौशनी में हदीसे मज़कूरा का मतलब यह हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ज़िक्र सुनकर जो दुरुद शरीफ़ न पढ़े वह यक़ीनन और बिला शुबा बहुत बड़ा बख़ील है।

हदीस (8) हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि उन्होनें कहा कि हर दुआ आसमानों ज़मीन के दरमियान रुकी रहती है और मुक़ामें मक़बूलियत में चढ़ती ही नहीं जब तक कि तुम अपने नबी पर दुरुद न पढ़ों।

इस हदीस का हासिले मतलब यह है कि दरुद शरीफ़ दुआओं की मक़बूलियत का बेहतरीन ज़रीआ और आला दरजे का वसीला है।

शफ़ाअत करने वाला दुरुद शरीफ़ः—

हज़रत रुवैफ़अ़ रदियल्लाहु तआला अन्हु से मन्क़ूल है कि रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर दुरुद पढ़े और कह ले कि ऐ अल्लाह! तू हुजूर को उस मुकाम पर तशरीफ़ फ़रमा बना दे जो तेरे नज़दीक मुक़र्रब है। तो उस शख़्स के लिए मेरी शफ़ाअत ज़रुरी होगी। (इस को इमाम अहमद ने रिवायत किया है।)

हज़रत रुवैफ़अ् :– यह अन्सार के क़बीला बनी नज्जार के सहाबी हैं इनके वालिद का नाम साबित है। इन्होनें हुजूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की वफ़ात के बाद मिस्र में सुकूनत इख्तेयार कर ली थी। और वहाँ एक मुहल्ला बसा लिया था। हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उन को 46 हिजरी में तराबलस का अमीर बना दिया था। तराबलस से 47 हिजरी में जिहाद करने अफ़्रीका तशरीफ़ ले गये। और अफ़्रीका में फातिहाना शान के साथ दाख़िल हुए। और उसी साल अफ़्रीका से वापस आ गये। बाज़ लोग कहते हैं कि शाम में आपने वफ़ात पायी और बाज़ का कौल है कि आप ने शहरे बरका मे वफ़ात पायी। और वहीं मदफ़ून हुए। आपके शागिर्दों में हनश बिन अब्दुल्लाह सिनआनी, और शोबान बिन उमइया कतबानी बहुत मशहूर है।

शरहे हदीस :– हदीस मज़कूरा का खुलासा मतलब यह है कि जो मुसलमान दुरुद शरीफ़ पढ़ कर यह दुआ माँगे कि अल्लाह तआला हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़यामत के दिन इस मुकाम पर रौनक अफ़रोज़ करे। जो दरबारे खुदावन्दी में मुक़र्रब है और उसका नाम मक़ामे महमूद है । तो उस दुआ माँगने वाले के लिए हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बशारत दी है कि उसके लिए मेरी शफ़ाअत ज़रुरी होगी। यानी मैं ज़रुर ज़रुर उसकी शफ़ाअत दरबारे खुदावन्दी में करुँगा।

अज़ान के बाद जो दुआ पढ़ी जाती है उसमें भी हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए " मक़ामे महमूद" के लिए दुआ माँगी जाती है लिहाज़ा जो शख़्स अज़ान के बाद दुरुद शरीफ़ पढ़कर अज़ान की दुआ पढ़ेगा वह भी उसी बशारत का मुस्तहक़ होगा। वल्लाहु तआला अअ्लम

कहाँ कहाँ दुरुद शरीफ़ पढ़ना अफ़ज़ल है :– यूँ तो हर जगह और हर हाल में दुरुद व सलाम की कसरत ही बेहतर है लेकिन मोतबर रिवायतों के मुताबिक चौबीस मुकामात पर दुरुद व सलाम पर पढ़ना बाइसे फ़ज़ीलत व मूजिबे ख़ैर व बरकत है बल्कि उसकी ताकीद भी आयी है।

1. जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नामे नामी ज़बानपर

लाएं या सुनें । चुनाँचे असहाब व ताबेअीन व जमीअ् अइम्मा मुहद्देसीन व उल्माए सॉलेहीन का हमेशा यही दस्तूर रहा है कि वह कभी इस्मे मुबारक बग़ैर सलातो व सलाम के नहीं ज़िक्र करते। इसी तरह जब जब इस्मे मुबारक लिखें तो दुरुद व सलाम ज़रुर लिखें। जब तक तहरीर में इस्मे मुबारक बाकी रहेगा फ़रिश्ते लिखने वाले पर दुरुद व सलाम भेजते रहेगें। मशहूर जलीलुल कद्र मुहद्दिस हज़रत अबू ज़रआ रहमतुल्लाहि तआला अलैह ने एक शख़्स को उसकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा कि वह आसमान में फ़रिश्तों के साथ नमाज़ पढ़ता है। आपने उससे पूछा कि तुम को यह दरजा किस नेकी की वजह से मिला? तो उसने कहा कि मैंने दस लाख हदीसें अपने हाथ से लिखीं हैं। और जब भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का नाम आता था तो मैं दुरुद शरीफ़ ज़रुर लिखता था। इसी वजह से मुझको यह रुतबा बुलन्द मिला। इसका ख़्याल रहे कि हमेशा " सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम " पूरा लिखे। सिर्फ सुआद या सलअम पर हरगिज़ हरगिज़ इक्तिफ़ा न करें। मोतबर उल्माए किराम से मनकूल है कि एक शख़्स हदीसें लिखता था और नाम मुबारक के साथ कागज बचाने के लिए अपनी बख़ीली के सबब दुरुद शरीफ नहीं लिखता था। तो उसके हाथ में कैन्सर हो गया। और उसका हाथ गल सड़ कर गिर गया। इसी तरह मन्कूल है कि सबसे पहले जिस शख़्स ने दुरुद शरीफ के बदले सुआद या सलअम का बुरा दस्तूर निकाला। मुफ़्तियाने किराम ने फ़तवा दिया कि उस बद नसीब का हाथ काटा जाए।

2. हर सुबह व शाम दुरुद शरीफ़ ज़रुर पढ़ना चाहिये तिबरानी की रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो रोज़ाना सुबह व शाम दस बार दुरुद शरीफ़ पढ़े तो उसको मेरी शफ़ाअत नसीब होगी।

3. जब किसी मजलिस में आदमी दाख़िल हों तो उस मजलिस से उठने से पहले ज़रुर दुरुद शरीफ़ पढ़ले ।

4. दुआ से पहले और दुआ के दरमियान में दुआ के आख़िर में दुरुद शरीफ़ पढ़ना चाहिए।

5. मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त और मस्जिद से निकलते वक़्त।

6. अज़ान के बाद।

7. वुज़ू के वक़्त।

8. किसी चीज़ को भूल जाए। इन्शा अल्लाह वह चीज़ मिल जाएगी।

9. हज में लब्बैक पढ़ने के बाद।

10. क़बरे मुनव्वर की ज़ियारत के वक़्त। बल्कि जब मदीना मुनव्वरा का सफर करे तो पूरे रास्ते में दुरुद शरीफ़ बकसरत पढ़े।

दुरुद शरीफ के रंग में रंग जाओ :– हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी ने तर्जुमा मिश्कात में ज़िक्र किया है कि जब मैं सफ़रे मदीना मुनव्वरा को कब्रे अनवर की ज़ियारत के क़स्द से रवाना हुआ तो हज़रत शैख़ अब्दुल वहहाब मुत्तक़ी रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने ब वक़्ते रुख़सत फ़रमाया कि तुम यक़ीन रखो कि इस राह के बाद फ़राइज़ के कोई इबादत भी दुरुद शरीफ के मिस्ल नहीं है। तो मैंने कहा कि कितनी तादाद में दुरुद शरीफ पढ़ता रहूँ। तो उन्होनें फ़रमाया कि कोई अदद मोअय्यन नहीं है इस क़दर ज़्यादा पढ़ों कि इसी में मुसतग़रक़ हो जाओ। और दुरुद शरीफ़ के रंग में रंगे हुए बन जाओ।

12. जब कान बोलें। यानी जब कान में सनसनाहट या भनभनाहट पैदा हो तो दुरुद शरीफ़ पढ़े। इब्ने सुन्नी ने रिवायत किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम्हारा कान बोले तो मुझ पर दुरुद शरीफ़ पढ़ो। अल्लाह तुम पर अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाएगा।

13. जुमा के दिन बकसरत दुरुद शरीफ़ पढ़े। और अबू नोऐम ने हिलया में रिवायत की है।

अज़ीमुश्शान नूर :– कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स जुमा के दिन सौ बार दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा वह क़यामत के दिन ऐसा नूर लेकर आयेगा जो अगर सारी मख़लूक़ात पर तक़सीम किया जाए तो सबको नूरानी बना देगा।

अस्सी बरस के गुनाह माफ़ :– और दैलमी की रिवायत में है कि जो शख़्स जुमा के दिन सौ बार दुरुद शरीफ पढ़े उसके अस्सी बरस के गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।?

14. जुमा की रात में दुरुद शरीफ़ पढ़ना भी बहुत अफ़ज़ल है।

15. माह रबीउ़ल अव्वल में और दो शुम्बा के दिन और बिलखुसूस विलादत के दिन बारह रबीउ़ल अव्वल में ख़ास कर महफिले मीलाद शरीफ़ में बकसरत दुरुद व सलाम पढ़े। इस वास्ते कि यह महीना और दो शम्बा

का दिन विलादते शरीफ़ा की तारीख़ इन सब को ज़ातें बा बरकत से गहरा तअ़ल्लुक़ है। और हर वह चीज़ जिस को आप की मुक़द्दस ज़ात से निस्बत व तअ़ल्लुक़ हासिल हो उस को पा लेने के वक्त दुरुद शरीफ पढ़ना मुस्तहब और सल्फ़ व सॉलेहीन का तरीक़ है। हज़रत शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह तआला अलैहि ने अपनी किताब " फ़ुयूज़ुल हरमैन" में लिखा है कि मैं मक्का मुअ़ज़्ज़मा में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के विलादत शरीफ़ के मकान में 12 रबीउ़ल अव्वल को विलादत शरीफ़ की मजलिस में हाज़िर था। आप का ज़िक्रे जमील हो रहा था। लोग दुरुद शरीफ़ पढ़ रहे थे। तो मैंने देखा कि अचानक अनवार बुलन्द हुए जब मैनें उन अनवार को ग़ौर से देखा तो यह फ़रिश्तों और रह़मते इलाही के मिले जुले अनवार थे।

16. किताबों और रिसालों की इब्तिदा में बिस्मिल्लाह और हम्द के बाद दुरुद शरीफ़ लिखना मुस्तह़ब है और किताब व रसाइल के आख़िर मे दुरुद शरीफ़ लिखना सल्फ़ व सॉलेहीन का तरीक़ा है।

17. नमाज़े जनाज़ा में " अत्तहियात" के बाद दुरुद शरीफ पढना हन्फ़िया के नज़दीक सुन्नत और इमाम शाफ़ेई के नज़दीक फ़र्ज़ है।

18. हर नमाज़ में दूसरी तकबीर के बाद।

19. ख़ुत्बए जुमा में इमाम शाफ़ेई के नज़दीक दुरुद शरीफ़ फ़र्ज़ है और हन्फ़िया के नज़दीक मुस्तह़ब है। बहर हाल लाज़िम है कि कोई ख़ुत्बा जुमा दुरुद शरीफ़ से ख़ाली न हो।

20. ख़ुत्बए निकाह और दर्से इल्म और वअ़ज़ की इब्तिदा में भी दुरुद शरीफ़ पढ़ लेना मुस्तह़ब और बाइसे ख़ैरोबरकत है।

21. क़ुरआन मजीद ख़त्म करे तो दुरुद शरीफ़ ज़रुर पढ़ले कि यह नुज़ूले रह़मत और दुआ की मक़बूलियत का वक़्त है।

22. रात को नमाज़े तहज्जुद के लिए बेदार होते वक्त।

23. आँधी ज़लज़ला वबाओं वग़ैरह बलाओं को दफा करने के लिए बकसरत दुरुद शरीफ़ पढ़ना निहायत मुफीद है।

24. इत्र या गुलाब या किसी ख़ुश्बू को सूँघने के वक़्त में दुरुद शरीफ़ पढ़ना चाहिये। ह़ज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाह तआ़ला अलैहि ने लिखा है कि ख़ुश्बू सूँघते वक़्त ख़ुश्बूए मुहम्मदी को याद

करके दुरुद व सलाम का तोहफ़ा पेश करे तो यह मुस्तहसन है।

कब कब दुरुद शरीफ़ पढ़ना ममनूअ् है ?

खुसूसियत के साथ आठ जगहें ऐसी हैं कि इन मवाके पर दुरुद शरीफ़ पढ़ना मना है।

1. ऐसी जगह जहाँ निजासत हो।
2. ग़ीबत, झूट वग़ैरह नाजायज़ बातें करते वक़्त हर गिज़ दुरुद न पढ़े।
3. जिस वक़्त आदमी गुस्से में बेकाबू हो रहा हो।
4. ब वक्ते मुबाशिरत।
5. पेशाब पखाना के वक्त।
6. सौदा बेचते वक़्त।
7. लहवो लअिब या कोई नाजाइज़ काम करते वक़्त।
8. जानवर ज़िबह करते वक़्त या तमाम उन मवाकेअ पर जहाँ सिर्फ़ ज़िक्रे इलाही का हुक्म है दुरुद शरीफ़ नहीं पढ़ना चाहिये।

दुरुद शरीफ़ पढ़ने वालों की चन्द हिकायात :–

1. हज़रत इमाम शाफ़ेई रहमतुल्लाह तआला अलैहि की वफ़ात के बाद किसी बुजुर्ग ने उनको ख़्वाब में देखा और पूछा कि आपके साथ अल्लाह तआला ने क्या मामला फ़रमाया ? तो उन्होंनें फ़रमाया कि मुझे अल्लाह तआला ने बख़्श दिया। बुजुर्ग ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि मग़फ़िरत किस नेकी के सबब हुई? तो उन्होंने फ़रमाया कि इन पाँच दुरुदों के सबब जिन को मैं पढ़ा करता था। मेरी बख्शिश हो गई। वह पाँचो दुरुद यह हैं।

1. अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन बेअ़ददि मन सल्ला अलैहि।
2. अल्लाहुम्मा सल्ले अला मुहम्मदिन बेअ़ददि मन ला युसल्ले अलैहि।
3. अल्ला हुम्मा सल्ले अ़ला मुहम्मदिन कमा अमरता बिस्सलाति अलैहि।
4. अल्लाहुम्मा सल्ले अ़ला मुहम्मदिन कमा तुहिब्बो अन तसल्ला अलैहि।
5. अल्लाहुम्मा सल्ले अ़ला मुहम्मदिन कमा यमबग़ी अन युसल्ला अलैहि।

2. मशहूर मुहद्दिस उ़बैदुल्लाह बिन उ़मर क़वारीरी ने बयान किया कि एक कातिब जो मेरा हमसाया था उसकी मौत के बाद उसे मैने ख़्वाब में देख कर पूछा कि तेरा अन्जाम क्या हुआ ? तो उसने कहा कि मैं इस वजह से बख़्श दिया गया कि उम्र भर मेरी यह आदत रही कि जब हूज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम का नामे नामी मैं किताब में लिखता तो "

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम" भी लिखता था। और ज़बान से कहता भी था। तो मुझे अल्लाह तआला ने ऐसी नेअ्मतें दी हैं कि उनको न किसी आँख ने देखा न किसी कान ने सुना न किसी के दिल में यह ख़्याल आया।

3. शैख़ इब्ने हजर मक्की रहमतुल्लाहि तआला अलैहि ने लिखा है कि एक मर्द सॉलेह हर रात सोते वक़्त दुरुद शरीफ़ पढ़ते पढ़ते सो जाता था। उसने एक रात ख़्वाब में देखा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ख़्वाब में तशरीफ़ लाए और उसके रुख़सार को बोसा दिया। जब उसकी आँख खुली तो सारे घर में मुश्क से बेहतर ख़ुश्बू फैली हुई थी। और एक हफ़्ता तक उसके रुख़सार में मुश्क से बढ़ कर ख़ुश्बू बाकी रही।

4. एक मर्द सॉलेह ब कसरत दुरुद शरीफ़ पढ़ने में मशगूल रहते थे लोगों ने उनकी वफ़ात के वक़्त देखा कि रुह निकलने के वक़्त उनकी पेशानी पर नूर के सितारे चमकने लगे।

5. अल्लामा फ़ाकेहानी ने "फजरे मुनीर" में लिखा कि शैख़ सॉलेह हज़रत मूसा ज़रीर ने ज़िक्र किया कि वह समुन्दर में जहाज़ पर सवार थे। एक तूफ़ानी हवा इस किस्म की उठी कि जहाज़ ऐसी हवा मे डूबने से कम बचता है तामाम मुसाफ़िर परेशान थे। नागहाँ मुझ पर नींद का ग़लबा हुआ और मैं सो गया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा कि आप फ़रमाते हैं कि जहाज वालों से कह दो कि हज़ार बार दुरुद शरीफ़ पढ़ें। चुनाँचे मैंने बेदार होकर लोगों से अपना ख़्वाब बयान किया और लोगों ने दुरुद शरीफ़ पढ़ना शुरु किया। तीन सौ की तादाद में लोग दुरुद शरीफ़ पढ़ चुके थे कि तूफ़ान की बला दूर हो गई और वह दुरुद शरीफ़ यह है।

अल्लाहुम्मा सल्ले अला सय्येदिना मुहम्मदिन व अला आले सय्येदिना मुहम्मदिन सलातन तुनजजीना बिहा मिन जमीइल अहवाले वल आफ़ात, व तक़दी लना बिहा जमीइल हाजात, व तुताहिरोना बिहा मिन जमीइस सय्येआत, व तरफ़ओना बिहा इन्दका अअ्लद दराजात, व तुबल्लेगुना बिहा अक़सल ग़ायात, मिन जमीइल ख़ैराते, फ़िल हयाते व बअ्दल ममात।

6. हज़रत शैख़ अल्लामा अब्दुल हक़ मुहद्दिस देहलवी रहमतुल्लाहि अलैहि ने लिखा कि जो शख़्स सोते वक़्त चन्द बार इस दुरुद शरीफ़ को पढ़े और पढ़ते हुए सो जाए तो उसको ख़्वाब में रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब होगा। बहुत से बुज़ुर्गों का तजुर्बा है। और

शैख़ रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि ने भी इसको मुजर्रब लिखा है। दुरुद शरीफ़ यह है :–

अल्लाहुम्मा रब्बल हिल्ले वल ह़राम व रब्बल मशअ़रिल ह़रामे व रब्बल बैयतिल ह़रामे व रब्ब रुकने वल मुक़ाम अबलिग़ लेरुहे सय्येदिना व मौलाना मुह़म्मदिन मिन्नियस सलाम। वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

दरख़्त लगाने और खेती करने का सवाब

हदीस :– अनस बिन मालिक से मरवी है उन्होंने कहा कि फ़रमाया नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने कि जो मुसलमान भी कोई दरख़्त लगाएगा या कोई खेती करेगा तो उस दरख़्त या खेती से जितने परिन्दे या जितने इन्सान या चरिन्दे खा लेंगे वह सब उस मुसलमान की त़रफ़ से सदक़ा होगा।

फवाइद व मसाइल :– दरख़्तों के फल और खेतों के दाने आम तौर पर चरिन्दे और परिन्दे बल्कि बाज़ इन्सान भी खा लिया करते हैं। ज़ाहिर है कि उस दरख़्त से और खेतों के मालिक को नुक़सान होता है जिससे उसको तकलीफ़ होती है। मगर हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के इस इरशादे गिरामी से यह हिदायत की रौशनी मिलती है कि दरख़्त और खेत के मालिक को उससे नाराज़ नहीं होना चाहिये। और यह नहीं समझना चाहिये कि मेरे फल और खेत के दाने रायेगाँ और बरबाद हो गये। बल्कि उसको यह ईमान रखना चाहिये कि जितने फल परिन्दों और चरिन्दों ने खा लिए और जितने दाने चुग लिए या इन्सानों ने उसकी इजाज़त के बग़ैर खा लिए अगरचे इन बे इजाज़त खाने वालों ने चोरी का गुनाह अपने सर लिया मगर दरख़्त और खेत के मालिक को सदका करने का सवाब मिलेगा। लिहाजा उसको चाहिये कि अजरो सवाब मिलने की उम्मीद रखे और रंज व मलाल न रखे। बल्कि सब्र के साथ ख़ुदा का शुक्र अदा करे कि बग़ैर मेरे सदका देने के यह फल और दाने मेरी तरफ से सदका बन गये। और ख़ुदा से उम्मीद रखे कि मेरे फलों ओर दानों में यकीनन बरकत होगी। क्योंकि जिस माल में से स़दका़ दे दिया जाता है ज़रुर उस माल में बरकत हो जाया करती है। लिहाज़ा यक़ीन रखना चाहिये कि जिस दरख़्त और खेत में से चरिन्दे और परिन्दे और इन्सान व खा लेंगें तो अल्लाह तआ़ला ज़रुर उन

दरख़्त के फलों और खेत के दानों में बरकतें अता फ़रमायेगा।

2. इस हदीस से बाज़ उल्मा ने यह मसअ्ला निकाला है कि तमाम कमाईयों में से बेहतर हाथ की कारीगरी है और अक्सर उल्मा ने यह तहरीर फ़रमाया कि सब से अफ़ज़ल कमाई तिजारत है। लेकिन ज़्यादातर ह़दीसों से यही रौशनी मिलती है कि सब से अफ़ज़ल व आला कमाई हाथों की कारीगरी है। वल्लाहो तआला अअ्लम।

मरते ही जन्नत में दाख़िल हो जायेगा

हदीस :– हज़रत अ़ली रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैंने मिम्बर पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जो शख़्स हर नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़ेगा वह मरते ही जन्नत में दाख़िल हो जायेगा। और जो अपने बिस्तर पर लेटते वक़्त आयतल कुर्सी पढ़ लेगा तो अल्लाह तआ़ला उसके घर और उसके पड़ोसी के घर और उसके गिर्द के चन्द घरों को अमनो अमान अता फ़रमायेगा।

(मिश्कात जिल्द, 1 सफ़ा 89)

तबसरा :– सुब्हानल्लाह! आयतल कुर्सी पढ़ने के सवाब का क्या कहना ?वह अमल है कि अगर मकबूल हो जाए तो उस पर अ़मल करने वाले को मरते ही ख़ुदावन्द कुद्दूस अपने फ़ज़लो करम से दुख़ूले जन्नत की करामतों से सरफ़राज़ फ़रमा देगा। गौर कीजिए कि कितनी मुख़्तसर इ़बादत पर कितने अज़ीम सवाब का ख़ुदावन्द आ़लम वादा फ़रमा रहा है। यह उसका फ़ज़ले अज़ीम ही तो है। अल्लाहु अकबर।

बहर हाल ईमाने कामिल और एतिकादे रासिख़ के साथ इस अ़मल पर कारबन्द होकर इसकी मनफ़अ़तों और बरकतों से फ़ैज़याब होना हर मुसल्मान मर्द और औरत के लिए बहुत बडी सआ़दत है। ख़ुदावन्द करीम सब को अ़मल की तौफ़ीक अता फ़रमाये। आ़मीन।

अल्लाह तआ़ला की हिफ़ाज़त में :– एक ह़दीस में यह भी आया है कि हुज़ूर सय्यदे आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स सूरए मोमिन में से " हा मीम से इलैहिल मस़ीर" तक और आयतल कुर्सी सुबह़ को पढ़ ले तो शाम तक वह इन आयतों को पढ़ने के सबब से ख़ुदावन्द करीम की हिफ़ाज़त में रहेगा। और जो शाम को इन दोनों

आयतों को पढ़ ले तो वह सुबह तक अल्लाह तआला की हिफ़ाज़त में रहे।

खुलासा यह है कि आयतल कुर्सी को पढ़ना उसमें दीन व दुनिया के बहुत ज़्यादा फ़वाइद व मुनाफ़ेअ् हैं। लिहाज़ा हर मुसलमान को चाहिये कि इसको याद करे और बकसरत पढ़ा करे। ख़ास कर पाँचों नमाज़ों के बाद और बाद नमाज़े फजर, व बाद नमाज़े मग़रिब इस को ज़रुर पढ़ लिया करो। और जब सोने के लिए बिस्तर पर लेटे तो एक मरतबा ज़रुर पढ़ ले। इन्शा अल्लाह तआला वह और उसके पडोसी चोरों से अमनो अमान में रहेंगे। और उसको बहुत ज़्यादा बरकतें हासिल होगी।

हदीसुल ग़ार

हदीस :– हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा रावी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन आदमी सफ़र में पैदल चल रहें थे। कि बारिश होने लगी। तो यह लोग एक ग़ार में घुस गये तो पहाड़ की एक चट्टान गिर कर ग़ार के मुँह पर आ गई। और उन लोगो को ढाँप लिया। तो उन लोगो ने आपस में एक दूसरे से कहा कि तुम लोग ग़ौर करो कि अगर तुम ने कोई नेक अमल किया हो तो उसको वसीला बना कर दुआ माँगो। शायद अल्लाह तआला ग़ार का मुँह खोल दे। और हम लोंगो को निजात मिल जाए। तो उन में से एक ने कहा कि ऐ अल्लाह मेरे माँ बाप बहुत बूढ़े थे और मेरे छोटे छोटे चन्द बच्चे भी थे और मैं दिन भर मवेशी चराता था और शाम को जब घर लौटता और दूध दूहता तो अपने माँ बाप को अपने बच्चों से पहले पिलाता था। एक दिन मुझे घर आने में कुछ देर हो गई और रात को आया तो मेरे वालिदैन सो गये थे। तो मै दूध लेकर उन दोनों के सरहाने खड़ा हो गया और उन दोनों का जगाना पसन्द नही किया और मेरे बच्चे भूक से बिलक बिलक कर मेरे क़दमों पर लोटते रहे मगर मैंने अपने माँ बाप से पहले उनको दूध पिलाना गवारा नही किया। यहाँ तक कि सुबह हो गई। तो या अल्लाह! अगर मैंने उस अमल को तेरी रज़ा के लिए किया हो तो हमारे लिए ग़ार के मुँह को खोल दे कि हम लोग आसमान को देखने लगें। तो अल्लाह तआला ने उनके लिए ग़ार के मुँह को इतना खोल दिया कि वह लोग आसमान को देखने लगे।

दूसरे आदमी ने यूँ दुआ माँगी कि या अल्लाह ! तुझको मालूम है कि मैं अपने चचा की लड़की से मुहब्बत करता था। ऐसी मुहब्बत जो मर्दो को

औरतों से हुआ करती है। तो मैं उससे उसकी ज़ात का तलबगार हुआ। उस पर उसने मुझ से एक सौ दीनार का मुतालबा किया। तो मैंने कोशिश करके एक सौ दीनार जमा किया। और उससे (तन्हाई में) मुलाक़ात की। लेंकिन जब मैं उसके दोनो पैरों के दरमियान बैठा (और बुराई का इरादा किया।) तो उसने कहा कि ऐ अल्लाह के बन्दे अल्लाह से डर और मेरी मुहर(बुकारत) को न तोड़। तो मै उठ कर खड़ा हो गया। ऐ अल्लाह अगर तेरे इल्म में मैंने यह तेरी रज़ा के लिए किया था तो इस ग़ार को हमारे लिए खोल दे। तो कुछ और ज़्यादा खुल गया।

तीसरे आदमी ने इस तरह दुआ माँगी कि ऐ अल्लाह ! मैंने एक मज़ूदर रखा था और फ़िर्क़(सोलह रतल) ग़ल्ला मज़दूरी ठहराई थी। उसने जब अपना काम पूरा कर लिया तो मुझ से अपना हक़ तलब किया और मैंने उसकी मज़दूरी पेश करदी। मगर वह उसको छोड़ कर कहीं चला गया। तौ मैंने उसके उस ग़ल्ले से काश्त करना शुरु कर दिया। यहाँ तक कि मैंने उसकी पैदावार से एक गाय और उसका एक चरवाहा खरीद लिया। फिर वह एक मुद्दत के बाद आया और अपना हक़ तलब किया तो मैंने कहा कि इस गाय को और इस चरवाहे को तू ले जा। तो उसने कहा कि ख़ुदा से डर और मुझ से मज़ाक मत कर। तो मैनें कहा कि मैं मज़ाक नहीं कर रहा हूँ। यह तुम्हारी मज़दूरी ही के ग़ल्ले की काश्त करके मैंने इतना बढ़ाया कि इससे एक गाय और एक गुलाम ख़रीदा है। तो वह मजदूर गाय और उसके चरवाहे को लेकर ख़ुश हो गया। और रवाना हो गया। ऐ अल्लाह अगर तेरे इल्म में मैंने यह काम तेरी रज़ा तलब करने के लिए किया था तो ग़ार का बाक़ी हिस्सा भी हम लोगों के लिए खोल दे। चुनाँचे पूरा ग़ार खुल गया। और तीनों सलामती के साथ बाहर निकल आये।।

तबसरा :– यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में कई जगहों पर है। कहीं मुख़्तसर कहीं लम्बी मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के साथ मज़कूर हुई। मगर सब का हासिल वही है जो मिशकात शरीफ़ से हम ने नक़ल किया है। इस हदीस से मालूम हुआ कि माँ–बाप की ख़िदमत और उनके साथ हुसने सुलूक और ख़ुदा के ख़ौफ़ से गुनाहों को छोड़ देना और मज़दूर की मज़दूरी को इस तरह अदा करना कि मज़दूर का दिल ख़ुश हो जाए। और उसकी मज़दूरी की हिफ़ाज़त करके उसको बढ़ा देना यह सब वह नेकियाँ हैं कि

आख़िरत में तो इनका अजरे अज़ीम ज़रुर ही मिलेगा मगर दुनिया में भी इस का समरा व फल मिलता है। कि इन्ही नेकियों के तुफ़ैल में इन तीनों की दुआयें मक़बूल हो गईं। और ना उम्मीदी के बावजूद उन तीनों की सलामती और निजात का सामान अल्लाह तआला ने अपने फ़जलो करम से इस तरह कर दिया कि यह लोग उसको सोच भी नहीं सकते थे।

इस हदीस से मालूम हुआ कि आमाले सॉलेहा को वसीला बनाकर दुआओं को माँगना जाइज़ है। जब आमाले सालेहा को दुआ में वसीला बनाना साबित हो गया. ख्वाह दुआ माँगने वाले के आमाले सॉलेहा हों या दूसरे बुजुर्गों के आमाले सालेहा हों। हर एक को दुआ में वसीला बना सकते हैं। मसलन यूँ कहें कि या अल्लाह! मेरी फ़लाँ नेकी के वसीले से मेरी मुसीबत को दूर फ़रमा दे। या यूँ दुआ माँगे कि या अल्लाह! हुज़ूर ग़ौसे पाक की इबादतों के वसीले से मेरी मुसीबत को टाल दे। दोनो तरीकों से दुआ माँगी जा सकती है।

कुरआन मजीद में है " वबतग़ू इलैहिल वसीलता" यानी अल्लाह तआला के दरबार में तुम लोग वसीला तलब करो। इस आयत ने फ़ैसला कर दिया कि अल्लाह तआला के दरबार में दुआ माँगने वाला अपने आमाले सालेहा को वसीला बनायें। या बुजुर्गों के आमाले सालेहा को वसीला बनाये। या अल्लाह तआला के मक़बूल बन्दों की ज़ात को वसीला बनाये सब जाइज़ और सब दुआ की मकबूलियत का सबब है। जो कुरआन व हदीस और सल्फ़ व सालेहीन के अमल से साबित है। और यही अहले सुन्नत व जमाअत का मज़हब है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

जन्नत तलवारों के साये में

हदीस :– हज़रत अबू मूसा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने कहा कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यक़ीनन जन्नत के दरवाजे तलवारों के साये में हैं। यह सुनकर एक आदमी जो फ़रसूदा हाल था। खड़ा हो गया और कहा कि ऐ अबू मूसा ! क्या आपने खुद इस हदीस को रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से सुना है ? तो उन्होनें कहा कि हाँ। तो उस (फरसूदा हाल मुसलमान) ने सलाम किया। फिर अपनी तलवार की नियाम को तोड़ कर फेंक दिया और तलवार लेकर दुश्मनों (काफ़िरों) पर ह़मला आवर हुआ। और लड़ता रहा यहाँ तक कि शहीद हो गया।

तबसरा :–इस ह़दीस से पता चला कि अगले मुसलमानों में किस क़दर ईमानी जोशे,जिहाद और कितना जज़्बए शहादत, और किस दरजा जन्नत का शौक़ था। कि फ़रमाने रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम सुनकर वह अ़मल के लिए बेताब हो गये। और शहादत के लिए इस तरह तैयार हो गये कि अपनी तलवार की नियाम को तोड़ कर फेंक दिया। कि मेरी तलवार को नियाम की ज़रुरत ही न रही। क्योंकि मुझे अब शहीद होकर जन्नत में ही पहुँच जाना है। सुब्ह़ानल्लाह ! क्यों न हो कि उन्हीं ईमानो अ़मल के मुजस्समों और शम्ऐ रिसालत के परवानों की इन कुरबानियों और जाँ बाज़ियों ही का जलवा है कि आज तक इस्लाम का दरख़्त फल फूल रहा है। मगर अफ़सोस आज कल के मुसलमानों में यह ईमानी जज़्बए फना, और जोशे जिहाद मादूम हो चुका है। यही वजह है कि अ़रबो अ़जम में हर जगह मुसलमानों के उरुज का परचम सरनिगों और उनके इकबाल का सूरज गिरहन की ज़द में है। अफ़सोस " फ़इलल्लाहिल मुशतका व इलैहित तवक्कुल।

उम्मे सलीत को चादर क्यों मिली?

हदीस :– हज़रते स़ालबा बिन अबी मालिक रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु कहते हैं कि एक मरतबा हज़रत अमीरुल मोमिनीन उ़मर फ़ारुके आ़जम रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु अन्सार की औरतो में चादरें तकसीम कर रहे थें। तो एक चादर जो बहुत ही अच्छी और ख़ूबसूरत थी बच रही। तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ अमीरुल मोमिनीन! यह चादर आप अपनी बीवी उम्मे कुलसूम बिन्ते अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को दे दीजिए। क्योंकि वह रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की साहिब ज़ादी(नवासी) हैं तो अमीरुल मोमिनीन ने फ़रमाया कि नहीं। इस कमली को पाने की हक़दार उम्मे सलीत अन्स़ारिया है। उसने हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से बैअ़त भी की थी। और जंगे ओहद के दिन वह अपनी पीठ पर मश्क उठा उठा कर मुजाहिदीन को पानी पिला रही थीं।

तशरीह :– हज़रत उम्मे कुलसूम रद़ियल्लाहु तआला अन्हा ह़ज़रत अ़ली रद़ियल्लाहु तआला अन्हु की साहिबजादी हैं। जो हज़रते फ़ात़िमा रद़ियल्लाहु तआला अन्हा के बतने पाक से हैं। इस लिए हज़रत उम्मे कुलसूम रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ह़क़ीक़ी नवासी है।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उ़मर रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु को बड़ी तमन्ना थी कि खानदाने अहले बैत से मेरी रिश्ता दारी हो जाए। तांकि दोनों जहान में मुझे शरफ़ ह़ासिल हो जाए। चुनाँचे अपनी इस तमन्ना को आपने हज़रत अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु के दरबार में पेश फ़रमाया। और हजरत अ़ली रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने इस दरख़्वास्त को मन्जूर फ़रमाते हुए अपनी साहिब ज़ादी हज़रत उम्मे कुलसूम रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़नहा का अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से निकाह कर दिया। चुनाँचे हज़रत उ़मर रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के फ़रजन्द हज़रत ज़ैद बिन उमर हज़रते उम्मे कुलसूम ही के शिकमे मुबारक से पैदा हुए थे।

फ़वाइद व मसाइल :–

हदीस मज़कूर से चन्द मसाइल मालूम हुए।

1. हज़रत उ़मर रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु का ख़ानदाने नुबुव्वत से रिश्ता करने के लिए ख़्वाहिशमन्द ओर मुतामन्नी होना यह दलील है कि

हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु की निगाह में ख़ानदाने अहले बैत की कितनी इज़्ज़त व अज़मत थी कि वह इस ख़ानदान से रिश्ता दारी के लिए अपने लिए दोनों जहान में बाइसे सरफ़राज़ी होने पर यकीन रखते थे।

2. यह भी मालूम हुआ कि हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु भी हज़रते उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु से कितनी मुहब्बत व अक़ीदत रखते थे कि हज़रते उमर रदियल्लाहु की उम्र ज़्यादा होने के बाद अपनी कमसिन साहिबजादी का उनके साथ निकाह कर दिया। यह तारीख़े इस्लाम का अहम वाक़िआ शियाओं के लिए ताज़ियानए इबरत है। जो हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु को ग़ासिब व ज़ालिम बल्कि मुरतद व बे ईमान कह कर उन की तौहीन व इहानत से रु सियाह होते रहते हैं। कोई उन ज़ालिमों से पूछे कि तुम लोग अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु को क्या कहोगे ? जिन्होनें बक़ौल तुम्हारे एक मुरतद व बेईमान बूढ़े से अपनी कमसिन साहिबज़ादी का निकाह कर दिया।

3. हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के अदल व इन्साफ़ परवरी की तजल्ली भी इस हदीस से निहायत ताबानी के साथ जलवा रेज़ होती है। आप ने निहायत उम्दा व नफ़ीस चादर अन्सार की एक ग़रीब औरत को उसकी दीनी ख़िदमात की बिना पर अता फ़रमाई और लोगों के इसरार के बावजूद आपने उम्मे कुलसूम को चादर नहीं दी। जो आपकी बीवी और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नवासी थीं। इससे साफ़ जाहिर है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के अद्ल के सामने क़राबत और खानदान व नसब का कोई पास व लिहाज़ नही था। इसलिए आपका एक लकब अअ़दलुल असहाब (सहाबा में सबसे बढ़कर आदिल) भी है।

इस्लामी लश्कर का समुन्दरी जिहाद

हदीस :– उम्मे ह़राम बिन्ते मुलह़ान रदियल्लाहु तआ़ला अन्हा कहती है कि नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम सो रहे थे। फिर मुस्कुराते हुए बेदार हुए तो मैंने अ़र्ज़ किया कि आप किस बात से हँसे ? तो आप ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग मेरे सामने पेश किये गये कि वह इस सब्ज़ समुन्द्र में किश्तियों पर इस तरह बैठे हुए हैं जैसे बादशाह अपने तख़्तों पर बैठा करते हैं। उम्मे ह़राम ने कहा कि आप दुआ फ़रमा दीजिए कि मुझ को अल्लाह तआ़ला उन मुजाहिदीन में से बना दें। तो हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने दुआ़ फ़रमा दी। फिर हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम सो गये और हँसते हुए जागे। और वही फ़रमाया जो पहले फ़रमाया था। तो उम्मे ह़राम ने कहा कि आप दुआ़ फ़रमा दीजिए कि मुझको उन मुजाहिदीन में से बना दे। तो आपने फ़रमाया कि तू इससे पहले वाले मुजाहिदीन के लश्कर में है। इसके बाद सबसे पहला जो मुसलमानों का लश्कर समुन्द्री जिहाद में रवाना हुआ तो उसमें उम्मे ह़राम अपने शौहर हज़रत उबादा बिन सामित के साथ गईं। और उस जिहाद से वापस आकर मुजाहिदीन शाम में उतरे तो उम्मे ह़राम ऊँट से गिर कर वफ़ात पा गईं।

फ़वाइद व मसाइल :– सबसे पहला लश्कर जो समुन्द्री जिहाद में गया वह हज़रत उ़स्मान ग़नी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में रवाना हुआ और उस जिहाद का सारा इन्तिज़ाम हज़रत अमीरे मुआ़विया रदियल्लाहु तआला अ़न्हु ने फ़रमाया था। जब कि वह ह़ज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु की तरफ़ से शाम के गवर्नर थे। इस जिहाद मे उम्मे ह़राम रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा अपने शौहर हज़रत उबादा बिन सामित रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु के साथ गईं। और ऊँट से गिर कर वफ़ात पा गईं। फिर दूसरा समुन्द्री जिहाद 51 से 52 हिजरी में हज़रत अमीर मुआ़विया रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने उस वक्त किया जब वह ख़ुद ख़लीफ़ा बन चुके थे। यह मुजाहिदीन कुस्तुनतुनया पर ह़मला आवर हुए। और उस जिहाद में हज़रत अबू अय्यूब अन्सारी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वफ़ात इस शान से हुई कि आप बीमार थे तो आपने मुजाहिदीन से फ़रमाया कि

तुम लोग जब शहर का मुहासरा करो और मेरी वफ़ात हो जाए तो मेरी लाश को उठाकर मुजाहिदीन की सफ़ में रखते चलो और आगे बढ़ते चलो। यहाँ तक कि मुझे मुजाहिदीन के क़दमों के नीचे दफ़न करना चुनाँचे कुस्तुनतुनिया की दीवार शहर के पास तक मुजाहिदीन उनकी लाश मुबारक को उठाकर बराबर आगे बढ़ते रहे और दीवारे शहर की जड़ में आपको दफन कर दिया। आज भी आपकी क़ब्रे मुबारक वहीं मौजूद है। और मरीज़ों को आपकी क़ब्र से शिफ़ा मिलती है।

इन दोनों समुन्द्री जिहादों के मुजाहिदीन के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने मग़फ़िरत और जन्नत की बशारत दी।

" मेरी उम्मत का पहला लश्कर जो समुन्द्री जिहाद करेगा। इसके लिए जन्नत वाजिब हो जाएगी। यानी पहला लश्कर जो कैसर के शहर पर जिहाद करेगा उसकी मग़फ़िरत हो जायगी।

दीन पर अ़मल हाथ में अँगारे लेने के बराबर

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि उन्होंने ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अ़नक़रीब लोगों पर ऐसा ज़माना आ जायेगा कि उस ज़माने में दीन पर सब्र करने वाला हाथ में आग का अँगारा पकड़ने वाले के मिस्ल होगा।

तबसरा :– 1. मज़कूरा बाला हदीस का मतलब यह है कि बे दीनी और बद दीनी का ऐसा दौर दौरा और दुश्मनाने दीन का ऐसा जबरदस्त तसल्लुत और ग़ल्बा होगा कि दीन पर अ़मल करना उतना ही मुश्किल होगा जितना कि आग का अँगारा हाथ पर लेना मुश्किल होता है। इससे मालूम हुआ कि आज का वक़्त अ़मल करने के लिए ग़नीमत है कि इस जमाने में दीन पर अ़मल करने में कोई मुश्किल नहीं है। लेकिन इस के बाद ऐसा ज़माना आने वाला है कि दीन पर अ़मल करना बेहद दुश्वार हो जायेगा। खुदावन्द करीम उस वक़्त के आने से पहले ही हम लोगों का ख़ातमा बिल ख़ैर अ़ता फ़रमाये आमीन।

2. इस हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एक ग़ैब की ख़बर दी है कि जो ज़रुर होकर रहेगी। लिहाज़ा हर

मुसलमान के लिए वाजिबुल ईमान और लाज़िमुल अमल है कि इस ख़बर की सदाक़त पर ईमाने कामिल रखते हुए उस मुश्किल दौर का इन्तिजार करता रहे और उसके फ़ितनों से खुदा की पनाह तलब करता रहे।

3. जिन जिन हदीसों में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ग़ैब की ख़बर दी हैं वह सब आप के मोजिज़ात हैं। और यह दलील है कि खुदावन्द कुद्दूस ने हुज़ूर खातमुन्नबीयीन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को उ़लूमे ग़ैबिया का ख़ज़ाना अता फ़रमाया है। वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

मिट्टी में मिल जाने वाली नाक

हदीस् :– ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु नाक़िल हैं उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल गई, उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल गई,उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल गई, तो किसी ने कहा वह कौन शख़्स है ? या रसूलल्लाह! तो आपने फ़रमाया कि वह शख़्स जिसने अपने वालिदैन को बुढ़ापे की हालत में पाया ख़्वाह एक को या दोनों को, फिर वह(वालिदैन की ख़िदमत करके) जन्नत में दाख़िल नहीं हुआ।

शरहे हदीस् :– अरबी के मुहावरे में " नाक मिट्टी में मिलने" का मत़लब है " ज़लील व ख़्वार होना और ना मुराद होना " हदीस् मज़कूर का खुलासा मत़लब यह है कि एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने सहाबा किराम के मजमअ़ में तीन मरतबा फ़रमाया कि उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल गई यानी वह शख़्स ज़लील व ख़्वार हो गया यह सुनकर किसी सहाबी ने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! वह कौन बदनसीब आदमी है जिसके बारे में तीन मरतबा आपने इरशाद फ़रमाया कि उसकी नाक मिट्टी में मिल गई? तो आपने फ़रमाया कि वह शख़्स जिसने अपने माँ–बाप को या उन में से एक को बुढ़ापे की मन्ज़िल में पाया जबकि वह ख़िदमत और नेक सुलूक के लिए बहुत मोहताज थे उस शख़्स पर लाज़िम था कि वह अपने वालिदैन की ज़्यादा से ज़्यादा ख़िदमत और उसके साथ अच्छा बरताव करके जन्नती बन जाता। मगर उस शख़्स ने इस सुनहरे मौक़ा को ज़ाए कर दिया। और माँ बाप के साथ अच्छा सुलूक नही किया तो वह शख़्स यक़ीनन खाएब व खासिर और ना मुराद हो गया। और दुनिया

व आख़िरत में अपने माथे पर कलंक का टीका लगवा कर दोनों जहान में ज़लील व ख़्वार हो गया।

शारेहीने हदीस ने फ़रमाया कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम का जुमला " रग़िम अन्फ़हू" जुमला खबरिया भी हो सकता है और जुमला दुआइया भी। पहली सूरत में इसका तर्जुमा यह होगा कि " उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल गई। और दूसरी सूरत में इस का तर्जुमा यह होगा कि " उस शख़्स की नाक मिट्टी में मिल जाए" ।

फ़वाइद व मसाइल :– माँ–बाप के साथ हर मामले में भलाई और उनके साथ अच्छा सुलूक करना हर मुसलमान मर्द औरत पर लाज़िम है। और माँ–बाप की नाफ़रमानी और उनकी ईज़ा रसानी गुनाहे कबीरा है। चुनाँचे कुरआने मजीद में खुदावन्द कुद्दूस जल्ला जलालुहू का फ़रमान है।

"" और मां–बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। अगर तेरे सामने उनमें से एक या दोनों बुढ़ापे को पहुँच जायें तो उन से "उफ़" न कहना। और न उन्हें झिड़कना, और उनसे ताज़ीम की बात करना, और उन दोनों के लिए आजिज़ी का बाज़ू नरम दिली के साथ बिछाये रखना। और उन दोनों के लिए यूँ दुआ करना कि ऐ मेरे रब! तू इन दोनों पर रहम फ़रमा जैसा कि इन दोनों ने मुझे बचपन में पाला था"(कुरआन)

हदीस मज़कूर और आयते करीमा के हर हर लफ्ज़ से वालिदैन की इज़्ज़त व अज़मत और उनके एज़ाज व इकराम का डंका बज रहा है। और बच्चों के ऊपर माँ बाप का कितना बड़ा हक है इस हदीस और आयते करीमा ने इसका ऐसा नक्शा खींचा है कि जिस के तसव्वुर से हर मुसलमान मर्द व औरत के दिल व दिमाग़ में माँ–बाप की ताज़ीम और इन दोनों के साथ हुस्ने सुलूक और अच्छे बरताव का आफ़ताब तुलूअ़ हो जाता है।

माँ–बाप को मारना, धक्के देना या कोई ईज़ा पहुँचाना यह तो बड़ी बात है। हद हो गई कि माँ बाप की कोई बात सुनकर अगर कोई सिर्फ़ "उफ़" या "हूँ" या " हश" कह दे। तो वह भी गुनाहे कबीरा के ऐसे गन्दे और घिनौने कीचड़ में गिर पड़ा कि बिग़ैर तौबा किये और बिग़ैर माँ बाप से माफ़ कराये। वह उस गुनाह की निजासत से हरगिज़ हरगिज़ पाक नहीं हो सकता।

तौबा नऊज़ुबिल्लाह ! आजकल औलाद अपने माँ–बाप के साथ जो बद सुलूकियाँ और ईज़ा रसानियाँ कर रही हैं। उन्हें सोचना चाहिये कि वह

कुरआन व हदीस के उन मुक़द्दस फ़रमानों के ख़िलाफ़ कितना अज़ीम अलमे बग़ावत बुलन्द किये हुए हैं और मुस्लिम मुआशरे के हरे भरे फले फूले ख़ूबसूरत और ख़ुशनुमा दरख़्त पर किस जाहिलाना और ज़ालिमाना तौर पर कुल्हाड़ी चला रहे हैं और अपनी दुनिया आख़िरत को तबाह व ग़ारत करके दोनों जहान में क़हर क़ह्हार और ग़ज़बे जब्बार के सज़ावार बने हुए हैं।

लिल्लाह ! आप अपने वालिदैन ख़ुसूसन बूढ़ें माँ बाप की ज़्यादा से ज़्यादा और अच्छी से अच्छी तरह खिदमत करके अपने जन्नती बनने का सामान कीजिए। और ख़ुदा नख़्वास्ता अगर अब तक आप से माँ बाप की ख़िदमत में कोताही होती रही है तो फ़ौरन उस गुनाहे कबीरा से सच्ची तौबा करके ओर अपने वालिदैन से माफ़ी तलब करके इस गुनाहे कबीरा की गन्दगी से पाक व साफ़ बन जाईये। ताकि आप ख़ुदावन्द जुल जलाल के ग़ज़ब से निजात पाकर उसकी रज़ा और ख़ुशनूदी की दौलत ला ज़वाल से माला माल हो जाएं। तिरमिज़ी शरीफ़ की हदीस् है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया :-

"बाप की ख़ुशनूदी में ख़ुदा की रज़ा है और बाप की नाराज़गी में ख़ुदा का ग़ज़ब है"।

मौला तआला हर मुसलमान को अपने वालिदैन की रज़ा जोई और ख़ुशनूदी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

दिन भर में एक सौ हज का सवाब

हदीस :- हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा कहते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो नेकू कार लड़का अपने वालिदैन को शफ़कत की नज़र से देखेगा तो अल्लाह तआला उसको हर नजर के बदले में उसके लिए एक हज मकबूल(का सवाब) लिखेगा। तो लोगों ने कहा कि अगरचे वह एक दिन में एक सौ मर्तबा देखे। तो फ़रमाया कि हाँ अल्लाह बहुत बड़ा है। अल्लाह बहुत पाक है।

शरहे हदीस :- इस हदीस को इमाम बयहक़ी ने शोअबुल ईमान में नक़ल फ़रमाया है इस हदीस का हासिले मतलब यह है कि जो मुसलमान ख़्वाह लड़का हो या लड़की छोटा हो या बड़ा। अगर अपने वालिदैन का फ़रमाँ बरदार और ख़िदमत गुजार हो तो वह जब भी और जहाँ भी और

जिस वक्त भी अपने माँ बाप को शफ़क़त की नज़र से देखेगा। तो अल्लाह तआ़ला उसकी हर नज़र के बदले में उसको एक हज़ मक़बूल का सवाब अ़ता फ़रमायेगा। यह इरशादे नबवी सुनकर सहाबा किराम को इस सवाब की कसरत पर तअ़ज्जुब हुआ। और उन्होंने दरयाफ़्त किया कि या रसूलल्लाह! जब हर नज़र के बदले में उसको एक हजे मकबूल का सवाब मिलेगा तो अगर कोई शख़्स अपने वालिदैन को दिन भर में एक सौ मरतबा रहमत की नज़र से देखे तो क्या इस हिसाब से उसको एक सौ हज मक़बूल का सवाब मिलेगा? तो फ़रमाया कि हाँ। उसको एक सौ हजे मक़बूल का सवाब मिलेगा। और तुम लोग तअ़ज्जुब क्यों करते हो ? अल्लाह तआला बहुत बड़ा है उसके ख़ज़ानों में कोई कमी नहीं है वह कितना ही ज़्यादा से ज़्यादा और बड़े से बड़ा सवाब अ़ता फ़रमाये उसके लिए कुछ दुश्वार नहीं है। क्योंकि वह बहुत बड़ा है। और कितना ही ज़्यादा से ज़्यादा और बड़े से बड़ा सवाब हो अल्लाह तआला उसको देने से आजिज़ नहीं हैं। क्योंकि वह आजिज़ व क़ासिर होने से पाक है। लिहाज़ा वह छोटे से छोटे अमल पर भी बड़े से बड़ा सवाब अता फ़रमा सकता है। इस लिए दिन भर में एक सौ मरतबा देखने पर एक सौ हज मकबूल का सवाब अता फ़रमाये तो यह उसके लिए न दुश्वार है न काबिले तअ़ज्जुब। क्योंकि वह अकबर यानी सब से बड़ा और अतयब है यानी हर क़िस्म की आजिज़ी और कोताही से पाक है।

तबसरा : हदीसों में इस क़िस्म के छोटे छोटे दूसरे आमाल का भी ज़िक्र है जिस पर अल्लाह अज़्ज़वजल के महबूब सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने हज का सवाब मिलने की बशारत दी है। चुनाँचे एक हदीस में है कि जो शख़्स फजर की नमाज़ जमाअ़त से पढ़कर अपने मुसल्ला पर बैठा रहे और ज़िक्रे इलाही में मश्गूल रहे। यहाँ तक कि जब आफ़ताब बुलन्द हो जाए तो वह नमाज़े इश्राक़ पढ़कर मस्जिद से निकले। तो अल्लाह तआला उसको एक हज और एक उमरा का मुकम्मल सवाब अता फ़रमायेगा।

इस हदीस पर बज़ाहिर एक मोतअ़ज्जिबाना सवाल पैदा होता है कि जब माँ बाप को शफ़क़त की नज़र से देख लेने पर एक मक़बूल हज का सवाब मिल जाता है तो इस ऐतिबार से वालिदैन को नज़रे रहमत से देख लेना। और बैतुल्लाह शरीफ़ जाकर हज करना यह दोनों अमल बराबर हो गये। तो फिर बैतुल्लाह के तवील सफर और वहाँ जाकर तवाफ़े काबा और

सफ़ा मरवा की सई अराफ़ात में दिन भर ठहरने मशक्कत उठाने दौलत ख़र्च करने की ज़रुरत ही क्या है? बस वालिदैन को नज़रे रहमत से देख लिया। और हज का सवाब मिल जाएगा।

तो इस सवाल का जवाब यह है कि एक है अ़मल और एक है अ़मल का सवाब अगर किसी छोटे अमल पर खुदावन्द तआ़ला किसी बड़े अमल का सवाब अता फ़रमाये तो इससे यह लाज़िम नहीं आता कि यह दोनों अ़मल दर्जे में बराबर हो गये। यह तो खुदावन्द करीम का फज़्लो करम कहलायेगा कि उसने अपनी नवाज़िश से छोटे अ़मल पर बड़े अमल का सवाब अ़ता फरमा दिया। वरना कहाँ बड़े अमल की फ़ज़ीलत और कहाँ छोटे अ़मल का दर्जा? मिसाल के तौर पर यूँ समझिये कि अगर किसी बादशाह ने अपने वफ़ादार और जाँ निसार जनरल को जिसने अपनी जान को हथेली पर रखकर जंग की और फतह हासिल की, बतौर इनाम के एक गाँव की जागीर अता कर दी। और थोड़ी ही देर बाद बादशाह ने एक शायर को कोई अच्छा शेर सुनकर उसको भी एक गाँव की जागीर दे दी। तो हालाँकि बादशाह ने दोनो को बराबर ही इन्आ़म दिया। लेकिन कौन कह सकता है कि जनरल का कारनामा और शायर का कारनामा दोनों बराबर हो गये। हर शख़्स जानता है कि जनरल का मरतबा दरबारे शाही में जितना बुलन्द व बाला है शायर का मरतबा उसके हजारवी हिस्सा के बराबर भी नहीं। कहाँ एक जनरल ? और कहाँ एक शायर?

इसी तरह समझ लीजिए कि अगरचे हजे बैतुल्लाह करने वाले और वालिदैन को शफ़कत की नज़र से देखने वाले दोनों को अल्लाह तआ़ला बराबर ही सवाब अता फ़रमाता है मगर हज बैतुल्लाह करने वाले का जो अज़ीम मरतबा खुदावन्द कुद्दूस के दरबार में है उसका हज़ारवें हिस्से के बराबर भी वालिदैन को नज़रे रहमत से देखने वाले का नहीं।

बहर हाल खुलासा यह है कि सवाब के बराबर होने से अमल का बराबर हो जाना कोई ज़रूरी नहीं है।अ़मल और चीज़ है और सवाब एक दूसरी चीज़ है।

इसके अलावा यह बात भी मलहूज़े ख़ातिर रहे कि दो चीज़ो में बराबरी दो हैसियतों से हुआ करती हैं। कभी कम्मियत(नाप तौल) में बराबरी हुआ करती है और कभी कैफ़ियत (रुतबा व क़ीमत) में बराबरी हुआ करती है। दो चीज़े अगर नाप तौल में बराबर हों। तो उससे यह लाज़िम नहीं आता

कि वह दोनों चीज़े कैफियत यानी रुतबे और क़ीमत में भी बराबर हो जाऐं। मसलन एक सेर सत्तू ओर एक सेर हलवा कम्मियत यानी वज़न और मिक़दार में तो दोनो बराबर हैं मगर कैफ़ियत यानी लज़्ज़त और क़ीमत में बराबर नहीं। इसी तरह एक सेर लोहा और एक सेर सोना कम्मियत यानी वज़न और मिक़दार में तो दोनों बराबर हैं मगर कैफ़ियत यानी चमक दमक और रुतबा में हरगिज़ हरगिज़ दोनों बराबर नहीं हो सकते। कहाँ लोहा? और कहाँ सोना? इसी तरह बैतुल्लाह शरीफ़ के हज का सवाब वालिदैन को नज़रे रहमत से देखने का सवाब अगरचे कम्मियत ओर मिक़दार के लिहाज़ से तो बराबर है। लेकिन कैफ़ियत यानी दरजा व फ़ज़ीलत के लिहाज़ यक़ीनन दोनों में बड़ा फ़र्क़ अज़ीम है। लिहाज़ा इन दोनों का सवाब एक हैसियत से बराबर है और एक हैसियत से बराबर नहीं इस लिए यह दोनों अमल कभी हरगिज़ हरगिज़ हैसियत से बराबर नहीं हो सकते।

बहर हाल वालिदैन को मुहब्बत व शफ़क़त की नज़र से देखना अगरचे हर हैसियत से हजे काबा के बराबर नहीं मगर यही क्या कम है कि ख़ुदावन्द करीम इस मामूली से अमल से ख़ुश होकर अपने फ़ज़्ल व करम से हज का सवाब अता फ़रमाता है। लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वह अपने वालिदैन को कभी और किसी वक़्त भी हरगिज़ हरगिज़ नफ़रत व हिक़ारत की नज़रों से न देखे। बल्कि हमेशा उनको मुहब्बत व अक़ीदत और रहमत व शफ़क़त की निगाहों से देखा करे। और हर नज़रे रहमत पर एक हज का सवाब हासिल करता रहे। और फ़लाहे दारैन की सआदतों से बहरामन्द व सरफ़राज़ होता रहे। वल्लाहु तआला अअ़लम।

दुनिया ही में गुनाह का अज़ाब

हदीस :– हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तमाम गुनाहों में से जिसको अल्लाह तआला चाहता है बख़्श देता है बजुज़ वालिदैन की ईज़ा रसानी के क्योंकि इस गुनाह करने वाले को अल्लाह तआला उसकी मौत से पहले उसकी ज़िन्दगी में ही अज़ाब दे दिया करता है। (मिशकात ,जिल्द, 1 सफ़ा 421)

शरहे हदीस :– दुनिया दारुल अमल यानी अमल का घर है और अख़िरत दारुल जज़ा यानी बदले का घर है। अल्लाह तआला का वादा है कि वह हर नेकी का सवाब और गुनाह का अज़ाब आख़िरत में देगा। मगर वह बड़ा ग़फ़ूरुर रहीम है। वह बन्दों के गुनाहों में जिस गुनाह को बख़्शना चाहता है बख़्श देता है। और आख़िरत में उस गुनाह पर बन्दों को कोई अज़ाब नहीं देगा मगर माँ बाप की नाफ़रमानी और उनकी ईज़ा रसानी वह ख़तरनाक गुनाहे कबीरा है कि अल्लाह तआला उसको माफ़ नहीं फ़रमाता बल्कि उस पर इस क़दर ग़ज़ब व जलाल का इज़हार फ़रमाता है कि सिर्फ़ आख़िरत ही में नहीं बल्कि इस गुनाहगार को उसकी मौत से पहले दुनयवी ज़िन्दगी में ही अज़ाब के अन्दर गिरफ़्तार फ़रमा देता है।

चुनाँचे बारहा का तुर्जबा है कि वालिदैन के सताने वालों का बहुत बुरा अन्जाम होता है। और यह लोग अपनी दुनयवी ज़िन्दगी ही में तरह तरह की इबरतनाक अज़ाबों में गिरफ़तार हो गये है। बल्कि ऐसा भी देखने में आया हे कि वालिदैन के सताने वालों को ख़ुद उन की औलाद ने ठीक उसी तरह सताया जिस जिस तरह उन लोगों ने अपने माँ बाप को दुख दिया था।

बहरहाल वालिदैन की ईज़ा रसानी और ना फ़रमानी इस लिहाज़ से दूसरे कबीरा गुनाहों से ज़्यादा हौलनाक और बड़ा गुनाह है कि दूसरे कबीरा गुनाहों को तो ख़ुदावन्द करीम मुआफ़ भी फ़रमा देता है और बाज़ गुनाहों पर सिर्फ़ आख़िरत में अज़ाब देता है मगर वालिदैन की ईज़ा रसानी पर तो दुनिया ही में अज़ाबे ख़ुदावन्दी की मार पड़ती है। और अख़िरत का अज़ाब बहर हाल उस गुनाहगार को मिलने वाला ही है। क्योंकि आख़िरत दारुल जज़ा यानी बदले का घर है। इस लिए माँ बाप को सताने वाला दुनिया व

आख़िरत दोनों घरों में अ़ज़ाब का हक़दार है। नऊ़ज़ु बिल्लाह मिन्हु। वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

दोज़ख़ से बचाने वाला पर्दा

हदीस :– ह़ज़रत बीबी आयशा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का बयान है कि मेरे पास एक औ़रत अपनी दो बेटियों के साथ आयी और भीक माँगने लगी तो उसने मेरे पास एक खजूर के सिवा कुछ नहीं पाया तो मैंने वही एक खजूर उसको दे दी। तो उसने उस खजूर को अपनी दोनों बेटियों के दरमियान तक़सीम कर दिया और ख़ुद नहीं खाया। फिर वह खड़ी हुई और घर से बाहर चली गयी। उसके बाद रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मकान में दाख़िल हुए तो मैंने यह माजरा आप से बयान किया तो आपने फ़रमाया कि जो शख़्स इन बेटियों के साथ आज़माइश में डाला गया और उसने अपनी बेटियों के साथ बेहतरीन सुलूक किया तो यह बेटियाँ उसके लिए जहन्नम से परदा बन जायेंगी। (मिशकात, जिल्द, 2 सफ़ा 421)

तशरीह हदीस :– इस ह़दीस की बाज़ रिवायात में यूँ भी वारिद हुआ है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि :–

अल्लाह तआला ने उस औ़रत के लिए जन्नत वाजिब फ़रमादी, या हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस औ़रत को अल्लाह तआला ने जहन्नम से आज़ाद फ़रमा दिया।(मुस्लिम, जिल्द, 2 सफ़ा 330)

और ह़ज़रत अनस रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की रिवायत में यूँ भी आया है कि :–

" जो मुसलमान दो बेटियों को उनके बालिग़ होने तक परवरिश करेगा तो हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी दो उँगलियों को मिलाकर फ़रमाया कि मैं और वह क़यामत के दिन इस तरह़ साथ रहेंगे"।

(मिशकात, जिल्द, 2 सफ़ा 421)

ख़ुलासए कलाम यह है कि इन हदीसों में उन वालिदैन के लिए बशारते उज़्मा और ख़ुशख़बरी है जो चन्द बेटियों के माँ बाप हैं। और मुह़ब्बत व शफ़क़त के साथ ख़ुदा की नेअ़मत समझ कर परवरिश करते हैं। क्योंकि फ़रमाने रसूल के मोजिब यह बेटियाँ माँ बाप के लिए आतिशे जहन्नम से बचाने वाला परदा बनेंगी। और जन्नत में दाख़िल होने का ज़रिआ़ बन जायेंगी।

जो लोग अपनी जहालत से बेटियों को हक़ीर समझ कर उनसे नफ़रत करते हैं वह इन हदीसों से सबक़ हासिल करें। और अपने गुनाहों से तौबा करें। और बेटों की तरह बेटियों को भी ख़ुदा की नेअ़मत समझ कर उनकी परवरिश करते रहें। और ख़ुदावन्द कुद्दूस से उसके अजरो सवाब की उम्मीद रखें। वल्लाहु तआला अअ़लम।

मरातिब और दरजात का लिहाज़

हदीस :– हज़रत मैमून बिन शबीब कहते हैं कि हज़रत बीबी आयशा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के पास एक साइल का गुज़र हुआ तो आपने उसको रोटी का एक टुकड़ा दे दिया। फिर उनके पास एक ख़ुश पोशाक और अच्छी हैयत वाला आदमी गुज़रा। तो आपने उसको बिठाया और खाना खिलाया। तो किसी ने इसके बारे में आप से कहा (क्यों एक शख़्स को रोटी का टुकड़ा देकर रुख़सत कर दिया और एक को बिठाकर खाना खिलाया) तो आपने जवाब दिया कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का फ़रमान है कि लोगों को उनके मरातिब व दरजात की मन्ज़िलों में उतारा करो। (अबू दाऊद, जिल्द 2, सफ़ा 317)

शरहे हदीस :– उम्मुल मोमिनीन हज़रत आ़यशा सि़द्दीक़ा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा इल्मो फ़ज़्ल, ज़ोहदो इबादत, मेहमान नवाज़ी और सख़ावत के ऐतिबार से तमाम अज़वाजे मुताहरात में बहुत मुमताज़ थीं। आपकी सख़ावत का तो यह ह़ाल था कि एक मरतबा कहीं से एक लाख दिरहम का नज़राना उनकी ख़िदमत में आया तो आपने फ़ौरन ही उसी वक़्त उन सब दिरहमों को ख़ैरात कर दिया। आपकी ख़ादिमा उम्मे दरा का बयान है कि हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा उस रोज़ रोज़ा दार थीं। तो मैंने अर्ज़ किया कि आपने उन सब दिरहमों को खैरात कर दिया और एक दिरहम भी आपने बाक़ी नही रखा कि उससे आप गोश्त ख़रीद कर रोज़ा अफ़तार करतीं। तो आप ने फ़रमाया कि अगर पहले तुम ने कह दिया होता तो मैं एक दिरहम का गोश्त मँगा लेती। (ज़रक़ानी , जिल्द 3, सफ़ा, 234)

यही वजह है कि हर किस्म के लोग आपकी ज़ियारत के लिए दरे दौलत पर हाज़िरी दिया करते थे। अगर एक तरफ़ फुक़हा व मुहद्दिसीन का इजतिमाअ़ रहता था तो दूसरी तरफ़ फुकरा व मसाकीन का भी मजमअ़ लगा

रहता था। और आपके दरवाजे से कोई महरुम व ना मुराद होकर वापस नहीं जाता था। चुनाँचे मैमून बिन शबीब ताबेई का बयान है कि हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा के दरवाज़े पर एक भीक माँगने वाले साइल का गुज़र हुआ तो आपने रोटी का एक टुकड़ा देकर रुख़सत कर दिया। मगर उसके बाद एक खुश लिबास और अच्छी सज धज का आदमी हाज़िर हुआ तो आपने उसको रोटी देकर रुख़सत नहीं किया बल्कि उसको मेहमान बनाकर बिठाया और उसको खाना खिलाया। उम्मुल मोमिनीन के इस तरज़े अमल से हैरान होकर एक शख़्स ने सवाल किया कि ऐ उम्मुल मोमिनीन! आप ने ऐसा क्यों किया ? कि एक शख़्स को आपने रोटी का एक टुकड़ा देकर रुख़सत कर दिया और दूसरे की इतनी आवभगत की कि उसको मेहमान की तरह पूरे ऐज़ाज़ के साथ बिठा कर खाना खिलाया। आपने हर आने वाले के साथ यकसाँ सुलूक क्यों नहीं किया? तो आपने फ़रमाया कि मैनें फ़रमाने रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर अमल करते हुए ऐसा बरताव किया है क्योंकि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमाया है कि " अन्ज़िलुन्नासा मनाज़िलाहुम" यानी पास मरातिब का ख़्याल और लोगों के दरजात का लिहाज़ रखो। ओर जो जिस मरतबा और जिस पोज़ीशन का आदमी हो उसके दरजात व मरातिब के लिहाज़ से उसके साथ सुलूक और बरताव करो। पहला शख़्स चूँकि एक गदागर था। दर बदर भीक माँगना उसका काम धँधा था इसलिए मैंने उसको रोटी का एक टुकड़ा देकर चलता कर दिया। लेकिन दूसरा शख़्स अपने लिबास व पोशाक और सज धज के ऐतिबार से एक बा वक़ार आदमी था। इस लिए मैंने गदागरों की तरह उसको कुछ देकर रुख़सत करना मुनासिब नहीं समझा। बल्कि उसको एक मुअज़्ज़िज़ आदमी की तरह मैंने ऐज़ाज़ व इकराम के साथ खाना खिलाकर रुख़सत कर दिया।

फ़वाइद व मसाइल :— हदीस मज़कूरा बाला से चन्द मसाइल व फ़वाइद मालूम हुए जो हस्बे ज़ैल हैं।

1. हर आने वाले मेहमान के साथ यकसाँ और बराबर दरजे का सुलूक करना ज़रुरी नहीं है। बल्कि मसनून तरीक़ा यही है कि आने वाले मेहमानों और मुलाक़ातियों मे जो जिस दरजे का आदमी है। उसके दरजात व मरातिब के लिहाज़ से उसकी मेहमान नवाज़ी और ख़ातिर व मदारत

करनी चाहिये। चुनाँचे हदीसों से साबित है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाहे अक़दस में यूँ तो रोज़ाना ओर हर वक़्त ही हाज़िरी देने वालों का हुजूम रहता था। और आप हर शख़्स के लिए अपने हुस्ने अख़लाक़ का मुज़ाहिरा फ़रमाते हुए उसपर नवाज़िश फ़रमाते थे। लेकिन जब क़बाइल के मोअज़्ज़िज़ सरदारों की मेहमान नवाज़ी, उनके क़याम व तआम के इन्तिज़ाम और उनसे मुलाक़ात के लिए तैयारी में ख़ुसूसी एहतिमाम फ़रमाते थे। खुद उम्दा और नफ़ीस लिबास ज़ेब तन फ़रमा कर उन सरदारों को बारगाहे आली में बारयाब फ़रमाते और उन लोगों को हदाया व तहाइफ़ अता फ़रमा कर पूरे ऐज़ाज़ के साथ रुख़सत फ़रमाते थे। यहाँ तक कि बहुत से सरदाराने क़बाइल व अख़लाके नबविया के करीमाना सुलूक से मुतअस्सिर होकर बे इख़्तियार आग़ोशे इस्लाम में आ जाते थे। और बहुत से कबाइल के शोअ़रा आपकी मदह में क़साइद पढ़ने लगते थे। और हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के अख़लाके करीमाना और आपकी शानदार मेहमान नवाज़ियों का दूर दूर तक चर्चा करते फिरते थे।

हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का खुद भी यही दस्तूरे अमल था। और अपने असहाब को भी इसी का हुक्म देते थे। और फ़रमाते थे कि "इज़ा अताकुम करीमुन कौमन फ़अकरेमूहो" यानी जब किसी क़ौम का कोई शरीफ़ व मोअज़्ज़िज़ शख़्स तुम्हारे पास आये तो तुम उसका ऐज़ाज़ व इकराम करो और उसके दरजात व मरातिब के लिहाज़ से उसके शायाने शायान उसकी ख़ातिर दारी का इन्तिज़ाम करो।

अगर किसी के घर चन्द क़िस्म के मेहमान आयें कुछ अवाम और कुछ ख़वास तो वह शख़्स अगर ख़वास के लिए पलंग और अच्छे बिस्तरों का इन्तिज़ाम करे और अवाम को ज़मीन पर बिछौना बिछा कर सुलाए। इसी तरह ख़वास के लिए दूसरे क़िस्म का ख़ास खाना तैयार कराये। और अवाम के लिए आम खाने का इन्तिज़ाम करे तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। क्योंकि उसने " अन्ज़ेलुन नासा मनाज़ेलुहुम" के फ़रमान पर अमल किया कि हर शख़्स कि लिए उसके मरातिब व दरजात के ऐतिबार से अलग अलग इन्तिज़ाम करो। वल्लाहु तआला अअ्लम।

तीन क़ाबिले एहतिराम हस्तियाँ

हदीस :– हज़रत अबू मूसा रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि(यह तीन चीज़ें भी) अल्लाह अज़्ज़ा वजल की ताज़ीम में से हैं।

1. बूढ़े मुसलमान का एहतिराम करना।
2. उस हाफ़िज़े कुरआन का एहतिराम करना, जो कुरआन में हद से बढ़ने वाला और दूरी बरतने वाला न हो।
3. आदिल बादशाह का एहतिरान करना।

शरहे हदीस :– हदीसे मज़कूरा का खुलासा व मतलब यह है कि जिस ने इन तीन शख़्सो का ऐज़ाज़ व इकराम किया, दर हक़ीक़त उसने अल्लाह तआला की ताज़ीम की।

याद रखो कि किसी की ताज़ीम की दो सूरते हैं। एक तो यह कि उसकी ज़ात की ताज़ीम की जाए। दूसरे यह कि जिन जिन चीज़ो को उसकी ज़ात से तअल्लुक हो उनकी ताज़ीम की जाए। तो बूढ़े मुसलमान और हाफ़िज़े कुरआन और बादशाहे आदिल का ऐज़ाज़ व इकराम चूँकि इसी हैसियत से किया जाएगा कि यह तीनों अहकामे खुदावन्दी की पैरवी करके खुदावन्द तआला के मुकर्रब बन्दे हो गये हैं। और उन लोगों को खुदा के कुर्बे ख़ास से निस्बत हासिल हो गई है। इसी लिए इस हैसियत से इन लोगों की ताज़ीम दर हकीकत खुदा ही की ताज़ीम है। ज़ाहिर है कि जिस मुसलमान ने इस्लाम पर अमल करते करते अपने बालों को सफेद कर डाला और बूढ़ा हो गया। वह ब निस्बत उन मुसलमानों के जिन को थोड़े ही दिनों इस्लाम पर अमल करना नसीब हुआ। यक़ीनन एक ख़ास क़िस्म की फ़ज़ीलत का हामिल है।

इसी तरह वह मुसलमान जिसने मेहनते शाक़्क़ा उठाकर कुरआन मजीद को हिफ़्ज़ कर लिया और कुरआन का अमीन बन कर कुरआन में किसी किस्म की तहरीफ़ और उसके मआनी व मतालिब में कोई तबदीली या कमी बेशी नहीं की। और हमेशा कुरआन को पढ़ता और उसके अहकाम पर अमल करता रहा। और कभी कुरआन से ऐराज़ व रु गरदानी नहीं की। वह बिला शुबा दूसरे लोगो से बहुत ज़्यादा लायक़े एहतिराम और एक बहुत बड़ी ख़ास फ़ज़ीलत का जामेअ़ है। यूँ ही एक खुद मुख़्तार बादशाह जिसको यह

पावर हासिल थी कि वह इन्साफ़ या ज़ुल्म जो चाहता अपनी सल्तनत में कर सकता था। लेकिन उसने अपनी खुदमुख़्तारी को फ़रमाने रब्बानी पर कुरबान करते हुए हमेशा अद्ल ही किया। और ज़ुल्म से बचता रहा। वह बिलयक़ीन एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत के शरफ़ से सर फ़राज़ है। लिहाज़ा यह तीनों अशख़ास बिला शक व शुबा ताज़ीम व इकराम व ऐज़ाज़ व एहतिराम के क़ाबिल हैं इसलिए जो इन तीनों की ताज़ीम करेगा, खुदावन्द कुद्दूस उसको ऐसा ही और इतना ही अजरो व सवाब अता फ़रमायेगा। जितना कि अपनी ज़ात पाक की ताज़ीम करने वालों को अजरो सवाब अता फरमाता है।

फ़वाइद व मसाइल :– इस हदीस से मुन्दरजा ज़ैल मसाइल का सुबूत मिलता है।

1. बूढ़ा मुसलमान, हाफ़िज़े कुरआन, और आदिल बादशाह यह तीनों लायक़े ताज़ीम और क़ाबिले एहतिराम हैं। और हर मुसलमान पर हक़ है कि इन तीनों का ऐज़ाज़ व इकराम करे। अगर कोई इन तीनों की तौहीन करे तो वह हक़्कुल्लाह व हक़्कुल अ़ब्द में गिरफतार और अज़ाबे जहन्नम का सज़ावार है।

2. अगर कोई बूढ़ा मुसलमान न हो तो वह लायक़े ताज़ीम नहीं। क्योंकि " जिश़ शैबतिल मुस्लिम" के अल्फ़ाज़ हदीस में " मुस्लिम" की क़ैद लगी हुई है। यानी बूढ़ा होने के साथ साथ अहकामे इस्लाम का पाबन्द भी हो तो वह क़ाबिले एहतिराम है।

3. इसी तरह वह हाफ़िज़े कुरआन जो कुरआन मजीद की तिलावत नहीं करता। या कुरआन की आयतों में अल्लम ग़ल्लम पढ़ कर अल्फ़ाज़े कुरआन में तहरीफ़ व तबदीली करता हो वह भी काबिले ताज़ीम नहीं। क्योंकि हदीस में " ग़ैरल ग़ाली फ़ीहे वलल जाफ़ी अन्हु" की क़ैद लगी हुई है। यानी वही हाफ़िज़े कुरआन लायके एहतिराम है जो इन दोनों जुर्मो से बरी और पाक हो।

4. इसी तरह ज़ालिम बादशाह अगरचे कितना ही बड़ा बादशाह क्यों न हो हरगिज क़ाबिले इज़्ज़त व एहतिराम नहीं। क्योंकि हदीस में बादशाहे आदिल को क़ाबिले इज़्ज़त व एहतिराम बताया गया है। मालूम हुआ कि ज़ालिम बादशाह ताज़ीम का अहल नहीं।

5. इन तीनो शख़्सों की ताज़ीम को अल्लाह तआला ने अपनी

ताज़ीम क़रार दिया है। क्योंकि इन तीनों को ख़ुदा का क़ुर्ब ह़ासिल है। तो फिर जाहिर है कि महबूबाने बारगाहे इलाही यानी उ़ल्मा व सुल्हा और औलियाए किराम व शोहदाए इज़ाम की ताज़ीम व इकराम व अज़मत का क्या हाल होगा? और फिर हुज़ूर सय्येदुल अम्बिया स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ताज़ीम व तकरीम की जलालते शान का क्या कहना ? जिन को बारगाहे ख़ुदावन्दी में कुर्बे ख़ास की वह अज़मत मिली है जिसकी बुजुर्गी और बढ़ाई का कोई तस़व्वुर भी नहीं कर सकता। इस लिए साबित हो गया कि हुज़ूर सय्येदुल अम्बिया स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम और तमाम अम्बिया अलैहिमुस्सलाम और तमाम उ़ल्मा व स़ालेहीन और औलियाऐ कामेलीन की ताज़ीम दर हक़ीक़त ख़ुदा वन्द करीम की ही ताज़ीम है। और जो शख़्स इन मुक़र्रबाने बारगाहे इलाही की ताज़ीम करेगा अल्लाह तआला उसको वही अजरो सवाब अता फ़रमायेगा जो अपनी ज़ात की ताज़ीम करने वालों को इनायत फ़रमाता है और उसका लाज़िमी नतीजा यह है कि जो बदबख़्त इन मह़बूबाने इलाही की ताज़ीम से इन्कार कराता है वह दर हक़ीक़त रब्बुल इ़ज़्ज़त जल्ला जलालुहू की ताज़ीम से इन्कार करता है। और उसको मरदूद जहन्नमी के सिवा और क्या कहा जा सकता हैं।

बेहतरीन साथी और बेहतरीन पड़ोसी

हदीस :– हज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी है उ़न्होने कहा कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तमाम साथियों में सब से बेहतरीन साथी अल्लाह तआला के नज़दीक वह शख़्स है जो अपने साथियों के हक़ में सब साथियों से ज़्यादा अच्छा हो और तमाम पड़ोसियों में सब से बेहतरीन पड़ोसी वह शख़्स है जो अपने पड़ोसियो से ज़्यादा अच्छा हो। (मिश्कात, जिल्द, 2 सफ़ा, 424)

शरहे हदीस :– इस हदीस को इमाम तिरमिज़ी व इमाम दारमी ने अपनी अपनी किताबों में तह़रीर फ़रमाया है।

इस हदीस का ख़ुलासा यह है कि इस दुनिया में तक़रीबन हर शख़्स के कुछ साथी और कुछ पड़ोसी जरुर होते हैं। और यह भी यक़ीनी बात है कि हर साथी और हर पड़ोसी बराबर दरजे के नहीं हुआ करते। बल्कि कुछ साथी अच्छे भी हुआ करते हैं और कुछ बुरे भी। इसी तरह कुछ पड़ोसी अच्छे

भी होते हैं और कुछ बुरे भी। लेकिन सवाल यह है कि अल्लाह तआला के नज़दीक कौन साथी सबसे ज़्यादा अच्छा और कौन पड़ोसी सबसे ज़्यादा अच्छा है। तो हुज़ूर अकरम स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने इस सवाल का यह जवाब अ़ता फ़रमाया कि तमाम साथियों में अल्लाह तआला के नजदीक वह साथी सब साथियों में सबसे ज़्यादा अच्छा है जो अपने तमाम साथियों के साथ अच्छा सुलूक करे। और ऐसे करीमाना व मुशफ़िकाना अन्दाज़ में उनके साथ मुआ़मलात और बरताव करता रहे कि उसके तमाम साथी उसको अपना बेहतरीन साथी कहने लगें। और तमाम पड़ोसियों में सबसे अच्छा पड़ोसी अल्लाह तआ़ला के नजदीक वह पड़ोसी है जो अपने तमाम पड़ोसियों के साथ मुआ़मलात में ऐसे नेक बरताव के साथ पेश आये कि उसके तमाम पड़ोसी उसको अपना बेहतरीन पड़ोसी कहने लगें।

हासिले मतलब यह हुआ कि जिस आदमी के सब साथी उसको अच्छा कहें और जिस पड़ोसी के तमाम पड़ोसी उसको अच्छा कहें तो तुम समझ लो कि वह आदमी अल्लाह तआ़ला कि नज़दीक भी अच्छा ही है।

हज़रत अ़ब्दुल रह़मान बिन अबी क़रार रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रावी हैं कि नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एक दिन वुज़ू फ़रमाया तो आपके असह़ाब आपके वुज़ू के पानी को अपने हाथों में मलने लगे तो उन से नबी करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोगों को इस क़ाम पर कौन चीज़ उभार रही है? लोगों ने अर्ज़ किया कि अल्लाह अज़्ज़वजल और उसके रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की मुहब्बत। तो नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसको यह बात खुश करे कि वह अल्लाह अज़्ज़ावजल और उसके रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से मुहब्बत करे या उससे अल्लाह अज़्ज़ावजल व रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मुहब्बत करें तो उसको चाहिये कि वह जब भी बात करे तो सच्ची ही बात बोले। और जब वह अमीन बनाया जाए तो वह अमानत को अदा करे। और अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा सुलूक और नेक बरताव करे। (मिशकात, जिल्द, 2 सफा, 424)

वह मोमिने कामिल नहीं जिसका पड़ोसी भूका रहे

हदीस :– हज़रत इब्ने अ़ब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि वह (कामिल दरजे का) मोमिन नहीं जो ख़ुद पेट भर कर खा ले और उसके पहलू में उसका पड़ोसी भूका रह जाये। (मिशकात, जिल्द, 2 सफ़ा, 424)

शरहे हदीस :– दीने इस्लाम ने मुसलमानों पर जो हुकूक़ लाज़िम फ़रमाये हैं वह दो क़िस्म के हैं। एक अल्लाह तआ़ला कि हुकूक़, दूसरे बन्दों के हुकूक़। हर मुसलमान पर अज़रुऐ शरअ़ इस्लाम इन दोनों हुकूक़ का अदा करना लाज़िम व ज़रुरी है। तो जो मुसलमान इन दोनो हुकूक़ को पूरे पूरे तौर पर अदा करे बिला शुबा उसका इस्लाम कामिल है और वह मुकम्मल दरजे का मुसलमान है। और जो इन दोनों हुकूक़ को पूरे पूरे तौर पर अदा न करे उसका इस्लाम यक़ीनन नाक़िस है और मुकम्मल दरजे का मुसलमान नहीं है।

बन्दों में माँ बाप भाई बहन शौहर बीवी बेटा बेटी वग़ैरह के हुकूक़ मुक़र्रर हैं। इसी तरह इस्लाम ने पड़ोसियों के भी कुछ हुकूक़ मुकर्रर फ़रमाये हैं। जिनको मुकम्मल तौर पर अदा करना हर मुसलमान पर लाज़िम व ज़रुरी है। चुनाँचे पड़ोसियों के हुकूक़ में से एक हक़ यह भी है कि हर मुसलमान अपने पड़ोसियों के साथ बेहतरीन सुलूक करता रहे यानी उनके दुख सुख में शरीक हो कर उनकी हमदर्दी व ग़म ख़ुवारी और दस्तगीरी व जाँ निसारी करे। अगर वह बीमार हों तो उनकी तीमारदारी करे। अगर वह मुलाकात को आयें तो उनकी ख़ातिर दारी करे। अगर वह ग़ायब हों तो उनकी ख़ाना दारी करे। अगर वह मुफ़लिस व मोहताज हों तो उनकी इमदाद व अ़याल दारी करे। अगर वह भूके हों तो उन्हें खाना खिलायें। अगर वह नंगे हों तो उन्हें कपड़ा पहनाये। अगर उन पर कोई आफ़त व मुसीबत पड़ जाये तो उन की इमदाद व एआ़नत व रिफ़ाक़त व नुसरत करे। गर्ज़ हर मामला में बेहतरीन बरताव करे।

अब ज़ाहिर है कि अगर कोई पड़ोसी बेचारा फ़ाक़ा और भूक का मारा हुआ दाने दाने को तरसता हो और उसका पड़ोसी उ़म्दा उ़म्दा और नफ़ीस

व लज़ीज़ ग़िज़ाएँ पेट भर कर सुख और चैन की नींद सोता रहे। तो यक़ीनन उस मुसलमान ने अपने पड़ोसी का हक़ नहीं अदा किया। और बन्दों का हक़ अदा करने में उसने बेपनाह कोताही और हक़ तलफ़ी की। लिहाज़ा बिला शुबा उसका इस्लाम नाक़िस़ हुआ। और वह मुकम्मल दरजे का मुसलमान कहलाने का मुस्तहक़ नही रहा। यही वजह है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया कि " वह कामिल मोमिन नही जो ख़ुद पेट भर कर खाले और उसके पहलू में उसका पड़ोसी भूका रह जाये।

फ़वाइद व मसाइल :– 1. मुसलमान पर अपने पड़ोसियों के साथ हर मुआमला में बेहतरीन सुलूक और अच्छा बरताव करना ज़रुरी है। कुरआन मजीद में भी पड़ोसियों के साथ भलाई करने का ख़ास तौर पर हुक्म आया है। और हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि" हज़रत जिबरईल अ़लैहिस्सलाम हमेशा पड़ोसियों के बारे में मुझे ख़ुदा का यह हुक्म सुनाते रहे कि उनके साथ भलाई करते रहो। यहाँ तक मुझे यह ख़्याल होने लगा कि अ़न्करीब अल्लाह तआ़ला पड़ोसी को उसके पड़ोसी का वारिस बना देगा। (बुख़ारी जिल्द, 2 सफ़ा, 889)

2. पड़ोसी अगर कोई मामूली से मामूली और बिल्कुल कम क़ीमत चीज़ भी अपने पड़ोसी को दे तो पड़ोसी को चाहिये कि हरगिज़ हरगिज़ उसके अ़तिया को हक़ीर समझ कर न ठुकराये बल्कि उसकी दिल जोई और दिलदारी के लिए उसके अ़तिया को निहायत ख़ुशी ख़ुशी क़ुबूल करे। चुनाँचे हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि :

" ऐ मुसलमान बीबियो ! अगर तुम्हारी पड़ोसन बकरी का एक खुर भी तोहफ़ा में तुम्हारे पास भेज दे तो हरगिज़ हरगिज़ उसको ह़क़ीर मत समझो। और अगर तुम्हारे पास अपनी पड़ोसन को देने के लिए बकरी का एक खुर ही हो तो तुम उसको तोहफ़े में देने के लिए हक़ीर समझ कर हाथ न रोक लो। बल्कि वही अपनी पड़ोसन को तोहफ़े मे दे दो।" (बुख़ारी, जिल्द 2, सफ़ा 889)

एक और ह़दीस में तो यह भी इरशादे नबवी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हुआ है कि :–

"अगर तुम शोरबा पकाओ तो कुछ पानी ज़्यादा डालकर शोरबे को बढ़ा लो। ताकि उसमें कुछ अपनी पड़ोसन को देकर तुम उनकी इमदाद व ख़बर गीरी कर सको। (बुख़ारी शरीफ़)

3. पड़ोसी के साथ सिर्फ़ अच्छा सुलूक ही करने का हुक्म नहीं। बल्कि यह भी हुक्म है कि उसको ज़र्रा बराबर कोई तकलीफ़ न पहुँचे। चुनाँचे हुज़ूरे अक़्दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने तीन मरतबा फ़रमाया कि "वल्लाहु ला यो मिन" यानी खुदा की क़सम वह मोमिन(कामिल) नहीं होगा। उस पर किसी ने अर्ज़ किया कि कौन ? या रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम तो इरशाद फ़रमाया कि "अल्लज़ी ला योमिन ज़ारहू बवाइक़हू" यानी वह शख़्स मोमिन कामिल नहीं होगा जिसका पड़ोसी उसकी शरारतों से बे ख़ौफ़ न हो जाये। (बुख़ारी, जिल्द 2, सफ़ा 889)

छः चीज़ों के बदले जन्नत की ज़मानत

हदीस :– हज़रत उ़बादा बिन सामित रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि नबी करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग मेरे लिए अपनी ज़ात से छः चीज़ों के ज़ामिन बन जाओ। तो मैं तुम लोगों के लिए जन्नत का ज़ामिन बन जाऊँगा।

1. जब बात करो तो सच बोलो।
2. जब वादा करो तो पूरा करो।
3. जब तुम किसी चीज़ के अमीन बनाये जाओ तो अमानत अदा करो।
4. अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करो।
5. अपनी निगाहों को नीची रखो।
6. अपने हाथों को (बुराई से) रोके रखो।

(मिश्कात, जिल्द 2,सफ़ा 415)

हज़रत उ़बादा बिन स़ामित :– इस ह़दीस के रावी हज़रत उ़बादा बिन स़ामित रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु हैं। उनकी कुन्नियत अबुल वलीद है। और यह अन्सार के क़बीला बनू सालिम के बहुत ही नामवर शख़्स हैं। ऐलाने नुबुव्वत के बारहवीं साल हज के मौक़ा पर मिना की घाटी में मदीना के जिन बारह शख़्सों ने छुप कर हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुक़द्दस हाथों पर बैअ़त की थी उनमें से एक यह भी हैं। फिर ऐलाने नुबुव्वत के तेरहवीं साल जब इसी घाटी में मदीना के बहत्तर जाँ निसारों ने बैअ़त की तो यह उस जमाअ़त में भी शामिल थे। जंगे बदर और तमाम इस्लामी जिहादों में यह मुजाहिदाना शान से शरीक हुए, बहुत ही बहादुर थे। और

आला दरजे के होश मन्द और साहिबे इल्म भी थे। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपने दौरे ख़िलाफ़त में मुल्के शाम का क़ाज़ी और मुअल्लिम बना दिया था। यह पहले हमस में रहे फिर फिलिस्तीन चले गये। तिहत्तर बरस की उम्र पाकर 34 हिजरी में बमुकाम रमला या बैतुल मुक़द्दस में वफ़ात पायी। (इकमाल फी अस्माइर रिजाल, सफ़ा 605)

शरहे हदीस :– इस हदीस का खुलासा मतलब यह है कि जो मुसलमान इन छः चीज़ों पर अमल करने का अहद करले और ज़ामिन बन जाऐ तो हूज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस मुसलमान को जन्नत दिलाने की ज़मानत ली है। और यह गारन्टी दी है कि वह ज़रूर जन्नत में जायेगा।

1. **सच बोलना :–** हर मुसलमान पर फर्ज़ है कि हमेशा सच बोले और हरगिज़ हरगिज़ कभी झूट न बोले। झूट बोलना गुनाहे कबीरा है। एक हदीस में हुज़ूरे अक़रम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि " तुम लोग अपने लिए इसको लाज़िम समझो कि सच ही बोलो क्योंकि सच्चाई तुमको नेकू क़ारी की तरफ़ ले जायेगी। और नेकूकारी तुमको जन्नत मे पहुँचा देगी। और आदमी हमेशा सच बोलता रहता है और सच्चाई ही का तलबगार रहता है तो अल्लाह अज़्ज़ा वजल के दरबार में उसके लिए सिद्दीक़ का लक़ब लिख दिया जाता है। और तुम लोग झूट से बचते रहो क्योंकि झूट तुम्हें बदकारी की तरफ़ ले जायेगा। और बदकारी तुमको जहन्नम में पहुँचा देगी। और आदमी लगातार झूट बोलता रहता है और झूट ही का तलबगार रहता है यहाँ तक कि वह अल्लाह तआला की बारगाह में कज़्ज़ाब लिख दिया जाता है। (तिरमिज़ी, जिल्द 2, सफ़ा 19)

अल्लाहु अकबर ! एक मुसलमान की ख़ुश नसीबी की यह कितनी बड़ी मेअ़राज है कि परवरदिगारे आलम के दरबार से उसको सिद्दीक़ का मोअज्ज़िज़ ख़िताब मिल जाए। और वह दोनों जहान में रब्बुल आलमीन के इन्आम व इकराम की दौलतों से मालामाल हो जाये। और यह एक मुसलमान की कितनी मनहूस बदबख़्ती और कितनी बड़ी नहूसत है कि अल्लाह अज़्ज़ा वजल की बारगाहे क़हरो जलाल से उसको कज़्ज़ाब का गन्दा और घिनौना लक़ब मिले और वह दोनो जहान में ख़ुदा की मार और फटकार से ज़लील व ख़ुवार हो जाए।

"कज़्ज़ाब" (बहुत बड़ा झूटा) यह कितना बुरा और किस क़दर क़ाबिले

नफ़रत ख़िताब है। इसको समझने के लिए इस हदीस को पढ़िये जिसके रावी हज़रत सफ़वान बिन सलीम ताबेई हैं कि :–

" किसी सहाबी ने बारगाहे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में अर्ज़ किया कि क्या मोमिन बुज़दिल और डरपोक हो सकता है ? तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि हाँ। फिर किसी ने गुज़ारिश की कि क्या मोमिन कन्जूस हो सकता है ? तो आपने इरशाद फरमाया कि हाँ। फिर किसी ने दरयाफ़्त किया कि क्या मोमिन कज़्ज़ाब (बहुत बड़ा झूठा हो सकता है)? तो हुज़ूर ने फ़रमाया नहीं।(मिश्कात जिल्द 2 सफा 414)

मतलब यह है कि काज़िब यानी कभी कभी इत्तिफ़ाक़िया या बवक़्ते ज़रुरत झूट बोलने वाला तो मोमिन कहलायेगा मगर कज़्ज़ाब जो हमेशा हर बात में झूट ही बोले वह इस लायक़ नहीं कि उसको मोमिन कहा जाए। क्योंकि कज़्ज़ाब होना हरगिज़ हरगिज़ कामिलुल ईमान मुसलमान की शान नहीं है।

2. **वादा पूरा करना :–** मुसलमान किसी से कोई वादा करे तो उस वादे को पूरा करना मुसलमान का इस्लामी फरीज़ा है। मुक़द्दस कुरआन में खुदा वन्द कुद्दूस का फ़रमान है : "ऐ ईमान वालो अपने वादों को पूरा करो"।

इस्लाम में वादा पूरा करने की अहमियत का अन्दाज़ा लगाना हो तो मुक़द्दस रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सीरते मुबारका का यह शाहकार याद करलो और नुबुव्वत के इस इबरत खेज़ और नसीहत आमोज़ आला किरदार को कभी फरामोश न करो। सीरते नबविया सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की किताबों में यह हदीस है : –

हज़रत इब्ने अबिल हस्मा रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि ऐलाने नुबुव्वत के कब्ल मैंने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से कोई सामान ख़रीदा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की कुछ रक़म मेरे ज़िम्मे रह गई और मैंने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से वादा किया कि मैं वह रक़म इस जगह अभी अभी लेकर आता हूँ लेकिन मैं बिल्कुल भूल गया। फिर तीसरे दिन मुझे याद आया और मैं जब यह रक़म लेकर उस जगह पहुँचा तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को उसी जगह पाया और आप ने मुझ से सिर्फ़ इतना फ़रमाया कि तुमने मुझे मशक़्क़त में डाल दिया क्योंकि तीन दिन से मैं इसी जगह तुम्हारा इन्तिज़ार कर रहा हूँ।

3. **अमानत की अदायगी** :– अमानत की अदायगी फ़र्ज़ है। और बाल बराबर भी किसी अमानत में ख़यानत करना हराम और गुनाहे कबीरा है। कुरआन का फ़रमान है कि "यानी अपनी अमानतों में जान बूझकर ख़्यानत न करो।"

याद रखो कि अमानत सिर्फ़ माल और सामान ही की नहीं होती बल्कि अगर तुम्हे किसी बात या किसी राज़ का अमीन बना दे तो यह बात और राज़ भी अमानत है इसमें भी ख़यानत हराम और गुनाहे कबीरा है। मसलन मियाँ बीवी बवक़्ते मुबाशरत तन्हाई में जो कुछ कहते या करते हैं इस मामले में औरत मर्द की अमीन और मर्द औरत का अमीन है। अगर औरत या मर्द ने अपने राज़ों को फ़ाश कर दिया तो अमानत में ख़्यानत करने का गुनाह लाज़िम होगा

4. **शर्मगाहों की हिफ़ाज़त** :– इस का मतलब यह है कि ज़िनाकारी से बचने का अहद करलें और हरगिज़ हरगिज़ अपनी शर्मगाहों को इस गुनाहे अज़ीम से आलूदा न करें। बल्कि हमेशा अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते रहें।

5. **निगाहों को नीची रखना** :– इससे मुराद यह है कि जिन चीज़ो को देखना शरीअत मुतहरा ने हराम करार दे दिया है हरगिज़ उन पर कभी नजर न डाले। बल्कि अपनी निगाहों को नीची रखे ताकि हराम चीज़ो पर नज़र न पड़ सके। मसलन ग़ैर महरम औरतों को देखना या नाच देखना। या सिनेमा वग़ैरह बे हयाई की तस्वीरों, अख़लाक को ख़राब करने वाले मनाज़िर देखना या मुसलमानों के छिपे हुए की ताक झाँक कर देखना या कुफ़्र व मआसी और फ़वाहिश व मुन्किरात के मज़ामीन वाली किताबों को देखना यह सब हराम हैं और इन सब महारिम से अपनी निगाहों को नीची रखना लाज़िम और वाजिबुल अमल है।

6. **हाथों को रोके रखना** :–इसका मकसद यह है कि मुसलमान अपने हर हर अज़्व बल्कि बदन की बोटी बोटी पर कन्ट्रोल रखे कि हरगिज़ हरगिज़ उससे कोई बुराई और ख़िलाफ़े शरीअत काम न होने पाये। हाथ को रोके रहने का यह मतलब नही कि सिर्फ़ हाथों को गुनाह और बुराई से बचाए रखे। और बदन के दूसरे आज़ा को आज़ाद छोड़ दे। चूँकि इन्सान के ज़्यादा तर काम हाथों ही से अन्जाम पाते हैं। इसलिए मिसाल के तौर पर इस हदीस

में हाथों को बुराई से रोके रखने का ज़िक्र आया है। लेकिन हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की मुराद यही है कि मुसलमान अपने हर हर अज़्व को गुनाहों से रोके रखे। चुनाँचे कुरआन मजीद में रब्बुल आलमीन का फ़रमान है कि :— ان السمع و البصر و الفؤ اد كل اولئك كان عنه مسئولا۔

तर्जुमा :— कान आँख दिल हर हर अज़्व से इसके कामों के बारे में क़यामत के दिन पूछ गछ की जायेगी और उसके आमाले ख़ैर व शर का हिसाब लिया जायेगा।

तबसरा :— हदीसे मज़कूरा बाला में जिन जिन चीज़ो पर अ़मल करने के बदले हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को जन्नत मिलने की ज़मानत ली है ग़ौर कीजिए कि इन बातों पर अ़मल करना कुछ ज़्यादा मुश्किल काम नहीं। न इन कामों में माल का ख़र्च है न जिस्मानी मेहनत दरकार है। हर मुसलमान बा आसानी इन पर अ़मल करके जन्नत का हक़दार हो सकता है मगर यह कितना अजीब और हैरत नाक सानेहा है कि बावजूद कि हर मुसलमान जन्नत का मुश्ताक़ और तमन्नाई बल्कि हरीस है मगर जन्नत को दिलाने वाले उन आमाल से न सिर्फ़ कोसों दूर है बल्कि इन महारिम खुसूसन झूट, वादा ख़िलाफ़ी ख़्यानत वग़ैरह की बलाओं में बुरी तरह गिरफ़्तार है कि मुस्लिम मुआ़शरा की इफ़्फ़त व अज़मत और उसके तक़द्दुस की परचमों की धज्जियाँ पारा पारा होकर फिज़ाए आसमानी में बिखर चुकी हैं। और अक़वामें आ़लम की निगाहों में इस्लाम और मुसलमानों का वक़ार तहस नहस होकर रह गया है। फिस्क़ व फुजूर का तो ज़िक्र ही क्या है हद हो गई कि ज़माना—ए—हाल के बाज़ उ़ल्मा व मशाइख़ का दामने तक़द्दुस भी किज़्ब बयानी, वादा ख़िलाफ़ी और किस्म क़िस्म की ख़्यानतों के बदनुमा धब्बों से दाग़दार नज़र आ रहा है।

खुदावन्द करीम सबको इन गुनाहों से तौबा और आमाले सॉलेहा की तौफ़ीक़ अता फरमाये। और हर मुसलमान को जन्नत नसीब फरमाये। आमीन।

मेहमान नवाज़ी

हदीस नम्बर 1 :– हज़रत अबू शरीह रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि हज़रत नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला और क़यामत पर ईमान रखता है तो उसको चाहिये कि अपने पड़ोसी के साथ अच्छा बरताव करे और जो शख़्स अल्लाह तआला और क़यामत पर ईमान रखता है तो उसको चाहिये कि अपने मेहमान को ऐज़ाज़ करे। और जो शख़्स अल्लाह तआला और क़यामत पर ईमान रखता है तो उसको चाहिये कि अच्छी बात बोले या चुप रहे।

(मुस्लिम जिल्द 1 सफ़ा 50)

हदीस नम्बर 2 :– हज़रत अबू शरीह अदवी रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मेरी दोनों आँखों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को देखा। और मेरे दोनों कानों ने हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना जिस वक़्त आपने इन कलिमात को इरशाद फरमाया। आपने यह इरशाद फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआला और क़ियामत पर ईमान रखता है उसको चाहिये कि अपने मेहमान की इज़्ज़त उसको जायज़ा देकर करे। इस पर लोगों ने कहा कि मेहमान का जायज़ा क्या है ? तो आपने फरमाया कि एक दिन और एक रात। और मेहमानी तीन दिन है और उसके बाद जो कुछ है वह सदक़ा होगा। और जो शख़्स अल्लाह तआला और क़ियामत पर ईमान रखता है तो उसको चाहिये कि कोई अच्छी बात बोले या चुप रहे।

हदीस नम्बर 3 :– हज़रत अबू शरीह कअ़बी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि बेशक रसुलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेहमानी तीन दिन है और मेहमान का जायज़ा (पुर तकल्लुफ़ पकवान) एक दिन और एक रात है। और इसके बाद जो इत्तिफ़ाक़ पेश आये तो वह सदक़ा है और मेहमान के लिए यह हलाल नहीं है कि वह इतने दिनों तक ठहरा रहे कि मेज़बान को तंग कर डाले।

(तिरमिज़ी जिल्द 2, सफ़ा 18)

हज़रत अबू शरीह :– मज़कूरा बाला तीनों हदीसों में तीन जगह अबू शरीह रावी का ज़िक्र है। मुस्लिम शरीफ़ में अबू शरीह है और तिरमिज़ी की एक रिवायत में अबू शरीह अदवी है और दूसरी रिवायत अबू शरीह

कअ्बी हैं। वाज़ेह रहे कि यह तीनों एक ही शख़्स हैं। अबू शरीह इन की कुन्नियत है और यह अपनी कुन्नियत ही से ज़्यादा मशहूर हैं। इनका नाम क्या है? इस बारे में मुहद्दिसीन के पाँच अक्वाल हैं। बाज़ ने कहा कि इन का नाम खुवैद बिन अम्र है और बाज़ का कौल है कि अम्र बिन खुवैद है। और बाज़ के नज़दीक अब्दुर्रहमान नाम है। और बाज़ ने इनका नाम हानी बिन अम्र बताया है। और बाज़ कहते हैं कि इन का नाम कअ्ब है। इसी तरह यह तीन निस्बतों के साथ मशहूर हैं। कुछ लोग इनको अबू शरीह ख़ज़ाई कहते हैं कुछ लोग इनको अबू शरीह अदवी कहते हैं। और कुछ लोग अबू शरीह कअ्बी कह कर इनका ज़िक्र करते हैं।

(नौवी शरीफ़ शरह मुकदमा मुस्लिम शरीफ सफ़ा 24)

"इकमाल फ़ी अस्माइर रिजाल" में उनका तज़किरा इन लफ़्ज़ों में आया है कि अबू शरीह खुवैद बिन अम्र कअ्बी अदवी ख़ज़ाई यह फ़तहे मक्का से पहले ही मुसलमान हो गये थे। हिजाज़ के असातिज़ा हदीस में इनका शुमार है और मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने इन की शागिर्दी का शरफ़ पाया है। यह बुजुर्ग और बुलन्द मरतबा सहाबी हैं। 68 हिजरी में मदीना मुनव्वरा के अन्दर इनकी वफ़ात हुई।

शरहे हदीस :– मुस्लिम शरीफ की हदीस का खुलासा यह है कि हर मुसलमान को तीन चीज़ों का ख़ास तौर पर एहतिमाम करना चाहिये।

1. अपने पड़ोसी के साथ नेक सुलूक और अच्छा बरताव करे।
2. अपने मेहमान का ऐज़ाज़ व इकराम करे।
3. जब कभी बोले तो अच्छी बात बोले वरना ख़ामोश रहे।

तिरमिज़ी शरीफ़ की पहली हदीस का भी यही मतलब है मगर इसमें एक बात बढ़ी हुई है कि मेहमान को इस का जायज़ा देकर इसकी इज़्ज़त अफ़्ज़ाई करे। मेहमान का जायज़ा मतलब यह है कि उसके लिए खुसूसी तौर पर मेज़बान एहतिमाम के साथ अपनी वुसअ्त व ताक़त के मुताबिक अच्छे से अच्छा खाना तैयार करे। जब लोगों ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! मेहमानों के लिए खुसूसी और उम्दा खानों का सिलसिला कितने दिनों तक जारी रखना चाहिये। तो आपने इरशाद फरमाया कि एक दिन और एक रात यह मेहमान का हक़ है। और ज़्यादा से ज़्यादा मेहमानदारी और मेहमान नवाज़ी की मुद्दत तीन दिन है।

मगर एक दिन और एक रात के बाद मेज़बान को पुर तकल्लुफ़ और उम्दा खाना तैयार कराना लाज़िम नहीं हैं। बल्कि हस्बे मामूल जो खुद खाता है वही मेहमान को भी खिलाऐ। यह भी मेहमान का हक़ है। लेकिन मेहमान तीन दिनों के बाद जो खायेगा वह उसका हक़ नहीं है बल्कि मेज़बान की तरफ़ से वह सदक़ा है जो मेहमान खा रहा है।

और तिरमिज़ी शरीफ़ की दूसरी ह़दीस का ह़ासिल यह है कि मेहमान को लाज़िम है कि ज़्यादा से ज़्यादा तीन दिन ठहरे। और अगर मेज़बान की तंगी और हर्ज में पड़ जाने का अन्देशा हो तो तीन दिनों से ज़्यादा मेहमान को ठहरना जाइज़ व हलाल नहीं। हाँ अगर मेज़बान कोफ़्त और तंग दिली में न पड़े बल्कि निहायत खुश दिली के साथ मेहमान को तीन दिन से ज्यादा ठहराये तो यह जाइज़ है।

लेकिन बहर ह़ाल यह ज़रूर है कि मेहमान तीन दिनों से ज़्यादा ठहर कर जो खायेगा वह मेहमान का हक़ नहीं है बल्कि मेज़बान का एहसान और सदक़ए नाफ़िला है जिसका मेज़बान को अजरो सवाब मिलेगा।

अच्छी बात बोले वरना चुप रहे :– इसका मत़लब यह है कि मुसलमान को लाज़िम है कि बोलने से पहले यह सोच ले कि अगर इस बात से खुद को या दूसरे को कोई नुक़सान व ज़रर नहीं पहुँचेगा तो उस बात को ज़बान से निकाले। और अगर उस बात से कोई ज़रर व नुक़सान पहुँचने का अन्देशा हो तो हरगिज़ हरगिज़ उस बात को न कहे। बल्कि ख़ामोश रहे उसकी यह ख़ामोशी बोलने से हज़ारों दरजे बेहतर है।

फ़ायदए जलीला :– शैख़ अबू मुह़म्मद अ़ब्दुल्लाह बिन अबी ज़ैद जो अपने दौर में बिलादे मग़रिब के इमामुल मालकिया कहलाते थे, फ़रमाया करते थे कि मेरी नज़र में चार हदीसें ऐसी हैं जिन में तमाम आदाबे ख़ैर के ख़ज़ाने जमा हैं। और जो इन चार ह़दीसों पर अ़मल करेगा। वह ख़ैर और भलाई के तमाम ख़ज़ानों को जमा करेगा। वह चार हदीसें यह हैं :–

1. अच्छी बात बोलो वरना खामोश रहो।
2. आदमी के इस्लाम की ख़ूबी से यह बात है कि तमाम उन बातों को छोड़ दे जिनसे उसको कोई फ़ायदा और ग़र्ज़ न हो।
3. हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने एक शख़्स को निहायत मुख़्तसर वसीयत फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाया कि किसी पर गुस्सा न करो।

4. इस वक़्त तक तुम में से कोई कामिलुल ईमान नहीं होगा यहाँ तक कि वह अपने(दीनी) भाई के साथ वही चीज़ पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है।

ख़ामोशी बेहतर है या कलाम करना अच्छा है इस मामले में उस्ताज़ुस सूफ़िया हज़रत अबुल क़ासिम कुशैरी अलैहिर्रहमा का एक बेहतरीन मक़ूला है कि :–

" ख़ामोशी के वक़्त चुप रहना मरदाने ख़ुदा का तरीक़ा है जैसा कि कलाम के मौक़ा पर बोल देना निहायत ही अशरफ़ ख़सलत है।"

और कबीरुल औलिया हज़रत अबू अली दक़्क़ाक़ अलैहिर्रहमा फ़रमाया करते थे कि " जो हक़ बात कहने से ख़ामोश रहे वह गूँगा शैतान है"।

ख़ुलासए कलाम यह है कि न हर हाल में ख़ामोशी बेहतर है और न हर हाल में बोलना बेहतर है। बल्कि दोनों अपने अपने महल और मौक़ा पर अफ़ज़ल हैं। जहाँ ख़ामोशी का मौक़ा और महल हो वहाँ ख़ामोश रहना बेहतर और अच्छा है और जहाँ बोलने का मौक़ा हो वहाँ बोलना बेहतर और अच्छा है। हाँ अलबत्ता फ़रमाने हदीस है कि बमोजिब यह ध्यान रखना ज़रुरी है कि जो कुछ बोले वह अच्छी बात हो बुरी बात न हो। वल्लाहु तआला अअ्लम।

दीन ख़ैर ख़्वाही है

हदीस :– हज़रत तमीम दारी रदियल्लाहु तआला अन्हु से मन्कूल है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दीन ख़ैर ख़्वाही है तो हम लोगों ने कहा कि किस के लिए ? तो फ़रमाया कि अल्लाह अज़्ज़वजल के लिए और उसकी किताब के लिए और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए मुसलमानों के इमामों और आम मुसलमानों के लिए।

हज़रत तमीम दारी :– इन का नाम तमीम बिन औस है और कुन्नियत अबू रुक़य्या। यह तमीम दारी भी कहलाते हैं। और बाज़ लोग उनको तमीम देरी भी कहते हैं। दारी कहलाने की वजह यह है कि इनके दादाओं में एक शख़्स का नाम दार बिन हानी था। इसी की तरफ़ निस्बत करके उनको दारी कहा जाने लगा। और देरी इस लिए कहलाते हैं कि यह मुसलमान होने से पहले दैर गिरजाघर में रहा करते थे। क्योंकि पहले यह नसरानी थे। नौ हिजरी में मुशर्रफ़ बा इस्लाम होकर मदीना मुनव्वरा की

सुकूनत इख़्तियार कर ली। इबादत गुज़ार सहाबा में इनका शुमार है। यह नफ़्ल नमाज की एक रकअ़त में पूरा कुरआन मजीद ख़त्म कर लिया करते थे। मुहम्मद बिन मुन्कदिर मुहद्दिस का बयान है कि एक रात यह सोते रह गये और उनकी नमाज़े तहज्जुद कज़ा हो गई तो यह अपने नफ़्स को सज़ा देने के लिए मुकम्मल एक बरस तक रात भर जागते रहे। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उ़स्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद यह मदीना मुनव्वरा से जाकर मुल्के शाम में आबाद हो गये। यहाँ तक कि वहीं उनकी वफ़ात हो गई। इनके फ़ज़ाइल में ख़ास तौर पर इनकी दो ख़ूबियों का हदीसों में तज़किरा आया है। एक यह कि सब से पहले उन्होनें मस्जिदे नबवी में कन्दीले जलाकर रौशनी की, इससे पहले किसी ने मस्जिदे नबवी में चिराग़ नहीं जलाया था। दूसरी यह कि इन्होंने दौराने सफ़र एक जज़ीरा में दज्जाल और उसके जासूसों को देखा। चुनाँचे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने उन्हीं की ज़बान से सुनकर दज्जाल और जसासा का वाके़आ़ सहाबा किराम को सुनाया। जो हदीस की किताबों में मज़कूर है । सहाबा किराम की एक जमाअ़त ने इन से हदीसें रिवायत की हैं जिनमें हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु ख़ास तौर पर क़ाबिले ज़िक्र हैं।

शरहे हदीस :– हदीस में नसीहतुन को दीन फ़रमाया गया। इसका मतलब यह है कि नसीहत दीन की एक बहुत ही बड़ी और निहायत ही अज़ीम ख़स्लत है कि गोया कि यह दीन का दारोमदार है और दीन की इमारत का एक मज़बूत व मुस्तहकम सुतून है। जिस तरह एक हदीस में यह इरशाद फरमाया गया कि " अल हज अ़रफ़तुन" यानी हज अ़रफ़ा है। तो इसका मतलब यही है कि यूँ तो अफ़आल व अरकाने हज चन्द चीज़ें हैं मगर हज का इन्तेहाई अहम रुकन ज़िल हिज की नौ तारीख़ को मैदाने अ़राफ़ात में वकूफ़ करना है। इस तरह इस हदीस का मतलब भी यही है कि यूँ तो दीन के ख़साइल बहुत ज़यादा हैं मगर दीन की तमाम ख़सलतों में नसीहत एक बहुत की अज़ीमुश्शान और निहायत अहमियत वाली ख़सलत है बल्कि दर हक़ीकत यह ऐसी शानदार ख़सलत है कि बहुत सी दीन की ख़सलतों की जामेअ़ बल्कि अक्सर ख़साइले इस्लाम का इस पर दारो मदार है।

चुनाँचे सहाबा किराम ने नसीहत की इस अहमियत को सुनकर दरबारे रिसालत सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम में अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह

सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! किस के लिए खैर ख्वाही करना दीन की एक अहम और आज़म ख़सलत है? तो आपने फ़रमाया कि पाँच ज़ातों के लिए

1. अल्लाह तआला के लिए।
2. उसकी किताब के लिए।
3. उसके रसूल के लिए।
4. मुसलमानों के इमामों के लिए।
5. आम मुसलमानों के लिए।

अब हर एक के लिए ख़ैर ख्वाही की अलग अलग तफ़सील मुलाहिज़ा फरमाईये। कि उन में से हर एक के लिए ख़ैर ख़्वाही किस तरह होगी? अब इस सिलसिले में हम अपनी तरफ से कुछ तहरीर करने के बजाऐ मुनासिब यह समझते हैं कि इमाम ख़ताबी अलैहिर्रहमा की इस तक़रीर का खुलासा दर्ज करदें। जो उन्होने इस हदीस की शरह में बयान फ़रमाया है और जिसको मुहिय्युद्दीन अबू ज़करिया शैख़ याहय्या बिन शरफ़ नौवी अलैहिरहमा ने अपनी शरह मुस्लिम में नक़ल फ़रमाया है।

1. **अल्लाह तआला के लिए ख़ैर ख़्वाही:**—अल्लाह तआला के लिए ख़ैर ख़्वाही का मतलब यह है कि अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात पर ईमान लायें। और उसकी तौहीद पर सिद्क़ दिल से ईमान लाकर ज़बान से उसका इक़रार व ऐलान करे। और उसकी ज़ात व सिफ़ात में शिर्क व इल्हाद से बराअत व बेज़ारी का इज़हार करें। और उसकी इताअत व फरमाँ बरदारी में कमर बस्ता होकर उसकी मअ़सियतों से एहतिराज़ व इजतिनाब रखें। उसके मुहिब्बीन से मुहब्बत और उसके आदाऐ लईन से बुग्ज़ व नफ़रत करें। उसकी दी हुई नेअ़मतों का ऐतराफ़ करके अपने दिल अपनी ज़बान अपने आज़ा से उसका शुक्र करें और उसकी भेजी हुई मुसीबतों पर सब्र करके उसकी हम्द करें।

तन्बीह :— याद रखो कि अल्लाह तआला के लिए इस ख़ैर ख़्वाही करने का नफ़ा व फ़ाइदा दर हक़ीक़त बन्दे ही को मिलेगा। इसलिए कि खुदा के लिए यह ख़ैर ख़्वाही करके हक़ीक़त में बन्दा अपने ही लिए ख़ैर ख़्वाही करता है वरना अल्लाह तआला अपने बन्दों की ख़ैर ख़्वाही से ग़नी व मुस्तग़ना और बे नियाज़ है। कुरआन करीम में अल्लाह तआला ने बार बार अपने इस फ़रमान का ऐलान फरमाया है कि " अल्लाह तआला तमाम जहान वालों से बे नियाज़ है "

2. किताबुल्लाह के लिए ख़ैर ख़्वाही करना :– इसका मतलब यह है कि कुरआन मजीद के तमाम अहकाम पर ईमान लाए और इस मुक़द्दस किताब को खुदा की किताब मानकर यह अक़ीदा रखे कि हर गिज़ हरगिज़ कोई जिन व इन्सान इस किताबे मुक़द्दस के मिस्ल एक आयत भी बना कर नहीं ला सकता। फिर इसी अक़ीदा के साथ इस किताब की ताज़ीम व तकरीम करे। और निहायत ही खुजू व खुशू और इख़्लास के साथ इस किताबे मजीद की तिलावत करता रहे। और इसके अवामिर व नवाही पर सिद्क़ दिल से ईमान लाकर इस पर अमल करे। और इसके तालीम व तअल्लुम में अपनी ताक़त भर कोशिश करता रहे और लोगों को कुरआनी अहकाम पर अमल करने की दावत देता रहे।

3. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए ख़ैर ख़्वाही :– रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के लिए ख़ैर ख़्वाही से मुराद यह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ख़ातिमुन्न नबीयीन मान कर उनकी रिसालत पर ईमान लाए। और वह जो कुछ लाए दिल से उसकी तस्दीक़ और ज़बान से उसका इक़रार व ऐलान करे। और उनकी ताज़ीम व तौक़ीर करे। और अपनी जान से भी बढ़कर उनसे मुहब्बत करे। और उनकी सुन्नतों पर खुद अमल करके उनकी दावत व शरीअत की एक एक बात उन की ज़ात व सिफ़ात, उनकी सूरत व सीरत उनके असहाब उनकी अज़वाज व औलाद बल्कि हर उस चीज़ से मुहब्बत व उल्फ़त रखे जिनको खुदा के रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से तअल्लुक़ हो। और उनके दुश्मनों से दुश्मनी और उनके दोस्तों को दोस्त रखे। उनकी हदीसों और फ़रमानों का इकराम व एहतिराम करते हुए दिल व जान से उन पर अमल करे और दूसरों को उन पर अमल करने की दावत देता रहे। और उनकी इज़्ज़त व अज़मत के लिए अपनी जान, अपना माल, अपनी आल व औलाद को उन पर कुरबान कर देने का जज़्बा रखे।

4. अइम्मतुल मुसलेमीन की ख़ैर ख़्वाही :– इसके माने यह है कि मुसलामानों का अमीरुल मोमिनीन जब तक हक़ पर क़ायम रहे और वह उनको अल्लाह अज़्ज़वजल व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इताअत का हुक्म देता रहे तो तमाम मुसलमानों पर लाज़िम है कि उस अमीरुल मोमिनीन की बैअत पर क़ायम रहें। और उसकी

इताअ़त व फ़रमाँ बरदारी करते रहें। और उसका दिल से इकराम व एहतिराम भी करते रहें। और हरगिज़ हरगिज़ उसके ख़िलाफ़ न बग़ावत करें। और न उसके अहकाम की नाफ़रमानी करें। बल्कि उसकी इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ें और उसके हुक्म पर कुफ़्फ़ार से जिहाद करें। और अपने मालों की ज़कात और उ़श्र वग़ैरह उसके बैतुल माल में देते रहें। और हर तरह उसकी मुआ़विनत करें। हाँ अगर ख़ुदा ना ख़्वास्ता कोई अमीरुल मोमिनीन अल्लाह अ़ज़्ज़वजल व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ख़िलाफ़ कोई हुक्म दे तो मुसलमानों पर इसकी इताअ़त लाज़िम नहीं क्योंकि हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का फरमान है।

"ला ताअता लिमख़्लूकिन फ़ी मअ़सियतिल ख़ालिक़"

यानी ख़ालिके कायनात जल्ला जलालुहू की मअ़सियत और नाफ़रमानी में किसी मख़लूक़ की इताअ़त जाइज़ नहीं। यह तक़रीर उस वक़्त है जब कि अइम्मतुल मोमिनीन से मुराद अमीरुल मोमिनीन और ख़ुल्फ़ा हों। और अगर अइम्मतुल मुस्लेमीन से उ़ल्माए दीन और अइम्मए मुजतहेदीन मुराद हों तो उनकी ख़ैर ख़्वाही का यह मतलब होगा कि तमाम मुसलमान उ़ल्माए दीन का इकराम व एहतिराम करें। और दीनी मसाइल में उन पर एतिमाद करके उनके बताए हुए फ़तावे और मसाइल पर अ़मल करें। और कभी हरगिज़ हर गिज़ उनकी बे हुरमती न करें। बल्कि हर वक़्त उनके अदब व एह़तिराम को मलहूज़ रखें और उनकी नुस़रत व हिमायत और इमदाद व एआ़नत में कमर बस्ता रहें।

5. **आ़म्मतुल मुसलेमीन की ख़ैर ख़्वाही** :–आ़म्मतुल मुस्लेमीन की ख़ैर ख़्वाही यह है कि हर मुसलमान हर एक मुसलमान को अपना दीनी भाई समझे और उसको हर क़िस्म की तकलीफ़ों से अपनी ताक़त भर बचाऐ रखे। और हर मुसलमान के लिए वही पसन्द करे जो अपने लिए पसन्द करता है और जिन चीज़ों को अपने लिए ना पसन्द समझता है हर मुसलमान के लिए भी उसको ना पसन्द समझे। हर मुसलमान हर एक मुसलमान पर शफ़ीक़ बन कर उसको अच्छी बातों का हुक्म देता रहे। और बुरी बातों से रोकता रहे। और हर मुसलमान हर एक मुसलमान के ख़ून और उसके माल और उसकी आबरु की हिफ़ाज़त करे। हर छोटा बड़ों की ताज़ीम व तौक़ीर करे और हर बड़ा अपने छोटों पर शफ़क़त व रहमत करे। कोई मुसलमान किसी मुसलमान को न ईज़ा दे न धोका दे न हसद करे। बल्कि जहाँ तक

हो सके हर मुसलमान हर एक मुसलमान की मदद करे और उसकी भलाई और ख़ैर ख़्वाही में कोशिश करता रहे।

यह हदीस अगरचे इसके अल्फ़ाज़ बहुत कम हैं मगर इसके दामन में मआ़नी व मतालिब का इतना बड़ा ख़ज़ाना पोशीदा है कि अगर मुसलमान इस हदीस पर अ़मल करने लग जाऐं तो उनके दीन व दुनिया के हुस्न में एक ख़ूबसूरत निखार पैदा हो जाए। और मुस्लिम मुआ़शरा इस क़दर सुधर जाए कि उसकी नूरानियत में चार चाँद लग जाऐं और ग़ैर मुस्लिम अक़वाम के लिए इस्लामी मुआ़शरा में ऐसी कशिश पैदा जो जाए कि वह उसके हुस्न व जमाल में शमआ़ के परवाने बन जाऐं। लेकिन अफ़सोस सद अफ़सोस कि मुसलमानों की गफ़लत और बे हिसी और उनके जमूद व ख़मूद को देख देख कर दिल जलता है और बार बार यह कतआ पढ़ पढ़ कर घुटता और कुढ़ता रहता हूँ।

ولونا دیت حیالا استجابا ولکن لا حیاۃ لمن تنادی

فلو نارا نفخت بہا اضاءت ولکن انت تنفخ فی الرماد

तर्जुमा :— अगर तू किसी ज़िन्दा को पुकारता तो वह ज़रुर जवाब देता लेकिन तू जिसको पुकार रहा है उसमें तो कोई ज़िन्दगी ही नहीं है फिर भला वह कैसे जवाब देगा? अगर तू आग में फूँक मारता तो वह ज़रुर रौशन हो जाती लेकिन तू जिसमें फूँक मार रहा है वह तो राख है भला कैसे रौशन हो सकती है? हाये इस दौर में मुसलमान ज़िन्दा नहीं रहा बल्कि मर गया। हाये मुसलमान इस ज़माने में आग नहीं बल्कि राख हो चुका है।

रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सात वसीयतें

हदीस :– हज़रत अबू ज़र गफ़्फ़ारी रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि मैनें कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! आप मुझको कोई वसीयत फ़रमायें तो आप ने फ़रमाया कि मैं तुम को अल्लाह से डरते रहने की वसीयत करता हूँ। क्योंकि यह तुम्हारे कामों को बहुत ज़्यादा संवार देने वाली चीज़ है। तो मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा वसीयतें फरमाईये। तो आप ने फरमाया कि तुम कुरआन की तिलावत और ज़िक्रे इलाही को अपने लिए लाज़िम कर लो। क्योंकि इससे आसमान में तुम्हारा ज़िक्र होगा। और ज़मीन में यह तुम्हारे लिए नूर बनेगा। मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा फरमाईये? तो फ़रमाया कि तुम तवील ख़ामोशी को लाज़िम पकड़ो क्योंकि यह शैतान को बहुत ज़्यादा फटकारने वाली चीज़ है। और यह तुम्हारे दीनी कामों में तुम्हारे लिए मददगार होगी। मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा फरमाईये? तो फ़रमाया कि बहुत ज़्यादा हँसने से बचो क्योंकि यह दिल को मुर्दा और चेहरे के नूर को ग़ारत कर देता है। मैंने कहा कि मुझे कुछ और ज़्यादा फ़रमाईये? तो फ़रमाया कि तुम हक़ बात बोल दिया करो अगरचे लोगों को कड़वी लगे। मैंने कहा कि कुछ और ज़्यादा मुझे बताईये? तो आपने फ़रमाया कि तुम अल्लाह अज़्ज़वजल के मामले में किसी मलामत करने वाली की मलामत से न डरो। मैंने कहा कि मुझे कुछ और ज़्यादा बताईये? तो आपने फ़रमाया कि तुम लोगों के ऐबों को बयान करने से ज़बान को रोके रखो। जिसके बारे में तुम जानते हो कि वह उयूब खुद तुम्हारी ज़ात में मौजूद हैं। (मिश्कात, जिल्द2, सफ़ा 415)

हज़रत अबू ज़र गफ़्फ़ारी :– इस हदीस के रावी हज़रत अबू ज़र गफ़्फ़ारी रदियल्लाहु तआला अन्हु हैं यह बहुत ही जलीलुल क़द्र और निहायत ही बुलन्द मर्तबा आबिद व ज़ाहिद सहाबी हैं। इब्तिदाऐ इस्लाम ही में यह मुसलमान हो गये थे यहाँ तक कि बाज़ मुअर्रेख़ीन का क़ौल है कि इन से पहले सिर्फ़ चार आदमियों ने इस्लाम कबूल किया था यह पाँचवें मुसलमान हैं। इस्लाम क़बूल करने के बाद हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम

की इजाज़त से अपने वतन जाकर अपनी क़ौम में रहने लगे। फिर जंगे ख़न्दक के बाद मदीना आकर बारगाहे रिसालत में हाज़िर बाश हो गये। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के बाद यह कुछ दिनों के लिए मुल्के शाम जाकर इकामत पज़ीर हो गये। मगर शाम के गवर्नर हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु से उनकी नहीं बनी। इस लिए फिर मदीना मुनव्वरा चले आये और फिर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु के हुक्म से मदीना मुनव्वरा से चन्द मील दूर जुब्दा नामी एक छोटे से गाँव में घर बना कर रहने लगे। यहाँ तक कि 32 हिजरी में इसी गाँव के अन्दर आपने वफ़ात पायी। सहाबा किराम के जुहदो तक़्वा का बेहद चर्चा था। आप इबादत व रियाज़त में भी बहुत मशहूर थे। हक़ गोई में आप किसी से मरऊब नहीं होते थे। और सहाबा किराम का बेहद एहतिराम करते थे। ज़माना जाहिलयत में इस्लाम कबूल करने से पहले भी यह "मुवहहिद"(ख़ुदा को एक मानने वाला) थे। और एक ख़ुदाऐ वाहिद की इबादत किया करते थे। सहाबा व ताबेअीन की एक बड़ी जमाअत ने हदीस में इनकी शागिर्दी का शरफ़ पाया है।

शरहे हदीस :– मज़कूरा बाला हदीस का ख़ुलासा यह है कि हज़रत अबू ज़र ग़फ़्फ़ारी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने दरबारे रिसालत में अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! आप मुझे कुछ वसीयतें फ़रमायें और यह सातों वसीयतें इतनी जामेअ् और मुकम्मल हैं कि दर हक़ीक़त क़यामत तक आने वाली उम्मते मुस्लिमा के हर हर फ़र्द के लिए सलाह व फ़लाह और दीनी मसाइल व इस्लामी ख़साइल के वह ख़ज़ाने हैं जिनकी मिसाल नहीं मिल सकती। और बिला शुबा यह सातों वसीयतें ख़ुदा शनासी और ख़ुदा रसी और फ़लाहे दारैन की मन्ज़िल के लिए ऐसी सात शाहराहें हैं कि जिन पर चलने वाला यक़ीनन मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँचेगा। और कभी हरगिज़ नहीं फटकेगा। न बहकेगा। क्योंकि यह शाहराहें सिराते मुस्तक़ीम की वह सीधी सड़कें है जिन में न कोई कजी है न कोई मोड़ है बल्कि यह सीधी मन्ज़िले मक़सूद तक पहुँचाने वाली राहें हैं। अब इन सातों वसीयतों का ख़ुलासा मुलाहिज़ा फ़रमा कर इन पर अमल की कोशिश फ़रमाइये। ख़ुदावन्द करीम हम और आप और सब मुसलमानों को इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन

1. **खुदा से डरना :–** तक़वा और ख़ौफ़े इलाही ज़ाहिर है कि जो शख़्स इस नेअ़मते उ़ज़मा से सरफ़राज़ होगा उसके दीन व दुनिया के किसी काम में न कजी होगी न कमी होगी न कोताही। और जो कुछ इस मुक़द्दस जज़्बे के साथ दीन व दुनिया का कोई काम करेगा तो चूँकि वह इफ़रात व तफ़रीत और हर किस्म की कोताहियों और ऐबों से पाक होगा। इसलिए ज़ाहिर है कि इसका फ़ायदा यही होगा कि इस के हर काम में ज़ीनत आराइश होगी। और उसके हर अ़मल में बेहतरीन सिंगार व सुधार पैदा हो जायेगा। जिसको हदीस में " फइन्नहु अज़यनु लिअमरिक कुल्लेहि" फरमाया गया है यानी तेरा हर अ़मल मुज़य्यिन हो जायेगा। यही वजह है कि कुरआने मजीद में बार बार " इत्तकुल्लाह" फ़रमाकर हक़ जल्ला मजदहु ने अपने बन्दों को तक़वा और खुदा से डरने का हुक्म दिया है। और हदीस शरीफ़ में हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने यहाँ तक इरशाद फ़रमाया " तक़वा ही तमाम नेक कामों का दारो मदार है" अल्लाह तआला हम तमाम मुसलमानों को तकवा और ख़ौफ़े खुदा की ला ज़वाल और बे मिसाल दौलत से मालामाल फ़रमाये। आमीन।

2. **तिलावते कुरआन व ज़िक्रे इलाही :–** तिलावते कुरआन मजीद का अजरो सवाब कितना बुलन्द व बाला है इससे तक़रीबन हर मुसलमान अच्छी तरह वाक़िफ़ है इसके फ़वाइद व मुनाफ़ाअ् में से इस हदीस में हुजूर सय्यदे आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ख़ास तौर पर दो फ़ायदों का ज़िक्र फ़रमाया है। एक फ़ायदा तो यह है कि तिलावत और ज़िक्रे इलाही करने वालों का आसमानों में ज़िक्र व चर्चा होगा क्योंकि अहादीसे स़हीहा में आया है कि जब कोई बन्दा ज़मीन पर कोई अमल करता है तो अल्लाह तआ़ला अपने फ़रिश्तों में उसका ज़िक्र व चर्चा फ़रमाता है। और फ़रिश्तों को मुख़ातब करके इरशाद फ़रमाता है कि ऐ फ़रिश्तों! देख लो। रुऐ ज़मीन पर मेरा बन्दा तमाम दुनियावी लज़्ज़तों और आसाइशों को ठुकरा कर मेरी रज़ा के लिए अमले सॉलेह़ में मशगूल हो गया है। मेरा कलाम पढ़ता है और मेरा ज़िक्र करता है। फिर फ़रिश्ते भी आपस में उस बन्दे का ज़िक्र करते हैं और उसकी मदह़ व सना करने लगते हैं। इसी तरह आसमानों में उस बन्दे के ज़िक्र का डंका बज जाता है ज़ाहिर है कि यह कितना बड़ा फ़ायदा है?

दूसरा फ़ायदा यह कि तिलावते कुरआन मजीद और ज़िक्रे इलाही इसके लिए ज़मीन में नूर बन जाऐगा। इसका मतलब यह है कि उसकी आँखो में इन दोनों नेक अमलो की बदौलत एक ऐसा ईमानी नूर पैदा हो जायेगा कि रुऐ ज़मीन में बेशुमार छिपी हुई कुदरत की निशानियाँ उसकी निगाहों के सामने मुनव्वर और रौशन हो जायेंगी। और वह कायनात के ज़र्रे ज़र्रे में कुदरते खुदावन्दी और उसकी रबूबियत की तजल्लियों का नज़ारा करेगा। इस तरह वह बहुत जल्द वासिले इलल लाह हो जायेगा। यही वह मज़मून है जिसको इस हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इन लफ्ज़ो के साथ इरशाद फ़रमाया :–

فانه ذکر لك فی السماء و نور لك فی الارض

तर्जुमा :– तिलावत और ज़िक्रे इलाही से आसमान में तुम्हारा ज़िक्र होगा और ज़मीन में यह तुम्हारे लिए नूर बनेगा।

3. तवील ख़ामोशी :– तीसरी वसीयत हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह फ़रमायी कि बातें कम करो और कुदरते ख़ुदावन्दी और उसकी शाने रबूबियत में ग़ौर व फ़िक्र करते हुए तफ़क्कुर व तदब्बुर के साथ देर तक खामोश रहा करो। इस अमल के बहुत से फ़वाइद में से हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में दो जलीलुल क़द्र फ़ायदों का ज़िक्र फ़रमाया। पहला यह कि ख़ामोशी शैतान को फटकारने वाली चीज़ है। जाहिर है कि जब आदमी ख़ामोश रहेगा और दीन की बातों में तफ़क्कुर व तदब्बुर करता रहेगा तो उसके मुँह से कोई ग़लत और नाजाइज बात नहीं निकलेगी और शैतान नाकाम व ना मुराद होकर भाग जायेगा। क्योंकि शैतान का यही काम है कि वह वसवसा डाल डाल कर इन्सान को नाजाइज़ बातें बोलने की तरग़ीब दिलाता रहता है। और जब कोई आदमी ख़ामोश रहेगा और उसकी ज़बान से कोई ला यअ़नी और लग़्व(बेकार) बात नहीं निकलेगी तो शैतान अपने काम में नाकाम व ना मुराद होकर यकीनन वहाँ से भाग निकलेगा। और दूसरी यह कि जब आदमी अपने दीन में और दीन की बातों में ग़ौर व फ़िक्र करने में ख़ामोशी के साथ मशग़ूल रहेगा और दुनियावी बात चीत में मशग़ूल न रहेगा तो दीन और दीनी बातों के सोचने और समझने और उन पर अमल करने के मन्सूबे बनाने का ख़ूब मौक़ा मिलेगा। इस तरह ख़ामोशी दीन के कामों के लिए बिला शुबा और

यक़ीनन मददगार साबित होगी। इसी मज़मून को इस हदीस में इस तरह बयान फ़रमाया गया कि :–

فانہ مطردۃ للشیطان و عون لک فی امر دینک۔

तर्जुमा :– " तवील ख़ामोशी शैतान को बहुत ज़्यादा फ़टकारने वाली चीज़ है और यह तुम्हारे दीनी कामों में तुम्हारे लिए मददगार भी होगी।"

4. कम हँसना :– ज़्यादा हँसने के दो नुक़सान इस हदीस में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाये हैं। एक यह कि ज़्यादा हँसने से दिल मुर्दा हो जाता है और दूसरा यह कि चेहरे का नूर बरबाद व ग़ारत हो जाता है। ज़ाहिर है कि हँसी की कसरत उसी वक़्त होगी जब दिल ख़ौफ़े इलाही और यादे ख़ुदावन्दी से ग़ाफ़िल हो। और यही दिल की मौत है और जब दिल में इबादतों की वजह से नूरानियत पैदा होती है तो चेहरे पर भी नूर का ज़ुहूर होता है। यही वजह है कि नेक बन्दों के चेहरों पर एक ख़ास क़िस्म की रौनक़ और एक तरह का नूरानी जमाल महसूस होता है और जब दिल मुर्दा और बे नूर हो जायेगा तो यक़ीनन बिला शुबाह चेहरे की नूरानी रौनक़ और नूरानियत बरबाद व ग़ारत हो जायेगी। इस लिए इस हदीस में इरशाद फ़रमाया गया कि :–

فانہ یمیت القلب و یذھب بنور وجھک۔

तर्जुमा :–" ज़्यादा हँसना दिल को मुर्दा कर देता है और चेहरे के नूर को ग़ारत कर देता है"

5. हक़ गोई :– हर जगह हर मौक़ा और हर मामला में अलानिया बात कह देना यह एक मोमिने कामिल का ऐसा तुर्रए इम्तियाज़ और इतना बुलन्द पाया ईमानी जौहर है कि एक हदीस में हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि :–

افضل الجھاد کلمۃ حق عند السلطان الجابر۔

तर्जुमा :–"ज़ालिम बादशाह के सामने हक़ बात बोल देना जिहाद की अफ़ज़ल व आला क़िस्म है "

चुनाँचे हज़रत उमर फ़ारुक़े आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु इस ख़सलत में बहुत मुमताज़ थे। तो मक़ामे मदह में उनके लिए " अन्नातिक़ु बिलहक़्क़े वस्सवाब" का मुअज़्ज़िज़ ख़िताब दरबारे नुबुव्वत से अता किया गया। इसी लिए इस हदीस में पाँचवी नसीहत यह बयान की गई कि "

कुलिल हक़्क़ा व इन् काना मुर्रा" यानी हक़ बात कह देनी चाहिये अगरचे वह तल्ख़ व कड़वी ही क्यों न हो।

6. ख़ुदा के मामले में किसी की परवाह न करना :–

इस वसीयत का मलत़ब यह है कि ख़ुदा के अह़काम और दीने इस्लाम के हर पैग़ाम को पहुँचाने और बयान करने में कभी हरगिज़ कोई ख़ौफ़ व हिरास और झिझक नहीं होनी चाहिये। न किसी के तअ़्न व तशनीअ़ और किसी की लानतों मलामत की परवाह करनी चाहिये। ह़लाल को ह़लाल, और ह़राम को ह़राम, बुरे को बुरा,अच्छे को अच्छा, काफ़िर को काफ़िर, बद मज़हब को बद मज़हब, फ़ासिक़ को फ़ासिक़, बिला तरद्दुद और बिला ख़ौफ़ व ख़त़र कहना चाहिये। और इस मामले में हरगिज़ हरगिज़ किसी के बुरा भला कहने की परवाह नहीं करना चाहिये। इस ह़दीस में इरशादे नबवी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का यही मतलब है कि " ला तख़फ़ फ़िल्लाहि लौमत लाइमिन" यानी अल्लाह अज़्ज़वजल के मामले में किसी मलामत करने वाली की मलामत से मत डरो।

7. दूसरों के उ़यूब तलाश मत करो:– इस वसीयत का मत़लब यह है कि दूसरों के उ़यूब बयान करने से पहले यह सोचना ज़रूरी समझ लेना चाहिये कि वह उ़यूब खुद मेरी ज़ात में तो मौजूद नहीं है? अगर बिलफ़र्ज़ अपनी ज़ात में वह उ़यूब हों तो फिर हरगिज़ हरगिज़ यह जाइज़ नहीं कि दूसरों के उन ऐबों को ढूँढ ढूँढ कर उनका चर्चा करें और खुद अपने नफ़्स की इस्लाह कर लें फिर दूसरों के ऐबो पर इस्लाह़ की नियत स़े नज़र डालें।

दुनिया में लिबास आख़िरत में नंगी

ह़दीस़ :– हज़रत उम्मे सलमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने कहा कि एक रात नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम बेदार हुए तो फ़रमाया कि सुब्ह़ानल्लाह इस रात में कैसे कैसे फ़ित्ने उतारे गये। और कैसे कैसे ख़ज़ाने खोले गये। इन हुजरे वालियों को (इबादत के लिए) जगाओ क्योंकि बहुत सी औरतें दुनिया में लिबास पहने हुए हैं मगर वह आख़िरत में नंगी होंगी।

ह़ज़रत उम्मे सलमा :– इस ह़दीस को रिवायत करने वाली उम्मुल मोमिनीन बीबी उम्मे सलमा रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हा हैं इनका असली नाम नबीयता या रमला है और यह अबू उमय्या की साहिबज़ादी हैं। यह पहले

हज़रत अबू सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हु की बीवी थीं। हज़रत अबू सलमा उनको अपने बच्चे के साथ लेकर हिजरत के लिए रवाना होने लगे तो बीबी उम्मे सलमा को उनके मैके वालों ने रोक लिया और बच्चे को हज़रत अबू सलमा के ख़ानदान वालों ने छीन लिया। मगर हज़रत अबू सलमा बीवी बच्चों को छोड़ कर मदीना मुनव्वरा चले गये। फिर कुछ दिनों बाद बीवी उम्मे सलमा भी अपने बच्चे को हमराह लेकर अकेली हिजरत करके मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा रवाना हो गईं। हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हु जब तीन हिजरी या चार हिजरी में वफ़ात पा गये तो हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बीबी उम्मे सलमा से निकाह फ़रमा कर उनको उम्माहाते मोमिनीन(मोमिनों की माएँ) में शामिल कर लिया। तीन सौ अटहत्तर हदीसें उन्होनें हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत की हैं। 59 हिजरी में चौरासी साल की उम्र पाकर मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पायी और जन्नतुल बक़ीअ् में मदफ़ून हुई। बहुत से सहाबा व ताबेअीन आपके शागिर्दों में हैं।

शरहे हदीस :– इस हदीस के बारे में मुन्दरजा ज़ैल बातें याद रखने के क़ाबिल हैं।

1. इस हदीस को हज़रत इमाम बुख़ारी अलैहिर्रहमा ने इसके अलावा मुन्दरजा ज़ैल अबवाब में ज़िक्र किया है सलातुल लैल, अलामातुल नुबुव्वत, किताबुल अदब, किताबुल लिबास, किताबुल फ़ितन और हज़रत इमाम तिरमिज़ी ने इस हदीस को सिर्फ़ किताबुल फ़ितन में दर्ज किया है।

ख़ुदावन्द आलम जल्ला जलालुहू हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को आइन्दा होने वाले फ़ितनों और फ़ुतूहात के ख़ज़ानों का ख़्वाब में या बेदारी में मुशाहिदा करा दिया और आपने उनकी कसरत को देखकर तअज्जुब का इज़हार फ़रमाते हुए यह इरशाद फ़रमाया :–

सुब्हानल्लाह आज की रात में किस क़दर ज़्यादा फ़ितने और ख़ज़ाने आसमान से ज़मीन पर उतारे गये हैं।

बुख़ारी शरीफ़ की एक दूसरी रिवायत में यूँ भी आया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह इरशाद फ़रमाया कि :–

" मैं तुम्हारे घरों में फ़ित्नों को इस तरह गिरते हुए देख रहा हूँ जिस

तरह बारिश के क़तरात मुसलसल और लगातार ज़मीन पर गिरते हैं"

2. बुख़ारी शरीफ़ के हवाशी में है कि फ़ितनों से मुराद " अज़ाब" और ख़ज़ानों से मुराद " रहमतें" हैं। और बाज़ शारेहीने हदीस ने फ़रमाया कि फ़ितनों से मुराद आइन्दा होने वाले फ़सादात और लड़ाईयाँ हैं जो इस उम्मत के लिए बाइसे फ़ितना हैं। जैसे अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत, जंग जमल, जंग सिफ़्फ़ीन, जंग हुर्रा जंगे कर्बला, वग़ैरह जिनसे बहुत ज़्यादा फ़ितने फैले और मुसलमानों का बेहद जानी व माली नुक़सान हुआ।

और ख़ज़ानों से मुराद वह फ़ुतूहात हैं जो ख़ुल्फ़ाऐ राशिदीन और उनके बाद आने वाले मुस्लिम सलातीन को हासिल हुई कि फारस व रोम बल्कि यूरोप व एशिया के ख़ज़ाने मफ़तूह होकर इस्लामी बैतुल माल में आ गये।

4. इसके बाद हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हुजरे वालियों यानी अपनी अज़वाजे मुताहरात को जगाने का हुक्म फ़रमाया कि वह उठ कर नमाज़े तहज्जुद पढ़े। आप का यह मुबारक तरीक़ा था कि जब कोई ख़ौफ़ नाक मन्ज़र देखते थे तो फ़ौरन नमाज़ में मशग़ूल हो जाते थे। और दूसरों को भी उसका हुक्म फरमाते थे। चूँकि उस वक़्त अज़वाजे मुताहरात ही नज़रों के सामने थीं इस लिए आपने उनको जगाने का हुक्म दिया था ताकि ख़ुद भी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम इबादत में मसरुर हो जाऐं और उम्मत की माँए भी ख़ुदा की इबादत में लग जाएं।

5. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी मुक़द्दस बीवियों को जगाने का हुक्म फ़रमाया और उस का सबब यह बताया कि बहुत सी औरतें जो इस दुनिया में क़िस्म क़िस्म के लिबासों और पोशाको में मुलब्विस नज़र आती हैं क़यामत के दिन बिल्कुल नंगी रहेंगी क्योंकि आख़िरत में लिबास और जन्नत की पोशाक मिलने का दारोमदार नेक आमाल ही पर है तो जिन औरतों ने दुनिया में नेकियों का ज़ख़ीरा नहीं जमा किया और अच्छे आमाल से ख़ाली हाथ आख़िरत में गईं तो भला आख़िरत में इन्हे कहाँ से लिबास मिलेगा ? इसलिए वह दुनिया में तों अगरचे तरह तरह के लिबासों में मुलब्विस रहीं हैं मगर आख़िरत में बिल्कुल नंगी रहेंगी इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में ख़ुसूसी तौर पर अपनी बीवियों और दूसरी औरतों को आमाले सालेहा की तरग़ीब दी ताकि वह

दुनिया में इबादत करके आख़िरत के लिबास का सामान करलें।

मसाइले हदीस :—इस ह़दीस से मुन्दरजा ज़ैल मसाइल पर रौशनी पड़ती है।

1. रात को अपने अहल व अ़याल को इबादत के लिए जगाना मुस्तहब है ख़ुसूसन ऐसी सूरत में जब कि किसी अहम वाक़िआ का ज़ुहूर हुआ हो।

2. तअ़ज्जुब के मौक़ा पर सुब्हानल्लाह कहना हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत है।

3. रात में भी नेकियो का हुक्म देना, और बुराईयों से मना करना, और लोगों को भी मसाइले दीन बताना जाइज़ है।

4. ख़ास कर अपने अहल व अ़याल को नसीहत करना और उनको तरग़ीब व तरहीब सुनाना भी मसनून तरीक़ा है।

5. फक़त औरतों ही को वाज़ सुनाना जाइज़ है।

6. अगर किसी शख़्स को किसी फ़ितना या ख़ुशख़बरी की इत्तिलाअ़ हो जाए तो लोगों को उस से आगाह कर देना जाइज़ है।

ख़ूने नाह़क़ की मुमानअ़त

हदीस :— हज़रत जुरैर रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि उनसे नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "तुम लोगों को ख़ामोश करो" फिर आपने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग मेरे बाद पलट कर कुफ़्फार मत हो जाना कि तुम्हारा बाज़ बाज़ की गरदन मारे।

हज़रत जुरैर :— इस हदीस के रावी हज़रत जुरैर बिन अ़ब्दुल्लाह बजली रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु सहाबी हैं। यह मशहूर बा करामत मुह़द्दिस अबू ज़रआ़ के दादा हैं। हज़रत जुरैर बहुत ही ख़ूबसूरत वजीह दराज़ कद इतने लम्बे थे कि ऊँट की हाँक तक उनका सर पहुँचता था। और उनका जूता तक़रीबन एक हाथ लम्बा होता था। बहुत बहादुर भी थे।

10 हिजरी में ह़ज्जजतुल विदाअ़ से पहले मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए। आपसे एक सौ हदीसें मरवी हैं और आपके शागिर्दों की तादाद बहुत ज़्यादा है। आप कुछ दिनों कूफ़ा में रहे। फिर क़ुरकीसिया चले गये। वहीं 51 हिजरी में आपकी रिहलत हुई।(फ़ुयूज़ुल बारी व इकमाल वग़ैरह)

हज्जतुल विदाअ़ :— इस ह़दीस में ह़ज्जतुल विदाअ़ का ज़िक्र आया है इसकी तौज़ीह व तशरीह यह है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि वसल्लम ने 10 हिजरी में आख़िरी ह़ज फ़रमाया उस ह़ज को ह़ज्जतुल विदाअ़ इस लिए कहते है कि विदाअ़ के माने रुख़सत करने के हैं।चूँकि हूजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इस ह़ज में तमाम क़बाइले अ़रब को इस तरह़ रुख़सत फ़रमाया जैसे कि दुनिया से रुख़्सत फ़रमाने वाला अपने पसमान्दगान को रुख़सत किया करता है इस लिए इस ह़ज का नाम ह़ज्जतुल विदाअ़ हो गया है।

शरहे ह़दीस़ :– यह ह़दीस हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के एक त़वील ख़ुत्बे का एक टुकड़ा है। मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपने आख़िरी ह़ज ह़ज्जतुल विदाअ़ के मौक़े पर जब लोग मिना में जमरों को कन्करी मारने के लिए जमा थे। उस वक़्त यह ख़ुत्बा इरशाद फ़रमाया था। बुख़ारी शरीफ़ के हाशिये में हैं कि इस ह़दीस में सिर्फ़ दो ही जुमले हैं एक " ला तरजू बअ़्दी कुफ़्फ़ारा" और दूसरा " यद़रिब बअ़्दोकुम रिक़ाबा बअ़्दिन" अब दो हाल से ख़ाली नहीं या तो दूसरा जुमला पहले जुमले का बयान है या दो अलग अलग मुस्तिक़ल जुमले हैं अगर दूसरा जुमला पहले जुमले का बयान हो तो ह़दीस़ का मतलब यह होगा कि तुम लोग मेरे बाद काफ़िरो जैसा काम यानी एक दूसरे की गरदन मारना यह धन्धा कभी हरगिज़ मत करना। और अगर दूसरा जुमला पहले जुमले का बयान न क़रार दिया जाए तो ह़दीस का ह़ासिल मफ़हूम यह होगा कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इस ह़दीस में अपनी उम्मत को दो बातों से मना फ़रमाया है एक बात तो यह है कि तुम लोग मेरे बाद काफ़िर मत हो जाना बल्कि आख़िरी दम तक इस्लाम पर क़ायम रहना। और दूसरी बात यह कि तुम लोग एक दूसरे को नाह़क़ क़त्ल मत करना।

फ़वाइदे मसाइल :– 1. इस ह़दीस को इमाम बुख़ारी ने " मुग़ाज़ी" और " दियात" में भी ज़िक्र फ़रमाया है और इमाम मुस्लिम ने किताबुल ईमान में और निसाई ने किताबुल इल्म में और इब्ने माजा ने किताबुल फ़ितन में तहरीर फ़रमाया है।

2. मुसलमान के क़त्ल को ह़लाल समझ कर किसी मुसलमान का ख़ून कर देना कुफ़्र है और मुसलमान के क़त्ल को ह़राम जानते और मानते हुए किसी मुसलमान को क़त्ल कर देना गुनाहे कबीरह है। जिस पर कुरआन मजीद में अज़ाबे शदीद की वईद आयी है।

3. आलिमों की तक़रीर के लिए बात चीत करने वाले मजमअ़ को ख़ामोश कराना जाइज़ है।

4. वअ़्ज़ व तक़रीर के वक़्त हाज़ेरीने मजलिस को ख़ामोश होकर सुकून व इत्मीनान के साथ वअ़्ज़ व तक़रीर सुनना लाज़िम है और हर खुत्बा का सुनना वाजिब है।

दिल की सख़्ती का इलाज

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मन्कूल है कि एक शख़्स ने नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की तो आपने फ़रमाया कि तुम यतीम के सर पर हाथ फैलाओ और मिस्कीन को खाना खिलाओ।

शरहे हदीस :– "क़स्वतुन" के माना दिल की सख़्ती के हैं। दिल की सख़्ती एक रुहानी बीमारी है। जब दिल में सख़्ती पैदा हो जाती है तो दिल से रहम व शफ़क़त का जज़्बा ख़त्म हो जाता है। और आदमी बिल्कुल बे रहम हो जाता है। और जब इन्सान का दिल रहम व मेहरबानी के जज़्बे से ख़ाली हो जाता है तो आदमी बिल्कुल ही बद खुल्क़ बल्कि इन्तिहाई ज़ालिम व ख़ून खुवार दरिन्दों के मिस्ल हो जाता है। उसको न किसी पर रहम आता है न वह किसी के साथ मेहरबानी शफ़क़त करता है न किसी पर उसको प्यार आता है। न वह किसी से मुहब्बत व मुरव्वत का बरताव करता है बल्कि हर वक़्त जुल्म व सितम पर कमर बस्ता रहता है। यहाँ तक कि लोगों पर जुल्म व सितम ढाने में उसको ख़ास क़िस्म की लज़्ज़त महसूस होती है। और इन्सानों और जानवरो के दुख दर्द और उनकी मुसीबतों को देखकर उसको मुसर्रत व खुशी होती है।

अब ज़ाहिर है कि " क़स्वतुन" यानी सख़्त दिली कितनी ख़तरनाक और किस क़दर मोहलिक बीमारी है। कि इसकी नहूसत से इन्सान हुस्ने अख़्लाक़ मुहब्बत व मुरव्वत सिला रहमी नेक सुलूक करीमाना बरताव रहम व शफ़क़त वग़ैरह सैकड़ों बेहतरीन ख़सलतों के महासिन व फ़ज़ाइल से महरुम हो जाता है और तमाम इन्सानों बल्कि जानवरो तक की निगाहों में मरदूद व मग़ज़ूब और क़ाबिले नफ़रत बन जाता है। और खुदावन्द कुद्दूस के दरबार में ज़ालिम व जाबिर और जफ़ा कार सितम पेशा क़रार पाकर

क़ाबिले लानत बन जाता है और दुनिया व आख़िरत की तमाम भलाईयों से महरुम होकर गुनाहों का मुजस्समा और पाप का पुतला बना जाता है। और वह इसके सिवा और किसी लायक़ नहीं रहता कि उस पर मख़लूक़े ख़ुदा की लानतों और नफ़रतों की बेशुमार फटकार पड़ती रहे। और क़हरे इलाही की बिजलियाँ उसके ख़िरमने वजूद को सोख़्त करके उसको तहस नहस करती रहें। और वह दुनिया व आख़िरत में ज़लील व ख़्वार होकर ह़िरमान व ख़सरान के ऐसे अ़मीक़ ग़ार में गिर पड़े जहाँ सलाह व फ़लाह की रौशनी भी न पहुँच सकती हो। इसी लिए सह़ाबा किराम में से एक ख़ैर पसन्द शख़्स ने जो इस क़स्वतुन (सख़्त दिली) की बीमारी में गिरफ़्तार था। दोनों आलम के हकीम रसूले करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बारगाहे शिफ़ा में हाज़िर होकर इस बीमारी का इलाज पूछा और अपनी सख़्त दिली की शिकायत अर्ज़ की। तो हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इस बीमारी के यह दो इलाज बताए कि :–

1. तुम यतीम के सर पर हाथ फिराओ।
2. मिस्कीन को खाना खिलाओ तो तुम्हारी सख़्त दिली की बीमारी दूर हो जायेगी।

मर्ज़ व इलाज में मुमानअ़त :– अब यहाँ यह सवाल पैदा होता है कि यतीम के सर पर हाथ फिराने से और मिस्कीन को खाना खिलाने से इन्सानों के दिल की सख़्ती क्यों कर और कैसे दूर हो जाएगी।? आख़िर इन दोनों कामों को दिल की सख़्ती से क्या तअ़ल्लुक़ है? तो इसका जवाब यह है कि यह दुनिया आलमे अस्बाब है और इसकी दुनिया की हर चीज़ में एक ख़ास तासीर है। और हर चीज़ की तासीरात दूसरी चीज़ों में असर अन्दाज़ होती है और हर चीज़ किसी न किसी चीज़ का सबब बनती है। क्योंकि ख़ल्लाक़े आलम ने एक चीज़ को दूसरी चीज़ का सबब बना दिया है। और एक चीज़ की तासीर से दूसरी चीज़ आलमे वजूद में आ जाया करती है। मसलन किसी को खट्टा लीमू खाते देखकर सबके मुँह में पानी आ जाता है। प्याज़ काटने से सब की आँखो में आँसू आ जाता है। किसी आशोबे चश्म वाले की आँखों की सुर्ख़ी को देखकर सब की आँखों में सुर्ख़ी आ ज़ाती है। किसी को मुक्का दिखाने से वह गज़बनाक हो जाता है।

किसी के आगे हाथ जोड़ने से वह रहम दिल हो जाता है। यह सब कुछ क्यों ? और कैसे होता है ? इसके सिवा और क्या कहा जा सकता है कि यह सब असबाब व मुसब्बात की कार फरमाईयाँ हैं। और यह सब मुख़तलिफ़ चीज़ों की मुख़तलिफ़ तासीरात हैं। जो एक दूसरी चीज़ो में असर अन्दाज़ हुआ करती हैं। और यह सब असबाब व मुसब्बात और तासीरात व असरात खुदा के पैदा किये हुए हैं। जिनकी इल्लतों और हिकमतों को बन्दा कमा हक़्क़हु नहीं समझ सकता। बस यही हाल यहाँ भी है कि यतीम के सर पर हाथ फिराने और मिस्कीन को खाना खिलाने की यह तासीर है कि इन्सान के क़ल्ब में नरमी पैदा होकर उसके दिल की सख़्ती की बीमारी दूर हो जाती है। या यूँ कह लो कि यतीम के सर पर हाथ फिराना और मिस्कीन को खाना खिलाना यह दिल का नरम करने और क़ल्ब की सख़्ती दूर करने का सबब है कि जब यतीम के सर पर हाथ फिराओगे और मिस्कीन को खाना खिलाओगे तो दिल ज़रुर नरम होगा। और सख़्त दिली दूर हो जायेगी। इस लिए यतीम के सर पर हाथ फिराना और मिस्कीन को खाना खिलाना सख़्त दिली की बीमारी का शाफी इलाज है।

सर पर हाथ फिराने से क्या मुराद है ? :– याद रखो कि सर पर हाथ फिराने और मिस्कीन को खाना खिलाने से मुराद इन दोनों पर हर मामला में रहम व शफ़क़त करना है। वरना जाहिर है कि अगर कोई यतीम के सर जूता भी मारता रहे और हाथ भी फिराता रहे। इसी तरह मिस्कीन का गला भी घोंटता रहे और खाना भी खिलाता रहे। तो उससे हरगिज़ हरगिज़ उसके दिल की सख़्ती दूर नहीं हो सकती। तो इरशादे नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मतलब है कि यतीम के सर पर हाथ फिराये जो रहम व शफ़क़त का एक निशान है और मिस्कीन को खाना खिलाऐ। जो हुस्ने सुलूक और रहीमाना बरताव की एक अलामत है। खुलासा कलाम यह है कि यतीम के सर पर हाथ फिराये और मिस्कीन को खाना खिलाए। यानी हमेशा यतीम और मिस्कीन पर मुहब्बत व शफ़क़त करता रहे। और इन दोनों के साथ इन्तेहाई मुशफ़िक़ाना करीमाना सुलूक व बरताव करे। तो इसका यह असर होगा कि उसके दिल की सख़्ती का मर्ज़ दूर हो जाएगा और रहमदिली पैदा हो जाऐगी।

यतीम के साथ हुस्ने सुलूक :– यतीम के साथ अच्छा बरताव और

मुशिफ़ाकाना सुलूक करने की बहुत बड़ी फ़ज़ीलत है। एक हदीस शरीफ़ में है कि :– " मुसलमानों में सब से अच्छा और बेहतरीन वह घर है जिस घर में कोई यतीम हो। और उसके साथ बेहतरीन सूलूक किया जाता हो। और मुसलमानों के घरों में सब से बुरा और बदतरीन वह घर है कि जिसमे कोई यतीम हो और उसके साथ बदतरीन बरताव किया जाता हो।

इसी तरह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यतीमों के बारे में इरशाद फरमाते हुए यूँ फ़रमाया कि :–

" किसी यतीम बच्ची या बच्चे के साथ अच्छा सुलूक करने वाला जन्नत में मेरे साथ रहेगा।" (मिश्कात जिल्द 2, सफ़ा 423)

मिस्कीनों के साथ नेक बरतावः– मिस्कीनों के साथ अच्छा बरताव उन को खाना खिलाने और कपड़ा पहनाने का कितना बड़ा अज्र और कितना अज़ीम स्वाब है इस सिलसिले में भी एक हदीस पढ़ लो।

"हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स किसी नंगे को कपड़ा पहनाऐगा तो अल्लाह तआला उसको बहश्त का सब्ज़ लिबास पहनाएगा। और जो किसी भूके मुसलमान को खाना खिलाएगा तो अल्लाह तआला उसको जन्नत के मेवे खिलाएगा। और जो कोई किसी प्यासे मुसलमान को सैराब कर देगा तो अल्लाह तआला उसको जन्नत का वह शर्बत पिलाऐगा जिस पर मुहर लगी होगी।(मिश्कात जिल्द 1, सफ़ा 169)

बहर हाल मिल्लते इस्लामिया के यतीमों और मिस्कीनों के मुशफ़िक़ाना सुलूक और करीमाना बरताव। यह दिल की सख़्ती का एक शाफी इलाज होने के साथ साथ बेहतरीन अमले सॉलेह भी है। यही वजह है कि कुरआन मजीद और हदीसों में यतीमों और मिस्कीनों के साथ अच्छा सुलूक करने की बहुत ज़्यादा ताकीद आयी है। कुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने अपने हबीब सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ख़ास तौर पर फ़रमाया कि " फ़अम्मल यतीमा फ़ला तक़हर" यानी यतीम को किसी तरह मत दबाओ और मुसलमानों को भी मुख़ातिब करके इरशाद फ़रमाया कि " इन्नल लज़ीना याकुलूना अम्वालल यतामा। इन्नमा याकुलूना फ़ी बूतूनेहिम नारा" यानी जो लोग यतीमों का माल खा डालते हैं वह दर हकीक़त अपने पेटों में आग खा रहे हैं दूसरी जगह यतीमों के साथ बदसुलूकी करने वालों के बारे में मज़म्मत करते हुए कुरआन ने ऐलान फ़रमाया कि " फ़ज़ालिकल

लज़ी यदुअ़उल यतीमा वला यहुद्दो अ़ला तआमिल मिस्कीन" यानी जो शख्स यतीमों को धक्का दे और यतीमों को खाना खिलाने की रग़बत न दिलाऐ वह उन लोगों के तरीक़ो पर है जो क़यामत के मुन्किर हैं। यानी यतीमों को धक्का देना और मिस्कीनों को खाना खिलाने की तरग़ीब न देना यह मुसलमान का तरीक़ा नहीं है बल्कि काफ़िरों का तरीक़ा है।

खुलासए कलाम यह है कि हर मुसलमान मर्द औरत पर लाज़िम है कि मिल्लते इस्लामिया के यतीमों और मिस्कीनों पर हमेशा नज़रे रहमत रखे और निहायत शफ़कत व मुहब्बत के साथ उन लोगों से अच्छे से बरताव करे। काश दौरे हाज़िर के मुसलमान इस इरशादे नबवी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को अपना नमूनए अमल बना कर इस्लामी मुआशरा में बेहतरीन इन्क़िलाब पैदा करते। ताकि तालीमात नुबुव्वत से अक़वामे आलम को मुतअस्सिर करके उनको दामने इस्लाम में लाकर इस्लाम का बोल बाला करें।

तन्दरुस्ती में स़दक़ा करने की फ़ज़ीलत

हदीस :— हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि एक शख़्स ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम! कौन सा स़दक़ा अफ़ज़ल है ? तो आप ने फ़रमाया कि जब तू तन्दरुस्ती में माल की ख़्वाहिश होते हुए मोहताजगी का ख़ौफ़ और माल दारी की तमअ़ रखते हुए स़दक़ा करे।(तो यह अफ़ज़ल स़दक़ा है) और इतनी देर मत कर कि जान हलकूम तक आ पहुँचे उस वक़्त तू कहे कि फ़लाँ को इतना माल और फ़लाँ को इतना माल दिया और ह़ाल यह है कि अब वह माल (फ़लाँ) का हो चुका। (मिश्कात जिल्द 1 सफ़ा 164)

शरहे हदीस :— ह़दीस का मफ़हूम यह है कि अगरचे खुलूसे नियत के साथ स़दक़ा किया तो हर वक़्त और हर हालत में बहर सूरत बाइसे अजरो सवाब है मगर ऐसे वक़्त में जब कि आदमी तन्दुरुस्त होता है और हुसूले दौलत की कोशिश करता है। और माल जमा करने की हि़र्स अपने शबाब पर होती है और उसको यह भी डर लगा रहता है कि मैं कहीं मोह़ताज न हो जाऊँ। और माल व दौलत की ज़रुरतें भी उसके सामने होती हैं मगर इन सब के बावजूद स़दक़ा करना यह बहुत ही अफ़ज़ल और बहुत ही अजरो सवाब का मोजिब है। क्योंकि माल की हि़र्स उसको स़दक़ा देने

से रोकती है और वह उस हिर्स पर ग़ल्बा हासिल करके सदक़ा देता है। तो गोया नफ़्स से जिहाद करते हुऐ सदक़ा देता है इस लिए लाज़मी तौर पर उसका अजरो सवाब बढ़ जाता है और सरमाया परस्त बख़ीलों की यह कैफ़ियत होती है कि उम्र भर तो वह कन्जूसी में मुब्तला रहते हैं और किसी को कुछ नहीं देते और जब मौत के आसार नमूदार होते हैं और जान निकलने लगती है और माल की कोई ख़्वाहिश बाक़ी नहीं रहती है तो कहने लगते हैं कि मैनें फ़लाँ को इतना माल दिया। तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाते है कि मुसलमानों की यह कैफ़ियत नहीं होनी चाहिये। बल्कि मुसलमानों को चाहिये कि तन्दरुस्ती की हालत में जब कि माल की ख़्वाहिश और हिर्स अपने शबाब पर होती है उस वक़्त सदक़ा देना बेहतर और अफ़ज़ल है।

ईसाले सवाब

हदीस :– हज़रत सअ़द बिन उ़बादा से रिवायत है उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम! बेशक सअ़द की माँ की वफ़ात हो गई तो(उनके ईसाले सवाब के लिए) कौन सा सदक़ा अफ़ज़ल है? तो आपने फ़रमाया कि पानी। तो उन्होंने एक कुआँ खोदा और कह दिया कि यह कुआँ सअ़द की माँ को सवाब पहुँचाने के लिए है।

(मिशकात जिल्द 1, सफ़ा 169)

हज़रत सअ़द बिन उ़बादा :– इस हदीस के रावी सअ़द बिन उ़बादा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं उन की कुन्नियत अबू सालिस है। यह क़बीला खज़रज की शाख़ बनू सअ़दा से तअ़ल्लुक़ रखते थे यह क़बीला अन्सार के सरदार और उनके रईस थे। और अन्सार के बारह नक़ीबों में से एक बहुत ही वजीह नक़ीब थे। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद मुल्क शाम चले गये थे। और इस जमाअ़त ने इन से हदीसों की रिवायत की है कि उनकी वफ़ात का वाक़िआ यह है कि यह गुस्ल ख़ाने में मुरदा पाये गये। और इनका सारा बदन सब्ज़ रंग का हो गया था। किसी को इनकी वफ़ात का सबब मालूम नहीं हुआ। हाँ अल्बत्ता लोगों ने सुना कि कोई यह शेर पढ़ रहा है।

نحن قتلنا سيد الخزرج سعد بن عبادة

ورميناه بسهمين فلم نخط فؤادة

" यानी ख़ज़रज के सरदार सअ्द बिन उ़बादा को हम लोगों ने क़त्ल किया है और हम लोगों ने दो तीरों से मारा तो हम लोगों से उनके दिल को निशाना बनाने में ख़ता नहीं हुई।"

लोगों ने इस शेर पढ़ने वाले की आवाज़ को सुना लेकिन आस पास में किसी को नहीं देखा तो आम तौर पर लोग कहने लगे कि जिनों की जमाअ्त ने हज़रत सअ्द का तन्हाई के आ़लम में गुस्ल ख़ाने में क़त्ल कर दिया। यह वाक़िआ 15 हिजरी ख़िलाफ़ते फ़ारुकी के दौर में हुआ। और बाज़ का क़ौल है कि हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की ख़िलाफ़त के दौरान 11 हिजरी में हुआ। वल्लाहु तआला अअ्लम।

तबसरा :— हज़रत सअ्द बिन उ़बादा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की वालिदा जिनका इन्तिक़ाल हुआ था उनका नाम अ़म्रो था। हुजूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उनके ईसाले सवाब के लिए पानी का सदक़ा तजवीज़ फ़रमाया। तो हज़रत सअ्द बिन उ़बादा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने एक कुआँ खुदवाकर उसका सवाब अपनी वालिदा की रुह को पहुँचा दिया।

इस हदीस से साबित हुआ कि मुसलमान अपने किसी नेक अ़मल का सवाब अगर किसी मय्यत की रुह को पहुँचा दे तो यह जाइज़ व दुरुस्त और बाइसे सवाब है। कु्रआन मजीद की तिलावत या दुरुद शरीफ़ या कलिमा तय्यबा ग़र्ज़ कोई अ़मले ख़ैर हो ख़्वाह इबादते मालिया हो, या इबादते बदनिया हो, ख़्वाह फ़र्ज़ हो या नफ़्ल हो सब का सवाब ज़िन्दों या मुर्दो को पहुँचाया जा सकता है। और ज़िन्दों के ईसाले सवाब से मुर्दो को बिला शुबा यक़ीनन नफ़ा पहुँचता है। लिहाज़ा इस ईसाले सवाब और फ़ातिहा को जो लोग बिदअ़्त कह कर ह़राम बताते हैं यक़ीनन वह लोग गुमराह और दीनी मसाइल से जाहिल हैं सुन्नी मुसलमानों को इन गुमराहों की बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं देना चाहिये। बल्कि ईसाले सवाब और फ़ातिहा को एक अमले ख़ैर समझ कर हमेशा करते रहना चाहिये।

हज़रत अनस रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की ख़िदमत में अ़र्ज़ किया कि हम अपने मुर्दो के लिए दुआ़ करते हैं और उनकी तरफ़ से सदक़ा व ह़ज करते हैं तो क्या इन चीज़ों का सवाब हमारे मुर्दो को पहुँचता है ? तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने जवाब दिया कि " बेशक मुर्दो को इसका सवाब पहुँचता है और वह इस तरह खुश होते हैं जैसे तुमको हदया दिया जाता है तो तुम खुश होते हो।

सियासियात

इस्लाम में सबसे पहली मुस्लिम शुमारी

हदीस :– हिजरत के इब्तिदाई सालों में हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों की तादाद मालूम करने के लिए उनकी गिनती करने का हुक्म दिया चुनाँचे मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास थे तो आप ने फ़रमाया कि तुम लोग मेरे लिए गिन्ती करो कि कितने लोग कलिमए इसलाम पढ़ते हैं? हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा कि फिर हम लोगों ने (गिन्ती करके) अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम क्या आप हमारे बारे में ख़ौफ़ रखते हैं? हालाँकि हम लोग छः सौ से सात सौ के दरमियान हैं। तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम लोग जानते नहीं। शायद तुम लोग किसी आज़माइश में डाल दिये जाओ। हज़रत हुज़ैफ़ा ने कहा कि हम लोग इस तरह बला में डाल दिये गये कि हम में से कुछ लोग छुप कर ही नमाज़ पढ़ते थे।

(मुस्लिम जिल्द 1, पेज 84)

हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु :–इस हदीस के रावी हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रदियल्लाहु तआला अन्हुमा हैं उनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह हैं और इनकी वालिदा क़बीला औस के ख़ानदान की एक अन्सारिया औरत हैं जिनका नाम रुबाब बिन्ते कअ़ब है। हज़रत हुज़ैफ़ा का शुमार बुज़ुर्ग और बड़े सहाबा में है खुद यह और इनके वालिद यमान दोनों जंगे ओहद में शरीक हुए और उनके वालिद इसी जंग में शहीद हो गये। सहाबा किराम में यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के राज़दार के लक़ब से मशहूर थे। और हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु इन्ही से मुनाफ़िक़ों का नाम व पता पूछा करते थे। और जिस जनाज़े में हज़रत हुज़ैफ़ा शरीक होते थे उसी जनाज़े पर हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु भी नमाजे जनाज़ा पढ़ते थे क्योंकि हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु को यक़ीन था कि जिसकी नमाजे जनाज़ा हज़रत हुज़ैफ़ा पढ़ेगें वह यक़ीनन मुनाफ़िक़ नहीं होगा। इसलिए कि उनको हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तमाम मुनाफ़िक़ों की फेहरिस्त बता दी थी।

हज़रत हुज़ैफ़ा जंगे निहावन्द में भी शरीक थे। जब इस जंग के कमान्डर हज़रत नोमान बिन मक़रिन शहीद हो गये तो हज़रत हुज़ैफ़ा ही ने इस्लामी झण्डे को अपने हाथों में लिया और शहर हमदान और ईरान और दैनूर इन्हीं के हाथों पर फ़तह हुए। 36 हिजरी में इनकी वफ़ात हुई और इनकी कब्र शरीफ़ मदाइन में हैं। (इस्तिआब जिल्द 1 सफ़ा234)

शरहे हदीस :– इस हदीस का खुलासा मतलब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुसलमानों की गिनती कराई तो हज़रत हुज़ैफ़ा का बयान है कि उस वक़्त मुसलमानों की तादाद छः सौ और सात सौ कि दरमियान थी। सहाबा किराम ने बारगाहे नुबुव्वत सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम में अर्ज़ की कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! अब जबकि हम मुसलमानों की तादाद छः सौ से सात सौ के दरमियान हो चुकी है तो क्या हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को हम मुसलमानों के बारे में कोई ख़ौफ़ व अन्देशा है कि कोई ताक़त हम मुसलमानों को फ़ना कर देगी? या हमारे मिशन को नाकाम बना देगी? यह सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम लोग इस बात को नहीं जानते। हो सकता है कि तुम लोग किसी मुसीबत में मुब्तला कर दिये जाओ। तो उस वक़्त तुम लोग इतनी तादाद होने के बावुजूद भी तुम लोग कुछ भी न कर सकोगे । हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि वाक़ई हम लोग इस के बाद ऐसी मुसीबतों में मुब्तला कर दिये गये कि हम लोगो में कुछ लोग ऐलानियाँ जमाअ़त के साथ नमाज़ नहीं पढ़ सकते थे। बल्कि छुप छुप कर घरों मे नमाज़ पढ़ा करते थे। क्योंकि घर से बाहर निकलने में फ़ितनों का हुजूम और लड़ाईयों की आग में पड़ जाने का शदीद ख़तरा था।

हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने जिन मुसीबतों में मुब्तला होने का ज़िक्र फ़रमाया है इनसे मुराद वह फ़ितने हैं जो हज़रत अमीरुल मोमिनीन उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु की शहादत के बाद इस तरह नमूदार हुए कि बसरा में एक जंगे जमल और मैदाने सिफ़्फ़ीन में ऐसी ख़ूँरेज़ लड़ाईयाँ हुई कि हज़ारों सहाबा और ताबेअ़ीन शहीद हो गये। और इन लड़ाईयों और फ़ितनों की शोरिस इस क़दर शिददत के साथ तमाम मुस्लिम आबादियों

में फैल गई कि कोई घर इन फ़ित्नों की ज़द से महफ़ूज़ न रह सका। और इस ज़र्ब व ह़रब और फितनों के हुजूम और हंगामों की वजह से बरसों तक इस्लामी फ़ुतूहात की तरक़्क़ियाँ मफ़्लूज व मसदूद होकर रह गईं।

तआ़रुज़ व तवाफ़ुक़ :—मुस्लिम शरीफ़ की मज़कूरा बाला हदीस से मालूम हुआ कि मुस्लिम शुमारी में मुसलमानों की तादाद छः सौ से सात सौ के दरमियान थी। लेकिन बुख़ारी शरीफ़ की एक रिवायत में है कि इस मुस्लिम शुमारी में मुसलमानों की तादाद एक हज़ार पाँच सौ थी। ज़ाहिर है कि बुख़ारी व मुस्लिम की दोनों हदीसों के दरमियान काफ़ी तआ़रुज़ है। कहाँ छः सौ से सात सौ के दरमियान और कहाँ डेढ़ हज़ार की तादाद। और बुख़ारी शरीफ़ ही की एक दूसरी रिवायत से पता चलता है कि सिर्फ़ पाँच सौ ही की तादाद थी। इस तरह ख़ुद बुख़ारी शरीफ़ की इन दोनों रिवायतों में भी खुला हुआ तआ़रुज़ है।

बहरहाल इन रिवायात में तत्बीक़ की सूरत बयान की गई है कि मुस्लिम शरीफ़ की रिवायत में जो तादाद छः सौ से सात सौ के दरमियान है यह तादाद सिर्फ़ शहरे मदीना के मुसलमानों की है।और बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में जो डेढ़ हज़ार की तादाद है वह तमाम मुसलमानो की तादाद है जो मदीना मुनव्वरा और मक्का मुअ़ज़्ज़मा के तमाम मौज़िआत और क़बाइल में आबाद थे। और बुख़ारी शरीफ़ की जिस रिवायत में पाँच सौ की तादाद मज़कूर है उससे मुराद जंग के क़ाबिल और फ़ौजी सलाहियत रखने वाले मुसलमानों की तादाद है। इस तरह तीनों रिवायतों का तआ़रुज़ ख़त्म हो जाता है ।(नौवी, शरहे मुस्लिम जिल्द 1 सफ़ा 84)

फ़वाइद व मसाइल :—इस हदीस से मुन्दरजा ज़ैल मसाइल मालूम हुए :—

1. हर ज़माने में मुसलमान को अपनी ताक़त मालूम करने के लिए मुसलमानों की मुस्लिम शुमारी और तादाद मालूम करना जाइज़ बल्कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम की सुन्नत है।

2. इस जम्हूरी दौर में जबकि तमाम हुकूमतें अपने प्लानों और तरक़्क़ीयाती मन्सूबा बन्दियों में मुल्क की आबादी मालूम करने और मरदुम शुमारी करके बाशिन्दगाने मुल्क की तबक़ाती व पेशा वराना तादाद मालूम करने की बेहद मोहताज हैं कि इसके बग़ैर इन्तिज़ामे ममलिकत का कोई प्लान कामयाब हो ही नहीं सकता। अक़वामे आ़लम को ग़ौर करना चाहिये कि मुल्क की

मरदुम शुमारी का तरीक़ा राइज करने का सबसे पहले रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सर सेहरा है। कि आप ही ने इस निहायत अहम सियासी कारनामें की तरफ़ सबसे पहले रहनुमाई फ़रमायी। जिस पर दुनिया की जम्हूरियतें अमल करके खुश उस्लूबी के साथ निज़ामे मम्लिकत के प्लानों को कामयाबी के साथ चला रही हैं।

3. मुसलमान को अपनी तादाद की कसरत पर कभी घमण्ड नहीं करना चाहिये क्योंकि हो सकता है कि नागाह मुसलमान क़ौम पर कोई ऐसी मुसीबत नाज़िल हो जाए कि कसरते तादाद के बावजूद मुसलमानों का शीराज़ा बिखर जाए और उनकी फ़ौजी ताक़त तहस नहस हो जाए इसलिए हर बस्ती में ख़्वाह वहाँ मुसलमानों की तादाद क़लील हो या कसीर मुसलमानों पर लाज़िम है कि हमेशा खुदावन्दे कुद्दूस से डर कर बलाओं और मुसीबतों से बचने की दुआऐं माँगते रहें। और वह हरगिज़ हरगिज़ किसी ऐसे गुनाह के मुरतकिब न बनें जो बलाओं और मुसीबतों के नुजूल का बाइस हों।

4. अगर खुदा नाख़्वास्ता किसी मुसलमान बस्ती में फ़ितना व फ़साद और लड़ाई झगड़े से इस तरह फ़िज़ा ख़राब हो जाए कि घर से बाहर निकलने में फ़ितने और लड़ाईयों में मुब्तला होने का ख़तरा और अन्देशा हो तो उस वक़्त जाइज़ है कि अपने घरों में छुप कर नमाज़ पढ़लें। ऐसे वक़्तों में मस्जिदों की हाज़िरी और जमाअतों की पाबन्दी मुआफ़ है।

हज़रत अम्र बिन आस बवक़्ते वफ़ात

हज़रत अम्र बिन आस रदियल्लाहु तआला अन्हु एक बहुत ही मशहूर और जलीलुल क़द्र सहाबी हैं 5 हिजरी या 8 हिजरी में मक्का मुअज़्ज़मा से मदीना तय्यबा हाज़िर होकर हज़रत ख़ालिद बिन वलीद व उस्मान बिन तलहा के साथ निहायत जज़्बए इख़लास के साथ मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उनको अम्मान का हाकिम बना दिया और यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की वफ़ाते अक़दस तक अपने इस ओहदे पर फ़ाइज़ रहे। फिर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में एक अज़ीम लश्करे इस्लाम के क़ाइद और कमान्डर बन कर मिस्र को फतह किया। और अहदे फ़ारुक़ी से अप आख़िरी उम्र तक अपने मिस्र के गवर्नर रहे। दौरे इस्लाम में सियासी हैसियत से आप का नामे नामी बहुत मशहूर है। आपने अपनी ज़िन्दगी में बड़े बड़े तारीख़ साज़ इस्लामी और सियासी कारनामे अन्जाम दिये। 43 हिजरी में नव्वे साल की उम्र पाकर वफ़ात पायी। अपनी वफ़ात के वक़्त आपने अपने साहिबज़ादे को मुख़ातिब करके एक बहुत ही दर्द अंगेज़ व रिक़्क़त ख़ेज़ तक़रीर फ़रमायी। एक अज़ीम सियासी शख़सीयत और गवर्नर होने की हैसियत से आपकी यह तक़रीर बहुत ही तारीख़ी और तारीख़ साज़ है । जिसको इमाम मुस्लिम ने अपनी किताब सही मुस्लिम में तहरीर फ़रमाया। जो हस्बे ज़ैल है। :–

हदीस :– इब्ने शमामा मेहरी का बयान है कि हम लोग हज़रत अम्र बिन आस रदियल्लाहु तआला अन्हु की वफ़ात के वक़्त जबकि वह सकरात के आलम में थे हाज़िर हुए। तो हज़रत दीवार की तरफ़ मुँह करके बहुत देर तक रोते रहे। तो उनके साहिबज़ादे ने कहा कि अब्बा जान! आप रोते क्यों हैं? क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुँ तआला अलैहि वसल्लम ने आपको फ़लाँ खुशख़बरी नहीं दी है? क्या फ़लाँ बशारत नहीं दी है? यह सुनकर हज़रत अम्र बिन आस रदियल्लाहु तआला अन्हु उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया कि हमारे नज़दीक सबसे ज़्यादा क़ाबिले ऐतिबार अमल ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की गवाही है। और फ़रज़न्दे मन! सुन लो कि मेरे ऊपर तीन हालात गुज़रे

हैं। एक ज़माने में मेरा हाल यह था कि कोई भी मुझ से बढ़ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का दुश्मन नहीं था। और मुझे इससे बढ़कर कोई चीज़ मरगूब नहीं थी कि किसी तरह हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर मुझे काबू हासिल हो जाए। और मैं आपको क़त्ल कर डालूँ। तो अगर मैं उस हाल में मर गया होता जब तो यक़ीनन मैं जहन्नमी होता। लेकिन उसके बाद अल्लाह तआला ने मेरे दिल में इस्लाम का जज़्बा पैदा फ़रमा दिया तो मैं हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत मे हाज़िर हो गया । और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह !सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम अपना दस्ते मुबारक फ़ैलाइये मैं आपके हाथ पर बैअ़त करूँगा। तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपना हाथ फैला दिया। तो मैंने अपना हाथ खींच लिया। यह देख कर आपने फ़रमाया कि ऐ अम्र! तुम क्या चाहते हो ? तो मैंने अर्ज़ किया कि मैं चाहता हूँ कि एक शर्त पर आप से बैअ़त करूँ। आपने इरशाद फ़रमाया कि तुम क्या शर्त लगाना चाहते हो? मैंने कहा कि मैं यह शर्त लगाना चाहता हूँ कि आज तक मुझसे जो गुनाह हुऐ हैं वह सब बख़्श दिये जायें। यह सुनकर हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि ऐ अम्र क्या तुम नहीं जानते कि इस्लाम तमाम उन गुनाहों को मिटा देता है जो इस्लाम लाने से पहले हो चुके हैं। इसी तरह अल्लाह व रसूल की राह में हिजरत तमाम उन गुनाहों को ढा देती है जो उससे पहले हो चुके हैं। यूँ ही हज तमाम उन गुनाहों को मलयामेट कर देता है जो हज से पहले हो चुके हों। फिर मैंने आपके दस्ते मुबारक पर बैअ़ते इस्लाम कर ली। और उस वक़्त मेरा यह हाल हो गया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से ज़्यादा मुझको कोई महबूब नहीं था। और इस क़दर हुजूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की बुजुर्गी और अज़मत मेरे दिल में घर कर गई कि मैं उसकी ताक़त नहीं रखता था कि भर आँख ताज़ीम की वजह से हुजूर को देख सकूँ। चुनाँचे अगर आज कोई मुझ से पूछे कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चेहरए मुबारक का क्या हुलिया और कैसा नक़शा था? तो मैं उसको बयान नहीं कर सकता। लेकिन मैं कमाले ताज़ीम की वजह से भर पूर निगाहों के साथ आपके चेहरए अक़दस को नहीं देख सकता था। ऐ फ़रज़न्दे मन अगर मैं इस हाल में मर गया होता तो यक़ीनन मुझे उम्मीद है कि मैं जन्नती होता।

मगर उसके बाद हमारा तीसरा हाल यह हुआ कि हम गवर्नर बनाऐ गये और बहुत सी चीज़ों के हाकिम हुए। तो इस दौरान में मेरा जो हाल रहा है उसके बारे में मैं कुछ नहीं जानता कि मेरा क्या हाल होगा? ऐ मेरे प्यारे बेटे! जब मैं मर जाऊँ तो मेरे जनाज़े के साथ कोई नौहा करने वाली औरत न जाए। और आग न ले जाई जाए। और जब तुम लोग मुझे दफ़न कर चुको तो मुझ पर मिट्टी बिखेर देना। फिर मेरी क़ब्र के पास तुम इतनी देर ठहरे रहना जितनी देर में एक ऊँट ज़िब्ह करके उसका गोश्त तक़सीम कर दिया जाता है ताकि तुम लोगों के ठहरने से मुझे उन्सियत हासिल रहे। और मैं देख लूँ कि अपने रब के भेजे हुए फ़रिश्तों को मैं क्या जवाब देता हूँ।

मसाइल व अहकाम:– हदीस मज़कूरा बाला से चन्द अहकाम व मसाइल मालूम हुए :–

1. इस्लाम लाना, हिजरत और हज करना इन तीनों आमाले सॉलेहा से वह तमाम गुनाह मुआफ़ हो जाते हैं जो उससे पहले हो चुके हैं उससे इन तीनों आमाल की अज़मते शान का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

2. जो सकराते मौत की हालत में हो मुस्तहब यह है कि उसके सामने ऐसी बातें पेश की जाएं जिससे मरने वाले का अपनी मग़फ़िरत की आस बंध जाऐ। और गुनाहों की माफ़ी की उम्मीद हो जाए। जैसे कि इब्ने शमामा मेहरी ने रिवायत की है कि जब हज़रत अम्र बिन आस रदियल्लाहु तआला अन्हु देर तक बिलबिला कर रोते रहे तो उनके साहिबज़ादे ने उनको वह बशारतें और खुशख़बरियाँ सुनानी शुरु करदीं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत अम्र बिन आस रदियल्लाहु तआला अन्हु को दी थीं।

3. मरने वाले को चाहिये कि मरते वक़्त अपने पसमान्दगान को अम्र बिल मारुफ़ व नही अनिल मुन्कर करे। यानी अच्छी बातों का हुक्म दे और बुरी बातों से मना करे। जैसा कि हज़रत अम्र बिन आस रदियल्लाहु तआला अन्हु ने बवक़्ते वफ़ात अपने बेटे से यह फ़रमाया कि मेरे जनाज़े के साथ न कोई नौहा करने वाली औरत चले,न आग ले जायी जाए। क्योंकि यह ज़मानए जाहिलियत के काफ़िरों का तरीक़ा था। कि उनके जनाज़ो के साथ नौहा और मातम करती हुई औरतें चला करती थीं और जलती हुई आग भी जनाज़े के साथ ले जायी जाती थी। इस्लाम ने ज़मानए जाहिलियत की इन रस्मों को हराम ठहरा कर मिटा दिया। तो हज़रत अम्र बिन आस सहाबी ने अपने

बेटे को वसीयत की कि ज़मानए जाहिलियत की यह काफ़िराना रस्म मेरे जनाज़े के साथ न होने पाए।

4. मय्यत को दफ़न करने के बाद कुछ देर क़ब्र के पास अज़ीज़ों और रिश्ता दारों का ठहर कर दुआ व इस्तिग़फ़ार करना मुस्तहब है। जैसा कि अम्र बिन आस ने अपने बेटे को उसकी वसीयत की है। और इसके दो फ़ायदे भी बताऐ। एक यह कि इससे मय्यत को उन्सियत हासिल होती है दूसरा यह कि वह सुकून और इतमीनान के साथ मुनकर नकीर का जवाब देता है।

5. इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि मुर्दा अपनी क़ब्र के पास ठहरने वालों को देखता है और उनको जानता पहचानता है। क्योंकि अगर जानता पहचानता न हो तो फिर उसको उन्सियत कैसे हासिल हो सकती है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

औरत की बादशाही

हदीस :– हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि जब रसूल2ल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह ख़बर पहुँची कि अहले फ़ारस ने किसरा की बेटी को अपना बादशाह बना लिया है तो आपने फ़रमाया कि वह क़ौम कभी फ़लाह न पायेगी जिसने एक औरत को अपनी सल्तनत का वाली बना लिया। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा321)

तबसरा :– औरतें चूँकि नाक़िसतुल अक़्ल वद्दीन हैं इसलिए इनको इन्तिज़ामे सल्तनत सुपुर्द करना हलाकत और तबाही को अपने सरों पर मुसल्लत करना है। इसी लिए मसअ्ला यह है कि इस्लामी निज़ामे हुकूमत में किसी औरत का सरबराहे मुल्क और अमीरुल मोमिनीन नहीं बनाया जा सकता।

तारीख़ गवाह है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बरसों पहले जो ग़ैब की ख़बर दी थी बे ऐनिही उसी के मुताबिक़ हुआ कि पहले फ़ारस की मरकज़ी सल्तनत के मुख़्तलिफ़ टुकड़े हुए। फिर अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारुके आज़म रदियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में इस्लामी लश्करों ने पूरी सल्तनत को फ़तह करके इस्लामी हुकूमत में शामिल कर लिया। और किसरा बादशाहे फ़ारस की अज़ीमुश्शान सल्तनत का वुजूद ही दुनिया के नक़्शे से मिट गया।

बादशाहों का मुसाहिब फ़ित्नों में पड़ेगा

हदीस :– हज़रत इब्ने अब्बास रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा रावी हैं कि नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स बादशाह की स़ोहबत में बैठेगा वह फ़ित्नों में मुब्तला होगा। और जिस क़द्र ज़्यादा बादशाह से कोई बन्दा क़रीब होगा वह ख़ुदा से ज़्यादा दूर होता जाऐगा। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 322)

तबसरा :– ज़ाहिर है कि बादशाहों और हाकिमों की स़ोहबत में जो चिमटा रहेगा वह दो ह़ाल से ख़ाली नहीं या तो वह उन लोगों की हर जाइज़ व नाजाइज़ बातों में हाँ में हाँ मिलाकर उन लोगों की मुवाफ़िक़त करेगा। तो उनका दीन बर्बाद हो जायेगा। और अगर उन लोगों की मुख़ालफ़त और रोक टोक करेगा तो उसकी दुनिया बरबाद हो जाएगी। और बादशाहों और हुक्काम का मातूब व व मग़ज़ूब होकर तकालीफ़ व मसाइब में पड़ जायेगा। बहर ह़ाल ख़ुलासा यह है कि बादशाहों और हाकिमों से ह़त्तल इमकान दूर रहने ही में ख़ैरियत और दीन व दुनिया की भलाई है और उनका क़ुर्ब यक़ीनन फ़ित्नों की आमाजगाह है। फिर ह़दीस शरीफ़ का आख़िरी जुमला किस क़दर ख़ौफ़नाक है कि जो बन्दा जिस क़दर बादशाहों से क़रीब होता जाएगा उसी क़दर वह ख़ुदा से दूर होता जाएगा। ज़ाहिर है कि किसी बन्दे का ख़ुदा से दूर हो जाना इससे बढ़ कर ख़ौफ़नाक और दर्दनाक मुसीबत बन्दे के लिए और कौनसी हो सकती है? तौबा तौबा नऊज़ बिल्लाह।

दौरे फ़ारुक़ी के गवर्नरों के लिए शर्तें

हदीस :– हज़रत उ़मर रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु जब अपने गवर्नरों को भेजते थे तो चार शर्तें लगाते थे।

1. तुर्की घोड़े पर सवार न होना।
2. मैदा न खाना।
3. बारीक कपड़ा न पहनना।
4. ह़ाजत मन्दों के लिए हर वक़्त दरवाज़ा खुला रखना।

अगर इन में से क़िसी पर अमल न किया तो सज़ा के क़ाबिल

ठहरोगे। यह अहद लेकर आप गवर्नरों को रुख़्सत फ़रमाते थे।

तबसरा :– हज़रत अमीरुल मोमिनीन उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु अपनी सल्तनत के गवर्नरों को मुतकब्बिर व आराम तलब और ऐशो इशरत का दिलदादा नहीं देखना चाहते थे। बल्कि अपनी ही तरह अपने गवर्नरों को भी खुराक व पोशाक और सवारी के मामले में सादा मिज़ाज और हाजत मन्दों की हाजत पूरी करने वाला देखना चाहते थे। यही वजह है कि आपके दौरे ख़िलाफ़त में जितना अच्छा निज़ामे मम्लिकत और इन्तिज़ामे सल्तनत रहा आपके बाद कभी न रहा। क्योंकि बाद के गवर्नरों मे तकब्बुर व आराम तलबी और ऐश परस्ती आ गयी। जिससे निज़ामे हुकूमत में अबतरी व ख़राबी फ़ैलती गई। काश उस दौर के गवर्नरों को इस से हिदायत की रौशनी मिल जाती ताकि निज़ामे मुल्की अबतरी व ख़राबी से महफ़ूज़ रह जाता। वल्लाहु तआला अअ्लम।

शरई सज़ाओं में न रिआयत न सिफ़ारिश

हदीस :– हज़रत बीबी आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हुमा का बयान है कि क़बीला मख़ज़ूम की एक औरत ने चोरी करली। तो इस मामले में कुरैश के लोग बहुत फ़िक्रमन्द थे (कि अगर इसका हाथ काटा गया तो क़बीले की इज़्ज़त ग़ारत हो जायेगी) तो लोगों ने कहा कि इस मामले में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि व आलेहि वसल्लम से बजुज़ हज़रत उसामा के कोई भी कुछ नहीं कह सकता क्योंकि वह हुज़ूर के महबूब हैं। चुनाँचे हज़रत उसामा ने हुज़ूर से सिफ़ारिश की तो आपने फ़रमाया कि क्या तुम अल्लाह तआला की मुक़र्रर करदा सज़ा में सिफ़ारिश कर रहे हो? तुम से पहले के लोग सिर्फ़ इसी वजह से हलाक कर दिये गये कि जब उनमें कोई शरीफ़ आदमी चोरी करता था तो लोग उसको छोड़ दिया करते थे और अगर कोई ग़रीब या पस्त हाल चोरी करता था तो लोग उसको शरई सज़ा देते थे। यानी (उसका हाथ काट लिया करते थे) फिर हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम खुत्बा देने के लिए खड़े हुए और इरशाद फ़रमाया कि खुदा की क़सम! अगर फ़ातिमा मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) की बेटी चोरी करती तो मैं उसका हाथ भी ज़रुर काट डालता।

तबसरा :– यह हदीस रौशन दलील है कि निज़ामे इस्लाम और शरीअते इस्लामिया में किसी वाक़ई मुजरिम को इसकी क़रारे वाक़ई सज़ा से

बचाने के लिए कोई न कोई रिआयत मुमकिन है न किसी सिफारिश की गुन्जाइश है बल्कि मुजरिम अगर वाक़ई मुजरिम है तो अमीर हो या ग़रीब खुशहाल हो या पस्त हाल हरगिज़ हरगिज़ वह सज़ा से छुटकारा नहीं पा सकता। और यही वह निज़ामे इस्लाम की आदिलाना सियासत है जिससे निज़ामे मुल्क अबतरी व बद नज़मी से महफ़ूज़ रह सकता है। क्योंकि जब मुजरिम को यक़ीनी तौर पर मालूम हो जायेगा कि मै जुर्म की सज़ा से किसी तरह बच नहीं सकता तो वह खुद जुर्म करने की जुर्अत नहीं कर सकता। और दूसरे लोग भी सज़ा से डर कर जुर्म करने की हिम्मत न कर सकेंगे।

आजकल दुनिया भर में जराइम की कसरत का यही राज़ है कि लोगों ने इस्लाम के उस आदिलाना निज़ाम को छोड़ रखा है। बड़े बड़े चोर डाकू क़ातिल को हमारे लीडर और नेता लोग सिफ़ारिश करके सज़ाओं से बचा लेते हैं। इसी लिए मुल्क भर में अमन व अमान और सुकून व इत्मिनान ग़ारत हो चुका है। और मुल्क का निज़ाम जराइम की कसरत से दरहम बरहम हो रहा है। काश हमारे हुक्काम और अरबाबे सियासत जल्द अज़ जल्द अपनी इस मुजरिम नवाज़ियों की गन्दी रविश से बाज़ आ जायें और हर मुजरिम को क़रार वाक़ई सज़ाएं दिलाकर मुल्क को अमन व अमान और सुकून व इत्मिनान की जन्नत बना देते। अल्लाह सब को इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन।

जो क़ाज़ी बना वह बग़ैर छुरी के ज़िब्ह किया गया

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स क़ाज़ी(जज) बनाया गया वह बिग़ैर छुरी के ज़िबह किया गया। (मिशकात जि2,)

तबसरा :– यहाँ ज़िबह के हक़ीक़ी माने मुराद नहीं हैं बल्कि मजाज़ी माने मुराद हैं यानी उसका दीन और उसकी दयानत दोनों खतरे में पड़ गये। क्योंकि यह ओहदा ऐसा है कि आम तौर पर आदमी रिश्वतों की बलाओं में गिरफ़्तार हो जाता है और कभी कभी उसको बादशाह की बेजा हिमायत और उसकी पासदारी करनी पड़ती है जिसकी वजह से वह अद्ल

नहीं कर सकता। लिहाज़ा यह ओहदा दीन व दयानत के लिए बेहद ख़तरनाक है। इस लिए इससे दूर भागने में ही ख़ैरियत है। और जो इस बला में पड़ गया वह छुरी से ज़िब्ह होने वाले से भी ज़्यादा बुरा है। क्योंकि छुरी से तो एक ही मर्तबा ज़िबह हो जाता है। और क़िस्सा ख़त्म हो जाता है। मगर क़ाज़ी के दीन व दयानत का तो बार बार ज़बीहा होता रहता है। लिहाज़ा यह छुरी के ज़बीहा से भी ज़्यादा तकलीफ़ देह ज़बीहा बन जाता है। इसी लिए अहले तक़्वा अइम्मा किराम मसलन हज़रत इमाम आज़म अबू हनीफ़ा अ़लैहिर्रहमा ने कोड़ों की मार बरदाश्त कर ली। मगर क़ाज़ी उल क़ज़ा (चीफ़ जस्टिस) का ओहदा कबूल नहीं फ़रमाया।

हुकूमत माँगने वाले को हुकूमत न दो

हदीस :— हज़रत अबू मूसा रदि़यल्लाहु तआला अ़न्हु का बयान है कि मैं और मेरे दो चचा ज़ाद भाई नबी स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम की ख़िदमत में गये। तो एक ने कहा या रसूलल्लाह! आप मुझे इन बाज़ कामों पर हाकिम बना दीजिए जो आपके ज़ेरे हुकूमत हैं। और दूसरे ने भी यही कहा। तो आप ने फ़रमाया कि ख़ुदा की क़सम हम उस शख़्स को हाकिम नहीं बनाते जो हुकूमत का त़ालिब और ह़रीस़ हो (मिश्कात जिल्द2 सफ़ा 320)

तबसरा :— हुकूमत के किसी ओहदे को तलब करने वाले या लालची को वह ओहदा सुपुर्द कर देना बहुत ही ख़तरनाक है। इसी लिए हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने क़सम खाकर फ़रमाया कि हम हुकूमत के तालिब या इसका लालच रखने वाले को कभी हाकिम नहीं बनाते। बल्कि जो इस ओहदे से भागता हो उसको यह ओहदा सुपुर्द करते हैं कि इसमें यक़ीनन अद्ल और ख़ैर व बरकत की तौफ़ीक़ होगी। चुनाँचे बारहा का तजुर्बा शाहिद है कि जिन लोगों को त़लब करने पर कोई ओहदा दिया गया। चूँकि इस में इसकी नफ़सानी ख़्वाहिशों का जज़्बा था। इस लिए उन लोगों ने अपने ओहदों को नाजाइज़ फ़ाइदा उठाकर अपने दीन व दयानत का ज़िबह़ कर डाला। और निज़ामे हुकूमत को तहस नहस कर डाला और जो लोग किसी ओहदे से भागते रहे और हाकिमे वक़्त ने ज़बरदस्ती कोई ओहदा सुपुर्द कर दिया तो उन लोगों ने इख़लास व लिल्लाहियत के साथ बहुत अच्छा काम किया।

रिश्वत देने वाला और लेने वाला दोनों मलऊन

हदीस :— हज़रत अब्दुल्ला बिन अम्र रदियल्लाहु तआला अन्हुमा रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने रिश्वत देने वाले और रिश्वत लेने वाले दोनों पर लानत फ़रमायी। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 326)

तबसरा :— किसी बातिल को हक़ ठहराने और किसी हक़ को बातिल ठहराने के लिए जो रक़म या सामान को लिया दिया जाए वह रिश्वत है। ख़्वाह उसको मेहनताना कह कर लिया जाए। या इन्आम व बख़्शिश कह कर लिया जाए। बहर हाल रिश्वत हराम व नाजाइज़ है। और रिश्वत देने वाले और लेने वाले दोनों दुनिया व आख़िरत में अज़ाब के हक़दार हैं और दोनों पर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने लानत फ़रमायी है लेकिन अगर अपने जाइज़ हक़ को लेने के लिए या अपने ऊपर से ज़ुल्म दफ़ा करने के लिए मजबूरन किसी को कुछ देना पड़े तो देने वाले पर कोई गुनाह न होगा। लेकिन लेने वाले से दुनिया व आख़िरत में ज़रुर मुआख़िज़ा होगा। क्योंकि हाकिमे वक़्त पर वाजिब है कि हर हक़ वाले को उस का हक़ दिलाए। और मज़लूम के ज़ुल्म से बचाए। और उसका मुआविज़ा न ले।

गुस्से में कोई फ़ैसला न करो

हदीस :— हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि कोई हाकिम दो आदमियों के दरमियान गुस्से की हालत में कोई फ़ैसला हरगिज़ हरगिज़ न करे। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 224)

तबसरा :— गुस्सा की हालत में चूँकि इन्सान की मिज़ाजी कैफ़ियत और दिमाग़ी तवाज़ुन में कुछ न कुछ तग़य्युर व फ़ुतूर ज़रुर पैदा हो जाता है। इसलिए फ़ैसले में ग़लती का एहतिमाल है। लिहाज़ा किसी जज या क़ाज़ी या पंच के लिए जाइज़ नहीं है कि वह गुस्से की हालत में किसी मुक़दमे का फ़ैसला करे। न किसी हाकिम के लिए रवा है कि गुस्से की हालत में कोई हुक्म सादिर करे। न किसी वाइज़ व मुफ़्ती के लिए मुनासिब है कि गुस्से की हालत में कोई तक़रीर करे या कोई फ़तवा दे।

और अगर गुस्से की हालत में कोई ग़लत फ़ैसला कर दिया। तो अपनी ग़लती ज़ाहिर होने पर शरअ़न लाज़िम है कि अपनी ग़लती का एअ़तिराफ़ करते हुए अपने ग़लत फ़ैसले से रुजूअ़ करे। और हरगिज़ हरगिज़ अपने ग़लत फ़ैसले पर अड़ कर गुनाह में मुब्तला न रहे। कि इसका नतीजा दोनों जहान में नुक़सान और दुनिया व आख़िरत में बर्बादी के सिवा कुछ भी नहीं है। अपनी ग़लती का ऐतराफ़ कर लेना यह हरगिज़ हरगिज़ किसी ज़िल्लत व रुसवाई का सबब नहीं है। बल्कि दर हक़ीक़त यह बहुत बड़ी दानाई व बुज़ुर्गी व बड़ाई का निशान है। जैसा कि सल्फ़ सालेहीन का हमेशा तरीक़ा रहा है।

मोअ़्जिज़ात

एक बुत का ऐलाने हक़

हदीस :– हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि मैं एक दिन कुफ़्फ़ार के बुतों ही के पास सो गया। ना गहाँ एक बुत परस्त एक गाय का बछड़ा लाया और उसको ज़िबह किया तो बुत से एक ग़ैबी आवाज़ आयी कि " ऐ अदावत रखने वाले यह एक कामयाब होने वाला मुआमला है कि एक फ़सीह आदमी ला इलाहा इल्लल्लाह कह रहा है। यह सुन कर सब आदमी भाग खड़े हुए मगर मैंने अपने दिल में ठान लिया कि मैं यहाँ से नहीं हटूँगा यहाँ तक कि मैं मालूम कर लूँ कि इसके पीछे क्या है ? फिर यही आवाज़ आयी कि " या जलीहु अमरुन नजीहुन रजूलुन फसीहुन यकूलो ला इलाहा इल्लल्लाह" यह सुनकर मैं वहाँ से उठ गया। और उसके कुछ ही दिनों के बाद यह चर्चा होने लगी कि यह (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) नबी हैं (बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 456)

हज़रत आयशा और हज़रत तल्हा रदियल्लाहु तआला अन्हुमा का बयान है कि यही वाक़िआ हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के क़बूले इस्लाम का सबब बना। (हाशिया बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 546)

तबसरा :– हुज़ूर ख़ातिमुन नबीयीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की नुबुव्वत की शहादत पत्थरों, दरख़्तों परिन्दों चरिन्दों यहाँ तक कि कुफ़्फ़ार के बुतों ने भी दी। यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मोजिज़ात में से एक बहुत बड़ा मोजिज़ा है कि कुफ़्फ़ार के एक बुत ने इतनी बुलन्द आवाज़ से कलिमा पढ़ा कि कुफ़्फ़ार ने सुना।

जन्नतियों और जहन्नमियों की फ़ेहरिस्त

हदीस :– हज़रत अब्दुल्ला बिन अम्र रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मकान से बाहर तशरीफ़ लाए और हुज़ूर के हाथों में दो किताबें थीं। तो आपने हाज़ेरीन से फ़रमाया कि क्या तुम लोग जानते हो कि यह दोनो किताबें कैसी हैं ? तो हम हाज़ेरीन ने कहा कि या रसूलल्लाह ! हम नहीं जानते लेकिन अगर हुज़ूर हमें ख़बर देदें तो हम भी जान लेंगे। तो आपने दाहिने हाथ वाली किताब के बारे में इरशाद फ़रमाया कि यह

रब्बुल आलमीन की तरफ़ से आई हुई एक किताब है जिस में तमाम जन्नतियों और उनके बापों और उनके क़बीलों के नाम दर्ज हैं। फिर आख़िर में सब की मीज़ान कुल (टोटल) भी दर्ज है। और अब इसमें न कुछ बढ़ाया जायेगा न कुछ घटाया जायगा। फिर बायीं हाथ वाली किताब के बारे में फ़रमाया कि यह रब्बुल आलमीन की तरफ़ से एक किताब आयी हुई है जिसमें तमाम जहन्नमियों और उनके बापों और उनके क़बीलों के नाम लिखे हुए हैं। और आख़िर में सब का मीज़ान कुल (टोटल) भी लिखा हुआ है। और अब इसमें न कुछ ज़्यादा किया जायेगा न घटाया जाएगा। तो आपके सहाबा ने अर्ज़ किया कि जब अहले जन्नत और अहले जहन्नुम के फ़ैसलों से रब तआला फ़ारिग़ हो चुका है। तो फिर हमारे अ़मल से क्या फ़ायदा होगा ? तो आपने फ़रमाया कि तुम लोग राहे रास्त पर चलते रहो और खुदा का कुर्ब तलाश करते रहो। जन्नती कोई भी अ़मल करे मगर उसका ख़ातिमा अहले जन्नत के अ़मल पर होगा। और जहन्नमी कोई भी अ़मल करे मगर उसका ख़ातिमा अहले जहन्नम के अ़मल पर होगा। फिर आपने अपने दोनों हाथों से इशारा फ़रमाते हुए इन दोनों किताबों को ज़मीन पर रख दिया । उसके बाद आपने फ़रमाया कि तुम्हारा रब बन्दों के फ़ैसले से फ़ारिग़ हो चुका है। एक फ़रीक़ जन्नत में जाऐगा और एक फ़रीक़ जहन्नम में चला जायेगा। (मिश्कात जिल्द 1, सफ़ा 21)

तबसरा :– इस हदीस से खुसुसियत के साथ पाँच बातें साबित होती हैं।

1. हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम को तमाम दुनिया के इन्सानों और उनके बापों और उनके क़बीलों के नाम मालूम हैं। क्योंकि उन सब की फ़ेहरिस्त नाम बनाम एक किताब की सूरत में आपके पास खुदावन्दे आलम की तरफ़ से आ चुकी है।

2. हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम अव्वलीन व आख़ेरीन सब इन्सानों के जन्नती या जहन्नमी होने को जानते हैं।

3. आपको सब लोगों के ख़ातमों की भी ख़बर है कि किस का ख़ातमा अहले जन्नत के अ़मल पर होगा और किस का अहले जहन्नम के अ़मल पर होगा?

4. जन्नती और जहन्नमी होने का दारो मदार ख़ातमों पर है जिसका ख़ातमा अच्छा होगा वह जन्नती होगा और जिसका ख़ातमा बुरा होगा वह जहन्नमी होगा।

5. यह हदीस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के मोजिज़ात में से एक बहुत बड़े मोजिज़े का बयान है। वल्लाहु तआला अअ़्लम।

एक वअ़्ज़ में क़यामत तक के वाक़ेआ़त का बयान

हदीस :– हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि एक दिन अ़स्र के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम वअ़्ज़ फ़रमाने के लिए खडे हुए तो आपने क़ियामत तक होने वाली किसी चीज़ को नहीं छोड़ा। मगर उसका ज़िक्र फ़रमाया। तो जिसने उन वाक़ेआ़त को याद रखा उसको याद रह गया और जिसने भुला दिया उसको भूल गया। (मिशकात जिल्द 2 सफ़ा 437)

तबसरा :– अ़स्र से मग़रिब तक के मुख़्तसर वक़्त में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने क़ियामत तक होने वाले तमाम वाक़ेआ़त को बयान फ़रमा दिया। यह हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम का माअ़्जिज़ा है। ख़ुदावन्दे कुद्दूस जल्ला जलालुहू ने अम्बियाए किराम को ऐसे मोअ़्जिज़ात और बहुत से औलियाए किराम को ऐसी करामतों से नवाज़ा है। कि थोड़े से वक़्त में उन हज़रात ने बहुत ज़्यादा और बहुत बड़े बड़े कामों को अन्जाम दिया है।

चुनाँचे ह़ज़रत दाऊद अ़लैहिस्सलाम का यह मोअ़्जिज़ा था कि आप घोड़े पर ज़ीन बाँधने का हुक्म दिया करते थे। मगर ज़ीन घोड़े की पीठ पर रखे जाने से पहले ही आप पूरी ज़बूर शरीफ़ ख़त्म कर लिया करते थे।

इसी तरह बहुत से औलिया किराम घण्टे भर में महीनों की मसाफ़त तय कर लिया करते थे और इन हज़रात की करामतों से ज़मीन सिमट जाया क़रती थी। इसी तरह बहुत से उ़ल्माए किराम और औलिया चन्द दिनों में इतना ज़यादा लिख और पढ़ लिया करते थे कि आम लोग बरसों में भी इतना लिख पढ़ नहीं सकते थे।

पहाड़ हिलने लगा

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बक्र व उमर व उस्मान रदियल्लाहु तआला अन्हुम ओहद पहाड़ पर चढ़े। तो पहाड़ हिलने लगा। तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ ओहद! ठहर जा तेरे ऊपर एक नबी है और एक सिद्दीक़ है और दो शहीद हैं।(बुख़ारी शरीफ़ जिल्द 1 सफ़ा 519)

तबसरा :– इस हदीस से मुन्दरजा ज़ैल मसाइल व फ़वाइद पर रौशनी पड़ती है। :

1. ओहद पहाड़ उन मुक़द्दस हस्तियों को जानता पहचानता था। और उनके आला मरातिब व दरजात से भी वाकिफ़ था। इसी लिए उन बाअज़मत लोगों को अपनी पुश्त पर देख कर इन्तेहाई फ़रहत व सुरुर और शादमानी व मसर्रत से झूम उठा। साबित हुआ कि पहाड़ भी नबी आख़िरुज़्ज़मा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और उनके मुक़द्दस ख़ुल्फ़ा को जानते पहचानते और मानते थे।

2. हुजूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने पहाड़ को पुकार कर फ़रमाया कि तेरे ऊपर एक नबी और एक सिद्दीक़ और दो शहीद हैं। लिहाज़ा तू मत हिल क्योंकि तेरे हिलने से इन हज़रात को तकलीफ़ होगी। चुनाँचे आपका फ़रमान सुन कर पहाड़ थम गया। यह दलील है कि हुजूर अपना फ़रमान पहाड़ों को भी सुना देते हैं और पहाड़ आपका फरमान सुनकर हुक्म की तामील भी करते हैं क्योंकि पहाड़ों का भी यही ईमान था कि नबी का हर फ़रमान वाजिबुल ईमान और लाज़िमुल अमल है।

3. हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह ग़ैब की ख़बर दी कि हज़रत अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु और हज़रत अमीरुल मोमिनीन हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु दोनों शहीद होंगे। चुनाँचे आपकी यह दोनों ग़ैब की ख़बरें हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुई कि हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु को ऐन हालते फजर में अबू लूलू मजूसी ने ख़न्जर मार कर 32 हिजरी में बा उम्र 63 साल में शहीद कर दिया। और हज़रत उस्मान गनी रदियल्लाहु तआला अन्हु को मिस्र से आने

वाले बल्वाईयों में से अस्वद तजीबी बाग़ी ने आप को 82 या 88 बरस क उम्र में रात के वक़्त मकान में दाख़िल होकर तिलावते कुरआन मजीद क हालत में 35 हिजरी में शहीद कर दिया।

हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी वफ़ात की ख़बर दी

हदीस :– हज़रत आ़यशा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने कहा वि नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने अपने मर्ज़े वफ़ात व हज़रत फ़ातिमा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा को बुलाया और चुपके चुपव इनसे बात की तो वह रो पड़ीं तो फिर उनको बुलाया और चुपके चुपवे उनसे कोई बात कह दी तो वह हँसने लगीं। बीबी आयशा का बयान है वि मैंने हज़रत फ़ातिमा से जब इसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि हुज़ू अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने मुझसे चुपके चुपके यह फ़रमाया कि मैं अपनी इसी बीमारी में वफ़ात पा जाऊँगा। तो मैं रोने लगी फिर मुझसे चुपके चुपवे यह फ़रमाया कि मेरे घर वालों में सबसे पहले (ऐ फ़ातिमा) तुम वफ़ात पाओगी। तो मैं खुशी से हँसने लगी। कि मुझसे हुज़ूर की जुदाई का ज़मान बहुत की कम होगा।

तबस़रा :– इस हदीस में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने गैब की तीन ख़बरें दीं जो आपके मोअ़जिज़ात में से हैं। अव्वल अपनी वफ़ात की ख़बर कि इसी बीमारी में मेरी वफ़ात होगी। दोम यह कि बीबी फ़ातिमा हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बाद तक ज़िन्दा रहेंगी। सोम यह कि हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के अहले बैत में से हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम के बाद सबसे पहले बीबी फ़ातिमा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की वफ़ात होगी। और यह तीनों ख़बरें हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुईं।

तिहत्तर फ़िरक़े पैदा होंगे

हदीस :– हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यक़ीनन मेरी उम्मत पर हू ब हू वही अमली दौर आयेगा जो बनी इस्राईल पर आया था। यहाँ तक कि अगर बनी इसराईल में से किसी ने अपनी माँ के साथ बदकारी की होगी तो यक़ीनन मेरी उम्मत में से भी कुछ लोग ऐसा करेंगे। और बनी इसराईल के दीन में तिहत्तर फ़िरक़े हो गये थे। तो मेरी उम्मत के दीन में तिहत्तर फ़िरक़े हो जायेंगे। तो सहाबा ने कहा कि वह एक कौन होगा? या रसूलुल्लाह !सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम(जो जन्नती होगा) तो आपने फ़रमाया कि जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीक़े पर होगा। और एक रिवायत में है कि बहत्तर फ़िरक़े जहन्नम में जायेंगे और एक जन्नत में जायेगा। और वह अहले सुन्नत वल जमाअत है। और अनक़रीब मेरी उम्मत मे कुछ ऐसी कौमें निकलेंगी कि उनके अन्दर बद दीनी की ख़्वाहिशात इस तरह सरायत किये होंगी जैसे कि कुत्ते के काटे हुए आदमी के बदन की रग रग और जोड़ जोड़ में कुत्ते का ज़हर सरायत कर जाता है। (मिश्कात जिल्द 1 सफ़ा 30)

तबसरा :– इस हदीस का ख़ुलासा यह है कि हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ग़ैब की ख़बर देते हुए इरशाद फ़रमाते हैं कि आख़िरी ज़माने में मुसलमान यहूदियों और नसरानियों की पैरवी करने लगेंगे। और हू ब हू मुसलमानों की वही करतूत व किरदार होंगे। जो यहूदियों और नसरानियों के करतूत व किरदार हो चुके हैं। और मुसलमानों में यहूदो नसारा की तरह मज़हबी इख़्तिलाफ रुनुमा होंगे। यहाँ तक कि उनके बहत्तर फ़िरक़े हो गये थे। और मुसलमानों में तिहत्तर फ़िरक़े पैदा हो जायेंगें। और उनमें एक के सिवा तमाम फ़िरक़े जहन्नमी होंगे। जब सहाबा किराम ने उस एक फ़िरक़े के बारे में सवाल किया जो जन्नती होगा। तो आपने फ़रमाया कि यह वही लोग होंगे जो मेरे और मेरे असहाब के तरीक़े पर होंगें। और अलजमाअत कहलायेंगे। और आख़िरी ज़माने में कुछ ऐसे गुमराह लोग भी पैदा होंगे जिनके अन्दर गुमराहियाँ इस तरह घुसी होंगी जिस तरह कुत्ता किसी को काट ले तो उसकी रग रग और जोड़ जोड़ में कुत्ते के ज़हर का असर सरायत कर जाता है।

हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने चौदह सौ बरस पहले जो ग़ैब की ख़बर दी थी। आज अलल ऐलान उसका ज़ुहूर हो चुका है। कि मुसलमान अपने अमल व किरदार में यहूदो नसारा के पैरोकार बन चुके हैं और मुसलमानों का मज़हबी इख़्तिलाफ़ इस क़दर बढ़ता जा रहा है कि मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब और तरह तरह के फ़िरक़े पैदा हो चुके हैं। जो मज़हबे अहले सुन्नत से टकरा रहे हैं। और गुमराहों के अन्दर इस क़दर गुमराहियों का ज़हर असर अन्दाज़ हो चुका है कि कुत्ते का ज़हर उतारने के लिए तो इन्जेक्शन ईजाद कर लिया गया मगर गुमराहियों के ज़हर को दूर करने के लिए कोई इलाज नज़र नहीं आ रहा है। लिहाज़ा जिस तरह कुत्तों और कुत्तों के काटे हुए आदमियों से दूर रहने ही में ख़ैरियत है उसी तरह इन गुमराहों से अलग थलग रहने ही में दीन व ईमान की सलामती है। इसी लिए उल्माए अहले सुन्नत अपनी तक़रीरों में बार बार क़ौम को तवज्जो दिलाते रहते हैं कि बद दीनों बद मज़हबों और गुमराह फ़िरक़ों से मेल जोल नहीं रखना चाहिये। मगर अफ़सोस कि बरादराने अहले सुन्नत व जमाअत इस पर कम अमल करते हैं। यही वजह है कि बहुत से मुसलमानाने अहले सुन्नत के दीन व ईमान ख़राब हो गये और वह बद दीन या बद मज़हब हो गये।

इस हदीस में साफ़ साफ़ हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तस्रीह फ़रमा दी है कि निजात पाने वाला और जन्नत में जाने वाला वही गिरोह है जो अल्जमाअत कहलायेगा। चुनाँचे अहले सुन्नत वल जमाअत के सिवा जितने फ़िरक़े पैदा हुए उनमें से कोई भी अपने को अलजमाअत नहीं कहता। न दूसरे लोग उनको अलजमाअत कहते हैं बल्कि तमाम दूसरे फ़िरक़े अलग अलग दूसरे नामों से अपने को मौसूम करते हैं और उन्हीं नामों से वह मशहूर भी हैं लिहाज़ा हदीस मज़कूर की तसरीह से साबित हुआ कि अहलुल सुन्नत वल जमाअत के सिवा दूसरा कोई भी फ़िरक़ा और गिरोह निजात पाने वाला और जन्नती नहीं है। इसलिए यक़ीनन मज़हबे हक़ यही अहले सुन्नत वल जमाअत का मज़हब है। जो इस मज़हबे हक़ का पाबन्द होगा वही जन्नत में जायेगा। अल्लाह तआला तमाम कलिमा पढ़ने वालों को इस मज़हबे हक़ की पैरवी नसीब फ़रमाये। और तमाम मुसलमानाने अहले सुन्नत वल जमाअत को इस मज़हबे हक़ पर इस्तेक़ामत नसीब फ़रमाये।

तीस झूटे मुद्दईयाने नुबुव्वत

हदीस :– हज़रत सौबान रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह दिन क़रीब है कि तीस झूटे होंगे जो सब यह दावा करेंगे कि वह अल्लाह अज़्ज़वजल के नबी हैं। हालाँकि मैं ख़ातिमुन्नबीयीन हूँ कि मेरे बाद कोई नबी नहीं है। और हमेशा मेरी उम्मत में से एक जमाअत हक़ पर रहेगी जो ग़ालिब रहेगी। और उनके मुख़ालेफ़ीन उनको कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेंगें। यहाँ तक कि अल्लाह अज़्ज़वजल का अम्र यानी क़ियामत आ जायेगी।(मिश्कात ज़िल्द 2 सफ़ा 465)

तबसरा :– इस हदीस से मुन्दरजा ज़ैल चन्द हक़ीक़तों का इन्किशाफ़ होता है।

1. हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने चौदह सौ बरस पहले जो ग़ैब की ख़बर दी थी वह सौ फ़ीसदी सही साबित हुई कि नुबुव्वत का दावा करने वाले झूटों को आना शुरु हो गया। चुनाँचे "मुसैलमतुल कज़्ज़ाब" और " असवद अनसी" दो झूटों ने तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मौजूदगी में ही नुबुव्वत का दावा कर दिया था। मगर उन दोनो का यह हश्र हुआ कि अस्वद अनसी को हज़रते फ़ीरोज़ दैलमी रदियल्लाहु तआला अन्हु ने क़त्ल कर दिया और उसके मक़तूल होने की ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बिस्तरे बीमारी पर वफ़ाते अक़दस से कुछ पहले मिल गई थी। और मुसैलमतुल कज़्ज़ाब से अमीरुल मोमिनीन हज़रत अबू बक्र रदियल्लाहु अन्हु के नेज़े से ज़िल्लत के साथ क़त्ल हुआ। उसके बाद बराबर वक़्तन फ़वक़तन झूटे नबी दुनिया में पैदा होते रहे। यहाँ तक हिन्दुस्तान के सूबा पंजाब के एक गाँव क़ादयान में मिर्ज़ा गुलाम अहमद क़ादियानी कज़्ज़ाब ने नुबुव्वत का दावा किया। जिसके मानने वाले हज़ारों की तादाद में हिन्दुस्तान व पाकिस्तान व अफ़्रीका में आज तक अपनी ख़बासत फैलाते रहते हैं। ख़ुशी यह है कि पाकिस्तान की हुकूमत ने इन क़ादियानियों को ग़ैर मुस्लिम ठहरा कर इनके काफ़िर होने का ऐलान कर दिया है। काश दूसरी इस्लामी हुकूमतें भी ऐसा ही करें। ताकि उम्मते मुस्लिमा इन बेईमानों

से अलग थलग रहने लगे।

2. वाज़ेह रहे कि इस हदीस में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ख़ातिमुन्नबीयीन के माना की तस्रीह फरमा दी कि " ला नबीय्या बअ़्दी" यानी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ख़ुदा के आख़िरी नबी हैं और आपके बाद क़यामत तक कोई नबी नहीं आ सकता। आपके ख़ातिमुन्नबीयीन होने का अक़ीदह इसलाम में ज़रुरते दीन में से है जो कुरआन मजीद और सही हदीसो से साबित है। लिहाज़ा जो शख़्स यह कहे कि हुज़ूर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के बाद कोई नबी आया है या आ सकता है वह काफ़िर हैं और जो उसके काफ़िर होने में शक करे वह भी काफ़िर है। वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

3. हदीस मज़कूर में जो झूटे नबीयों की तादाद तीस बताई गई है तो वाज़ेह रहे कि यह अ़दद तहदीद के लिए नहीं हैं बल्कि तकसीर के लिए है। यानी हदीस शरीफ़ का यह मतलब यह नहीं है कि झूटे नबीयों की तादाद सिर्फ़ तीस ही होगी। न उनतीस होगी न इकत्तीस । बल्कि हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि झूटे नबियों की तादाद तीस होगी यानी बहुत ज़्यादा होगी जिस तरह उर्दू में हम तुम कहा करते हैं कि मैंने तुम को बीस मर्तबा या इक्कीस मर्तबा मना नहीं किया बल्कि पूरे बीस मर्तबा गिन कर तुम को मना किया। इसी तरह तीस झूटे नबीयों के आने का यह मतलब नहीं कि पूरे तीस झूटे नबी आयेंगें। बल्कि जिस तरह बीस मर्तबा मना करने का यह मतलब होता है कि मैंने बहुत मर्तबा तुम को मना किया। इसी तरह तीस झूटे नबीयों के आने का यह मतलब है कि बकसरत और बहुत ज़्यादा वक़्तन फ़वक़्तन झूटे नबी आते रहेंगे। चुनाँचे तारीख़ों का मुताला करने से पता चलता है कि अब तक तीस से ज़्यादा झूटे नबी आ चुके हैं। और क़यामत तक झूटे नबीयों की आमद का सिलसिला जारी रहेगा। लिहाज़ा साबित हुआ कि हदीस शरीफ़ में तीस की गिनती का ज़िक्र तहदीद यानी हद बन्दी और तादीद यानी मुअ़य्यन गिनती बताने के लिए नहीं है बल्कि तक्सीर यानी झूटे नबीयों की कसरत बताने के लिए है।

आख़िरी ज़माने में मक्कारों का गिरोह

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु रावी हैं कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि आख़िरी ज़माने में कुछ ऐसे लोग निकलेंगे कि धोका देकर दीन के जरीए दुनिया तलब करेंगे। वह लोगों के सामने अपनी तवाज़ोअ़ और नरम खूई को ज़ाहिर करने के लिए भेड़ की खाल पहनेंगे। उनकी ज़बानें शकर से ज़्यादा मीठी होंगी। मगर उनके दिल भेड़ियों के दिल होंगे। अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि यह लोग मेरे ढील देने से फ़रेब खुर्दा बन रहे हैं? क्या यह लोग मेरे हुज़ूर जरी बन रहे हैं? तो मुझ को मेरी क़सम है कि मैं इन लोगों पर ऐसा फितना भेज दूँगा कि बड़े बड़े अ़क्लमन्द हैरान रह जायेंगें। (मिश्कात जिल्द 2 सफा 455)

तबसरा :– इस ह़दीस में ज़माना ह़ाल के उन धोके बाज़ बदमज़हबों और मक्कार बाबाओं के बारे में ग़ैब की ख़बर दी गई है जो आ़म मुसलमानों को अपनी तरफ़ माइल करने के लिए मोटे और खुरदुरे लिबास पहन कर मीठी मीठी बातें करके अवाम को गुमराह करते और दीन के नाम पर दुनिया कमा रहे है। हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम ने उन लोगों की साफ़ साफ़ यह निशानी बतायी है कि उनकी ज़बानें शकर से ज़्यादा मीठी होंगी मगर उनके सीनों मे भेड़ियों का दिल होगा। यानी वह निहायत ही गुमराह व ह़रीस व बे रहम और निहायत मक्कार दग़ाबाज़ होगें मगर हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने यह भी फ़रमा दिया कि दुनिया में चन्द ही रोज़ उनके मसनूई तक़द्दुस और बाबाईयत को फ़रोग़ रहेगा। फिर अल्लाह तआ़ला का गज़ब उन पर एक ऐसा फ़ितना बन पड़ेगा कि वह तो क्या चीज़ हैं? बड़े बड़े अक़्लमन्द व होशियार लोग इस फित्ने को देखकर हैरान रह जायेंगे। इस तरह उनकी बनावटी बुजुर्गी और बाबाईयत का सारा महल तहस नहस होकर बर्बाद हो जायेगा। और वह लोग दुनिया व आख़िरत में रुसिया व फ़ना जो जायेंगे।

इस ह़दीस में मक्कार धोके बाज़ बाबाओं के अ़लावा उन बदमज़हबियो की तरफ़ भी इशारा है जो खद्दर के कुर्ते मोटा तहबन्द मामूली टोपी पहन कर बग़ल में बिस्तर दबाए एक लोटा एक जा नमाज़ लेकर बस्ती बस्ती घूम घूम कर और मस्जिदों मे पड़ाओ करके नमाज़ व कलिमा के नाम पर अ़वाम

को गुमराह कर रहे हैं यह लोग जब अल्लाह अज़्ज़वजल व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बातें सुनाने के लिए लोगों को जमा करते हैं तो ख़ूब मीठी मीठी बातें करके अवाम के दिलों में घर कर लेते हैं। गोया उनकी ज़बानें शीरीं कलामी की वजह से शकर से भी ज़्यादा मीठी होती हैं मगर जब अहले सुन्नत व जमाअत के मुक़ाबले में यह लोग दुश्मन बन कर निकलते हैं तो इनके सीनों में भेड़ियो को दिल होता है। इस क़दर बे रहम और ख़ूँख्वार बन जाते हैं। और अहले सुन्नत व जमाअत के उल्मा व अवाम के साथ ऐसे ऐसे शर्मनाक मज़ालिम करते हैं कि कोई ग़ैर मुस्लिम भी नहीं कर सकेगा। यह बारहा का अपना व दूसरे उल्माए अहले सुन्नत का तजुर्बा है कि इन लोगों ने जहर खिला कर मुकदमात में फँसा कर जेल भिजवाकर, हुकूमत में झूटी शिकायतें दर्ज कराकर लाठियाँ बरसा कर, तरह तरह से मुसलमानाने अहले सुन्नत और उनके उलमा को निहायत बे रहमी के साथ तबाह व बर्बाद किया है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

अ़रब की ज़मीन में बाग़ और नहरें होंगी

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क़ियामत नहीं क़ायम होगी यहाँ तक कि माल की कस्रत हो जायेगी। उस वक़्त आदमी अपने माल की ज़कात निकालेगा। मगर किसी को ऐसा नहीं पायेगा जो उसकी ज़कात कबूल करे। और अ़रब की ज़मीन में बाग़ात, खेतियाँ और नहरें हो जायेंगी। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 469)

तबसरा :– हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने चौदह सौ बरस पहले जो ग़ैब की ख़बरें दी थीं उनके मुताबिक़ आज सऊदिया अ़रबिया में बाग़ों खेतों और नहरों को देख लीजिए। आज से चालीस बरस कोई सोच भी नहीं सकता था कि हिजाज और नज्द की संगलाख और रेतीली ज़मीनों में कभी बाग़ लगेंगे। और खेतियाँ होंगी। और नहरे निकाली जायेंगी। मगर वह सब कुछ हो रहा है जो चौदह सौ बरस पहले ग़ैब दाँ नबी ने फ़रमा दिया था। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा है। वल्लाहु तआला अअ्लम।

इस हदीस में यह भी पेशीन गोई की कि आख़िरी ज़माने में यानी

क़ुर्बे क़ियामत में माल की कस्रत इस क़दर हो जायेगी कि हर शख़्स ग़नी हो जायेगा। यहाँ तक कि कोई ज़कात लेने वाला न मिलेगा। चुनाँचे अभी से इस गैब की खबर के आसार नमूदार होना शुरु हो गये हैं। कि पहले ज़मानों की ब निस्बत आज कल माल दारी तमाम दुनिया में खुसूसन अ़रब ममालिक में इस क़दर ज़्यादा बढ़ गई है कि अ़रब के देहाती जो खजूर की गुठलियाँ चूस चूस कर पानी पी लिया करते थे। और फ़ाक़ा मस्ती में पैसे पैसे के मोहताज होकर दर बदर गदा गरी किया करते थे आज लाखों की रक़में लेकर सैरो तफ़रीह और ऐशो इशरत के लिए हिन्दुस्तान व पाकिस्तान आया जाया करते हैं मगर उनकी मालदारी बढ़ती ही जा रही है। यह सब ग़ैब की ख़बर जो नबी आख़िरुज़्ज़मा स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने चौदह सौ बरस पहले दी थी। आज इन ग़ैब की ख़बरों का जुहूर यह ग़ैब दाँ नबी के वह मोजिज़ात हैं जो सूरज की तरह चमक चमक कर नबीए बरहक़ स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की सच्ची नबुव्वत का ऐलान कर रहे हैं । वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

नहरे फ़ुरात से सोने के ख़ज़ाने ज़ाहिर होंगे

हदीस :— ह़ज़रत अबू हुरैरा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह दिन क़रीब है कि नहरे फ़ुरात से सोने के ख़ज़ाने ज़ाहिर होंगे। लिहाज़ा जो लोग उस वक़्त मौजूद होंगे उन्हें चाहिये कि उस में से कुछ न लें।

(मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा469)

तबसरा :— शारेहीने ह़दीस् ने फ़रमाया कि या तो नहरे फ़ुरात का पानी ख़ुश्क हो जायेगा और उसमें से सोने के ख़ज़ाने ज़ाहिर होंगे। और यह अल्लाह तआला की तरफ़ से उस की क़ुदरत की बहुत बड़ी निशानी होगी। और उस ज़माने के लोगों को चाहिये कि उन ख़ज़ानों को हाथ न लगायें। क्योंकि यह आपस में जंग व जिदाल का ज़रीआ बनेगा। या यह कि ऐसा माल होगा जिस पर कभी ख़ुदा का ग़ज़ब नाज़िल हो चुका होगा। मसलन क़ारुन का ख़ज़ाना। लिहाज़ा उस मनहूस माल से नफ़ा उठाना ममनूअ़ होगा। (मिश्कात, सफ़ा 469)

और मैं कहता हूँ कि मुमकिन है कि नहरे फ़ुरात से सोने के ख़ज़ाने

ज़ाहिर होने का यह मतलब हो कि इराक़ की ज़मीन से तेल व पेट्रोल बकस्रत निकलेगा। जिसको आजकल लोग अज़्जहबुल असवद (काला सोना) कहते हैं। वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

बेईमान लोग अक़्लमन्द कहलायेंगे

हदीस् :– हज़रत हुज़ैफ़ा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक ऐसा वक़्त भी आयेगा कि लोग एक दूसरे से ख़रीद व फ़रोख़्त करेंगे और कोई शख़्स अमानत को अदा नहीं करेगा। और लोग यूँ कहेंगे कि फलाँ क़बीले में एक आदमी अमीन है और लोग एक आदमी के बारे में यह कहेंगे कि वह क्या ही अक़्लमन्द है वह क्या ही होशियार है और वह क्या ही ताक़तवर है। हालाँकि उस आदमी के दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान नहीं होगा। (मिशकात जिल्द 2 सफ़ा 460)

तबसरा :– नबीए करीम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि व़सल्लम की इस ख़बरे ग़ैब का ज़ुहूर शुरु हो गया है कि आ़म तौर पर लोग ख़ाइन और बद दयानत हो रहे हैं। इसी तरह ईमान दार और पाबन्दे शरीअ़त और दयानत दार लोगों का आज कल लोग कभी मुल्ला टाइप और कभी बुद्धू बख़्श और बेवक़ूफ़ कहा करते हैं। जो आदमी इन्तिहाई बेईमान, धोके बाज़ और चार सौ बीस हो आज कल लोग उसकी तारीफ़ करते हुए कहते हैं कि फलाँ आदमी बहुत अक़्ल मन्द है बहुत होशियार है। बहुत तोड़ जोड़ का आदमी है। देख लीजिए हुज़ूर अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने चौदह सौ बरस पहले जो कुछ फ़रमा दिया था आज हू ब हू हम उसको आँखों से देख रहे हैं। बिला शुबा ग़ैब जानने वाले नबी की नुबुव्वत का यह भी बहुत बड़ा मोजिज़ा है। वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

हर आने वाला ज़माना पहले से ख़राब होगा

हदीस :– हज़रत ज़ुबैर बिन अदी रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हम लोग हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर होकर हज्जाज के ज़ुल्मों की शिकायत करने लगे। तो उन्होंने फ़रमाया कि तुम लोग सब्र करो। क्योंकि अब जो ज़माना भी तुम पर आयेगा इससे बदतर ही होगा। यहाँ तक कि तुम अपने रब से मुलाक़ात करोगे। मैनें यह बात तुम्हारे नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुनी है। (मिशकात जि2 स462)

हज्जाज बिन यूसुफ़ :– हज्जाज बिन यूसुफ़ सक़फ़ी बनू उमय्या के बादशाह अब्दुल मलिक बिन मरवान का गवर्नर था। और यह इतना बड़ा ज़ालिम व ख़ूँख़ार था कि इस उम्मत में इतना बड़ा ज़ालिम आज तक पैदा ही नहीं हुआ। मशहूर है कि इस ज़ालिम ने अपनी तलवार से एक लाख बीस हज़ार इन्सानों को क़त्ल किया। और उसकी लड़ाईयों में या उसके हुक्म से जो लोग क़त्ल हुए उनको तो कोई गिन ही नहीं सका। सहाबा किराम और ताबेअ़ीन को भी इस बदबख़्त ज़ालिम ने बड़ी बड़ी ईज़ाऐं दीं। बाज़ो को क़ैद में रखा। बाज़ो को कोड़ो से पिटवाया ओर बाज़ो को ज़िब्ह किया।

हिजाज के बाद दूसरे उमरा व सलातीन भी ऐसे ऐसे बदतरीन हुए जो दीन और दीनदारों के लिए बेहद ख़तरनाक साबित हुए इसलिए हर आने वाला ज़माना दीन और दीन दारों के हक़ में पहले से ज़्यादा बदतर बल्कि बद तरीन होता चला जा रहा है। इस तरह नबीए सादिक़ सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जो ग़ैब की ख़बरें दीं थीं वह हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हो रही हैं जो बिला शुबा आपके मोजिज़ात की तजल्लियाँ हैं

मुरतद की लाश ज़मीन से बाहर

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि एक नसरानी मुसलमान हो गया। और सूरह बक़्र और आले रहमान पढ़ लिया। और नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उसको अपना कातिब भी बना लिया। फिर एक दम वह काफ़िर हो गया। और उसने यह कहना शुरु कर दिया कि मै जो कुछ लिख देता हूँ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम) उसी को सुनाया करते हैं यह कहने

लगा और फिर नसरानी होकर हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत से भाग निकला। फिर जल्द ही मर गया। तो उसके साथियों ने उसको दफ़्न कर दिया। लेकिन सुबह को ज़मीन ने उसकी लाश को क़ब्र से फेंक दिया। तो उसके साथियों ने यह कहा कि यह मुह़म्मद (स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम) और उनके अस़हाब की ह़रकत है। क्योंकि वह इनके दरबार से भाग आया था। इस लिए इन लोगों ने इसकी कब्र को खोद कर लाश को बाहर डाल दिया। फिर इसके साथियों ने अपनी ताक़त भर गहरी क़ब्र खोद कर उसको दफ़्न किया। मगर फिर उसकी लाश बाहर निकल आयी। फिर उसके साथियों ने तीसरी मर्तबा बहुत ही गहरी कब्र खोद कर उसको दफ़्न किया। मगर फिर भी उसकी लाश बाहर निकल आयी। तो खुद उसके साथियों ने यह कह दिया कि यह किसी आदमी का काम नहीं है फिर उसके साथियों ने उसको दफ़्न ही नहीं किया। और उसकी लाश को ज़मीन पर डाल कर छोड़ दिया। (बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 511)

तबसरा :– इस ह़दीस़ से साबित हुआ कि हुज़ूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की बे अदबी करके मुरतद हो जाना कितना बड़ा जुर्मे अज़ीम है कि आख़िरत के अज़ाब से पहले दुनिया ही में उसके लिए रुसवाई का अज़ाब मिला कि ज़मीन जो कुत्ते और ख़िन्ज़ीर की लाश को भी कबूल कर लेती है मगर उस मुरतद की लाश को कबूल नहीं किया। और तीन मरतबा गहरी से गहरी कब्र खोद कर लोगों ने उसको दफ़्न किया मगर हर मरतबा उसकी लाश ज़मीन से बाहर आ गई। यह हैं मोजिज़ाते नुबुव्वत की तजल्लियाँ। वल्लाहु तआ़ला अअ़लम।

हलाकू ख़ाँ के बग़दाद पर हमले की ख़बर

ह़दीस :– ह़ज़रत अबू बक्र सि़द्दीक रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के कुछ लोग एक चौड़ी पस्त ज़मीन में जिसको लोग बसरा कहेंगे एक नहर के पास उतर पड़ेगें जिसका नाम दजला है। और इस नहर पर एक पुल होगा। और उस शहर की आबादी बहुत बढ़ जायेगी। और यह मुसलमानों के शहरों में से एक शहर होगा। आख़िरी ज़माने में चौड़े चौड़े चेहरों वाले और छोटी छोटी आँखों वाले लोगों का

लश्कर (तुर्क व तातारी) जो कन्तूरा की औलाद में से होंगे उस शहर पर ह़मला करेंगे और नहर के किनारे पड़ाव डालेंगे उस वक़्त शहर के मुसलमानों के तीन मुख़्तलिफ़ गिरोह हो जायेंगे कुछ लोग अपने मवेशियों को लेकर शहर से बाहर जंगलों और बयाबानों में भाग निकलेंगे और यह लोग हलाक हो जायेंगे। और कुछ लोग उन हमलाआवरों से अमान और पनाह तलब करेंगें! और यह लोग भी हलाक हो जायेंगे। और कुछ लोग अपने अहलो अयाल को अपनी पीठ के पीछे करके उन हमला आवरों से जंग करेंगे। और यह लोग शहीद होंगे।

तबसरा :– इस हदीस में बसरा से मुराद बग़दाद है इसका सुबूत यह है कि दरियाए दजला बग़दाद में है न कि बसरा में लेकिन हदीस में बग़दाद को बसरा इस लिए कह दिया गया है कि बग़दाद और उसके आस पास की बस्तियाँ बसरा के मुलह़िक़ात में शुमार हुआ करती थीं। दूसरा सुबूत यह है कि हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने उसको मुसलमानों का आबाद किया हुआ शहर बताया है। और तारीख़ों से ज़ाहिर है कि शहर मदाइन के बरबाद होने के बाद मुसलमानों ने दूसरा शहर जो आबाद किया वह बग़दाद ही है न कि बसरा।

बहर हाल हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने तक़रीबन साढ़े छः सौ बरस पहले जो ग़ैब की ख़बर दी थी। हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हो कर रही। सफर 666 हिजरी में हलाकू खान चँगेज़ी काफ़िर ने तुर्कों और तातारियों का लशकर लेकर बग़दाद पर एक ज़बरदस्त हमला किया। और उस वक़्त बग़दाद के मुसलमानों में तीन गिरोह हो गये। कुछ लोग तो जिहाद से जी चुराकर अपने माल मवेशियों को साथ लेकर शहर से भाग निकले और जंगलों और बयाबानों में पनाह ली मगर ख़ूँख़ार चंगेज़ी काफ़िरों ने उन सब को क़त्ल कर दिया। और कुछ लोग यानी ख़लीफ़ा मोअ़तसिम बिल्लाह अ़ब्बासी और बग़दाद के अराकीने सल्तनत और बाज़ दुनियादार उल्मा उन चंगेज़ी काफ़िरो से अमान और पनाह तलब करने के लिए शहर से निकल पड़े। मगर उन सब को भी हलाकू ख़ाँ की फ़ौजों ने क़त्ल कर डाला। हाँ अल्बत्ता कुछ जाँ बाज़ मुजाहिदे इस्लाम और उल्माऐ हक़ न शहर से भागे न चंगेज़ी काफ़िरों से अमान तलब की। बल्कि उन लोगों ने अपने बाल बच्चें को अपनी पीठ के पीछे करके उन चंगेज़ी काफ़िरों से बहादुराना

जंग की और खुदा की राह में काफ़िरों से लड़ते हुए शहीद हो गये।

क़न्तूरा :– तुर्कों और तातारियों के मोरिसे अअ्ला का नाम है। और बाज़ उ़ल्मा का बयान है कि क़न्तूरा हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की बान्दी का नाम है। उसके शिकम से हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की जो औलाद हुई उसी की नस्ल से तुर्की और तातारी क़ौमें हैं। इसी लिए यह लोग बनी क़नतूरा कहलाते हैं।

जंगे हुर्रा की पेश गोई

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐ अबू ज़र! तेरा क्या ह़ाल होगा जब मदीना में ऐसा क़त्ले आम होगा कि "अह़जारुज़ ज़ीनत" की ज़मीन ख़ून मे डूब जायेगी। (मिशकात जिल्द 2 सफ़ा 463)

तबसरा :– मदीना मुनव्वरा की पथरीली ज़मीनों को अहजारुज़ ज़ीनत कहते हैं और इसी का दूसरा नाम हुर्रा भी है। यज़ीद पलीद ने 63 हिजरी में मदीना मुनव्वरा पर चढ़ाई के लिए फ़ौज भेजी जिसका सिपह सालार मुस्लिम बिन उक़्बा मुज़नी था उस शैतानी लश्कर ने मदीना मनुव्वरा पहुँच कर वह तूफ़ान बरपा किया कि उसको सोच कर कलेजा फट जाता है। उन ज़ालिम यज़ीदियों ने सात सौ सहाबा किराम को इन्तिहाई बेदर्दी के साथ शहीद किया। और दूसरे तमाम मुसलमानों को दस हज़ार मोमिनीन को ज़िबह कर डाला। मस्जिद नबवी शरीफ़ के सुतूनों में घोड़े बाँधे और कई दिनों तक मस्जिदे नबवी में अज़ान व इक़ामत नहीं हो सकी। और अहले मदीना के साथ ऐसी ऐसी बद तमीज़ियाँ कीं कि उनको सोच कर जिस्म का रोंगटा रोंगटा और बदन का बाल बाल लरज़ा बरअन्दाम और निढाल हो जाता है। और मदीना मुनव्वरा के कूचा व बाज़ार में ज़ुल्म ढाया कि जिसको देख कर कुफ़्फ़ार भी नादिम व शर्मिन्दा हो जाएं। यह वाक़िआ़ तारीख़े इसलाम में जंगे हुर्रा के नाम से मशहूर है जिसकी ख़बर हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वस़ल्लम ने निस्फ़ सदी पहले ही दे दी थी। वल्लाहु तआ़ला अअ्लम।

अन्सार कम होते जायेंगे

हदीस :– हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा का बयान है कि हुजूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने अपनी वफ़ात की बीमारी में अपने सर पर एक काली पट्टी बाँधे हुए जो आख़िरी वअ़्ज़ फ़रमाया उसमें यह इरशाद फ़रमाया कि सब क़बीलों के लोगों की तादाद बढ़ जायेगी और अन्सारियों की तादाद रोज़ ब रोज़ कम होती जायेगी। यहाँ तक कि अन्सार लोगों में इतने रह जायेंगे जैसे कि खाने में नमक होता है। लिहाज़ा जो भी मुसलमानों का हाकिम बने उस पर लाज़िम है कि अन्सार के नेकू कारों की कारगुज़ारियों को क़बूल करता रहे अन्सार के ख़ताकारों की लग़ज़िशों को माफ़ करता रहे।

तबसरा :– इस हदीस में हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ग़ैब की ख़बर दी कि दूसरे लोगों की नस्ल तो बढ़ जायेगी मगर अन्सारियों की नस्ल में लोग बराबर कम होते जायेंगे। यहाँ तक कि यह लोग दूसरे क़बाइल की कसीर तादाद में इतने क़लील नज़र आयेंगे जैसे खाने में नमक होता है। चुनाँचे हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की यह पेशीन गोई सादिक़ साबित होकर रही कि आज कल वह अन्सारी ख़ानदान जिन का शिजरा नसब वाक़ई अन्सारे मदीना से मिलता हो अ़रब व अ़जम में बहुत ही कम मिलेंगे।

हज़रत उम्मे ख़ालिद की लम्बी उम्र

हदीस :– हज़रत उम्मे ख़ालिद रदियल्लाहु तआला अन्हुमा कहती हैं कि मैं अपने वालिद के साथ बचपन में एक पीले रंग का कुर्ता पहने हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मेरे कुर्ते को देख कर हबशी ज़बान में फ़रमाया कि बहुत अच्छा है बहुत अच्छा लगता है। फिर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मोहरे नुबुव्वत से खेलने लगी तो मेरे बाप ने मुझे झिड़क दिया तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि छोड़ दो खेलने दो। फिर हुज़ूर ने तीन बार मुझ से फ़रमाया कि तुम इस कुर्ते को पुराना करो और फाड़ो। तुम इस कुर्ते को पुराना करो और फाड़ो। तुम इस कुर्ते को पुराना करो और फाड़ो।

तबसरा :– हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक मुहद्दिस शागिर्द इमाम अबू हनीफ़ा रदियल्लाह तआला अन्हु ने फ़रमाया कि (इस दुआए नबवी की बदौलत) हज़रत उम्मे ख़ालिद की उम्र इतनी लम्बी हुई कि लोगो में इसका ज़िक्र व चर्चा हुआ करता था। (हाशिया बुख़ारी जि1 सफ़ा 432)

और हज़रत इमाम बुख़ारी ने फ़रमाया कि हज़रत उम्मे ख़ालिद की उम्र इतनी लम्बी हुई कि किसी औरत को इतनी लम्बी उम्र नहीं मिली।

बिला शुबा यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा है कि आपकी दुआ से हज़रत उम्मे ख़ालिद की उम्र इतनी तवील हुई कि उसकी मिसाल नहीं मिलती है इसके अलावा इस हदीस से यह भी साबित हुआ कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अरबी ज़बान के सिवा दूसरी ज़बानों में भी कभी कभी कलाम फ़रमाया है। चुनाँचे इस हदीस में है कि आप ने उम्मे ख़ालिद के कुर्ते को बहुत अच्छा है। बहुत अच्छा है। हबशी ज़बान में फ़रमाया।

और इससे यह भी मालूम हुआ कि छोटे बच्चों और छोटी बच्चियों को बुज़ुर्गो के पास ले जाना। यह सहाबा किराम का मुबारक तरीक़ा है कि हज़रत उम्मे ख़ालिद रदियल्लाहु तआला अन्हुमा को उनके वालिद साहब हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमते अक़दस में लेकर गये और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उम्मे ख़ालिद के लिए दराज़िए उम्र की दुआ फ़रमा दी।

हज़रत अमीर मुआविया की हुकूमत

हदीस :– हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि रसूलुल्लाह सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुझ से फ़रमाया कि ऐ मुआविया! अगर तू वाली–ए–मुल्क बना दिया जाए तो अल्लाह अज़्ज़वजल से डरना और अद्ल करना। आपके यह फ़रमा देने के बाद मुझे यक़ीन हो गया कि मैं किसी न किसी दिन ज़रुर बादशाहत के काम में मुब्तला किया जाऊँगा। यहाँ तक कि मैं मुब्तला कर दिया गया।

तबसरा :– चुनाँचे फ़रमाने नबवी सलल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुताबिक यह पेश गोई हर्फ़ ब हर्फ़ पूरी हुई कि पहले आप हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के दौरे ख़िलाफ़त में चार बरस और हज़रत उस्मान ग़नी रदियल्लाहु तआला अन्हु के ज़माना ख़िलाफ़त में बारह बरस तक शाम के गवर्नर रहे। फिर चार बरस बादशाह बन कर हुकूमत की। फिर जब हज़रत इमाम हसन रदियल्लाहु तआला अन्हु ने आपकी बैअत फ़रमा ली। और ख़िलाफ़त आपके सुपुर्द फ़रमा दी। तो आप ख़लीफ़ा बरहक़ हो गये। इस तरह आप बीस साल तक गवर्नर और बादशाह रहे। और बीस बरस ख़लीफ़ा बरहक़ रहे। ग़र्ज़ पूरे चालीस बरस तक आप आलमे इसलाम पर हुकूमत फ़रमाते रहे। मुल्के शाम में दमिश्क शहर आपका दारुल सल्तनत रहा और आठ रजब 59 हिजरी में 82 बरस की उम्र पाकर आपने वफ़ात फ़रमायी। और दमिश्क में मदफ़ून हुए।

हुजूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का पसीना

हदीस :– हज़रत शमामा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि हज़रत उम्मे सुलैम रदियल्लाहु तआला अन्हा हुजूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम के लिए चमड़े का एक बिस्तर बिछा देती थीं। और आप उस बिस्तर पर क़ैलूला फ़रमाते थे। तो उस बिस्तर पर आप का जो पसीना और बाल गिरा होता था उसको हज़रत उम्मे सुलैम एक शीशी में जमा कर लिया करती थीं। और हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी वफ़ात के वक़्त यह वसीयत की थी कि मेरे कफ़न में वही ख़ुश्बू लगाई जाए जिस में हुजूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का पसीना मिला हो।

तबसरा :– इस हदीस से चन्द बातों की तजल्ली होती है।

1. हुजूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का मुबारक पसीना और मुक़द्दस बाल दोनों खुश्बूदार थे।

2. हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुए मुबारक और पसीना मिली हुई खुशबू का तबर्रुकन अपने पास रखना यह हज़रात सहाबा किराम का मअ़मूल था।

3. हज़राते सहाबा किराम का यह अ़कीदा था कि जिस के कफ़न में आपके पसीना में मिली हुई खुशबू लगी होगी वह क़ब्र वग़ैरह की तकलीफ़ों से महफ़ूज़ रहेगा। चुनाँचे ऐनी शरह बुख़ारी में है कि हज़रत अनस रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पसीना में मिली हुई खुशबू को अपने कफ़न में लगाने की वसीयत इस लिए की थी कि उनका अ़क़ीदा था कि इसकी वजह से वह तमाम तकालीफ़ से महफ़ूज़ रहेंगे।

मुए मुबारक से शिफ़ा

हदीस :– हज़रत उस्मान बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन मोहिब से रिवायत है कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हा के पास एक शीशी में चन्द मुए मुबारक थे। तो जब किसी आदमी को नज़रे बद लग जाती या कोई बीमारी होती तो उनके पास पानी का बरतन ले जाते और वह उस शीशी को उस पानी में डुबो दिया करती थीं तो लोगों को उससे शिफ़ा हासिल होती थी। (बुख़ारी जिल्द 2 सफ़ा 875)

तबसरा :– इमाम क़स्तलानी शारेह बुख़ारी ने इस हदीस की शरह में तहरीर फ़रमाया है कि लोग उस पानी से इस तरह शिफ़ा हासिल करते थे कि कभी उस पानी को पी लिया करते थे और कभी किसी बरतन में वह पानी डाल कर उसमें बैठते और गुस्ल कर लेते थे।

मदीने में जन्नत का बाग़

हदीस् :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह ज़मीन का टुकड़ा जो मेरी कोठरी और मेरे मिम्बर के दरमियान है वह जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है और मेरा मिम्बर मेरे हौज़ पर है। (बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 253)

तशरीह :– इस हदीस के दो मतलब बयान किये गये हैं एक तो यह कि हक़ीक़तन वह ज़मीन का टुकड़ा जन्नत के बाग़ से लाया गया है और फिर जन्त में पहुँचा दिया जायेगा। इसी तरह हौज़े कौसर पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मिम्बर है जैसे कि हजरे असवद और दरयाऐ नील व फ़ुरात को हदीसों मे जन्नत की मख़्लूक़ात फ़रमाया गया है वैसे ही यह ज़मीन का टुकड़ा भी हक़ीक़तन जन्नत ही की ज़मीन है और दूसरा मतलब बाज़ उल्माए किराम ने यह फ़रमाया है कि मजाज़न ज़मीन के इस हिस्से को जन्नत का बाग़ फ़रमा दिया गया है। यानी इस ज़मीन पर नमाज़ व ज़िक्रे इलाही चूँकि जन्नत में दाख़िल होने का सबब है लिहाज़ा इस ज़मीन को बतौर मजाज़ के जन्नत का बाग़ फ़रमा दिया गया है इसी तरह मिम्बर शरीफ़ को भी हौज़े कौसर पर होने का मजाज़ के तरीक़े पर यह मतलब है कि मिम्बर के पास इबादत करना हौज़े कौसर पर पहुँचने का ज़रीआ है मगर अल्लामा क़स्तलानी और अल्लामा ऐनी और दोनों बुख़ारी के शारेहीन ने तहरीर फ़रमाया है कि अगर हक़ीक़तन और मजाज़न दोनों ही तरह ज़मीन का हिस्सा जन्नत का बाग़ हो तो उसमें न कोई मानेअ् (रोक) है न कोई इस्तेअ्बाद। कि हक़ीक़तन ज़मीन का यह हिस्सा जन्नत से आया हुआ है और फिर यह जन्नत में पहुँचा दिया जायेगा। और इसमें इबादत दुख़ूले जन्नत का सबब भी है। लिहाज़ा इसको हक़ीक़तन और मजाज़न दोनों तरह जन्नत का बाग़ कहना सही व दुरुस्त है। इसी तरह मिम्बर शरीफ़ हक़ीक़तन हौज़े कौसर के पास रख दिया जायेगा।

और हज़रत अल्लामा इब्ने हजर अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि इस हदीस को अपने ज़ाहिरी और हक़ीक़ी मानों पर रखना ही औला है। क्योंकि असल यही है कि हत्तल इमकान लफ़्ज़ का इस के ज़ाहिरी और हक़ीक़ी माने ही पर रखा जाऐ।

ख़ारजियों की निशानियाँ

हदीस :– हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं हम लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर थे। और आप कुछ माल तक़सीम फ़रमा रहे थे। तो ज़ुलयसरा नामी एक शख़्स जिसकी आँखें अन्दर धँसी हुई गाल उभरे हुए पेशानी ऊँची दाढ़ी बहुत घनी और सर मुँढा हुआ था। उसने कहा या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आप अद्ल कीजिए तो आपने फ़रमाया कि तुम पर अफ़सोस है अगर मैं अद्ल नहीं करूँगा तो और कौन है जो अद्ल करेगा? तो हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि या रसूलल्लाह! सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम आप मुझे इजाज़त दीजिए कि मैं उसकी गरदन मारूँ तो आपने फ़रमाया कि तुम उसको छोड़ दो उसके साथी और उसकी नस्ल से कुछ ऐसे लोग होंगे कि तुम लोग अपनी नमाज़ों और रोज़ों को उनकी नमाज़ों और रोज़ों के सामने हक़ीर समझोगे। यह लोग कुरआन पढ़ेंगे मगर कुरआन उनके हलको से आगे बढ़ कर उनके दिलों तक नहीं पहुँचेगा। यह लोग दीन से इस तरंह निकल जायेंगे जिस तरह तीर शिकार किये हुए जानवर के बदन से निकल जाता है कि इस तीर पर ख़ून वग़ैरह का कोई निशान नहीं रह जाता। इन लोगों की निशानी यह है कि इन में एक काला आदमी होगा जिसके दोनों बाज़ुओं में एक बाज़ू औरत के पिस्तान की तरह हिलाता रहेगा। यह लोग उस वक़्त निकलेंगे जब लोगों में इख़्तिलाफ़ व इफ़्तिराक़ रोनुमा होगा। हज़रत अबू सईद ख़ुदरी कहते हैं कि मैं शहादत देता हूँ कि इस हदीस् को मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना है और मैं यह भी शहादत देता हूँ कि हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उन से जंग फ़रमायी तो मैं हज़रत अली के साथ मैं था आप ने हुक्म दिया कि उस काले आदमी की लाश को तलाश करो। चुनाँचे वह ढूँढा गया। तो लोग उसकी लाश उठाकर लाए तो मैंने ख़ुद देखा कि हू ब हू उसका हुलिया वही था जो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बयान फ़रमाया था।

तबसरा :– इस हदीस् में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ग़ैब की ख़बर दी है कि आइन्दा ज़माना में कुछ ऐसे लोग पैदा होंगे जिनके

नमाज़ रोज़ा की कसरत को देख कर मुसलमानों को बेहद तअज्जुब होगा। मगर दर हक़ीक़त वह बे ईमान और इस्लाम से ख़ारिज होंगे।

इन में से कुछ लोग पैदा हो चुके और कुछ आइन्दा पैदा होने वाले हैं। अब तलाश करने वालों को लाज़िम है कि हर ज़माने में इन लोगें को तलाश करके पहचानें और बचते रहें।

वहाबी ख़ारजी हैं :– चुनाँचे अ़ल्लामा इब्ने आबेदीन रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैह ने अपने ज़माना के ख़ारजियों की निशान देही करते हुए तहरीर फ़रमाया कि अ़ब्दुल वहाब नजदी और उसके मुत्तबेईन हमारे ज़माने के ख़वारिज हैं आपने दुर्रे मुख़तार के हाशिया रद्दुल मुहतार में जो फ़तावा शामी के नाम से मशहूर है तसरीह फ़रमाते हुए साफ़ साफ़ तहरीर फ़रमाया कि :–

"जैसा कि हमारे ज़माने में अ़ब्दुल वहाब के मुत्तबेईन के बारे में वाक़ेअ़ हुआ है कि यह लोग नज्द से निकले और हरमैन पर ज़बरदस्ती ग़ालिब हो गये। और यह लोग हंबलियों के मज़हब पर अ़मल करते थे लेकिन उन लोगों का यह अ़कीदा था कि सिर्फ़ वही मुसलमान हैं और जो उनके ऐतिक़ाद के मुख़ालिफ़ हैं वह मुशरिक हैं। और इसी वजह से उन लोगों ने अहले सुन्नत और उनके उ़ल्मा के क़त्ल को मुबाह ठहराया। यहाँ तक कि अल्लाह तआ़ला ने इन लोगों की शौकत को तोड़ दिया और उनके शहरों को बर्बाद फ़रमाया। और मुसलमानों के लश्करों को उन लोगों पर फतह मन्द और ग़ालिब फ़रमाया। यह वाक़िआ़ 1233 हिजरी का है।

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान वग़ैरह के दियोबन्दी वहाबी यह सब अब्दुल वहाब नजदी ही के मुत्तबेईन हैं और यह अगर चे हनफ़ी मजहब पर अ़मल करते हैं लेकिन अ़क़ाइद और एतिक़ादात के बारे में पूरे पूरे अब्दुल वहाब नजदी के मुत्तबेईन हैं कि यह लोग सिर्फ़ अपने आपको ही मुस्लिम समझते हैं और अपने मुख़ालेफ़ीन यानी अहले सुन्नत व जमाअ़त को मुश्रिक समझते हैं जैसा कि अ़ब्दुल वहाब नजदी और हुकूमते सऊदिया के नजदियों का अ़क़ीदह है लिहाज़ा अ़ल्लामा इब्ने आ़बेदीन शामी के फ़तवे के मुताबिक़ यह सब ख़ारिजी हैं।

हज़रत अम्मार को बाग़ी लोग क़त्ल करेंगे

हदीस :– हज़रत अबू सईद रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि मस्जिदे नबवी की तामीर के वक़्त हम लोग एक एक ईंट उठा उठा कर लाते थे। और हज़रत अम्मार दो ईंटें लाते थे। तो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उनके पास तशरीफ़ ले गये और उनके सर से गुबार साफ़ करने लगे फिर फ़रमाया कि अम्मार के लिए अफ़सोस है कि बाग़ी जमाअत उसको क़त्ल करेगी यह उन लोगों को अल्लाह अज़्ज़वजल की तरफ़ आने की दअ़्वत देगा और वह लोग उनको जहन्नम की तरफ़ बुलाएंगे।

तशरीह :– इस हदीस में हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम का एक मोजिज़ा है कि आपने बरसों पहले हज़रत अम्मार को शहादत की बशारत दी। और यह भी बताया कि उनको क़त्ल करने वाले कौन लोग हैं।

हज़रत अम्मार बिन यासिर :– इनकी कुन्नियत अबुल यक्ज़ान है और इनकी वालिदा का नाम सुमय्या है। इब्तिदाए इस्लाम में ही इन्होंने और इनकी वालिदा ने इस्लाम क़बूल कर लिया था। और कुफ़्फ़ारे मक्का ने इन दोनों को बड़ी बड़ी ईज़ाएं देकर सताया था। और उनकी वालिदा बी बी सुमय्या को अबू जहल ने नाफ़ के नीचे नेज़ा मारकर शहीद कर दिया। और कुफ़्फ़ार हज़रते अम्मार को बार बार आग के जलते कोयलों पर लिटाते थे। यह मुहाजेरीन अव्वलीन में से हैं उन्होंने पहले हबशा को हिजरत की फिर मदीना मुनव्वरा की तरफ़ हिजरत की। जंगे बदर और उसके बाद के तमाम जिहादों में मुजाहिदाना शान के साथ लड़ते रहे। उनके फ़ज़ाइल में बहुत सी हदीसें वारिद हुई हैं।

यह रबीउ़ल अव्वल 37 हिजरी में जंगे सिफ़्फ़ीन के मारका के अन्दर हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु की फ़ौज में थे और हज़रत मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु की फ़ौजों से लड़ रहे थे। अहनफ़ बिन क़ैस रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि सिफ़्फ़ीन में घमसान का रन पड़ा हुआ था। हज़रत अम्मार ने हमला किया तो उन पर इब्ने जज़ा सकसकी और अबुल ग़ाविया जहन्नमी हमला आवर हुए और अबुल ग़ादिया ने आप को नेज़ा मारा और इब्ने जज़ा सकसकी ने बढ़ कर आपका सर काट लिया। हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु ने आप की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी और दफ़न किया।

बवक़्ते शहादत आप की उम्र शरीफ़ नव्वे बरस की थी।

हज़रत अमीरे मुआविया रदियल्लाहु तआला अन्हु बरसों पहले से यह फ़रमाया करते थे कि अबुल गादिया हज़रत अम्मार का क़ातिल है। यह बड़े तअ़ज्जुब की बात है कि अबुल गादिया को भी इस बात का इल्म था मगर फिर बावजूद इसके उसने हज़रत अम्मार को शहीद कर दिया।

तन्बीह :– जंगे सिफ़्फ़ीन में हज़रत अ़ली रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु और हज़रत अमीरे मुआविया रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की दोनों फ़ौजों में बहुत से सहाबा किराम मौजूद थे। जिन सहाबा किराम ने अपने इजतिहाद से हज़रत अ़ली रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु को हक़ पर समझा। उन्होंने हज़रत अ़ली का साथ दिया और जिन सहाबा किराम ने हज़रत अमीर मुआविया रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु को हक़ पर समझा उन्होंने उनका साथ दिया।

बहर हाल दोनों तरफ़ के सहाबा किराम ने जो कुछ किया अपने अपने इजतिहाद के मुताबिक़ किया। लिहाज़ा इनमें से किसी को बुरा कहना हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं है बल्कि लाज़िम है कि उन सहाबा किराम को बुरा भला कहने से ज़बान को रोके रहें कि इसी में ईमान की सलामती है। क्योंकि मुजतहिद को अगरचे वह गलती पर हो फिर भी उसको उसके इजतिहाद का सवाब मिलता है। इसलिए तमाम सहाबा किराम सवाब के हक़दार हैं और हर सहाबी के बारे में अल्लाह तआ़ला ने जन्नत का वादा फ़रमा लिया है। कुरआन मजीद में है कि " अल्लाह तआ़ला ने हर सहाबी के लिए मग़फ़िरत और जन्नत का वादा फ़रमा लिया है। तिरमिजी शरीफ़ की एक हदीस है जिसको हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु ने रिवायत किया है कि – " नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उस मुसलमान को जहन्नम की आग नहीं छुऐगी जिसने मेरा दीदार कर लिया, मेरे देखने वाले को देख लिया । बशर्ते कि उसका ख़ातिमा ईमान पर हुआ हो। (मिश्कात जि 2 सफ़ा 554)

और हज़रत अनस रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है:–

" नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में मेरे सहाबा की मिसाल ऐसी है जैसे खाने में नमक, बिग़ैर नमक के खाना मज़ेदार नहीं होता। हसन बसरी इस हदीस को सुनाकर फ़रमाया करते थे कि हमारे नमक(सहाबा) तो जाते रहे। फिर भला हमारी इसलाह कैसे हो सकेगी।

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रावी हैं कि " नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग मेरे असहाब को बुरा न कहो। अगर तुम लोगों में से कोई ओहद पहाड़ के बराबर सोना खुदा की राह में ख़र्च कर देगा फिर भी वह सहाबा किराम के एक मुद और आधा मुद(खजूर या ग़ल्ला) ख़ैरात करने के बराबर नहीं पहुँच सकेगा।

बहर हाल सहाबा किराम का रुतबा बहुत बुलन्द है लिहाज़ा असहाबे किराम के किसी अमल पर तअ़्न या उनकी बुराई बयान करना या उनसे बदज़नी रखना हरगिज़ हरगिज़ जाइज़ नहीं है। बल्कि ईमान का तकाज़ा यही है कि हर सहाबी से मुहब्बत रखे। और सिद्क दिल से सहाबा किराम की ताज़ीम व तौक़ीर करता रहे। यही अहले सुन्नत व जमाअ़त का मज़हब है। किसी सहाबी को लअ़्न तअ़्न करना या उनसे बद ज़नी या बद अक़ीदगी रखना यह राफज़ियो और ख़ारिजियों का तरीक़ा है। जो गुमराह और बद अक़ीदह लोग हैं। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को गुमराही और बद अक़ीदगी से बचाऐ रखे। आमीन।

एक बकरी की कलेजी

हदीस :– हज़रत अ़ब्दुर्रहमान बिन अबू बक्र रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रावी हैं कि नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के साथ हम एक सौ तीस सहाबा सफ़र में थे। तो आपने एक बकरी ख़रीद कर ज़िबह करायी। और उसकी कलेजी को भूनने का हुक्म दिया। तो उसमें से काट काट कर हर एक सहाबी को एक एक बोटी दी। और उस बकरी का गोश्त एक सौ तीस आदमियों ने शिकम सैर होकर खाया। फिर भी दो प्याला भर गोश्त फ़ाज़िल बच गया। जिसको हम ने ऊँट पर लाद लिया।

तबसरा :– हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के मोजिज़ात में से है। इस तरह के मोजिज़ात का ज़ुहूर आपसे बार बार और कसरत से हुआ है। कि थोड़े खाने पीने में इतनी ज़्यादा बरकत हो गई कि उसको बहुत से लोग खा पीकर सैराब हो गये। फिर भी वह खाना पानी कम नहीं हुआ। इस क़िस्म की बेशुमार हदीसें सिहाह सित्ता वग़ैरह और सीरत की किताबों मे मज़कूर हैं।

सलाम करने वाला पत्थर

हदीस :– हज़रत जाबिर बिन समरा रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं मक्का में उस पत्थर को पहचानता हूँ जो मुझ को उस वक़्त सलाम किया करता था कि मैं अभी मबऊस नहीं हुआ था। (मुझ पर वही नहीं उतरती थी) बेशक मैं उसको इस वक़्त भी पहचानता हूँ।

हज़रत जाबिर बिन समरा :– इस हदीस के रावी हज़रत जाबिर बिन समरा रदियल्लाहु तआला अन्हु हैं इन की कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है। और यह आमरी कहलाते हैं यह मशहूर बा करामत सहाबी हज़रत साअद बिन अबी वक़्क़ास रदियल्लाहु तआला अन्हु के भान्जे हैं मुहद्दिसीन की एक जमाअत ने हदीस् में उनकी शगिर्दी का दर्स पाया है। यह बसरा में मुक़ीम हो गये थे और वहीं 74 हिजरी में वफ़ात पायी।

वह पत्थर जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को नुजूले वही से पहले सलाम किया करता था। शारेहीने हदीस् का इसमें इख़्तिलाफ़ है बाज़ का कौल है कि वह पत्थर हजरे असवद है और बाज़ मुहद्दिसीन ने फ़रमाया कि यह एक पत्थर था जो मस्जिदे हराम और हज़रत ख़दीजा रदियल्लाहु तआला अन्हुमा के घर के दरमियान था। और इसी पत्थर की वजह से उस गली को ज़क़ाकुल हजर कहा जाता है। बहर हाल कन्करियों ने आप का कलिमा पढ़ा। पहाड़ आपकी तशरीफ़ आवरी पर फ़रते मसर्रत से झूम उठे। पत्थरों ने आपको सलाम किया। यह सब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मोजिज़ात हैं जो आपकी नुबुव्वत की अज़ीमुश्शान दलीलें हैं।

70 हिजरी बेहद ख़ौफ़नाक

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि 70 हिजरी की शुरुआत और लड़को की हुकूमत से तुम लोग पनाह माँगते रहो।

तबसरा :– इस हदीस् में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का एक मोजिज़ा है कि आपने एक ग़ैब की ख़बर देते हुए बरसों पहले यह फ़रमा दिया कि 70 हिजरी बहुत ख़तरनाक है तुम लोग उससे ख़ुदा की

पनाह माँगते रहे। और यह भी फ़रमाया इस्लामी सल्तनत का निज़ाम व इन्तिज़ाम आइन्दा कम उम्र लोगों के हाथों में होने वाला है। लिहाज़ा इन नातजुर्बाकार और कम अक़्ल उमरा व हुक्काम की हुकूमत का दौर भी इन्तेहाई ख़तरनाक होगा। इसलिए उन लड़कों की हुकूमत से भी खुदा की पनाह तलब करते रहो। ज़ाहिर यह है कि इसमें बनू उमय्या के उन नौ उम्र ज़ालिम अमीर और हाकिमों की तरफ़ इशारा है जिन्होंने अपने दौरे हुकूमत में सहाबा किराम और ताबेईन पर ऐसे ऐसे मज़ालिम तोड़े जो तारीख़े इस्लाम में शर्मनाक और क़ाबिले नफ़रत हैं। इस हदीस् के रावी हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु हमेशा 70 हिजरी के फ़ितनों से पनाह माँगते रहे। चुनाँचे ब इख़्तिलाफ़े रिवायात 57 या 58 या 59 हिजरी में आपका विसाल हो गया। और 70 हिजरी देखने की नौबत ही नहीं आयी।

चलने वाले दरख़्त

हदीस :– हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हम लोग दौराने सफ़र एक बहुत बड़े मैदान में उतर पड़े और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम रफ़ए हाजत के लिए निकले तो कोई ऐसी चीज़ नज़र नहीं आयी कि जिस की आड़ में आप बैठते। हाँ मैदान के दोनो किनारों पर दो दरख़्त थे। तो आपने एक दरख़त के पास जाकर फ़रमाया कि तू मेरे साथ चल तो वह मुहार वाले ऊँट की तरह आप के पीछे बीच मैदान में आ गया। फिर आपने दूसरे दरख़त की टहनी पकड़ कर यहीं फ़रमाया तो वह भी आपके साथ चलता हुआ बीच मैदान में आ गया। फिर आपने दोनों दरख़्तो से फ़रमाया कि तुम एक दूसरे से मिल जाओ तो वह दोनों मिल गये। और आप इन दोनों दरख़्तों की आड़ में छुप कर रफ़ए हाजत के लिए बैठ गये। हज़रत जाबिर कहते हैं कि फिर मैं अलग अकेला बैठा हुआ कुछ सोच रहा था फिर नागाहा मैं इस तरफ़ मुतावज्ज हुआ तो देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेरी तरफ़ आ रहे हैं और वह दोनों दरख़्त जुदा होकर अपनी अपनी जगह पर जाकर ठहर गये।

तबसरा :– दरख़्त का अपनी जगह से चलकर दूसरी जगह जाना यक़ीनन बिला शुबह निहायत ही अक़्ल को हैरान कर देने वाला एक अज़ीम मोजिज़ा है। इस हदीस से मुन्दरजा ज़ैल फ़वाइद व मसाइल मालूम हुए।

1. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने दरख़्त की टहनी पकड़ कर फ़रमाया कि तू मेरे साथ चल तो वह मुहार पहनाये हुए ऊँट की तरह आपके साथ चल पड़ा। इससे मालूम हुआ कि दरख़्त भी यह जानते पहचानते और मानते थे कि आप नबीए बरहक़ हैं और आपके हुक्म की तामील करना हम पर भी ज़रुरी है। चुनाँचे दोनों दरख़्त आपके हुक्म की तामील करते हुए अपनी जगह से चलकर वहाँ तक गये जहाँ तक हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम उनको ले जाना चाहते थे।

2. दरख़्त अपने तने और जड़ों के साथ चलकर एक जगह से दूसरी जगह चले गये और चले आये मगर ज़मीन में कोई गड्ढा पैदा नहीं हुआ। यह आपका दूसरा मो'जिज़ा है।

3. हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने रफ़ा–ए–ह़ाजत करने के लिए पर्दा की यह तदबीर फ़रमायी कि दो दरख़्तों को एक दूसरे से मिलाकर पर्दा करने का सामान कर लिया। ताकि उम्मत के लिए यह हिदायत मिल जाए कि बग़ैर पर्दा किये हुए खुले हुए मैदान में रफ़ा–ए–ह़ाजत के लिए बैठना जाइज़ नहीं है। चुनाँचे बाज़ मरतबा आपने रेत का तूदा बनाकर उसकी आड़ में रफ़ा ह़ाजत फ़रमायी। और कभी चादर वग़ैरह से पर्दा फ़रमाकर रफ़ा ह़ाजत के लिए बैठे। लिहाज़ा हर मुसलमान पर लाज़िम है कि पेशाब पाख़ाना करते वक़्त पर्दे में बैठे। और हरगिज़ खुले मैदान में बिना पर्दा किये रफ़ा ह़ाजत के लिए न बैठे।

कटी हुई पिंडली फूँक मारने से जुड़ गई

हदीस :– ह़ज़रत सलमा बिन अकवअ़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की पिन्डली जंगे ख़ैबर के दिन तलवार से कट गई तो लोग कहने लगे कि सलमा बिन अकवअ़ शहीद हो गये। (क्योंकि ज़ख़्म बहुत शदीद था) मगर हज़रत सलमा बिन अकवअ़ का बयान है कि मैं हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पास आया तो आपने तीन मरतबा मेरी पिन्डली पर फूँक दिया तो ज़ख़्म अच्छा हो गया और उस वक़्त तक कभी मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हुई।

तबसरा :– हज़रत सलमा बिन अकवअ़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की कटी हुई पिन्डली सिर्फ़ रसूले अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के तीन मरतबा फूँक मार देने से इस त़रह जुड़ गई कि ज़िन्दगी

भर आपको कोई तकलीफ़ नहीं हुई और आप हमेशा हर जिहाद में मुजाहिदाना शान के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। आप ताक़त व शुजाअ़त में बहुत मशहूर थे। 74 हिजरी में अस्सी बरस की उ़म्र पाकर मदीना मुनव्वरा में वफ़ात पायी। और आप ख़ुद ज़िन्दगी भर हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम के इस मोजिज़े को लोगों से बयान फ़रमाते रहे। जिसको यज़ीद बिन अबी उ़बैद ताबेई अ़लैहिर्रहमा ने नक़ल फ़रमाया।

जंगे मौता की ख़बर

हदीस :– ह़ज़रत अनस रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि जंगे मौता की ख़बर आने से पहले ही नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने ह़ज़रत ज़ैद व ह़ज़रत जाफ़र व ह़ज़रत इब्ने रवाहा रदि़यल्लाहु अ़न्हुम की वफ़ात की ख़बर सुना दी। और यह फ़रमाया कि ज़ैद ने झण्डा लिया तो वह शहीद हो गये। फिर जाफ़र ने झण्डा लिया तो वह शहीद हो गये। फिर इब्ने रवाह़ा ने झण्डा लिया तो वह भी शहीद हो गये। आप यह फ़रमा रहे थे और आपकी दोनों आँखों से आँसू जारी थे। फिर फ़रमाया कि अब अल्लाह अज्ज़ावजल की तलवारों में से एक तलवार यानी ख़ालिद बिन वलीद ने झण्डा लिया है। तो अल्लाह तआ़ला ने उनको फ़तह़ अ़ता फ़रमा दी।

शरहे हदीस :– 7 हिजरी में रोमियो से जंग करने के लिए हुज़ूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने एक लश्कर मक़ामे मौता में भेजा। और उस लश्कर का सिपह सालार हज़रत ज़ैद बिन ह़ारिसा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु को बनाया। जो आपके आजाद करदा ग़ुलाम हैं। और आपने लश्कर को यह हिदायत दी कि सबसे पहले हज़रत ज़ैद बिन ह़ारिसा झण्डा उठायेंगे। जब यह शहीद हो जायेंगे तो जाफ़र बिन अबी त़ालिब झण्डा अपने हाथों में उठायेंगे। और जब यह भी शहीद हो जायें तो अब्दुल्ला बिन रवाहा अ़लमबरदार होंगे। और अगर यह भी शहीद हो जायेंगे तो फिर मैं किसी को अमीरे लश्कर और अ़लम बरदार मुक़र्रर नहीं करता। बल्कि लश्कर वाले जिसको अपना अमीरे अ़लम बरदार मुक़र्रर कर लें वही अमीरे लश्कर है।

चुनाँचे यह लश्कर मक़ामे मौता में पहुँच गया। और रोमियों के मुक़ाबिले में सफ़ बन्दी कर ली। और हुज़ूर अ़लैहिस्स़लातो वस्सलाम के

फ़रमान के मुताबिक़ हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने झण्डा अपने हाथ में लिया। और वह शहीद हो गये। फिर हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब रदियल्लाहु तआला अन्हु ने झण्डा अपने हाथ में ले लिया। और यह भी शहीद हो गये। तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने झण्डा लिया और यह भी शहीद हो गये। इसके बाद लश्कर वालों की राय से हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रदियल्लाहु तआला अन्हु झण्डा उठाकर अमीरे लश्कर बन गये। और बहादुरी व जाँ निसारी के साथ जंग करते रहे। यहाँ तक कि मुसलमानों का लश्कर फ़तहयाब हो गया। और रोमियों की फौज अपने मक़तूलों की लाशें छोड़ कर फ़रार हो गई।

जंगे मौता की इस सरगुज़श्त की अभी तक कोई ख़बर मदीना में नहीं आयी थी। मगर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम के मजमे में इस जंग का पूरा वाक़ेआ बयान फ़रमा दिया और इस तरह इरशाद फ़रमाया कि–

" ज़ैद ने झण्डा उठाया तो वह शहीद हो गये। फिर जाफ़र ने झण्डा उठा लिया तो वह भी शहीद हो गये। फिर इब्ने रवाहा ने झण्डा उठा लिया तो वह भी शहीद हो गये। फिर अल्लाह अज़्ज़वजल की तलवारों में से एक तलवार यानी ख़ालिद बिन वलीद ने झण्डा उठाया तो अल्लाह तआला ने इस्लामी लश्कर को फ़तह अता फ़रमा दी। और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जब मैदाने जंग की इस सरगुज़श्त को बयान फ़रमा रहे थे तो आपकी दोनों आँखों से आँसू जारी थे। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा533)

यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मोजिज़ा है कि सैकड़ों मील दूर से आपने जंगे मौता के मैदान की उस कैफ़ियत को देख कर सहाबा किराम को मैदाने जंग का नक़शा और लड़ाई का हाल बता दिया। चुनाँचे मुजाहिदीन जब मदीना मुनव्वरा वापस आये तो उन्होनें हू ब हू वही हाल बयान किया जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सहाबा किराम को ख़बर आने से पहले ही सुना दिया था।

हज़रत ज़ैद बिन हारिसा :– यह आठ बरस के बच्चे थे तो कुछ लोगों ने इनको गिरफ़्तार करके उक्काज़ के बाज़ार में गुलाम बना कर बेंच दिया। तो हज़रत हकीम बिन हिज़ाम रदियल्लाहु तआला अन्हु ने इनको अपनी फूफी हज़रत ख़दीजा के लिए चार सौ दिरहम में ख़रीद लिया। फिर

जब हज़रत बीबी ख़दीजा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने हुजूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम से निकाह कर लिया तो इन्होंने इस गुलाम को हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलै़हि वसल्लम को हिबा कर दिया। उस वक़्त से बराबर यह ख़िदमते अक़्दस में रहने लगे। मुद्दतों के बाद ज़ैद बिन हा़रिसा के वालिद और चचा मक्का मुकर्रमा आये और ज़ैद बिन हा़रिसा को अपने साथ वतन ले जाना चाहा। और हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलै़हि वसल्लम ने इनको इख़्तेयार दे दिया कि तुम अगर चाहो तो अपने बाप और चचा के साथ अपने वतन चले जाओ और अगर चाहो तो मेरे ही पास रह जाओ। तो हज़रत ज़ैद बिन हा़रिसा ने ख़िदमते अक़्दस ही में रहना पसन्द किया और अपने बाप चचा के साथ अपने वतन चले जाना मन्जूर नहीं किया। उसके बाद हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलै़हि वसल्लम ने जोशे मुहब्बत में उनको अपना बेटा बना लिया और अपनी बाँदी हज़रत उम्मे अयमन से उनका निकाह़ फ़रमा दिया। जिनके शिकम से हज़रत उसामा बिन ज़ैद पैदा हुए। हज़रत ज़ैद बिन हा़रिसा रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु बिल्कुल इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गये थे। और उनको एक बहुत बड़ी खुसूसी शराफ़त और अज़ीमुश्शान इम्तियाज़ यह हा़सि़ल है कि कु़रआन में उनका नाम मज़कूर है इनके सिवा दूसरे किसी स़हाबी का नाम कु़रआन मजी़द में नहीं है यह तमाम उम्र ख़िदमते नबवी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम में काशानए नुबुव्वत के एक फ़र्द की तरह हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के घर में रहे। और जमादिल अव्वल 8 हिजरी में जंगे मौता के सिपह सालार और अ़लम बरदार होते हुए पचपन बरस की उम्र में जंगे मौता के मैदान में शहादत से सरफ़राज़ हुए।

हज़रत जाफ़र बिन अबी ता़लिब :–यह हज़रत अ़ली मुरतज़ा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के भाई हैं इनका लक़ब जुल जनाहै़न है। यह भी इब्तिदाए इस्लाम ही में मुसलमान हो गये थे। यह अपने भाई हज़रत अली मुरतज़ा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से दस बरस उम्र में बड़े थे। हुजूरे अक़्दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने खुश होकर इनके लिए दुआ फ़रमायी थी कि अल्लाह तआ़ला तुम को दो बाजू अता फ़रमाये। कि इनसे तुम जन्नत में उड़ते रहो। यह जिस्मानी बनावट और आदत व सीरत के लिहाज़ से नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के साथ बहुत ज़्यादा

मुशाबहत रखते थे। यह बहुत ही बहादुर और ताक़त वाले थे। 8 हिजरी में जंगे मौता के मैदान में बउम्र इकतालीस बरस शहादत से सरफ़राज़ हुए। जब कि यह इस्लामी लशकर के सिपह सालार व अलम बरदार थे। शहादत के बाद इनके बदन मुबारक पर तीर तलवार व नेज़ों के नव्वे ज़ख़्म मौजूद थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन रवाहा :– यह अन्सारी हैं और क़बीला खज़रज के बहुत ही नामवर शख़्स हैं। और अन्सार के नक़ीबों में से हैं। यह बैअ़ते उक़बा में शरीक थे। और जंगे बदर ओहद व ख़नदक़ वग़ैरह तमाम लड़ाईयों में निहायत बहादुरी और जाँबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से जिहाद फ़रमाते रहे। यह अपने दौर के बेहतरीन और क़दिरुल कलाम शायर भी थे। और इन्होंने हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की नात शरीफ़ में भी बहुत से अश्आर कहे हैं। यह भी आठ हिजरी में जंगे मौता के मैदान में इस्लामी लश्कर के सिपह सालार व अलम बरदार होते हुए शहादत से सरफ़राज़ हुए। जंगे मौता चूँकि फ़तह मक्का से पहले हो चुकी थी यही वजह है कि फ़तह मक्का के जिहाद में यह शामिल न हो सके वह फ़तह मक्का से पहले ही शहीद हो चुके थे।

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद :– आप ख़ानदाने कुरैश के क़बीला मख़ज़ूम से निस्बती तअ़ल्लुक़ रखते थे। इनकी वालिदा का नाम लुबाबा सफ़रा था। जो बीबी मैमूना उम्मुल मोमिनीन रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की बहन हैं। यह ज़मानऐ जाहिलियत में क़बीला कुरैश के अशराफ़ और सरदारों मे से थे। सुलैह हुदैबिया की मुद्दत में 6 हिजरी में मक्का मुअ़ज़्ज़मा से मदीना मुनव्वरा जाकर बा ख़ुशी इस्लाम कबूल कर लिया। दरबारे नुबुव्वत से इनको सैफुल्लाह का ख़िताब मिला। 21 हिजरी में आपने वफ़ात पायी।

हज़रत अबू तलहा का सुस्त रफ़्तार घोड़ा

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि अहले मदीना एक मरतबा ख़ौफ़ज़दा हो गये। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अबू तलहा के एक घोड़े पर सवार होकर (सूरते हाल की तहक़ीक़ के लिए) रवाना हुए। यह घोड़ा बहुत सुस्त रफ़्तार था। और छोटे छोटे क़दम रखता था। मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम जब वापस तशरीफ़ लाये तो फ़रमाया कि हम ने तुम्हारे घोड़े को

दरिया पाया।(यानी बहुत तेज़ रफ़्तार और सुबुक सैर है) हज़रत अनस कहते हैं कि इसके बाद (तेज़ रफ़्तारी में) कोई घोड़ा उस घोड़े के मुकाबिल नहीं हो सका। और एक रिवायत में है कि कोई घोड़ा दौड़ में उस घोड़े से आगे नहीं बढ़ सकता था।

तबसरा :– हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उस सुस्त रफ़्तार घोड़े को दरिया की तरह तेज़ रफ़्तार कह दिया। तो इस एक जुमले की बरकत से यह सुस्त रफ़्तार घोड़ा इस क़दर सुबक सैर और तेज़ रफ़्तार हो गया कि मदीना मुनव्वरा का कोई घोड़ा उसका मुक़ाबिल नहीं हो सका। यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का माअ्‌जिज़ा है।

दाहिना हाथ कभी मुँह तक न उठ सका

हदीस :– हज़रत सलमा बिन अकवअ् रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि एक आदमी रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास बायें हाथ से खाना खाने लगा तो आपने फ़रमाया कि दाहिने हाथ से खाओ तो उसने तकब्बुर की वजह से यह कह दिया कि मैं दाहिने हाथ से खाने की ताक़त नहीं रखता हूँ तो इसके बाद उसका दाहिना हाथ इस तरह बेकार हो गया कि वह कभी मुँह तक उठ ही नहीं सका।

तबसरा :– हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के रु ब रु फ़रमाने नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की इस गुस्ताख़ाना हुक्म उदूली का उस गुस्ताख़ पर यह वबाल पड़ा कि उसका दाहिना हाथ बेकार हो गया। और वह ज़िन्दगी भर दाहिने हाथ से खाना नहीं खा सका। यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मोअ्‌जिज़ा है और इस वाकेया में उन मुतकब्बिरीन और गुस्ताख़ों के लिए बहुत बड़े ताज़ियाना–ए–इबरत का सामान है जो अज़राहे तकब्बुर व गुस्ताख़ी फ़रमाने नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर अ़मल करने से ऐराज़ व रुगरदानी करते रहते हैं। उन्हें इबरत हासिल करनी चाहिये कि बारगाहे नुबुव्वत के गुस्ताख़ों को किस तरह और कैसी कैसी सज़ाऐं दुनिया ही में मिलती रहती है। वल्लाहु तआला अअ्‌लम ।

उम्मे मालिक का कुप्पा

हदीस :– हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि उम्मे मालिक के पास एक कुप्पा था। जिस में वह घी रखकर नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास हदिया भेजा करती थीं।(तो उस कुप्पे में यह बरकत नमूदार हुई) तो जब कभी उनके बच्चे सालन माँगते थे तो वह उस कुप्पे में से घी निकाल कर उनको दे दिया करती थीं। इसी तरह उसमें हमेशा घी निकलता रहा। एक मरतबा उम्मे मालिक ने उस कुप्पे को निचोड़ डाला तो उसमें से घी निकलना बन्द हो गया। जब वह नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास हाज़िर हुई और यह माजरा अर्ज़ किया। तो आपने फ़रमाया कि क्या तुमने उस कुप्पे को निचोड़ डाला था? तो उन्होंने कहा कि जी हाँ। तो आपने फ़रमाया कि अगर तुमने उस कुप्पे को यूँ ही छोड़ दिया होता तो हमेशा उससे घी निकलता रहता।

तबसरा :– यह हूज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का मोअ्जिज़ा है कि जिस बरतन में आपके पास घी रख कर हदया किया जाता था उस बरतन में इतनी अज़ीमुश्शान बरकत नमूदार हो गई कि इससे मालूम हुआ कि आज भी जिस बरतन में कोई शीरीनी या तआम रखकर हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की बारगाहे अक़दस में ईसाले सवाब और फ़ातिहा किया जाएगा तो इन्शा अल्लाह तआला उस बरतन में ज़रुर कुछ न कुछ ख़ैरो बरकत का नुज़ूल होगा।

फिर उन बरतनों की ख़ैरो बरकत का क्या आलम होगा जिन बरतनों में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खाना पानी नोश फ़रमाया। चुनाँचे सहाबा किराम व ताबेअीन उनकी ख़ैरोबरकत व क़दरो मन्ज़िलत को पहचानते व जानते थे। इसी लिए वह लोग उन बरतनों को अपनी जानों से ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

अलग़रज़ यह तमाम मुसलमानों का अक़ीदह है कि हर वह चीज़ जिसको हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से किसी तरह निस्बत हासिल हो गई। बिला शुबा वह चीज़ ख़ैरोबरकत का ख़ज़ाना बन गई। लिहाज़ा उसको तबर्रुक बनाकर उससे बरकत हासिल करना और उससे मुहब्बत व अक़ीदत रखना हर मुसलमान के लिए ईमान का निशान है। इसी लिए अहले सुन्नत व जमाअ़त का अ़मल है कि वह रसूले अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के तमाम तबर्रुकात ख़्वाह बरतन हों या लिबासे मुबारक या नअ़लैन शरीफ़ैन या मदीना मुनव्वरा की ख़ाके पाक हर चीज़ को मरकज़े अक़ीदत बनाकर उससे ख़ैर व बरकत हासिल करते हैं। जो दर हक़ीक़त ईमान का निशान और सच्चे मोमिन की पहचान है।

करामात

अर्शे इलाही हिल गया

हदीस :– हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हुमा कहते है कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने (हज़रत सअ़्द बिन मआज़ की वफ़ात)पर फ़रमाया कि यह वह शख़्स् है कि इसके लिए अ़र्श हिल गया। और इसके लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिये गये। और इसके जनाज़े पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हाज़िर हुए। इस शख़्स को कब्र ने एक मरतबा दबोचा फिर कुशादा हो गई। (मिश्कात जिल्द 1 सफा 26)

फ़वाइद व मसाइल :– यह हदीस हज़रत सअ़्द बिन मआ़ज़ रदि़यल्लाहु तआ़ला अन्हु की करामतों की जामेअ़् है।

हज़रत सअ़्द बिन मआज़ :– यह अन्सार के क़बीला औस के सरदारे आज़म थे। रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इनको सय्यदुल अन्सार के ख़िताब से नवाज़ा था। मदीना मुनव्वरा में यह मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए। तो इनके इस्लाम लाने की वजह से पूरा क़बीला बनी अब्दुल अशहल मुशर्रफ़ बा इस्लाम हो गया। जलीलुल क़द्र और अकाबिर सहाबा में इनका शुमार है। जंगे बदर और जंगे ओहद में निहायत साबित क़दमी और जाँबाज़ी के साथ कुफ़्फ़ार से जंग करते रहे। और जंगे ख़न्दक में आप ज़ख़्मी हो गये। और फिर शिफ़ायाब न हो सके। और एक महीने के बाद आपकी शहादत हो गई। आपकी शहादत का वाक़ेआ यह है कि आप एक छोटी सी ज़िरह पहने हुए जोश में भरे हुए नेज़ा लेकर जंगे ख़न्दक़ में काफ़िरों से लड़ने के लिए जा रहे थे कि अचानक एक काफ़िर ने निशाना बाँधकर तीर मारा कि जिस से आपकी एक रग जिसका नाम अकहल है कट गई। जंग ख़त्म होने के बाद इनके लिए हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने एक ख़ेमा गाड़ा और इनका इलाज करना शुरु किया। आपने इसी ज़ख़्म में ज़ी क़अदा 5 हिजरी में बा उम्र 37 साल शहादत पायी। और जन्नतुल बक़ीअ़् में मदफ़ून हुए। आपकी एक करामत यह है कि आपकी शहादत पर अ़र्श हिल गया। मुसलमान सॉलेह की वफ़ात पर अ़र्श का हिल जाना दो वजहों से हो सकता है। एक तो इसलिए कि मुसलमान सॉलेह की रुह ज़ो अ़र्श के नीचे आसमान पर पहुँचती है तो उस नेक रुह के इस्तिक़बाल के लिए अ़र्श खुशी से झूमकर हिल जाता है दूसरी

वजह यह है कि सॉलेहीन के आमाले सॉलेहा रोज़ाना अ़र्श तक पहुँचते रहते हैं जिनसे अ़र्श को फ़रहत व सुरुर हासिल होता रहता है। और जब कोई मर्द सॉलेह वफ़ात पा जाता है तो अ़र्श को इस क़दर रंज व अफ़सोस होता है कि वह जोशे ग़म से बेक़रार होकर हिल जाता है।

दूसरी करामत आपकी यह है कि आपकी रुह के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिये गये। और तीसरी करामत यह है कि आपके जनाज़े पर सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हाज़िर हुए। चौथी करामत यह है कि क़ब्र ने एक मरतबा आपको दबोचा फिर क़ब्र कुशादा हो गई। हदीस् का आख़िरी हिस्सा और आपकी चौथी करामत कि कब्र ने आपको एक मरतबा दबोचा फिर कुशादा हो गई। वाज़ेह रहे कि दबोचना दो क़िस्म का होता है एक दुश्मनी का दबोचना जैसे एक दुश्मन अपने दुश्मन को दबोचा करता है। और एक प्यार में दबोचना जैसे माँ अपने बच्चे को प्यार में दबोच लिया करती है। तो हज़रत सअ्द बिन मआज़ को कब्र ने मुहब्बत व प्यार में दबोचा था।

लाश आसमान की तरफ़ बुलन्द हुई

हदीस :— हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा से रिवायत है कि जंगे "बेअ़रेमऊ़ना " में जब सब क़ारियों की शहादत हो गई और हज़रत अम्र बिन उमय्या ज़मरी रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु गिरफ़्तार हो गये तो आ़मिर बिन तुफ़ैल काफ़िर ने हज़रत आ़मिर बिन फ़हीरा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु की लाश की तरफ़ इशारा करके पूछा यह कौन हैं ? मैंने उनको क़त्ल करने के बाद उनकी लाश को देखा कि आसमान की तरफ़ बुलन्द हुई यहाँ तक कि जब लाश आसमान व ज़मीन के दरमियान पहुँच गई तो फिर ज़मीन पर आ गई। (बुख़ारी जिल्द 2 सफ़ा 587)

एक दूसरी रिवायत में यह भी है कि आ़मिर बिन तुफ़ैल काफ़िर ने कहा कि जब मैंने हज़रत आ़मिर बिन फ़हीरा को पहला नेज़ा मारा तो मैंने देखा कि उनके बदन से एक नूर निकला।

तशरीह :— क़बीला ग़तफ़ान का सरदार आ़मिर बिन तुफ़ैल काफ़िर बारगाहे नुबुव्वत में हाज़िर हुआ और कहा कि आप कुछ क़ारियों को हमारे क़बीले में भेज दीजिए। ताकि वह इस्लाम की तबलीग़ करें। चुनाँचे हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने सत्तर क़ारियों को भेज

दिया। लेकिन जब यह लोग मक़ामे बेअ्रे मऊ़ना पर पहुँचे और क़बीला रअ्ल व ज़कवान के कुफ़्फ़ार ने उन हज़रात पर धोके से हमला कर दिया तो यह सब हज़रात कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए शहीद हो गये। जब हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के पास इन लोगों की ख़बर पहुँची तो आपको बेहद स़दमा व क़ल्क़ हुआ। और आप एक महीना तक नमाज़े फजर में दुआऐ कुनूत पढ़ कर क़बीला राअ्ल व ज़कवान और अ़सया व बनू लिहयान के कुफ़्फ़ार के लिए हलाकत की दुआ़ फ़रमाते रहे। शोहदाए बेअ़रे मऊ़ना के बारे में कुरआन की कुछ आयतें भी नाज़िल हुई थीं। जो बाद में मन्सूख़ हो गईं।

हज़रत आ़मिर बिन फ़हीरा :—यह हज़रत आ़यशा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के अख़याती भाई अ़ब्दुल्लाह बिन तुफ़ैल के गुलाम थे जिनको हज़रत अबू बक्र सि़द्दीक़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने ख़रीद लिया था। यह इब्तिदाए इस्लाम में ही मुसलमान हो गये थे। बवक्ते हिजरत जब हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम "ग़ारे सौ़र" में रौनक़ अफ़रोज़ थे। तो यह ग़ार के मुँह पर रहा करते थे और सुबह सवेरे मक्का मुकर्रमा चले जाया करते थे। और हज़रत अबू बक्र सि़द्दीक़ रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के ऊँटों को चराया करते थे। और उनका दूध लाकर ग़ारे सौ़र में पहुँचाया करते थे। और कुफ़्फ़ारे मक्का की ख़बरें भी लाया करते थे। सफ़रे हिजरत में यह हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम के रफ़ीक़े सफ़र रहे। बहुत ही इबादत गुज़ार और हुज़ूर अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम के बेहद जाँ निसार थे। (बुख़ारी जि2 सफ़ा587)

हज़रत अ़म्र बिन उमय्या :— यह जंग "बेअ़रे मऊ़ना"में आमिर बिन तुफ़ैल काफ़िर के हाथों में गिरफ़्तार हो गये थे। फिर उसने आपको छोड़ दिया। और मदीना मुनव्वरा चले आये। आप आठ हिजरी में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वस़ल्लम का ख़त लेकर नजाशी बादशाह हबशा के दरबार में तशरीफ़ ले गये। और नजाशी ने इसलाम क़बूल कर लिया। अरब के नामवर बहादुरों में आपका शुमार होता है। 60 हिजरी में आपकी वफ़ात हुई।

फ़वाइद मसाइल :— अल्लाह तआ़ला ने शहीदों को बड़े बड़े दरजाते आ़लिया अ़ता फ़रमा कर बड़ी बड़ी शानदार करामतों से सरफ़राज़ फ़रमाया। हज़रत आ़मिर बिन फ़हीरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के जिस्मे मुबारक से नेज़े का ज़ख़्म लगने पर नूर बरआमद होना और उनकी मुबारक लाश का आसमान की तरफ बुलन्द होना यह उनकी बहुत अज़ीम करामात हैं।

रौज़ए मुनव्वरा से एक क़दम ज़ाहिर हुआ

हदीस् :– हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि जब रौज़ए मुनव्वरा की दीवार ख़लीफ़ा वलीद बिन अब्दुल मलिक के ज़माने में गिर पड़ी और लोगों ने उसकी तामीर शुरु की (बुनियाद खोदते वक़्त) एक क़दम ज़ाहिर हुआ तो सब लोग घबरा गये। और लोगों को यह गुमान हुआ कि शायद यह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का क़दम शरीफ़ है। और वहाँ इसका कोई जानने वाला नहीं तो हज़रत उ़रवा बिन ज़ुबैर ने कहा कि ख़ुदा की क़सम यह नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का क़दम शरीफ़ नहीं है बल्कि यह हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के क़दमे मुबारक है। (बुख़ारी जिल्द एक सफ़ा 186)

तबसरा :– यह वलीद बिन अब्दुल मलिक उमवी ख़लीफ़ा के दौरे हुकूमत का वाक़िआ है कि हज़रत उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ उसकी तरफ़ से मदीना मुनव्वरा के गवर्नर थे। और आप ही ने उस दीवार को बनाने का हुक्म दिया था। तो जब दीवार गिराई गई और लोग बुनियाद खोदने लगे तो एक क़दम मय घुटने के ज़ाहिर हुआ। हज़रत उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ इस वाक़ेआ से घबरा कर परेशान हाल हो गये। और उन्होंने यह समझा कि शायद नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का क़दमे मुबारक है मगर जब हज़रत उ़रवा बिन ज़ुबैर ने क़सम खाकर बयान किया यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का क़दमे मुबारक नहीं है बल्कि हज़रत उ़मर रदियल्लाहु तआला अन्हु का क़दम शरीफ़ है तो हज़रत उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ और दूसरे लोगों को कुछ सुकून व इत्मीनान हो गया।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उ़मर रदियल्लाहु तआला अन्हु ज़ुलहिज्ज 23 हिजरी में शहीद हुए। और 87 हिजरी में उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने रौज़ए मुनव्वरा की दीवार को बुलन्द किया। उस वक़्त का यह वाक़िआ है। इस तरह तक़रीबन 64 बरस के बाद भी अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु का जिस्में मुबारक क़ब्र में सलामत रहा। यह आपकी एक बहुत बड़ी करामत है।

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ :–पहले तो वलीद बिन अब्दुल मलिक उ़मवी के गवर्नर थे। फिर सलमान बिन अब्दुल मलिक उ़मवी के बाद

99 हिजरी में आप अमीरुल मोमिनीन बनाए गये। और दो बरस पाँच महीने तख़्ते ख़िलाफ़त पर रह कर अ़दल व इन्साफ़ ज़ुहदो इबादत में ख़िलाफ़ते राशिदा का नमूना दिखाया।। इसी लिए आपके दौरे हुकूमत को ख़िलाफ़ते राशिदा में शुमार किया जाता है। रजब 101 हिजरी में बमुक़ाम दैरे समआ़न (हमस) चालीस बरस की उम्र में वफ़ात पायी।

आप वलीद बिन अ़ब्दुल मलिक और सलमान बिन अ़ब्दुल मलिक बिन मरवान बिनिल हकम के चचा जाद भाई हैं। आपका नसब नामा यह है कि उमर बिन अब्दुल अजीज बिन मरवान बिन हकम। आप कुरैश के खानदान बनी उमय्या से हैं। आपकी वालिदा अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर फ़ारूक़ आजम रदियल्लाहु तआला अन्हु की पोती यानी उम्मे आसिम बिन्ते आसिम बिन उमर बिन ख़त्ताब हैं आपकी जौजा फातिमा बिन्ते अब्दुल मलिक का बयान है कि जिस दिन से आप अमीरुल मोमिनीन बनाये गये उस दिन से वफात तक आपको गुस्ले जनाबत की ज़रूरत नहीं पड़ी। और आप पर ख़ौफे खुदावन्दी का ऐसा गलबा हो गया कि ख़िलाफ़त के कामों से फ़ारिग़ होकर जब आप मकान में दाख़िल होते तो अपने मुसल्ला पर बैठ कर रोते रहते। यहाँ तक कि इसी हालत में आप सो जाते। फिर बेदार होते और गिरया व ज़ारी और दुआ़ में मशगूल हो जाते। आपकी ज़ौजा यह भी कहा करती थीं कि रोज़ा नमाज़ की कसरत में तो कुछ लोग उमर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ से बढ़ कर होंगे। मगर ख़ौफ़े इलाही के मामले में किसी शख़्स को भी मैंने आपसे बढ़ कर नहीं देखा। दिन रात ख़ौफ़े इलाही से रोते रहना आपका मामूल था। आपने अपनी ख़िलाफ़त के दौरान खुल्फ़ाए बनी उमय्या के मुसरिफ़ाना इख़राजात और कुनबा परवरी की रसमों को बन्द करके बैतुल माल के निज़ाम को दुरुस्त फ़रमा दिया। आपने हदीसों को तहरीर में लाने का हुक्म दिया। और बाक़ायदा इसका इन्तिज़ाम फ़रमाया। आपकी ख़िलाफ़त से पहले हदीसों के लिखने का रिवाज बहुत कम था। मुहद्दिसीने किराम अपनी याददाश्त से ज़बानी हदीसें बयान फ़रमाया करते थे। और भी बहुत से दीनी काम आपकी ख़िलाफ़त के दौरान हुए जिनकी तफ़सील तारीख़ुल ख़ुलफ़ा व सीरते उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ वग़ैरह किताबों में मज़कूर है।

हज़रत अनस बिन नज़र की करामत

हदीस :– हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रबीअ् बिन्ते नज़र एक औरत ने एक औरत के दाँत तोड़ दिये। तो औरत के वारिसों ने क़िसास़ त़लब किया। तो हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने कुरआन के मुताबिक़ यह फ़ैसला भी दे दिया कि रबीअ् बिन्ते नज़र के दाँत क़िसास़ मे तोड़े जायें। तो हज़रत अनस बिन नज़र ने कहा कि खुदा की क़सम मेरी बहन के दाँत नहीं तोड़े जायेंगे। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अनस बिन नज़र क्या कहते हो? क़िसास़ तो ख़ुदा की किताब का फ़ैसला है। इसी दरमियान औरत के वारिसों ने आकर कह दिया कि हम क़िसास़ नहीं लेंगे। और वह लोग दियत की रक़म लेने पर राज़ी हो गये। हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला के कुछ ऐसे बन्दे भी हैं कि अगर वह अल्लाह अज़्ज़वजल के नाम पर किसी बात की क़सम खा लें तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उनकी क़समो को पूरा फ़रमा देता है। अल्लाह तआ़ला के उन्हीं बन्दो में से अनस बिन नज़र भी हैं।

हज़रत अनस बिन नज़र :– यह अन्सारी हैं और मशहूर स़हाबी अनस बिन मालिक के चचा हैं। यह साहिबे करामत थे। एक करामत तो आप हदीस में पढ़ चुके कि यह क़सम खा गये तो अल्लाह तआ़ला ने इनकी क़सम पूरी फ़रमा दी यह जंगे ओहद में शहीद हुए और इनकी शहादत खुद एक बहुत बड़ी करामत है। जिसका वाकेआ़ इसके बाद मुलाहिज़ा फ़रमाईये।

हदीस मज़कूर से मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला ने अपने दूसरे बाज़ ख़ास बन्दों को भी इस करामत से सरफ़राज़ फ़रमाया है जो हर दौर हर ज़माने में और रुए ज़मीन के हर हिस्से में पाये जाते रहेंगे और इनकी तादाद भी बहुत ज़्यादा है। चुनाँचे हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रावी हैं कि रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि " बहुत से परागन्दा बाल वाले जो दरवाज़े से धक्का देकर भगा दिये जाते हैं ऐसे ही कि अगर वह अल्लाह अज़्ज़ावजल पर किसी बात की क़सम खा लें तो यक़ीनन अल्लाह तआ़ला उनकी क़सम पूरी फ़रमा दे।

मतलब यह है कि अल्लाह अज़्ज़ावजल के ऐसे बन्दे भी हैं जो

शकिस्ता हाल और परागन्दा बाल मैले कुचैले फटे पुराने कपड़ों में रहा करते हैं। कि जिन को लोग हक़ीर समझ कर अपने दरवाज़ों और अपनी मजलिसों से धक्का देकर भगा दिया करते हैं मगर वह लोग अल्लाह तआला के दरबार में ऐसे मुक़र्रब व मक़बूल हैं कि अगर वह किसी बात की क़सम खा लें तो अगरचे वह कितनी ही बड़ी बात क्यों न हो मगर अल्लाह तआला अपने मुक़र्रब व मक़बूल बन्दों की क़सम ज़रूर पूरी फ़रमा देता है और वह बात हो सकती है।

यही वह गुरबाऐ मुस्लिमीन हैं जो छुपे हुए दुरवेश कहलाते हैं जिनको बहुत कम लोग जानते पहचानते हैं। मगर हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इन बुज़ुर्गों के बारे में इरशाद फ़रमाया कि " तुम लोगों को रोज़ी या मदद तुम्हारे कमज़ोर लोगों के ही तुफ़ैल मिलती है।

यह भी एक हदीस शरीफ़ में आया है कि हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम गुरबाऐ मुहाजेरीन के वसीले से फ़तह की दुआयें माँगा करते थे। और दुआ फ़रमाते थे कि या अल्लाह! तू अपने इन बन्दों के तुफ़ैल में जो फुक़राये मुहाजेरीन हैं हमें दुश्मनाने दीन के मुक़ाबले में हम को फ़तह फ़रमा। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 447)

इस लिए जो लोग आम तौर पर मैले कुचैले ख़स्ता हाल फुक़राये मुसलेमीन का मज़ाक़ उड़ाते हुए हिक़ारत के साथ उनको भगा दिया करते हैं और ना मुनासिब अल्फ़ाज़ बोल कर उनकी दिल शिकनी व ईज़ा रसानी कर दिया करते हैं। उनको होश में आ जाना चाहिये कि यह फ़रसूदा हाल गुरबा व फुक़रा खुदावन्द कुद्दूस के दरबार में न मालूम किस क़दर मक़बूल व मुक़र्रब हैं ? लिहाज़ा उन हज़रात की बद दुआओं से बचना लाज़िम है। क्योंकि इनमें बहुत ऐसे भी हुआ करते हैं। इनकी ज़बान से निकली हुई दुआ या बद दुआ तलवार की तरह लग जाती है इसलिए अगर हो सके तो उन हज़रात की दिलदारी व दिल जोई करके उनकी दुआओं से अपने दामन को भर लेना चाहिये। और ख़बरदार ख़बरदार हरगिज़ हरगिज़ उन लोगों को ईज़ा पहुँचा कर और बुरा भला कह कर अपने सामने से भगाना और धुतकारना नहीं चाहिये। हज़रत शैख़ सअ्दी अलैहिर्रहमा ने इसी नुक्ता की तरफ़ इशारा करते हुए इरशाद फ़रमाया है कि –

ख़ाकसाराने जहाँ रा बहिक़ारत मनगर
तू चे दानी कि दरीं गर्द सवारे बाशद

यानी दुनिया के ख़ाकसारों यानी मैले कुचैले फ़क़ीरों को हिक़ारत की नज़र से मत देखो। तुम्हें क्या ख़बर कि इस गर्द में कोई सवार (अल्लाह वाला) छुपा हो।

हज़रत अनस बिन नज़र की शहादत

हदीस :– हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते है कि मेरे चचा अनस बिन नज़र जंगे बदर में शरीक नहीं हुए थे तो इनको इस बात का बहुत अफ़सोस रहा और उन्होंने कहा कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! अफ़सोस है कि मैं पहले ही जिहाद से ग़ायब रहा अब अगर अल्लाह तआला मुशरेकीन से जंग में मुझे हाज़िर कर देगा। तो वह देख लेगा कि मैं क्या कर दिखाता हूँ? इसके बाद ही जंगे ओहद हुई। और मुसलमान इस लड़ाई में कुछ पीछे हट गये। तो अनस बिन नज़र ने कहा कि या अल्लाह अज़्ज़ावजल मेरे इन साथियों ने जो कुछ किया है मैं उसकी माज़रत करता हूँ और मैं उन लोगों के फ़रार से बेज़ार हूँ फिर तन्हा आगे बढ़े तो सअ्द बिन मआज़ रदियल्लाहु तआला अन्हु का सामना हुआ तो उनसे कहा कि ऐ सअ्द ! मैं जन्नत में जा रहा हूँ मेरे बाप के रब की क़सम है कि मैं ओहद पहाड़ के क़रीब में जन्नत की ख़ुश्बू पा रहा हूँ हज़रत सअ्द का बयान है कि फिर अनस बिन नज़र ने जंग में क्या क्या कारनामा अन्जाम दिया मैं उनको बयान करने की ताक़त नहीं रखता। यहाँ तक कि वह निहायत जाँ बाज़ी के साथ लड़ते हुए शहीद हो गये। अनस बिन मालिक कहते हैं कि हमने इस लाश पर तीर व नेज़ा और तलवार के अस्सी से भी ज़्यादा ज़ख़्म लगे हुए पाये। और मुशरिकों ने उनके नाक कान वग़ैरह काट कर उनकी सूरत बिगाड़ दी थी। इस लिए उनको कोई पहचान न सका। सिर्फ़ उनकी बहन रबीअ् बिन्ते नज़र ने उनकी उँगलियों के पोरे को देख कर उनको पहचाना। हज़रत अनस कहा करते थे कि हम सहाबा का यही ख़्याल है कि कुरआन मजीद की आयत

من المؤمنين رجال صدقوا ما عاهدوا الله۔

" मिनल मोमिनीन रिजाले सदाक़ू मा आ हुदूदुल्लाह"

हज़रत अनस बिन नज़र और इनके हम मिस्लों के बारे में नाज़िल हुई है।

तबसरा :– सहाबा किराम व सल्फ़ व सॉलेहीन का यही वह

इस्लामी जोश और जज़्ब–ए– जिहाद था कि जिस की वजह से उन हज़रात की जाँ बाज़ियाँ व फ़िदाकारियाँ हदे करामत को पहुँची हुई थीं। अल्लाहु अकबर इन फ़िदायाने इस्लाम के नमूनों के लिए आँखे मुशताके दीद हो कर तमाम दुनिया में ढूँढती फिरती हैं। कि

वह जज़्बए इलाही के फन्दे कहाँ हैं
वह अल्लाह अज़्ज़ावजल के बन्दे कहाँ हैं

अल्लाहु अकबर! बदन पर अस्सी से ज़्यादा ज़ख़्म लगने के बावजूद मैदाने जंग में डटे रहना यहाँ तक कि अपने ख़ून का आख़िरी क़तरा और अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी साँस ख़ुदा की राह में कुरबान करके शहादत से सरफ़राज़ हो जाना यह मेराजे करामत की वह मन्ज़िले बुलन्द है कि वहाँ तक रसाई बजुज़ इसके जिस पर खुदावन्द करीम का फज़ले अज़ीम हो जाए दूसरे किसी को नसीब नहीं हो सकती।

यह रुतबा बुलन्द मिला जिसको मिल गया
हर मुद्दई के वास्ते दारो रसन कहाँ

क़ब्र के अन्दर सूरह मुल्क पढ़ने वाला

हदीस :– हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा कहते हैं कि एक सहाबी ने ला इल्मी में एक क़ब्र पर ख़ेमा गाढ़ दिया तो नागहाँ क़ब्र में एक इन्सान सूरह मुल्क पढ़ने लगा यहाँ तक कि उसने पूरी सूरह को ख़त्म कर डाला जब इन सहाबी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को इस वाक़िआ की ख़बर दी तो आपने फ़रमाया यह सूरह अज़ाब से रोकने वाली और निजात देने वाली है। (मिश्कात जिल्द 1 सफ़ा 18)

तबसरा :– 1. अल्लाह अज़्ज़ावजल के नेक बन्दे अपनी अपनी क़बरों मे नमाज़ भी पढ़ते हैं और तिलावत भी करते हैं जिससे उनको सुकून व राहत और रुहानी लज़्ज़त नसीब होती है वरना मुर्दों पर क़ब्र में कोई इबादत फर्ज़ या वाजिब नहीं है।

2. क़ब्र में सूरह मुल्क पढ़ना यह साहिबे क़ब्र की करामत है बाज़ मुहद्दिसीन और फ़ुक़हाए किराम से भी ऐसी करामतें मन्कूल हैं।

एक लौण्डी की अ़जीब दास्तान

हदीस :– हज़रत आ़यशा रदि़यल्लाह तआ़ला अ़न्हा ने कहा कि एक काली लौण्डी जो अ़रब के एक क़बीले की थी। इसी क़बीले की एक बच्ची सुर्ख़ चमड़े का एक हार पहन कर निकली और उसको उतार कर ज़मीन पर रख दिया तो एक चील उसको गोश्त समझ कर उठा ले गई। क़बीले वालों ने लौण्डी पर तोहमत लगा दी कि उसी ने हार चुरा लिया है। तो लोगों ने उसकी जामा तलाशी ली यहाँ तक कि उसकी शर्मगाह में भी ढूँढा। वह लौण्डी उसी हालत में खड़ी ही थी कि अचानक चील ने सब लोगों के सामने उस हार को ज़मीन पर गिरा दिया। तो उस लौण्डी ने कहा कि यही तो वह हार है जिसकी तोहमत तुमने मेरे ऊपर लगाई थी? हालाँकि मैं इससे बरी और बेगुनाह थी। देख लो वह वही हार तो है? फिर वह लौण्डी दिल बरदाश्ता होकर मदीना मुनव्वरा रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आ गई और मुसलमान होकर मस्जिदे नबवी में एक छोटी सी छप्पर बना कर रहने लगी। हज़रत आ़यशा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का बयान है कि वह मेरे पास आकर बातें किया करती थी लेकिन जब भी और जहाँ कहीं भी वह बैठती थी तो यही कहती थी कि हार वाला दिन भी मेरे रब की तरफ़ से एक अ़जीब मामला था मगर उसी ने मुझे कुफ़्र के शहर से निजात दी। हज़रत बीबी आ़यशा कहती हैं कि जब उस लौण्डी से मैंने दरयाफ़्त किया कि हर नशिस्त में तुम बार बार यह बात क्यों कहती हो।? तो उसने मुझे यह वाक़िआ़ सुनाया।

तबसरा :– अल्लाह तआ़ला का यह फ़ज़लो करम है कि बे कुसूर इन्सानों की बराअत व बे गुनाही ज़ाहिर करने के लिए वह ग़ैब से ऐसे ऐसे असबाब पैदा फ़रमा देता है कि अ़क़्ले इन्सानी ह़ैरान रह जाती है चुनाँचे यह वाक़िआ़ बहुत ज़्यादा तअ़ज्जुब ख़ेज़ होने के साथ साथ निहायत ही रिक़्क़त अंगेज़ और इबरत आमोज़ है।

इस हदीस में हज़रत उम्मुल मोमिनीन बी बी आ़यशा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा का यह हुस्ने सुलूक और बेहतरीन बरताव भी बहुत ज़्यादा फ़िक्र अंगेज़ और क़ाबिले तक़लीद है कि आप दुनिया भर के क़ियामत तक कि आने वाले मुसलमानों की माँ शहंशाहे दो आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला

अलैहि वसल्लम की मलिकए मुअज़्ज़मा और महबूबा होते हुए एक मुफ़लिस व बेकस व लाचार मुहाजिरा औरत को प्यार व मुहब्बत के साथ घण्टों अपने पास बिठाकर उससे बातें करके उसकी दिल जोई व दिलदारी फ़रमाया करती थीं। क्यों न हो कि हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ख़ुसूसियत के साथ हज़रत उम्मुल मोमिनीन बी बी आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा को यह ताकीद फ़रमायी थी कि –" ऐ आयशा! मिस्कीन को मत लौटाओ, कुछ न हो सके तो खजूर का एक टुकड़ा ही दे दो। ऐ आयशा! मिस्कीनों से मुहब्बत करो और उनको अपने क़रीब बिठाओ। तो अल्लाह अज़्ज़ावजल क़ियामत के दिन तुमको अपना क़ुर्ब अता फ़रमायेगा।

खुद इस बारे में हुज़ूर शंहशाहे दो आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की उस्वए हस्ना तो हर मोमिन के लिए बहुत ही फ़िक्र अंगेज़ व इबरत आमोज़ व वाजिबुल अमल है कि हज़रत अनस सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि आप बारगाहे खुदावन्दी में इस तरह दुआ माँगा करते थे कि " या अल्लाह अज़्ज़ावजल तू मुझको मिस्कीन होने की हालत में ज़िन्दा रख और मिस्कीनी ही की हालत में मुझे वफ़ात दे। और मिस्कीनों की जमाअत में मेरा हश्र फ़रमा।

अल्लाहु अकबर! मुसलमानों! दुआए नबवी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इन मुक़द्दस अल्फ़ाज़ को बार बार पढ़ो और इबरत हासिल करो कि शंहशाहे कौनैन के क़ल्बे मुबारक में मसाकीन और ग़ुरबाए मुसलेमीन की कितनी इज़्ज़त थी? और आपकी निगाहे नुबुव्वत में उन लोगों का कितना एहतिराम था और यह लोग किस क़दर हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम को अज़ीज़ और प्यारे थे।

आजकल के बाज़ मालदारों और सेठों का जो तरीक़ा है कि ग़रीब व मिस्कीन मुसलमानों को देखकर नाक व भौं सिकोड़ लेते हैं और उनको हक़ीर समझ कर अपने पास बिठाना गवारा नहीं करते। उन्हे इन हदीसों से हिदायत का नूर हासिल करना चाहिये। और मसाकीने उम्मत और ग़ुरबाऐ मुस्लेमीन से मुहब्बत और उनकी दिल जोई व दिलदारी करके हज़रत उम्मुल मोमिनीन बीबी आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा के नक़्शे क़दम पर चलकर और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के उस्वऐ हस्ना की पैरवी करके क़ियामत के दिन खुदावन्दे क़ुद्दूस का क़ुर्ब हासिल करना चाहिये

कि मुसलमानों के लिए इससे बढ़कर कोई दौलत नहीं। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को इस पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। आमीन

कलिमा से फ़तह होने वाला शहर

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रावी हैं कि नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि क्या तुम लोगों ने किसी ऐसे शहर को सुना है कि जिसका एक किनारा ख़ुश्की में है और एक किनारा समन्दर में है ? तो लोगों ने अ़र्ज़ किया कि हाँ या रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम! तो आपने फ़रमाया कि उस वक़्त तक क़ियामत नहीं क़ायम होगी यहाँ तक कि सत्तर हज़ार का लश्कर जो हज़रत इसहाक़ अ़लैहिस्सलाम की औलाद में से होगा। उस शहर पर जिहाद करेगा। और जब उस शहर के पास वह लश्कर पहुँचेगा तो न तलवार से जंग करेगा न कोई तीर चलायेगा बल्कि सिर्फ़ ला इलाहा इल्लल्लाह कह देगा तो शहर का एक किनारा जो समन्दर की जानिब होगा गिर पड़ेगा। फिर दूसरी मर्तबा ला इलाहा इल्लल्लाह कहेगा तो शहर फ़तह हो जायेगा। और यह लश्कर शहर में दाख़िल होकर माले ग़नीमत हासिल करेगा। और यह लोग उस माले ग़नीमत को तक़सीम कर रहे होंगे कि अचानक कोई शोर मचाने वाला यह कहेगा कि दज्जाल निकल पड़ा तो यह लश्कर सब कुछ छोड़ कर शहर से वापस हो जायेगा। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 467)

तबसरा :– 1. शारेहीने ह़दीस ने तह़रीर फ़रमाया है कि यह रोम का एक शहर है और बाज़ उल्मा का बयान है कि यह शहर "कुस्तुन तुनिया" है और यह लश्कर मुल्के शाम का होगा जो हज़रत इस्हाक़ अ़लैहिस्सलाम की औलाद हैं। और क़ुर्ब क़यामत में यह शहर फ़तह होगा और इसके बाद ही दज्जाल निकलेगा। चुनाँचे एक दूसरी हदीस में है कि जंगे अज़ीम और कुस्तुनतुनिया का फ़तह होना और दज्जाल का निकलना यह तीनों वाक़िआत सात महीनों के अन्दर अन्दर रोनुमा होगें।

2. यह वाक़िआ हुज़ूरे अक़दस स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम का मोजिज़ा भी है कि आप ने ग़ैब की ख़बर दी और सत्तर हज़ार शामी लश्कर की करामत भी है कि उनके सिर्फ़ कलिमा पढ़ देने से शहर फ़तह हो जायेगा।

3. इस ह़दीस शरीफ़ से यह भी मालूम हुआ कि क़ियामत तक हर दौर

में साहिबाने करामत होते रहेंगे। चुनाँचे आपने पढ़ लिया कि जिन लोगों के कलिमा पढ़ देने से शहर कुस्तुन तुनिया फ़तह हो जायेगा। यह लोगा कुर्बे क़यामत में होगें। अल ग़र्ज़ साहिबे करामत होना किसी ख़ास ज़मानें और किसी ख़ास नस्ल व क़ौम के साथ मख़सूस नहीं। बल्कि हर दौर और हर ज़माने में और हर क़ौम में अल्लाह तआला के नेक बन्दे करामत के शरफ से सरफ़राज़ होते रहेंगे। जैसा कि आपने पढ़ लिया कि यह साहिबाने करामत जिनके कलिमे से शहर कुस्तुनतुनिया फ़तह होगा यह लोग हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम की औलाद में से होगें।

माँ की बद दुआ और जरीज वली

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बनी इसराईल में जरीज नामी एक इबादत गुज़ार आदमी थे वह नमाज़ पढ़ रहे थे। और इसी हालत में उनकी माँ ने पुकारा (जो बहुत बूढ़ी और अन्धी थीं) तो उन्होंने नमाज़ की मशगूलियत की वजह से माँ की पुकार का जवाब नहीं दिया। तो उनकी माँ ने गुस्से में आकर उनको यह बद दुआ देदी कि या अल्लाह अज़्ज़ावजल! तू जरीज को उस वक़्त तक मौत न दे जब तक कि वह ज़िनाकार औरतों का चेहरा न देख ले। उसके बाद जबकि जरीज अपनी ख़ानक़ाह में थे एक औरत आयी और जरीज को लुभाने के लिए सामने आकर खड़ी हो गई। वह बदकारी के लिए गुफ़्तगू करने लगी। आपने जब यह गुनाह करने से इन्कार कर दिया तो वह औरत एक चरवाहे के पास आयी और उससे बदकारी कराली और उसी ज़िना के हमल से उसके यहाँ एक बच्चा पैदा हो गया। यह औरत कुँवारी थी जब लोागों ने इस औरत से पूछा कि यह लड़का किसका है तो उसने कह दिया कि जरीज का है। यह सुनते ही तमाम बस्ती वाले आपे से बाहर हो गये और सब जरीज के ऊपर टूट पड़े। और गालियाँ देते हुए उनको ख़ानक़ाह से नीचे उतार दिया। और ख़ानक़ाह की इमारत को तोड़ फ़ोड़ कर बर्बाद कर दिया। यह हाल देख कर हज़रत जरीज ने वुज़ू किया और नमाज़ पढ़ी फिर बच्चे के पास आये और ठोकर लगा कर उससे पूछा कि बोल ऐ बच्चे तेरा बाप कौन है ? तो बच्चे ने बुलन्द आवाज़ से कहा कि मेरा बाप एक

चरवाहा है। हज़रत जरीज की यह करामत देखकर बस्ती वाले दंग रह गये। और सब माअ्ज़रत के साथ हज़रत जरीज से माफ़ी माँगने लगे और कहने लगे कि ऐ जरीज! हम तुम्हारी ख़ानक़ाह सोने की बना देंगे। तो आपने फ़रमाया कि नहीं जैसी हमारी ख़ानक़ाह थी वैसी ही मिट्टी की बना दो।

फ़वाइद व मसाइल :– यह ह़दीस् बुख़ारी शरीफ़ में मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ और मुख़्तलिफ़ सनदों के साथ चन्द जगहों पर है मगर सब का ह़ासिल मत़लब यही है जो हम ने ऊपर तहरीर किया है। इस ह़दीस से दो बातों पर ख़ास तौर से रौशनी पढ़ती है।

1. माँ बाप की बद दुआ ऐसी जूद असर और ख़तरनाक होती है कि हज़रत जरीज जैसा बा करामत वली बे क़ुसूर होने के बावजूद उसकी ज़द से बच न सका फिर भला हम गुनाहगारों का क्या ठिकाना है? कि माँ बाप की बद दुआ से हम पर क़हरे ख़ुदावन्दी की मार न पड़े। लिहाज़ा मुसलमानों को लाज़िम है कि हमेशा माँ बाप की बद दुआओं से बचते रहें बल्कि उनको खुश रखकर हर वक़्त उनकी नेक दुआओं से अपने दामन को भरते रहें।

2. शीर ख़्वार बच्चे ने हज़रत जरीज की पाक दामनी का ऐलान किया यह हज़रत जरीज की खुली हुई करामत है। इससे मालूम हुआ कि दूध पीता हुआ छोटा बच्चा भी वली की करामत से बोल उठता है जैसा कि उसके बाद वाले उन्वान में मुफ़स्सल मज़कूर है।

शीर ख़्वार बच्चा बोल उठा

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है कि बनी इसराईल की एक औरत अपने बच्चे को दूध पिला रही थी। तो उसके पास से एक बहुत शानदार आदमी घोड़े पर सवार होकर गुज़रा। तो उस औरत ने दुआ माँगी कि ऐ अल्लाह अज़्ज़ावजल ! मेरे इस बच्चे को ऐसा ही जवान बना दे। तो बच्चे ने औरत की पिस्तान को छोड़कर उस आदमी को देखा और कहा कि ऐ अल्लाह अज़्ज़ावजल! मुझको ऐसा मत बनाना और फिर दूध पीने लगा। फिर औरत ने एक लौण्डी को देखा जिसको लोग मारते पीटते घसीट रहे थे तो औरत ने दुआ माँगी कि या अल्लाह! तू मेरे बच्चे को उस लौण्डी जैसा मत बनाना। तों बच्चे ने पिस्तान छोड़ कर कहा कि या अल्लाह! तू मुझे उस लौण्डी जैसा ही बनाना। तो औरत ने बच्चे से पूछा

कि ऐं बच्चे! क्यों तुझको शानदार जवान बनकर घोड़े पर सवार होना क़बूल नहीं? और मार खाती हुई ज़लील लौण्डी के मिस्ल बनना पसन्द है? तो बच्चे ने कहा कि वह जवान ज़ालिमों मे से एक बड़ा ज़ालिम था और यह लौण्डी लोग इस पर चोरी और बदकारी की तोहमत लगा रहे थे हालाँकि वह बेकुसूर व पाक दामन थी। (बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 489)

तबसरा :– दूध पीते बच्चे का इतना हकीमाना कलाम या तो बच्चे की करामत है या वह मादर ज़ाद वली था। या उसकी माँ की करामत है जो पारसा और सालिहा औरत थी।

बोलने वाले शीर ख़्वार बच्चे :– ऐसे दूध पीते बच्चे, जो पैदा होते ही बोलने लगे उनकी तादाद में इख़्तिलाफ़ है बाज़ उल्माऐ किराम ने उनकी गिनती नौ बतायी है जो हस्बे ज़ैल हैं।

1. हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम, 2. हज़रत याहया अलैहिस्सलाम, 3. हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम, 4. हुजूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम की नुबुव्वत पर गवाही देने वाला बच्चा जिसका नाम मुबारक था। 5. असहाबुल अख़दूद की आग में जलायी जाने वाली औरत का बच्चा। 6. फ़िरऔन की बीवी को सिंगार कराने वाली औरत का बच्चा। 7. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की पाक दामनी की शहादत देने वाला बच्चा। 8. हज़रत जरीज की बराअत का ऐलान करने वाला बच्चा। 9. बनी इसराईल की औरत का शीर ख़्वार बच्चा। (हाशिया बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 489)

नाक में साँप

हदीस :– हज़रत अमारा बिन उमैर का बयान है कि जब उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके साथियों के सरों को लाकर मस्जिद में खुली जगह पर रखा गया तो मैं उस वक़्त वहाँ पहुँचा कि लोग कह रहे थे कि वह आया। वह आया उस वक़्त मैंने देखा कि अचानक एक साँप आया और सरों के दरमियान दाख़िल हो गया। यहाँ तक कि उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के नथनों में घुस गया। और थोड़ी देर ठहर कर फिर निकला और ग़ायब हो गया। फिर लोगों ने कहना शुरु किया कि वह आया। वह आया। चुनाँचे वह आकर फिर नाक में घुस गया। इसी तरह दो मरतबा या तीन मरतबा साँप ने ऐसा किया फिर ग़ायब हो गया। (और किसी को नहीं मालूम हुआ कि वह साँप कहाँ से

आया था और किधर चला गया) यह हदीस हसन सही है।

उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद :– उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद वह बद नसीब शख़्स है जो यज़ीद की तरफ़ से कूफ़ा का गवर्नर बन कर आया और उसी के हुक्म से करबला में हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु और आपके साथियों को दस मुहर्रम 61 हिजरी जुमा के दिन इन्तेहाई बेदर्दी के साथ दरयाये फ़ुरात के किनारे शहीद किया । फिर उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद का यह अन्जाम हुआ कि यह तीस हज़ार की फ़ौज के साथ मूसिल में पड़ाव किये हुए था। इधर मुख़्तार बिन उबैद जो करबला के शहीदों का इन्तिक़ाम लेने के लिए कमर बस्ता हो चुका था और कूफ़ा पर उसका कब्ज़ा हो चुका था। उसने अपने सिपह सालार इब्राहीम बिन मालिक अशतर को उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद से जंग करने के लिए भेजा। चुनाँचे मूसिल से पन्द्रह कोस की दूरी पर दोनों लश्करों में जम कर दिन भर लड़ाई हुई और यह उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद उसी मैदान में दस मुहर्रम 67 हिजरी को दरयाए फ़ुरात के किनारे क़त्ल हुआ। और उसका सारा लश्कर भी मक़तूल हो गया। और इब्राहीम बिन मालिक बिन अशतर ने उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद और उसके बहुत से साथियों के सर काट कर मुख़्तार बिन उबैद के पास भिजवा दिये। और मुख़्तार बिन उबैद ने उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के सर को कूफ़ा के गवर्नर हाऊस में अपने तख़्त के नीचे ठीक उसी जगह रखवाया जिस जगह उस बद नसीब ज़ालिम ने हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु के सर को रखवाया था। गवर्नर हाऊस में उन सरों को लाने से पहले अवाम को दिखाने के लिए उन सरों को मस्जिद में रखा गया था। जहाँ साँप उबैदुल्लाह बिन ज़ियाद के नथनों में घुसा। यह वाक़िआ दुनिया ही में उस ज़ालिम पर एक इबरत अंगेज़ अज़ाबे ख़ुदावन्दी है जो बिला शुबा शोहदए करबला की करामत है। जिसको कूफ़ा वालों ने अपनी आँखों से देखा और यह क़ियामत तक हदीस की किताबों में महफ़ूज़ रहेगा।

चक्की आटे से, तन्दूर रोटी से भर गया

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि एक आदमी अपने घर में दाख़िल हुआ और जब घर वालों की मोहताजी को देखा तो दुआ के लिए जंगल की तरफ़ निकल

गया। उस की बीवी ने जब शौहर को घर से जाते हुए देखा तो उठकर चक्की चला दी। और तन्दूर सुलगा दिया फिर यह दुआ माँगी कि या अल्लाह! तू हमें रोज़ी दे यह कह कर जो देखा तो चक्की आटे से भर गई और तन्दूर को रोटी से भरा पाया। जब शौहर सहरा से लौट कर आया तो घर वालों से पूछा कि तुम लोगों ने मेरे चले जाने के बाद कुछ पाया ? तो उसकी बीवी ने कहा कि हाँ। हमारे रब की तरफ़ से हमें रोज़ी मिल गई जब नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से इस वाकिऐ का तज़किरा किया गया तो आपने फ़रमाया कि उस चक्की को न उठाया होता तो कियामत तक वह चक्की चलती रहती और आटा निकलता रहता। (मिशकात जिल्द 2 सफ़ा 454)

तबसरा :– इस हदीस् में एक मर्द सॉलेह और उसकी नेक बीवी की करामत का ज़िक्र है कि अल्लाह तआला ने दोनों की दुआओं को कबूल फ़रमा कर ग़ैब से रोज़ी अता फ़रमा दी। ऐसे बहुत से वाकिआत औलियाए उम्मत व उल्माए मिल्लत को पेश आये हैं जिनका तज़किरा मोअ्तबर किताबों में मौजूद है।

जहाँ बैठते घास उग जाती

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से रिवायत करते हैं कि आपने फ़रमाया कि हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम रुए ज़मीन पर जहाँ भी बैठते वहाँ सब्ज़ घास उग कर लहराने लगती थी। (बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 483)

तबसरा :– यह हज़रत ख़िज्र अलैहिस्सलाम का मोजिज़ा या करामत थी इससे मालूम हुआ कि हज़राते अम्बिया,मुरसलीन या औलियाए कामेलीन या मोमिनीने सॉलेहीन जहाँ भी बैठ जाते हैं। वह ज़मीन ख़ैर व बरकत का ख़ज़ाना बन जाती है और रहमते इलाही का नुज़ूल हुआ करता है। यही वजह है कि दौरे सहाबा से आज तक खुश अक़ीदा मुसलमानों का यह अमल रहा है कि वह अपने खेतों बाग़ों और मकानों पर बुज़ुर्गों को ले जाते और बिठाते हैं ताकि उन हज़रात की वजह से रहमते खुदावन्दी का नुज़ूल हो और उनकी मक़बूल दुआओं की बदौलत खेतों बाग़ों और मकानों में तरक़्क़ी और ख़ैर व बरकत का ज़ुहूर हो। और यह बारहा का तजुर्बा है कि बहुत से मुसलमान बुज़ुर्गों के क़दमों की बरकतों से शाद काम व बामुराद होकर मालामाल हो गये हैं।

हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम :– हज़रत ख़िज़्र अलैहिस्सलाम की कुन्नियत अबुल अब्बास और आपका नाम बलिया था। आपकी नुबुव्वत में इख़्तिलाफ़ है। अल्लामा सालबी ने लिखा है कि हज़रत इब्राहीम ख़लील अलैहिस्सलाम के ज़माने में थे। मगर अक्सर अहले इल्म ने यह फ़रमाया है कि वह आज भी ज़िन्दा और मौजूद हैं और बहुत से ख़ुश नसीब मुसलमान उनकी ज़ियारत से सरफ़राज़ होते रहते हैं। और दज्जाल के हाथों से आपको शहादत नसीब होगी। (किरमानी जिल्द 1 सफ़ा 483)

दीनारों से भरी हुई लकड़ी समन्दर में

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "बनी इसराईल के एक आदमी ने एक आदमी से एक हज़ार क़र्ज़ माँगा तो उसने कहा कि गवाहों को लाओ तो उसने कहा कि " कफ़ा बिल्लाहि शहीदा" यानी ख़ुदा की गवाही काफ़ी है। फिर उसने ज़ामिन तलब किया। तो उसने कह दिया कि " कफ़ा बिल्लाहि कफ़ीला" यानी अल्लाह तआला की ज़मानत काफ़ी है। तो क़र्ज़ देने वाले ने कहा कि तुम बिल्कुल सच कहते हो। और उसने एक मुद्दत के लिए एक हज़ार दीनार क़र्ज़ दे दिया। क़र्ज़ लेने वाला उन दीनारों को लेकर समन्दर के पार चला गया। जब क़र्ज़ अदा करने की मुद्दत क़रीब आयी तो उसने कश्ती तलाश की मगर उसको कोई कश्ती नहीं मिली। तो उसने एक लकड़ी में सूराख़ करके उसमें एक हज़ार दीनार रखकर अपना ख़त भी रख दिया। और फिर कील ठोक कर लकड़ी का सूराख़(राँगा लगाकर) बन्द कर दिया। ताकि उसमें पानी न जा सके और समन्दर के किनारे आकर यह कहा कि या अल्लाह तआला ! तुझको मालूम है कि फलाँ आदमी से मैंने क़र्ज़ माँगा था। तो उसने मुझको गवाह लाने को कहा था। तो मैंने उससे " कफ़ा बिल्लाहि शहीदा"(अल्लाह तआला की गवाही काफ़ी है) कह दिया। फिर उसने मुझसे ज़ामिन तलब किया तो मैने कह दिया " कफ़ा बिल्लाहि कफ़ीला" (अल्लाह तआला की ज़मानत काफ़ी है) तो अल्लाह तआला की शहादत और अल्लाह तआला की ज़मानत पर राज़ी होकर उसने एक हज़ार दीनार मुझे क़र्ज़ दे दिया। और मैंने कोशिश की कि मैं मुक़र्ररा मुद्दत पर उस क़र्ज़ की रक़म को उसके

पास पहुँचा दूँ। मगर मुझे किश्ती नहीं मिल सकी। तो ऐ रब! मैं तुझको अमीन बनाता हूँ कि तू इस रक़म को उसके पास पहुँचा दे यह कहा और उस लकड़ी को समन्दर में फेंक दिया। और वापस अपने घर चला गया। इधर कर्ज़ देने वाला मुक़र्ररा मुद्दत पर समन्दर के किनारे पहुँचा कि शायद किसी कश्ती से उसकी रक़म आयी होगी। मगर उसको समन्दर के किनारे बजाए कश्ती के एक लकड़ी मिली जिसको उसने जलाने की लकड़ी समझ कर उठा लिया। मगर जब घर आकर उस लकड़ी को फाड़ा तो उसमे से एक हज़ार दीनार और एक ख़त निकला। उसके बाद क़र्ज़ लेने वाले को किश्ती मिल गई और वह एक हज़ार दीनार लेकर कर्ज़ देने वाले के पास आ गया। तो कर्ज़ देने वाले ने पूछा कि क्या तुमने लकड़ी में रखकर मेरे पास कुछ भेजा था? तो क़र्ज़ लेने वाले ने कहा कि हाँ! जब मुझे कोई किश्ती न मिल सकी तो मैंने लकड़ी के अन्दर एक हज़ार दीनार और अपना ख़त बन्द करके खुदा को अमीन बनाकर तुम्हारी रक़म तुम्हारे पास भेज दी थी। और ख़त में पूरी सूरते हाल तहरीर करदी थी। तो कर्ज़ देने वाले ने कहा कि अल्लाह तआला ने वह रक़म मुझ तक पहुँचा दी। और तुम्हारा क़र्ज़ अदा हो गया। यह सुनकर कर्ज़ लेने वाला खुश होकर अपने घर चला गया। (बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 306)

तबसरा :– क़र्ज़ लेने वाला और कर्ज़ देने वाला दोनों खुदा पर कामिल ईमान रखने वाले थे। और उन दोनों की नेक नीयती और करामतों को यह समरा था कि समन्दर में फेंकी हुई रक़म ज़ाय नहीं हुई और सलामती के साथ कर्ज़ देने वाले के पास पहुँच गई।

इस हदीस से दो बातें ख़ास तौर से साबित हुईं।

1. अगर कोई क़र्ज़ ले और नेक नीयती के साथ कर्ज़ अदा करने की कोशिश करे तो खुदा वन्द करीम उसके क़र्ज़ को अदा करने के ग़ैब से ऐसे सामान पैदा फ़रमा देता है कि कोई सोच भी नहीं सकता। जैसा कि आपने पढ़ लिया कि उसकी नेक नीयती के सबब से अल्लाह तआला ने उसकी रक़म को ज़ाय नहीं होने दिया। और क़र्ज़ देने वाले के पास समन्दर की मौज के ज़रीआ रक़म को सलामती के साथ पहुँचा दिया और उस नेक नियत क़र्ज़ दार के क़र्ज़ को अदा कर दिया।

2. अल्लाह तआला की ज़ात पर ईमाने कामिल और उस पर मज़बूत ऐतिमाद तवक्कुल और नेक नीयती बहुत बड़ी ला ज़वाल दौलत और

ना क़बिले तसख़ीर ताक़त है। काश अल्लाह तआला हर मुसलमान को उन ताक़तों से मुसल्लेह़ और इन दौलतों से मालामाल फ़रमा कर बाकरामत बनाये। आमीन। वल्लाहु तआला अअ्लम।

सोने से भरा घड़ा ज़मीन से निकला

हदीस :– ह़ज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक शख़्स ने एक शख़्स से ज़मीन ख़रीदी तो उस ज़मीन में से एक घड़ा निकला जो सोने से भरा हुआ था। तो ख़रीदार ने ज़मीन बेचने वाले से कहा कि तुम यह सोने से भरा घड़ा ले लो। क्योंकि मैनें तुमसे सिर्फ़ यह ज़मीन ख़रीदी है यह सोने से भरा घड़ा नहीं ख़रीदा है। और ज़मीन बेचने वाले ने कहा कि मैंने ज़मीन और उसमें जो कुछ है सब तुम्हारे हाथ बेच दिया है। लिहाज़ा यह घड़ा भी तुम ही ले लो। जब दोनों में से कोई सोने से भरा हुआ घड़ा लेने को तैयार नहीं हुआ तो यह दोनों इसका फैसला कराने के लिए तीसरे आदमी के पास गये। तो उसने पूछा कि क्या तुम दोनों के औलाद है ? तो एक ने कहा कि हाँ। मेरे एक लड़का है और दूसरे ने कहा कि मेरे एक लड़की है। तो फ़ैसला करने वाले ने यह फ़ैसला किया कि तुम अपने लड़के का इसकी लड़की के साथ निकाह़ कर दो। और तुम दोनों बा ख़ुशी यह सोना उन लडके और लड़की की शादी में खर्च कर डालो। तो तुम दोनों को स़दक़ा करने का सवाब मिल जायेगा। चुनाँचे यह दोनों इस पर राज़ी हो गये। (बुख़ारी जि1,स494)

तबस़रा :– यह वाक़िआ अगली उम्मतों में से किसी उम्मत के नेक बन्दों का है। ज़मीन ख़रीदने वाला और ज़मीन बेचने वाला और इन दोनों के दरमियान फ़ैसला करने वाला तीनों निहायत ख़ुदा तरस व ख़ुदा परस्त और आला दर्जे के मुत्तक़ी व दयानत दार थे। इसलिए सोने से भरे घड़े का ज़मीन से निकलना और ख़रीदार और बेचने वाले दोनों का उस घड़े के लेने से इन्कार करना और फ़ैसला देने वाले का एक निहायत ही बेहतरीन फ़ैसला देना। बिला शुबा उन तीनों की करामत व दयानत व अमानत की एक ऐसी मिसाल है जिसकी मुश्किल से ही कोई मिस़ाल मिलेगी।

सुब्ह़ानल्लाह ! अगले ज़माने के मोमिन लोग कितने मुत्तक़ी और किस क़दर दयानत दार और अमीन थे। यक़ीनन इस वाक़िऐ में हर

मुसलमान के लिए इबरतों और हिदायतों का बहुत बड़ा सामान है। काश दौरे हाज़िर के मुसलमान इन वाक़िआत से इबरत व नसीहत हासिल करते।

क़ब्र पर नज़र आने वाला नूर

हदीस :– हज़रत बीबी आयशा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा कहती हैं कि जब नजाशी रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु (बादशाहे हबशा) का इन्तिक़ाल हो गया तो हम लोग आपस में यह बात किया करते थे कि उनकी क़ब्र पर हमेशा एक नूर नज़र आता रहता है। (मिश्कात जि 2 सफ़ा 545)

तबसरा :– नजाशी बादशाह हबशा का नाम " असमहा" था। सबसे पहले मुसलमानों ने मुशरेकीने मक्का के ज़ुल्म से तंग आकर हबशा हिजरत की थी। और नजाशी बादशाह हबशा ने उन मुसलमानों को पनाह देकर उनकी मदद की थी। और मुश्रेकीने मक्का के शदीद दबाव के बावजूद नजाशी ने मुसलमानों को हबशा से नहीं निकाला। बल्कि खुद मुसलमान हो गया। और बहुत ज़्यादा इसलाम और मुसलमानों की मदद करता रहा। और हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम भी उससे बहुत ज़्यादा मुहब्बत फ़रमाते रहे। यहाँ तक कि जब उसका इन्तिक़ाल हो गया तो हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने सहाबा किराम को उसके इन्तिक़ाल की खबर सुनायी और सब को साथ लेकर ईदगाह तशरीफ़ ले गये। और नजाशी की ग़ायबाना नमाज़े जनाज़ा पढ़ी और दुआये मग़फ़िरत फ़रमायी। नजाशी बादशाहे हबशा को इस ख़िदमते इसलाम और मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की बदौलत दुआए नबवी का शरफ़ मिला। और उनको यह करामत नसीब हुई कि उनकी क़ब्र पर एक नूर नज़र आता था। जिसको आम तौर पर लोग अपनी नज़रों से देखते थे। और मदीना मुनव्वरा तक उनकी इस करामत का चर्चा फैला हुआ था। जिसका तज़किरा उम्मुल मोमिनीन हज़रत बीबी आयशा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने इस हदीस में किया है। वल्लाहु तआला अअ़्लम।

शेर ने फ़ौज तक पहुँचाया

हदीस :– हज़रत इब्ने मुनक़दिर ताबेई का बयान है कि हज़रत सफ़ीना रदियल्लाहु तआला अन्हु रोम की सरज़मीन में इस्लामी लश्कर से भटक गये या गिरफ़्तार हो गये तो वह अपने लश्कर को तलाश करते हुए दौड़ भाग रहे थे। अचानक एक शेर उनके सामने आ गया तो उन्होंने शेर से कहा कि ऐ अबुल हारिस! मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का गुलाम हूँ और मैं अपने इस्लामी लश्कर से भटक गया हूँ। शेर ने यह सुनकर दुम हिलाना शुरु किया और आपके पहलू में आकर खड़ा हो गया। और आपके साथ साथ चलने लगा। और रास्ते में अगर कहीं कोई आवाज़ सुनता था तो उस आवाज़ की तरफ़ चल देता था। फिर आपके सामने आपके पहलू में आकर आपके साथ साथ चलने लगता था। शेर उस वक़्त तक आपके साथ साथ चलता रहा यहाँ तक कि आप लश्कर में पहुँच गये। फिर शेर वापस चला गया। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 548)

तबसरा :– यह हज़रत सफ़ीना रदियल्लाहु तआला अन्हु' की निहायत वाज़ेह और खुली हुई करामत है कि जंगल का हमला आवर शेर आपकी ज़बान से सिर्फ़ इतना सुनकर मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का गुलाम हूँ एकदम दुम हिला हिला कर आपसे मुहब्बत व फ़रमां बरदारी का इज़हार करने लगा। और आपके साथ साथ चलकर रास्ता बताने लगा। और अगर रास्ते में वह कोई आवाज़ सुनता था तो दौड़ कर उस आवाज़ की तरफ़ मुतावज्जेह होता था। कि दुश्मनों के हमले से आपको बचाये और जब उसको मालूम हो जाता था कि कोई ख़तरनाक बात नहीं है तो वह शेर दौड़ कर आता था और आपके पहलू में चलने लगता था। यहाँ तक कि जब आप सलामती के साथ लश्कर में पहुँच गये तो शेर अपने जंगल में लौट कर चला गया।

हज़रत सफ़ीना :– यह रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के गुलाम थे और बाज़ मुअर्रख़ीन का क़ौल है कि यह उम्मुल मोमिनीन बीबी उम्मे सलमा रदियल्लाहु तआला अन्हा के गुलाम थे। और आपने उनको इस शर्त पर आज़ाद कर दिया था। कि तुम ज़िन्दगी भर नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत करते रहना। " सफ़ीना"

आपका लक़ब है। और आपके नाम में इख़्तिलाफ़ है बाज़ ने कहा कि आपका नाम रुबाह था। और बाज़ उल्मा का क़ौल है कि आपका नाम मेहरान था। और बाज मुअर्रेख़ीन ने आपका नाम रोमान तहरीर किया है। फिर इसमें भी इख़्तिलाफ़ है कि आप अरबीयुन्न नस्ल थे? या अहले फ़ारस के ख़ानदान से थे ? आपका लक़ब सफ़ीना होने का सबब यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम एक मरतबा सफ़र में थे तो आपने देखा कि एक आदमी जो बहुत थक गया था उसने हलका होने के लिए अपनी तलवार और ढाल और नेजा सब कुछ हज़रत सफ़ीना के ऊपर डाल दिया। हालाँकि वह पहले ही से बहुत ज्यादा बोझ लादे हुए थे। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने इनको बहुत ज़्यादा सामान से लदा हुआ देखा तो फ़रमाया कि अन्ता सफ़ीना यानी तुम तो कश्ती हो। इसी दिन से लोग आपको सफ़ीना कहने लगे। और आपका यह लक़ब इस क़दर मशहूर हो गया कि लोग आपका असली नाम ही भूल गये। यही वजह है कि आपके नाम में इख़्तिलाफ़ हो गया। यह ह़दीसें भी बयान फ़रमाते थे चुनाँचे इनके शगिर्दों में अ़ब्दुर्रहमान व मुहम्मद व ज़ियाद वग़ैरह मशहूर मुहद्देसीन हैं।

हज़रत सईद बिन ज़ैद की करामत

हदीस :– हज़रत उ़र्वा बिन ज़ुबैर रावी हैं कि एक औरत अरवा बिन्त औस ने मरवान बिन ह़कम ह़ाकिमे मदीना की कचहरी में यह दावा किया कि सईद बिन ज़ैद ने मेरी ज़मीन ले ली है। और मरवान ने वह ज़मीन अरवा बिन्ते औस को दिला देने का फ़ैसला कर दिया। उस वक़्त ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद ने यह कहा कि या अल्लाह! अगर यह औरत झूटी है तो इसको अन्धी कर दे। और इसी ज़मीन में इसको मौत देदे। हज़रत उरवा बिन ज़ुबैर का बयान है कि वह औरत अन्धी हो गई और उस जमीन में चल फिर रही थी कि अचानक एक कुएँ में गिरकर मर गई। और मुस्लिम की एक रिवायत में है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर के पोते मुहम्मद बिन ज़ैद कहते हैं कि मैंने उस औ़रत को देखा था। अन्धी हो गई थी। और दीवारें पकड़े पकड़े चलती फिरती थी। और कहा करती थी कि मुझको ह़ज़रत सईद बिन ज़ैद की बद दुआ़ लग गई है। एक दिन वह इसी ज़मीन में चल फिर रही थी कि

अचानक एक कुएँ में गिर पड़ी और वह कुआँ उसकी क़ब्र बन गया।

तबसरा :– अल्लाह अज़्ज़ावजल के मक़बूल बन्दे अक्सर बहुत ही सैफ़ ज़बान हुआ करते हैं उनकी ज़बानों से निकली हुआ दुआ या बद दुआ तलवार की तरह जोद असर हुआ करती है। इस लिए हर मुसलमान को लाज़िम है कि वह हमेशा अल्लाह वालों यानी उल्माए किराम और मशाइख़ व दरवेश हज़रात की दुआयें लेता रहे। और कभी कोई ऐसी हरकत न कर बैठे कि अल्लाह वालों का दिल दुख जाए। और उनकी जबानों से बददुआ निकल पड़े। क्योंकि इन हज़रात की बद दुआ वह शमशीरे बरहना है जिसकी कोई ढाल नहीं है। क्योंकि तारीख़ शाहिद है कि बड़े बड़े कमाल वाले जब किसी अल्लाह वाले की बद दुआ में पड़ गये हैं तो इस तरह तबाही व बरबादी उन पर मुसल्लत हो गई कि उनके कमाल का उरुज ज़वाल की पस्ती में गिर कर उनका सत्यानाश हो गया है किसी ने सच कहा है कि–

जो जज़्ब के आलम में निकले लबे मोमिन से
वह बात हक़ीक़त में तक़दीरे इलाही है

हज़रत सईद बिन ज़ैद :– यह हज़रत उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु के बहनोई हैं और अशरा मुबश्शिरा में से हैं। यानी उन दस ख़ुशनसीब सहाबा किराम में से हैं जिन दसों को एक मजलिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जन्नती होने की बशारत दी है। यह इब्तिदाऐ इस्लाम में मुसलमान हो गये थे। और जंगे बदर के सिवा तमाम इस्लामी लड़ाईयों में निहायत जाँबाज़ी के साथ मुजाहिदाना जंग करते रहे। बहुत लम्बे निहायत ताक़तवार थे इनके वालिद ज़ैद बिन अम्र बिन नफ़ील ज़माना जाहिलियत में आला दरजे के मुवहहिद(ख़ुदा को एक मानने वाले) थे। और ऐलानिया बुत परस्तों की मज़म्मत किया करते थे। और ऐलाने नुबुव्वत से क़ब्ल हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की उनसे मुलाक़ाते भी होती थी। मगर अफ़सोस कि ऐलाने नुबुव्वत के वक़्त इन की वफ़ात हो चुकी थी। इस लिए मुशर्रफ़ बा इसलाम न हो सके। हज़रत सईद ने 51 हिजरी में बमुक़ाम " अतीक़" सत्तर बरस से ज़्यादा उम्र पाकर वफ़ात पायी। लोग इन का जनाज़ा उठाकर मदीना मुनव्वरा लाए और आप जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़ून हुए।

हैवानात

मुर्ग़ को गाली मत दो

हदीस :– हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुर्ग़ को गाली देने से मना फ़रमाया है। और फ़रमाया है कि यह नमाज़ के लिए ऐलान करता है और दूसरी रिवायत में है कि यह लोगों को नमाज़ के लिए जगाता है। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा361)

हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद :– इस हदीस् के रिवायत करने वाले हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद जोहनी रदियल्लाहु तआला अन्हु हैं। यह मुहद्दिसीन में से हज़रत अता बिन यसार वग़ैरह के उस्ताज़े हदीस हैं। इन्होंने कूफ़ा में सुकूनत इख़्तियार कर ली थी। और वहीं 78 हिजरी में पचास बरस की उम्र पाकर वफ़ात हुई।

तबसरा :– यूँ तो हर इन्सान चरिन्द परिन्द को गाली देना निहायत मायूब(बुरी) और गुनाह की बात है मगर खुसूसियत के साथ उन परिन्दों को गाली देना या बुरा भला कहना जो इन्सान को ज़िक्रे इलाही की याद दिलाते हैं यह बहुत ही मायूब और शदीद गुनाह की बाइस है। मसलन मुर्ग़ कि यह सुबह को आवाज़ देकर नमाज़े फज्र के लिए जगाता है। उसको गाली देना बहुत बुरी बात और गुनाह है। आम तौर पर लोग मुर्ग़ की आवाज़ सुनकर गुस्से में बड़बड़ाने लगते हैं। और मुर्ग़ को बुरा भला कहने लगते हैं ऐसा हरगिज़ हरगिज़ नहीं करना चाहिये। बल्कि मुर्ग़ की आवाज़ सुनकर तस्बीह व हम्दे इलाही के कलिमात पढ़ लेना चाहिये। यानी सुब्हानल्लाह वल हम्दुल्लिाह कहना चाहिये। क्योंकि यह साबित है कि परिन्दे अपनी अपनी बोलियों में खुदावन्दे कुददूस की तस्बीह व तहमीद करते रहते हैं। और मुर्ग़ के लिए तो ख़ास कर हदीस् में आया है कि यह फ़रिश्ते को देख कर बोला करता है। चुनाँचे हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया–

" जब तुम मुर्ग़ की आवाज़ सुनो तो अल्लाह तआला से उसके फज़्ल का सवाल करो। क्योंकि मुर्ग़ फ़रिश्ते को देख कर बोलता है।"

इस लिए यह याद रखना चाहिये कि मुर्ग़ की आवाज़ सुनकर सुबहानल्लाह वलहम्दुल्लिाह पढ़ते हुए खुदा के फ़ज़ल की दुआ माँगनी

चाहिये। और हरगिज़ हरगिज़ कोई गाली या बद कलामी ज़बान से नहीं निकालनी चाहिये। मुर्ग़ की आवाज़ सुनकर दुआ करना और ख़ुदा से उसके फ़ज़्ल का सवाल करना इस लिए मसनून है कि वह फ़रिश्ते इस दुआ पर आमीन कहेंगे जिनको देख कर मुर्ग़ ने बाँग दी है।

सोने की टिड्डियाँ

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम गुस्ल फ़रमा रहे थे तो आपके क़रीब सोने की टिड्डियों का एक गोल गिर पड़ा। और आप उन टिड्डियों को दोनों हाथों से उठा उठा कर अपने कपड़े में जमा करने लगे। तो रब तआला ने आपको पुकारा कि ऐ अय्यूब! क्या मैंने तुमको दौलत मन्द बनाकर इन सोने की टिड्डियों से बे नियाज़ नहीं बना दिया है ? तो आपने अर्ज़ किया कि क्यों नहीं ऐ मेरे परवरदिगार! लेकिन मैं तेरी तरफ़ से अता की जाने वाली बरकत से कभी बे नियाज़ी नहीं बरत सकता। (बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 480)

तबसरा :– हज़रत अय्यूब अलैहिस्सलाम का इम्तिहान था कि सोने की टिड्डियाँ ना गहाँ उनके पास उतर पड़ीं। और आपने दोनों हाथों से उन टिड्डियों को पकड़ पकड़ कर अपने कपड़े में जमा करना शुरु कर दिया। और अल्लाह तआला ने जब उनसे दरयाफ़्त फ़रमाया कि ऐ अय्यूब अलैहिस्सलाम! मैंने तुमको बहुत ज़्यादा सोना चाँदी देकर दौलत मन्द बना दिया है कि तुमको इन सोने की टिड्डियों की कोई ज़रुरत ही नहीं है। बल्कि तुम इन से ग़नी व बे नियाज़ हो फिर क्यों तुम इनको अपने कपड़ें में जमा कर रहे हो ? तो आपने जवाब दिया कि ऐ मेरे रब! बेशक तूने अपने फ़जलो करम से मुझको ग़नी बना दिया है चूँकि यह टिड्डियाँ तेरी तरफ़ से बतौर बरकत मेरे पास आयी हैं। इसलिए मैं तेरी अता करदा बरकत से कभी बे नियाज़ बन कर उनको ठुकरा नहीं सकता।

इससे मालूम हुआ कि मुसलमान को माल मिलने की हिर्स व लालच तो नहीं रखनी चाहिये। लेकिन अगर बिग़ैर हिर्स व तमाअ् और बिग़ैर सवाल किये हुए कहीं से कोई दौलत मिल जाए तो मालदार होते हुए भी उस दौलत को ठुकराना नहीं चाहिये बल्कि उसको अतिया ख़ुदावन्दी और

बरकते रब्बानी समझ कर पूरे ऐज़ाज़ के साथ ले लेना चाहिये। चुनाँचे सल्फ़ सॉलेहीन और उ़ल्माऐ मशाइख़ का यही मामूल रहा है कि वह ग़नी होते हुए भी अपने मुख़लिस मुरीदीन और मुअ़्तक़ेदीन का नज़राना क़बूल फ़रमा लिया करते थे। मगर हरगिज़ हरगिज़ उन मुक़द्दस बुज़र्गों में न हि़र्स व तमाअ़् का जज़्बा होता था न किसी से वह इसका सवाल करते थे। आज भी उ़ल्मा व मशाइख़ यही तरीक़ा कार रखें तो हर गिज़ हरगिज़ इसमें कोई मुज़ाएक़ा व ह़रज नहीं है। वल्लाहु तआला अअ़्लम।

गधों और कुत्तों की आवाज़

ह़दीस :– ह़ज़रत जाबिर रदि़यल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु ने कहा कि मैंने नबी स़ल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना कि जब तुम लोग रात में कुत्तों को भौंकना और गधों को बोलना सुनो तो "अऊज़ो बिल्लाहि मिनश शैता़निर्रजीम" पढ़ा करो। क्योंकि यह सब ऐसी चीज़ें देखकर भौंकते और बोलते हैं जिनको तुम लोग नहीं देखते। (मिशकात 2 स 373)

तबसरा :– इस ह़दीस़ से मालूम हुआ कि रात में कुत्ते और गधे बाज़ मरतबा शयाती़न और क़िस्म क़िस्म की बलाओं और वबाओं को देखकर भौंकने और बोलने लगते हैं। इसलिए उनकी आवाज़ो को सुनकर खुदावन्द कुद्दूस की पनाह तलब करनी चाहिये। और तअ़व्वुज़ पढ़ना चाहिये। ताकि शयाती़न के शर और उनकी लायी हुई नहूसतों और बलाओं से मह़फ़ूज़ रहें।

एक दूसरी हदीस में ह़ज़रत अबु हुरैरा रदि़यल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि –

" जब तुम लोग गधे की आवाज़ सुनो तो शैतान से खुदा की पनाह त़लब करो। क्योंकि गधा शौतान को देखकर बोला करता है।

बहर हाल दोनों हदीसों का ह़ासिल मतलब यही है कि गधे की आवाज़ सुनकर अऊज़ो बिल्लाहि मिनश शैता़निर्रजीम" पढ़ना चाहिये।

काला कुत्ता शैतान है

हदीस :– हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि काले कुत्ते को जिसकी पेशानी पर दो सफ़ेद चित्तियाँ हों उसको क़त्ल कर दो क्योंकि वह शैतान है।

तबसरा :– 1. काले रंग के दो चित्तियों वाले कुत्ते को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने शैतान बताया हालाँकि वह कुत्ता है और कुत्तों की नस्ल से है तो उसकी वजह यह है कि इस क़िस्म का कुत्ता बेहद शरीर निहायत मूज़ी और ज़रर रसाँ होता है। इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उसकी ज़ात के ऐतिबार से नहीं बल्कि उसकी सिफ़त और चाल चलन के एतिबार से उसको शैतान बताया है कि वह अगरचे ज़ात और नस्ल के ऐतिबार से कुत्ता है मगर वह अपनी ज़रर रसानी और शरारत के लिहाज़ से शैतान है लिहाज़ा इस क़िस्म के कुत्तों के क़ुर्ब से बचना चाहिये बल्कि उनको क़त्ल कर देना चाहिये। ताकि वह अपनी शैतानी हरकतों से किसी को ईज़ा न पहुँचा सकें।

2. खेतों और मवेशियों और मकानों की हिफ़ाज़त और शिकार के लिए कुत्तों को पालना जाइज़ है। बाक़ी इन मक़ासिद के सिवा लहवो लअ़िब या दूसरे किसी मक़सद से पालना जाइज़ नहीं है बल्कि हदीस शरीफ़ में है कि मज़कूरा बाला चार मक़सदों के अलावा जो शख़्स कुत्ता पालेगा हर रोज़ उसके सवाब में एक "क़िरात" घटता रहता है।

और हज़रत इबने उ़मर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा की रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर रोज़ उसके अमल के सवाब में से दो क़िरात घटता रहेगा।

कुत्ता पालने वाले का सवाब क्यों घटता रहता है ? तो इसके बारे में बाज़ शारेहीने हदीस् ने फ़रमाया कि चूँकि नाजाइज़ तौर पर कुत्ता पालने की वजह से उसके घर में रहमत व बरकत के फ़रिश्ते दाख़िल नहीं होते। इसलिए उसके आमाल का सवाब रहमतों और बरकतों से महरुम और ख़ाली रहकर घट जाता है। और बाज़ उल्मा ने फ़रमाया कि चूँकि उसके कुत्तों से रास्ता चलने वाले को ईज़ा पहुँचती है और कुत्ता पालने वाले का मक़सद

भी यही होता है इसलिए उसके आमाल के सवाब में कमी होती जाती है।

अब रहा यह सवाल कि एक रिवायत में है कि रोज़ाना एक क़िरात सवाब घटता रहता है और दूसरी रिवायत में है कि रोज़ाना दो क़िरात सवाब घटता रहता है। बज़ाहिर इन दोनों हदीसों में तआरुज़ है तो अल्लामा तैबी ने फ़रमाया कि जिसका कुत्ता ज़्यादा शरीर और ज्यादा मूज़ी होगा उसका सवाब रोज़ाना दो क़िरात घटता रहेगा। और अगर मक्का मोअ़ज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा में कुत्ता पालेगा तो उसके सवाब में से रोज़ाना दो क़िरात घटता रहेगा। क्योंकि यह दोनों शहर फ़ज़्ल व शरफ़ में तमाम दुनिया के शहरों से बढ़कर हैं। लिहाज़ा इन दोनो शहरों में कोई गुनाह का काम करना बहुत सख़्त जुर्म है। (मिश्कात सफ़ा 359)

गिरगिट का क़त्ल करो

हदीस :– 1. हज़रत उम्मे शरीक रदियल्लाहु तआला अन्हा ने कहा कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने गिरगिट को क़त्ल करने का हुक्म दिया। और फ़रमाया कि यह हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम के ऊपर जलाई जाने वाली आग को फूँक मार मार कर भड़काता था।

2. हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने गिरगिट को क़त्ल करने का हुक्म फ़रमाया और छोटा फ़ासिक़ उसका नाम रखा।

3. हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु रावी हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो गिरगिट को पहली ज़र्ब में क़त्ल कर देगा उसके लिए सौ नेकी लिखी जायेंगी। और जो दूसरी ज़र्ब में मारेगा उसको इससे कम नेकी मिलेगी। और जो तीसरी ज़र्ब में क़त्ल करेगा उसको इससे भी कम नेकी मिलेगी।

तबसरा :– गिरगिट एक ज़हरीला और मूज़ी जानवर है जो इन्सानों को देखकर सब्ज़ व सुर्ख़ रंग का हो जाया करता है। खानों को ज़हरीला और ख़राब कर देना उस ख़बीस जानवर की ख़ुसूसी आदत है। ख़ास कर नमक को अपनी बीट से गन्दा कर देना तो उसका बेहतरीन मशग़ला है। इसलिए उस मूज़ी जानवर को क़त्ल कर देना सवाब है।

और चूँकि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जिस आग में डाले गये थे यह ख़बीस जानवर शैतान का आला कार बनकर उस आग पर फूँक मार मार कर उस आग को भड़काता था। इस लिए ज़हरीला और मूज़ी होने के अलावा शैतान का आलाकार और मददगार है। और अल्लाह तआला के एक उलुल अज़्म रसूल हज़रत इब्राहीम का दुश्मन और बद ख़्वाह है। इस लिए यक़ीनन वाजिबुल क़त्ल है। और जो इस दुश्मने रसूल को क़त्ल कर देगा। वह यक़ीनन सवाबे अज़ीम की दौलत से मालामाल होगा।

इस लिए हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम ने फ़रमाया कि जो शख़्स गिरगिट को पहली ज़र्ब में क़त्ल करेगा उसके लिए एक सौ नेकी लिखी जायेंगी। और जो दूसरी ज़र्ब में उसको क़त्ल करेगा उसको उससे कम नेकी मिलेंगी। और जो तीसरी ज़र्ब में उसको क़त्ल करेगा उसको उससे कम नेकी मिलेंगी। मक़सद यह है कि उसके क़त्ल में जल्दी करनी चाहिये। और कोशिश करनी चाहिये कि पहली ही ज़र्ब में उस ख़बीस जानवर का ख़ात्मा हो जाये।

चींटियों के घर मत जलाओ

हदीस :– हज़रत अबू हूरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि एक चींटी ने एक नबी को काट लिया। तो उन्होंने चींटियों की पूरी बस्ती को जलवा दिया। तो अल्लाह तआला ने बतौर इताब वही भेजी कि तुम को एक ही चींटी ने काटा था तो तुम ने क्यों ऐसी उम्मत को जला डाला जो तस्बीह पढ़ रही थी। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 361)

तबसरा :– इसमें इख़्तिलाफ़ है कि यह नबी हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम थे या हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम। बहर हाल चींटियों के पूरे घर जला देने से उन पर इताब नाज़िल हुआ। इससे मालूम हुआ कि चींटियों के ग़ोल को हलाक करना या उनके घर जला कर सब को जलाकर तबाह कर डालना बिला ज़रुरत जाइज़ नहीं हैं। क्योंकि चींटियाँ जहाँ भी रहती हैं तस्बीह ख़्वानी में मशगूल रहती हैं। लिहाज़ा बिला ज़रुरत एक चींटी को भी नहीं मारना चाहिये।

बारिश की दुआ माँगने वाली चींटी

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से सुना है कि आपने फ़रमाया कि एक नबी एक मरतबा नमाज़े इस्तिसका पढ़ने के लिए मैदान में तशरीफ़ ले गये तो नागहाँ उन्होनें देखा कि एक चींटी आसमान की तरफ़ अपने पाँव को उठाये हुए है तो आपने फ़रमाया कि तुम लोग अपने घरों को वापस चले जाओ। क्योंकि उस एक चींटी की वजह से तुम लोगों की दुआयें क़बूल हो गईं। (मिश्कात जिल्द एक सफ़ा 132)

तबसरा :– अशअ़तुल लमआ़त शरहे मिश्कात सफ़ा 627 में है कि यह नबी हज़रत सुलेमान अ़लैहिस्सलाम थे। और चींटी ने अपने दोनों अगले पैर उठा रखे थे जो बराबर उसके दोनों हाथों के हैं। जिनको उठाकर बारिश के लिए दुआ माँग रही थी। इस हदीस से मालूम हुआ कि इन्सान की फ़लाह व बहबूद के लिए जानवर भी दुआऐं माँगा करते हैं। इसलिए ब जुज़ मूज़ी जानवरों के दूसरे परिन्दे और चरिन्दे बल्कि हशरातुल अर्द को भी बिला ज़रुरत मार डालना या उनकी ईज़ा रसानी करना ममनूअ़ है। हाँ अलबत्ता हलाल परिन्दों और चरिन्दो को खाने के लिए जिब्ह़ करना और शिकार करना जाइज़ है कि यह ज़रुरत से है। लेकिन बिला ज़रुरत महज़ तफ़रीह और खेल कूद के लिए किसी परिन्द व चरिन्द को मार डालना जाइज़ नहीं है। क्योंकि यह सब जानवर इन्सानों के ख़ैर ख़्वाह और दुआ गो हैं। लिहाज़ा इन पर रह़म करना चाहिये। बल्कि अगर हो सके तो उनको दाना पानी भी दे देना चाहिये। और उनकी हिफ़ाज़त करनी चाहिये।

वाज़ेह रहे कि जो लोग परिन्दों को महज़ तफ़रीह और खेल के तौर पर मार कर फेंक दिया करते हैं और इसको शिकार खेलना कहते हैं यह शरअन जाइज़ नहीं हैं।

मक्खी के दोनों पर

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम्हारे बरतन में मक्खी गिर पड़े तो पूरी मक्खी को बरतन में डुबो दो। फिर उसको निकाल कर फेंक दो। क्योंकि उसके एक पर में शिफ़ा और दूसरे में बीमारी है। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 360)

तबसरा :– 1. शिफ़ा ख़ाना–ए– रिसालत की तशख़ीस और इलाज का नुस्ख़ा है कि मक्खी के एक पर में बीमारी और दूसरे में उसकी शिफ़ा है। और मक्खी की यह आदत है कि वह जब खाने पीने की चीज़ों में गिरती है तो बीमारी वाला पर गिराती है इस लिए हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह हुक्म फ़रमाया कि जब मक्खी बरतन में गिर पड़े तो मक्खी को बरतन में डुबो कर फेंक दो। ताकि बीमारी वाले पर के साथ उसकी शिफ़ा वाला पर भी बरतन में पहुँच जाये। और बीमारी का इलाज होकर शिफ़ा हासिल हो जाये।

2. इस हदीस से यह भी मालूम हुआ कि जिन जानवरों में बहता हुआ ख़ून नहीं होता जैसे मक्खी, भिड़, बिच्छू अगर यह पानी में मर जायें तो इससे पानी नजिस नहीं होता। क्योंकि हुज़र सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मक्खी को बरतन में डुबो देने का हुक्म फ़रमाया है। ज़ाहिर है कि डुबो देने से मक्खी मर जायेगी। तो अगर मक्खी के मर जाने से खाना पानी नजिस हो जाता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मक्खी को खाने पानी में डुबो देने और फिर उस खाने पानी को खा पी लेने का हुक्म न फ़रमाते। वल्लाहु तआला अअ़लम।

ख़िन्ज़ीर और बन्दर बन जाने वाले इन्सान

हदीस :– हज़रत अम्मार बिन यासिर रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ौम जिन पर आसमान से " मायदा" (दस्तरख़्वान) उतरता था। जिस में गोश्त रोटी था उन लोगों को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने यह हुक्म दिया था कि वह इस में कोई ख़्यानत न करें। और कल के लिए ज़ख़ीरा बना कर न रखें। लेकिन उन लोगों ने ख़यानत भी की और कल के लिए ज़ख़ीरा बना कर भी रख लिया। तो यह लोग मसख़ करके बन्दर और ख़िन्ज़ीर बना दिये गये।(मिशकात जिल्द 2 सफ़ा 438)

शरहे हदीस :– क़ौमे बनी इसराईल में से कुछ लोगों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से यह मोजिज़ा तलब किया कि आप आसमान से एक दस्तरख़्वान खाने से भरा हुआ नाज़िल करायें ताकि हम लोग खाकर और आपके इस मोजिज़े से मुतमइन होकर ईमान पर क़ायम रहें। हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उन लोगों को बहुत समझाया कि तुम लोग यह मोजिज़ा मत तलब करो। क्योंकि इस मोजिज़े को देख लेने के बाद अगर तुम लोग खुदा की नाफ़रमानी व नाशुकरी करोगे तो अज़ाबे इलाही में गिरफ्तार हो जाओगे। मगर जब बनी इसराईल के लोग अपनी माँग पर अड़े रहे और बहुत ज़्यादा इसरार किया तो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने दुआ की। और आपकी दुआ से एक दस्तख़्वान आसमान से उतर पड़ा। तो आपने लोगों से फ़रमाया कि देखो यह आसमान से दस्तरख़्वान तुम्हारी तलब पर मेरी दुआ से अल्लाह तआला ने आसमान से उतार दिया है अब तुम लोग इसमें से खाओ। मगर दो बातों का ख़ास तौर से ख़्याल रखना कि इसमें कोई ख़्यानत न करना। बल्कि सब को बराबर हिस्सा देना। कल फिर अल्लाह तआला ऐसा ही दूसरा दस्तरख़्वान आसमान से उतार देगा। उस दस्तरख़्वान में कुछ गोश्त और रोटियाँ थीं या कुछ मछलियाँ और रोटियाँ थीं। लेकिन बनी इसराईल ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की नसीहत पर अमल नहीं किया और अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ तमर्रुद और सरकशी पर तैयार हो गये। और उस दस्तरख़्वान में ख़्यानत भी की। और कुछ छिपा कर कल के लिए ज़ख़ीरा बनाकर भी रख लिया। तो उन लोगों पर गज़बे इलाही का यह

अज़ाब उतर पड़ा कि यह लोग मस्ख़ करके बन्दर व ख़िन्ज़ीर बना दिये गये। और फिर सबके सब हलाक हो गये। इससे मालूम हुआ कि अल्लाह तआ़ला के नबीयों की नाफ़रमानी और उनके साथ तमसख़ुर और सरकशी का अंन्जाम कितना भयानक होता है। अल्लाह तआ़ला अपनी पनाह में रखे।

यह लोग असहाबे माएदा कहलाते हैं और कुरआने मजीद की सूरए माएदा में इन लोगों के वाक़ये का ज़िक्र है।

बन्दरों ने एक बन्दर को रजम कर दिया

हदीस :– हज़रत अ़म्र बिन मैमून रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि ज़माना जाहिलियत में मैंने देखा कि बहुत से बन्दरों ने एक ज़िना करने वाले बन्दर को पत्थर मार मार कर हलाक कर दिया। तो मैंने भी उन बन्दरों के साथ उस बन्दर को रजम(संगसार) करने में हिस्सा लिया।

(बुख़ारी जिल्द 1 सफ़ा 543)

हज़रत अ़म्र बिन मैमून :– इन्होंने जाहिलियत का दौर पाया है और नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ह़यात ही में मुसलमान भी हो गये थे। मगर इनको हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की ज़ियारत नसीब नहीं हुई थी। इस लिए यह सहाबी नहीं हुए। हाँ बुलन्द मरतबा ताबेईन में इनका शुमार है। इन्होंने हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब और मआ़ज़ बिन जबल व इब्ने मसऊ़द रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुम से हदीसें सुनकर रिवायत की हैं और इनके शागिर्दों में मुहद्दिस इस्हाक़ नामवर गुज़रे हैं। यह कूफ़ा के रहने वाले थे। और 74 हिजरी में इनकी वफ़ात हुई।

तबसरा :– इस ह़दीस की शरह में अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बर अ़लैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि ज़िना की हुरमत और ज़िनाकार को जो शादी शुदा हो रजम और संगसार करना शरीअ़त के अहकाम हैं। और अहकामे शरीअत के मुकल्लफ़ इन्सान व जिन के सिवा दूसरी कोई मख़लूक़ नहीं। लिहाज़ा मालूम हुआ कि यह बन्दर दर हक़ीक़त जिन थे जो बन्दरों की सूरत में थे। बाज़ उल्मा का क़ौल है कि बुख़ारी की यह हदीस "मुन्किर" है क्योंकि इस हदीस को रिवायत करने वाले चन्द रावी मजहूलुल ह़ाल हैं।

एक अजीब मछली

हदीस :– हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रदियल्लाहु तआला अन्हुमा कहते हैं कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक लश्कर जिसमें तीन सौ सहाबा किराम थे साहिले समन्दर की तरफ़ भेजा और हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रदियल्लाहु तआला अन्हु को अमीरे लश्कर मुक़र्रर फ़रमाया और दरमियाने सफ़र हम लोगों का तोशा ख़त्म हो गया तो अमीरे लश्कर ने पूरे लश्कर के तोशों को एक जगह जमा किया तो खजूर के दो तोशा दान भर खजूरें हो गईं थीं। उसमें से थोड़ी थोड़ी खजूरें हमें अमीरे लश्कर दिया करते थे। यहाँ तक नौबत पहुँची कि हम लोगों को एक एक खजूर रोज़ाना मिलने लगी। फिर यह भी बन्द हो गई। इसके बाद हम लोग समन्दर के पास पहुँचे तो नागहाँ किनारे पर हम लोगों को एक मछली मिल गई जो पहाड़ी के टीले के मानिन्द बहुत बड़ी थी। पूरा लश्कर उस मछली को अठारह दिनों तक खाता रहा। फिर हज़रत अबू उबैदा रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उस मछली की दो पसलियों को ज़मीन में गाढ़ने का हुक्म दिया तो इतनी बड़ी मेहराब बन गई कि उसके नीचे से एक ऊँट कजावा बंधा हुआ गुज़र गया मगर मेहराब को नहीं छू सका।

फ़वाइद व तबसरा :– इस में मुजाहिदीने किराम की चन्द करामतें हैं जिन की तजल्लियाँ हस्बे ज़ैल हैं।

1. ऐन भूक के आलम में जबकि सहाबा किराम के पास खुराक के लिए एक दाना भी न था। अचानक समन्दर से इतनी बड़ी मछली साहिल पर फेंक दी जो नादिरुल वुजूद और नायाब है। और यही मछली मुजाहिदीन की खुराक का सामान बन गई। इसको फज़्ले खुदावन्दी और मुजाहिदीन की करामत के सिवा और क्या कहा जा सकता है?

2. तीन सौ मुजाहिदीन अठारह दिनों तक उस मछली का गोश्त खाते रहे मगर यह ख़त्म नहीं हुई इससे पता चलता है कि यह मछली बहुत बड़ी होने के साथ साथ बहुत ही बा बरकत हो गई थी। जो मुजाहिदीने किराम की करामत का जलवा थी।

3. अठारह दिनों तक यह मछली धूप में पड़ी रही मगर न सड़ी न सूखी न कोई बू पैदा हुई न बद ज़ायक़ा हुई। इन सब बातों को मुजाहिदीने किराम की करामतों के सिवा और क्या कह सकते हैं।

तमाम साँपों को मार डालो

हदीस :– हज़रत इब्ने मसऊ़द रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तमाम साँपों को क़त्ल कर डालो। और जो शख़्स इन्तिक़ाम का ख़ौफ़ करे वह मेरे तरीक़े पर नहीं।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द :– इस ह़दीस के रावी हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हैं इनकी कुन्नियत अबु अ़ब्दुर्रह़मान है। यह इब्तिदाऐ इस्लाम ही में मुसलमान हो गये थे। इनको रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से बहुत कुर्ब था। यहाँ तक कि बाहर से आने जाने वाले इनको हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के घर का एक फ़र्द समझते थे। यह हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के ख़ास राज़दार और बहुत ही खुसूसी ख़ादिम थे। हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के नालैन शरीफ़ और मिसवाक व वुजू का बरतन इन्ही की तह़वील में रहता था। सफ़र व वतन में हमेशा आपकी ख़िदमत में हाज़िर बाश रहा करते थे। जंगे बदर व इसके बाद के तमाम जिहादों में मुजाहिदाना हैसियत से शरीके जिहाद रहे। हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इनको जन्नत की बशारत भी दी।

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उ़मर और अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रत उ़स्मान रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के दौरे ख़िलाफ़त में कूफ़ा के क़ाज़ी और बैतुल माल के मैनेजर रहे। मशहूर है कि आठ सौ अड़तालीस हदीसें इन्होंने रिवायत की हैं आख़िर उम्र में आपने मदीना मुनव्वरा में सुकूनत इख़्तियार कर ली थी। चुनाँचे 32 हिजरी में मदीना मुनव्वरा के अन्दर साठ बरस से कुछ ऊपर उम्र पाकर वफ़ात पायी। और जन्नतुल बक़ी में मदफून हुए।

शरहे हदीस :– ज़माना जाहिलियत में कुफ़्फ़ार का यह अक़ीदा था कि जो साँप को क़त्ल करेगा साँप का जोड़ा उससे ज़रुर बदला लेगा। और उसको कभी न कभी ज़रुर काट लेगा। इस अक़ीदे के बमोजिब कुफ़्फ़ारे अरब साँपों को क़त्ल नहीं करते थे। हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने अपनी उम्मत को साँपों के क़त्ले आम का हुक्म देते हुए जाहिलियत के अ़क़ीदे का रद करते हुए इरशाद फ़रमाया कि जो यह अक़ीदा रख कर साँपों के

क़त्ल से हाथ रोक लेगा कि साँप का जोड़ा उससे बदला लेगा वह मेरे तरीक़े पर नहीं है क्योंकि मेरे नज़दीक जाहिलियत के कुफ़्फ़ार का अक़ीदा बातिल है। और इस बात पर एतिक़ाद व ऐतिमाद करना क़तअन ग़लत है। लिहाज़ा हर किस्म के साँपों को बिला ख़ौफ़ क़त्ल कर देना चाहिये।

जिहाद का घोड़ा बाबरकत है

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि घोड़ों की पेशानियों में बरकत है। (मिश्कात जि2स336)

तबसरा :– घोड़ों की पेशानियों से मुराद घोड़ों की ज़ात है यानी यह बाबरकत जानवर है क्योंकि घोड़े जिहाद का सामान हैं और जिहाद में दुनिया व आख़िरत की भलाईयाँ शामिल हैं। चुनाँचे एक हदीस में है कि जो शख़्स जिहाद की नियत से घोड़ा पालेगा तो उस घोड़े का चारा पानी और उसकी लीद और पेशाब सब क़ियामत के दिन उसके मीज़ाने अमल में नेकी बना कर तोले जायेंगे। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 332)

सबसे पहले घोड़े पर हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम ने सवारी फ़रमायी। आपसे पहले यह वहशी जंगली चौपाया था। इसी लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग घोड़े की सवारी करो क्योंकि यह तुम्हारे बाप हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम की मीरास् है।

हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बीबियों के बाद सब से ज़्यादा घोड़ा महबूब था। हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि घोड़ा मैदाने जंग में यह तस्बीह पढ़ता है कि "सुब्बूहुन क़ुददूसुन रब्बुल मलाइकते वर्रुह।" ख़ुद हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के चन्द घोड़े थे जिन पर आप सवारी फ़रमाया करते थे।

पाँच जानवर फ़ासिक़ हैं

हदीस :– हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हुमा रिवायत करती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पाँच जानवर फ़ासिक़ हैं जो हिल व हरम में क़त्ल कर दिये जायेंगे। 1. साँप, 2. कौआ, 3. चूहा, 4. कटखना कुत्ता, 5. चील।

शरहे हदीस :– हज़रत इब्ने उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में आया है कि नबी करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि पाँच जानवरों को जो हरम और एहराम में क़त्ल कर दे उस पर कोई गुनाह नहीं। 1. चूहा, 2. कौआ, 3. चील, 4. बिच्छू, 5. कटखना कुत्ता।

बहर हाल इन पाँचों जानवरों को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़ासिक़ क़रार दे कर हिल व हरम और हरम व हालते एहराम में इनको क़त्ल कर देना जाइज़ ठहरा दिया है। इन पाँचों को फ़ासिक़ इस लिए कहा गया कि यह पाँचो जानवर बिग़ैर अपने किसी फ़ायदे के वह काम करते हैं जिससे इन्सान का नुकसान हो। या ईज़ा पहुँचे। मसलन साँप बिच्छू इन्सान को काटते और ढंक मारते हैं हालाँकि इसमें साँप और बिच्छू का कोई फायदा नहीं है। इसी तरह कौआ निशाना बाँध कर इन्सान के ऊपर बीट कर देता है और बाज़ ऐसे सामान भी उठा ले जाता है जिससे उसको कोई फायदा नहीं होता बल्कि सिर्फ़ इन्सान को नुक़सान और अज़ीयत पहुँचाता है। इसी तरह चूहा कपड़ों और किताबों को काट डालता है हालांकि इसमें उसका कोई फ़ायदा नहीं। यूँ ही काटने वाला कुत्ता लोगों को काट लेता है तो इसमें उसका कोई फ़ायदा नहीं है महज़ इन्सान को ज़रर रसानी हो जाती है। इसी तरह चील सोने चाँदी के ज़ेवरात झपट कर इन्सान के हाथों से ले जाती है। और कहीं ले जाकर गिरा देती है। इन्सान का माली नुक़सान भी हो जाता है और इन्सान के हाथों में ज़ख़्म भी हो जाता है हालाँकि चील का इसमें ज़र्रा बराबर भी कोई ज़ाती फ़ायदा नहीं होता।

खुलासा यह कि यह पाँचों जानवर बिला अपने किसी फायदे के अपनी शरारतों से इन्सान की ईज़ा रसानी करते रहते हैं इस लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इनको फ़ासिक़ का एक घिनौना लक़ब दे दिया। देख लेजिए खटमल मच्छर जूएं यह सब भी काटते और ईज़ा

पहुँचाते हैं लेकिन इन सभी का मक़सद सिर्फ़ ईज़ा पहुँचाना नहीं है बल्कि यह सब अपने फ़ायदे यानी अपनी ग़िज़ा हासिल करने के लिए इन्सान को काटते हैं। यह और बात है कि इससे इन्सान को ईज़ा भी पहुँच जाती है। इसलिए इन सभी को शरीर और फ़ासिक़ नहीं फ़रमाया गया और मज़कूरा बाला पाँचों जानवरों को फ़ासिक़ क़रार देकर हिल व ह़रम में इन का क़त्ल मुबाह क़रार दे दिया गया। क्योंकि यह पाँचों महज़ अपनी शरारत से इन्सान को ईज़ा पहुँचाते हैं।

अब रहा यह सवाल कि क्या हिल व हरम में क़त्ल करना इन्हीं पाँचों जानवरों में मुनहसिर है या इनके सिवा दूसरे मूज़ी जानवरों को भी ह़िल व ह़रम में क़त्ल कर सकते हैं ? तो इस बारे में हज़रत शैख़ मुहक़्क़िक़ मौलाना शाह अब्दुल ह़क़ मुहद्दिस देहलवी रह़मतुल्लाह अ़लैहि ने यह फ़रमाया कि ह़िल व ह़रम में क़त्ल का जाइज़ होना इन्हीं पाँचो में महदूद व मुन्हसिर नहीं है बल्कि दूसरे मूज़ी जानवरों मसलन शेर चीता भेड़िया वग़ैरह को भी ह़िल व ह़रम में क़त्ल कर दिया जायेगा।

और मिरक़ात के हाशिये में भी है कि हर हमला करने वाला दरिन्दा कटखने कुत्ते के हुक्म में है कि इसको भी ह़िल व ह़रम में हर जगह क़त्ल कर देना जाइज़ है।

ह़िल व ह़रम :– मक्का मुकर्रमा से कई कई मील दूर चारों तरफ़ कुछ निशानात बने हुए हैं जो ह़रम के हुदूद हैं। इन हदूद के अन्दर की पूरी ज़मीन ह़रम कहलाती है और इन हदूद की बाहर की ज़मीन ह़िल कहलाती है। ह़रम की ह़दूद ह़ज़रत सय्येदिना इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की मुक़र्रर की हुई है जिनको हुज़ूर ख़ातिमुन नबीईन सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लमने बरक़रार रखा है। और ज़मीन का इतना हिस्सा क़ियामत तक ह़रम ही रहेगा। और इसके अन्दर हरे दरख़्तों और घासों को काटना और इन्सानों को क़त्ल और चरिन्दों परिन्दों का शिकार करना ह़राम है।

मतऊ़मात

(खाने की चीज़ें)

रह़मते आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की की पसन्दीदा गि़ज़ाएँ

हदीस :– ह़ज़रत आयशा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा कहती हैं कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ह़लवा और शहद को पसन्द फ़रमाते थे।

इब्ने अब्बास रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा कहते हैं कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को तमाम खानों में ज़्यादा महबूब रोटी की सरीद और हैस की सरीद थी।

शरहे हदीस :– इन दोनों ह़दीसों का मतलब बिल्कुल जाहिर है कि हुजूर अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को ह़लवा और शहद और सरीद यह चीज़ें मरगू़ब व पसन्द थीं। और आप इन दोनों को ब रग़बत तनावुल फ़रमाया करते थे।

हल्वा :– आम तौर पर "अलहलवा" का तर्जुमा शीरीनी करते हैं। यानी हर मीठी चीज़। मगर हज़रत शैख़ मुह़क़्क़िक़ अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़क़ मुहद्दिस देहलवी रह़मतुल्लाह अ़लैहि ने अपनी किताब अश्अतुल लम्आ़त जिल्द 3 सफ़ा 491 में मजमउ़ल बिहार के हवाले से तहरीर फ़रमाया है कि इस हदीस में अल्ह़लवा से मुराद ह़लवा ही है। यानी वह खाना जिस में घी और मीठा डाल कर पकाया जाए। हमारे हिन्दुस्तान में आ़म तौर पर सूजी या गेहूँ का आटा या चने का बेसन घी और शकर मिला कर जो खाना पकता है उ़सको ह़लवा कहते हैं और हदीस में यही मुराद है कि रहमते आ़लम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को ह़लवा मरगू़ब और पसन्दीदा था।

और बाज शारेह़ीने ह़दीस ने फ़रमाया कि अलह़लवा से मुराद वह खाना है जिसको मजीअ़् कहते हैं जिसके पकाने की तरकीब यह है कि खजूर को पीस कर दूध में पका दिया जाए दर ह़क़ीक़त यह भी एक क़िस्म का ह़लवा है। बहर हाल ह़लवा हुजूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को मरगूब और पसन्द था। और हर वह मुसलमान जो इस गि़ज़ा से मुहब्बत करे और ब रग़बत इसको खाये और खिलाए वह एक मसनून गि़ज़ा से मुहब्बत व रग़बत रखता है। यही वजह है कि अकाबिरे उ़ल्माऐ मिल्लत व मशाइख़े

तरीकत शबे बराअ्त और दूसरे मुबारक दिनों और बरकतें वाली रातों में हलवा पर फ़ातिहा दिलाकर खाते और खिलाते हैं। और ब नियत अदाऐ सुन्नत इस गिज़ा को खाकर और दूसरों को खिलाकर सवाबे अज़ीम हासिल करते हैं।

और जो लोग शबे बराअ्त के हलवे और उस पर फ़ातिहा से चिढ़ते हैं और कहते हैं कि शबे बरात में हर क़िस्म का खाना पकाना जाइज़ व दुरस्त है। मगर हलवा पकाना बिदअ्त व ममनूअ् है। हम इन लोगों के बारे में इसके सिवा और क्या कह सकते हैं कि एक ऐसी गिज़ा से नफ़रत करना जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को पसन्द थी। सरासर उन लोगों की बद नसीबी और महरुमी है। क्योंकि किसी सुन्नत से नफ़रत ईमान की बरबादी का सिगनल है। अल्लाह तआला हर मुसलमान को इस मनहूसियत और बद नसीबी की लानत से महफ़ूज़ रखे।

शहद :– हलवे के साथ दूसरी मरगूब गिज़ा शहद है हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम कभी ख़ाली सिर्फ़ शहद तनावुल फ़रमाते थे। और कभी इसको बतौर सालन के इस्तेमाल फ़रमाते थे। और कभी शहद का शरबत भी नोश फ़रमाया करते थे। ग़र्ज़ शहद को तरह तरह से आप अपनी गिज़ा में इस्तेमाल फ़रमाया करते थे। लिहाज़ा यह भी हलवे की तरह एक मसनून खुराक है। जिसका खाना सुन्नत व बाइसे अजरो बरकत है। वाज़ेह रहे कि शहद एक गिज़ा होने के अलावा बहुत से अमराज़ की दवा भी है। कुरआने मजीद में एक ख़ास् सूरह नाज़िल हुई जिसका नाम सूरह नहल है। इस सूरह में शहद की मक्खियाँ और शहद की ख़ूबियाँ बयान फ़रमाते हुए अल्लाह तआला ने" फ़ी हे शिफ़ा लिन्नास" फ़रमाया यानी शहद में लोगों के लिए बहुत सी बीमारियों की शिफ़ा है। लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि शहद खाकर अजरो व सवाब की दौलत भी जमा करें और कुरआनी नुस्ख़ा की इस कुदरती दवा से शिफ़ा भी हासिल करें।

यूनानी अतिब्बा और डाक्टर बल्कि आर्युवेदिक वैध साहिबान सबका यह मुत्तफ़िक़ा फैसला है कि शहद आज़ेए रईसा की कमज़ोरी और ज़ोअ्फ़े आसाब की बेहतरीन दवा है मुसफ़्फ़ी ख़ून और मुक़व्वी मेदा भी है और कुरआन मजीद के अल्फ़ाज़ से तो यह मफ़हूम होता है कि शहद तमाम अमराज़ के लिए शिफ़ा है बाज़ अमराज के लिए तो तनहा शहद शिफ़ा है और बाज़ अमराज़ में दूसरी दवाओं के साथ मिलकर यह शिफ़ा बनता है। इस तरह शिफ़ा लिन्नास है।

यानी इन्सान की तमाम बीमारियों के लिए शिफ़ा है।

सरीद :– हलवा व शहद की तरह सरीद भी हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की महबूब और मरगूब गिज़ा है। सरीद दो क़िस्म का बनाया जाता है एक रोटी की सरीद इसका तरीक़ा यह है कि रोटी को चूरा करके शोरबे में बोटियों के साथ मिला दिया जाऐ। दूसरा तरीक़ा यह है कि खजूर को पनीर व घी में इस तरह मल दिया जाए कि मालीदा हो जाए। इसी को हीस भी कहते हैं यह दोनों खाने भी रहमते आलम की पसन्दीदा गिज़ाऐं हैं मुसलमानों को चाहिये कि कभी कभी अदाऐ सुन्नत की नियत से इन गिज़ाओं को इस्तेमाल करके सवाबे अज़ीम हासिल करें।

पसंदीदा गोश्त

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पास गोश्त लाया गया तो आपके सामने अगले दस्त का गोश्त पेश किया गया और यह आपको बहुत अच्छा लगता था। तो आपने उसको दाँतों से नोच कर खाया।

शरहे हदीस :– आम तौर से हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को गोश्त बहुत ज़्यादा पसन्द था और आप बकसरत इसको तनावुल फ़रमाते थे। ऊँट भेड़ बकरी, दुम्बा नील गाय मुर्ग़ व बटेर और मछली वग़ैरह हलाल परिन्दों व चरिन्दों को गोश्त खाना हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से साबित है। मगर रिवायतों से पता चलता है कि आपको बकरी के गोश्त में से उसका अगला दस्त बहुत ज़्यादा पसन्द और मरगूब था। और आप इसको दाँतो से नोच नोच कर तनावुल फ़रमाया करते थे। और फ़रमाते थे कि गोश्त को छुरी से काट काट कर मत खाया करो क्योंकि यह अजमियों का तरीक़ा है बल्कि दाँतों से नोंच कर खाया करो। क्योंकि यह ज़्यादा लज़्ज़त बख़्श व खुशगवार व जूद हज़म होता है।(मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 366)

वाज़ेह रहे कि छुरी से गोश्त को काट काट कर खाना हराम व नाजाइज़ नहीं है बल्कि हदीस का मतलब यह है कि गोश्त अगर नरम और गला हुआ हो तो दाँतों से नोच कर ज़्यादा बेहतर और मुफ़ीद है। लेकिन अगर गोश्त सख़्त और कम गला हुआ हो तो छुरी से काट काट कर खाना भी हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम से साबित है।

चुनाँचे हज़रत अम्र बिन उमय्या रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि मैंने बकरी के शाने का गोश्त छुरी से काट काट कर खाते हुए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा है। (मिश्कात जि.2 सफ़ा 346)

कदू की मुबारक तरकारी

हदीस :– हज़रत अबू तालूत ताबेई का बयान है कि मैं हज़रत अनस बिन मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो वह कदू की तरकारी खा रहे थे। और यह फ़रमा रहे थे कि ऐ वाह रे दरख़्त मुझको तुझसे कितनी मुहब्बत है कि क्योंकि हुज़र सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तुझसे मुहब्बत फ़रमाते थे।

शरहे हदीस :– कदू की तरकारी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को बहुत ज़्यादा महबूब व मरगूब थी। इस बारे में बहुत सी हदीसें मरवी हैं एक रिवायत में हज़रत अनस बिन मालिक का बयान है कि मैं एक मरतबा हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ खाने में शरीक था। एक प्याले में सालन आया जिसमें गोश्त की बोटियाँ और कदू के टुकड़े पड़े हुए थे तो मैंने यह देखा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम प्याले में से कदू के टुकड़े ढूँढ कर तनावुल फ़रमाते थे। उसी वक़्त से मैं हमेशा कदू की तरकारी से मुहब्बत रखता हूँ।

कदू की तरकारी खाना सुन्नत है। इसी लिए बहुत से बुज़ुर्गों से मनकूल है कि वह बकसरत इस तरकारी को सवाब समझ कर खाया करते थे। और एक दूसरे को बतौर तोहफ़ा उसका हदया भेजा करते थे।

कदू और इमाम अबू यूसुफ़ :– हज़रत इमामे आज़म अबू हनीफ़ा रहमतुल्लाहि तआला अलैहि के जलीलुल क़द्र शागिर्द हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाहि अलैहि जो अब्बासी सल्तनत के क़ाज़ी उल क़ज़ा(चीफ़ जस्टिस) थे। आपके दरबार में कदू की तरकारी का ज़िक्र छिड़ गया तो आपने फ़रमाया कि सुब्हानल्लाह यह तो सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को महबूब व मरगूब तरकारी है। लिहाज़ा हम सब लोग इस तरकारी को बेहद महबूब समझते हैं यह सुनकर एक गुस्ताख़ ने कह दिया कि मुझे तो यह तरकारी बिल्कुल पसन्द नहीं है। गुस्ताख़ की ज़बान से इन अल्फ़ाज़ को सुनकर हज़रत इमाम अबू यूसुफ़ रहमतुल्लाह अलैहि मारे ग़ैज़ व ग़ज़ब

के आग बगूला हो गये। और तलवार उठाकर फ़रमाया कि ऐ गुस्ताख़ जल्द तौबा करो वरना इसी तलवार से मैं तेरी गरदन उड़ा दूँगा।

मैं तुझे हदीस सुनाता हूँ कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम कदू से मुहब्बत फ़रमाते थे और तू कहता है कि मैं इसे पसन्द नहीं करता लिहाज़ा तू वाजिबुल क़त्ल है। चुनाँचे उस शख़्स ने भरे दरबार में फ़ौरन तौबा करके तजदीदे ईमान कर लिया और उसकी जान बच गई। (मिरकात जि2 स77)

मुसलमानों इस वाक़ेआ़ से तुम अन्दाज़ा कर सकते हो कि पुराने बुज़ुर्गाने दीन के दिलों में हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की महबूब चीज़ों से किस क़दर मुहब्बत व अ़क़ीदत थी और हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की तौहीन व बे अदबी तो बड़ी ख़तरनाक चीज़ है।हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम की ग़िज़ाओं की अदना सी बे अदबी बुज़ुर्गानें दीन और उ़ल्माऐ किराम बरदाश्त नहीं कर सकते थे। बल्कि उस बद नसीब शख़्स को वाजिबुल क़त्ल और क़ाबिले गरदन ज़दनी समझते थे जो हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की महबूब ग़िज़ाओं से बे रग़बती का इज़हार करे। मगर हाए अफ़सोस आंजकल के मुसलमानों में मुहब्बते रसूल स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम और अज़मते अम्बिया का यह जलवा फ़ना हो गया और हज़ारों बार उल्माऐ अहले सुन्नत की ताक़ीद और बार बार की तफ़हीम के बावजूद मुसलमान इन बद दीनों से नफ़रत नहीं रखते थे जो हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के दरबारे नुबुव्वत के बे अदब व गुस्ताख़ हैं। काश मुसलमानों का यह इस्लामी जज़्बा बेदार हो जाए जो इस्लाम व ईमान की जान और सच्चे मुसलमान की सबसे बड़ी पहचान है। ताकि वह दरबारे नुबुव्वत के गुस्ताख़ों और शाने रिसालत के बे अदबों से क़तअ़े तअ़ल्लुक़ करके नफ़रत व बेज़ारी का ऐलान करते रहें।

बेहतरीन सालन

हदीस :– हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हा से मरवी है कि बेशक रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेहतरीन सालन सिरका है।

तबसरा :– हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को सिरका बहुत पसन्द था। और आप बड़ी रग़बत के साथ इसको तनावुल फ़रमाते थे। और इसकी मदह़ भी फ़रमाया करते थे। एक रिवायत में है कि एक दिन रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अपनी चचा ज़ाद बहन उम्मे हानी बिन्ते अबू तालिब के घर तशरीफ़ ले गये और फ़रमाया कि क्या तुम्हारे पास खाने की कोई चीज़ है ? तो उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे घर में रोटी के खुश्क टुकड़े और सिरका के सिवा कुछ भी नहीं है। तो आपने फ़रमाया कि उसे मेरे सामने लाओ। जिस घर में सिरका होगा वह घर कभी सालन से खाली नहीं होगा। फिर आपने रोटी के खुश्क टुकड़ों को सिरके के साथ बड़े शौक़ से तनावुल फ़रमाया। (मिश्कात जिल्द 2 स 366)

अलग़रज़ सिरका हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को बहुत पसन्द था इस लिए सिरका खाना सुन्नत है। यही वजह है कि अक्सर स़हाबा किराम और उ़ल्मा व औलिया व सुलहा सिरका को बतौरे सालन इस्तेमाल फ़रमाते रहे। साहिबे मजमउल बिहार ने इस हदीस की शरहे में फ़रमाया कि सिरका बेहतरीन सालन इसलिए है कि यह निहायत ही सस्ता और सहलुल हुसूल और मेदा के अमराज़ के लिए बहुत मुफ़ीद है और लज़्ज़त के ऐतिबार से बहुत खुश ज़ायक़ा है।

आ़म तौर पर इस दौर के मुसलमानों ने सिरका खाना छोड़ दिया है। और इस तरह लोग एक मसनून सालन के फ़वाइद व अजरो व सवाब से महरुम हो गये। मगर पुराने दौर के औलिया और सॉलेहीने किराम बकसरत सिरका इस्तेमाल फ़रमाते थे। और उ़ल्माऐ किराम का कोई घर और सूफ़ियों की कोई ख़ानक़ाह सिरके से ख़ाली नहीं रहती थी। मगर इस ज़माने के लोगों ने क़िस्म क़िस्म के तकल्लुफ़ात में पड़ कर सिरका खाना बिल्कुल छोड़ दिया है और शाज़ व नादिर ही किसी मुसलमान के दस्तरख़्वान पर सिरका नज़र आता हो।

अफ़सोस! आजकल के मुसलमानों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और सल्फ़े सॉलेहीन के मुबारक तरीक़ों को छोड़ कर दुनिया दार लोगों के तरीक़ों को अपनी खाने पीने की चीज़ों में अपना लिया है।

ख़ुदावन्दे करीम हम सब मुसलमानों को हर अमल में इत्तिबाए सुन्नत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

वाज़ेह रहे कि दूसरे क़िस्म क़िस्म के सालनों का खाना शरीअत में मना नहीं। लिहाज़ा हर क़िस्म के सालनों को खा सकते हैं मगर मुसलमानों को अदाऐ सुन्नत की नियत से कभी कभी सिरका भी खा लेना चाहिये। कि यह एक मसनून गिज़ा भी है। और एक निहायत मुफ़ीद दवा भी है। हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने जिस सालन की मदह फ़रमायी है भला उसकी इफ़ादियत व फ़ज़ीलत और उसकी खूबी व लज़्ज़त का क्या कहना? सुब्हानल्लाह सुब्हानल्लाह ।

एक अजीब और बेहद मुफ़ीद खाना

हदीस :– हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा ने कहा कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के घर वालों में से किसी को लरज़ा बुख़ार आता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम हिसा (हरीरा) पकवाने का हुक्म फ़रमाते। तो वह पकाया जाता तो आप हुक्म देते तो बीमारों को घूँट घूँट पिलाया जाता और हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि यह वह गिज़ा है जो गमगीन को सुकून पहुँचाती है और मरीज़ के दिल की बेचैनी को इस तरह ज़ाइल कर देती है जैसे कि तुम औरतों में से कोई मैल को अपने चेहरे से पानी के ज़रीआ ज़ाइल कर दिया करती है। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 367)

हिसा :– हिसा की तफ़सीर में साहिबे निहाया ने फ़रमाया है कि यह एक मशहूर खाना है जो आटे और पानी और तेल या घी की मिलावट से पतला पतला पकाया जाता है जिसको घूँट घूँट पी सकें। जिसको उर्दू ज़बान में हरीरा कहा जाता है और आम तौर पर घरों में पकाया जाता है।

मुसलमानों को इस मुफ़ीद खाने पर ईमान रखना लाज़िम है क्योंकि यह शिफ़ा ख़ाना–ए– नुबुव्वत का तजवीज़ करदा नुस्ख़ा है जिसको हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने बतरीक़े वही अल्लाह अज़्ज़ावजल

से सीखा है। इस के अजज़ा को मामूली समझकर इसको नज़र अन्दाज़ नहीं करना चाहिये। क्योंकि मामूली और कम क़ीमत चीज़ों में भी जब अल्लाह तआला का हुक्म हो जाता है तो ऐसी अज़ीम तासीर व ताक़त पैदा हो जाती है कि हकीमों और डाक्टरों ने कभी इसको सोचा भी नहीं होगा। इस लिए मुसलमानों को चाहिये कि इस अज़ीम और मुफ़ीद ग़िज़ा को कभी कभी खुद भी खाते और मरीज़ों और ग़मज़दों को भी खिलाते रहें। चूँकि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की महबूब व मरग़ूब ग़िज़ा है जिसको आपने अपने घर के मरीज़ों को बारहा बतौर दवा के इस्तेमाल कराया है। लिहाज़ा जो मुसलमान तिब्बे नबवी के इस नुस्खे को बतौरे दवा या गिज़ा इस्तेमाल करेगा वह इन्शा अल्लाह तआला एक सुन्नत पर अमल करने की वजह से अजरे अज़ीम भी पायेगा। और उसके फ़वाइद व मुनाफ़ेअ से भी इन्शा अल्लाह तआला ज़रुर फ़ैज़ याब होगा।

खुराक में सादगी

हदीस 1 :— हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि न नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ख़्वान पर खाया न छोटी छोटी प्यालियों में खाया न आपने कभी चपाती खायी। कुछ लोगों ने हज़रत कतादा से पूछा कि (दौरे रिसालात में) लोग किस चीज़ पर खाते थे ? तो आपने कहा कि चमड़े या कपड़े के दस्तरख़्वान पर। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़्हा 363)

हदीस 2 :— हज़रत सहल बिन सअ्द रदियल्लाहु तआला अन्हु ने कहा कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी बेअ्सत से अपनी वफ़ात तक कभी मैदा नहीं देखा। और अपनी बेअ्सत से अपनी वफ़ात तक छलनी नहीं देखी। तो किसी ने कहा कि आप लोग जौ का आटा बग़ैर छलनी में छना हुआ कैसे खाते थे? तो हज़रत सहल बिन सअ्द रदियल्लाहु तआला अन्हु ने फ़रमाया कि हम जौ को चक्की में पीस लेते थे फिर उस पर फूँक मारा करते थे तो जो फूँसियाँ उड़ने वाली हुआ करती थीं वह उड़ जाती थीं। और जो बाक़ी रह जाती थीं हम उसको गूँध कर और पका कर खा लिया करते थे।

हज़रत सहल बिन सअ्द :— हदीस के रावी हज़रत सहल बिन सअ्द रदियल्लाहु तआला अन्हु अन्सार के क़बीला बनी सअ्द से ख़ानदानी

तअ़ल्लुक रखते थे। उनकी कुन्नियत अबुल अ़ब्बास है। पहले इनका नाम हज़न था। जिसको बदल कर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इनका नाम सहल रख दिया था। वफ़ाते नबवी के वक़्त इनकी उम्र पन्द्रह बरस की थी। 91 हिजरी में मदीना मुनव्वरा के अन्दर इनकी वफ़ात हुई। इनके बाद मदीना मुनव्वरा में कोई सह़ाबी बाक़ी न रहा। इमाम ज़हरी और इमाम अबू हाज़िम इनके शागिर्दों की फेहरिस्त में बहुत मशहूर और नामवर हैं। इनके फ़रज़न्द अ़ब्बास भी उन शागिर्दों में हैं।

शरहे हदीस :– ज़माना–ए–रिसालत में सह़ाबा किराम और खुद रहमते आलम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम खुराक व पोशाक वग़ैरह के मामले में बहुत ही सादगी पसन्द थे। और इन पाक नुफ़ूस की मुक़द्दस ज़िन्दगी मालदारों और दुनिया दारों के तकल्लुफ़ात और इसराफ़ की आलाइशों से कभी दाग़दार नहीं हुआ करती थी। चुनाँचे हुज़ूरे अक्रम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने कभी बारीक आटे और मैदा का इस्तेमाल तो बड़ी चीज़ है। आपने अपनी ह़याते मुक़द्दसा में कभी मैदा देखा तक नहीं। हमेशा जौ का आटा बिग़ैर छलनी में छाने हुए उसकी मोटी मोटी रोटियाँ तनावुल फ़रमाते रहे। ह़ज़रत सहल बिन सअ़द स़ह़ाबी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि आटे को छान कर उसकी रोटी पकवाना तो कुजा ? हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वस़ल्लम ने तो अपनी ज़िन्दगी भर में कभी छलनी देखी ही नहीं। क्योंकि उस मुबारक ज़माने का आम तौर पर यही दस्तूर था कि जौ के आटे पर फूँक मार मार कर बड़ी बड़ी फूँसियों को उड़ा दिया करते थे। फिर उस आटे की मोटी मोटी रोटियाँ पकवा कर खा लिया करते थे। ह़ज़रत अनस सह़ाबी का बयान है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अपनी ह़याते मुबारका में कभी भी चपाती नही खायीं। और खाने पीने में भी यह स़ादगी कि न कभी सीनी को टेबिल पर रख कर खाना खाते न प्यालों और प्यालियों में सालन रख कर तनावुल फ़रमाते बल्कि चमड़े या कपड़े का दस्तरख़्वान ज़मीन पर बिछा कर उसके ऊपर खाना रख कर खा लिया करते थे। (मिशकात जि2 स364)

पतली पतली चपातियाँ,पराठे, रोग़िनी नान,शीर माल, बाक़र ख़ानियाँ पाउ रोटियाँ वग़ैरह और गोश्त वग़ैरह के क़िस्म क़िस्म के पकवान यह सब हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के बाद की पुर तकल्लुफ़ ईजादात

हैं। जो ऐश पसंन्द मालदारों और इसराफ़ परस्त दुनियादारों ने अपने काम व दहन की लज़्ज़तों और ज़बान के चटख़ारों के लिए तैयार किये हैं। वरना हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुक़द्दस दौर में जौ के बे छने हुए आटे, मोटी मोटी रोटियाँ और उबले हुए गोश्त यह आम तौर पर उस ज़माने की बेहतरीन ग़िज़ा और ख़ुराक थी। मुर्ग या बकरी को मुसल्लम तन्दूर में भून कर निहायत पुर तकल्लुफ़ मसालों और घी चर्बी वग़ैरह से मुरग़्ग़न बना कर खाना। इसका रिवाज हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम के मुक़द्दस दौर में बिल्कुल था ही नहीं।

यह और बात है कि नफ़ीस ग़िज़ाओं और उम्दा उम्दा खानों को हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने न मना फ़रमाया है, न यह इस्लाम में नाजाइज़ है। बल्कि माले ह़लाल से नेक नीयती के साथ उ़म्दा से उ़म्दा खाना और नफ़ीस से नफ़ीस तर ग़िज़ा और ख़ुराक हर मुसलमान के लिए मुबाह़ व जाइज़ है। मगर फिर भी मुसलमान को यह ध्यान रखना चाहिये कि स़हाबा किराम और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की ख़ुराक व पोशाक और ग़िज़ाओं में कैसी सादगी थी। और आज हम लोगों की ग़िज़ाओं में कितने तकल्लुफ़ात हैं कि कई क़िस्मों के सालन हमारे दस्तरख़्वान पर होते हैं फिर भी हम नाक भौं सिकोड़ते रहते हैं कि फलाँ सालन मज़ेदार नहीं हुआ। फलाँ पकवान फीका रह गया। क़ोरमे में घी कम रहा वग़ैरह वग़ैरह। हमें ग़ौर करना चहिये कि हमारे असलाफ़ कैसे थे और हम क्या हो गये हैं ? काश हम मुसलमान अपनी ग़िज़ाओं में कुछ सादगी बरत कर अपने मुफ़लिस और ग़रीब पड़ोसियों की ख़बर गीरी करते तो हमारा मुआ़शरा कितना बेहतरीन हो जाता। लेकिन ख़ुद ग़र्ज़ और नफ़्स परवर मुसलमानों से भला इसकी क्या उम्मीद की जा सकती है? अफसोस ! ऐ बसा आरज़ू कि ख़ाक शुदा। मौला तआ़ला नेक हिदायत फ़रमाये। आमीन।

खाने के बाद उँगलियों और बर्तन को चाटना

हदीस् :– हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उँगलियों और रकाबी को चाट लेने का हुक्म फ़रमाया है। और फ़रमाया है कि तुम लोग नहीं जानते कि खाने के कौन से हिस्से में बरकत है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह :– यह मशहूर सहाबी हैं इनकी कुन्नियत अबू अब्दुल्लाह है और यह अन्सारी हैं इनसे बकस्रत हदीसें मरवी हैं। यह जंगे बदर और इसके बाद की इस्लामी लड़ाईयों में शरीके जिहाद रहे। अठारह जंगो में बड़े जोश और जवाँ मर्दी के साथ कुफ़्फ़ार से लड़ते रहे। शाम व मिश्र की लड़ाईयों में भी मुजाहिदीन के साथ शामिल रहे। आख़िर उम्र में ना बीना हो गये थे। 74 हिजरी में मदीना मुनव्वरा के अन्दर चौरानवे बरस की उम्र पाकर विसाल फ़रमाया आपके शगिर्दो की फेहरिस्त बहुत तवील है।

शरहे हदीस् :– इस मज़मून की दूसरी हदीसें भी हैं। चुनाँचे हज़रत कअ्ब बिन मालिक रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तीन उँगलियों से खाना तनावुल फरमाते थे और उँगलियों को पोंछने से पहले चाट लिया करते थे।

और हज़रत इब्ने अब्बास रदियल्लाहु तआला अन्हु की रिवायत में है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम खाना खाओ तो अपने हाथ को उस वक़्त तक न पोंछा करो जब तक कि अपनी उँगलियो को या तो खुद चाट लो या किसी दूसरे को चटा दो।

और हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआला अन्हु की दूसरी रिवायत में यूँ भी वारिद हुआ है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया है कि –

"तुम लोग खाने के लिए बैठते हो तो उस वक़्त शैतान वहाँ हाज़िर हो जाता है तो अगर तुम्हारा कोई लुकमा हाथ से छूट कर गिर पड़े तो उसको उठाकर और साफ करके खा लिया करो। और उस लुकमे को शैतान के लिए न छोड़ दिया करो। और जब तुम खाने से फ़ारिग़ हो चुको

तो अपनी उँगलियों को चाट लिया करो। इस लिए कि तुम को मालूम नहीं के खाने के कौन से हिस्से में बरकत है।"

फ़वाइद व मसाइल :– मज़कूरा बाला ह़दीसों से चन्द मसाइल मालूम हुए जिन पर अ़मल करना बाइसे अजरो सवाब और सआ़दते दारैन का ज़रिआ़ है।

1– तीन उँगलियों से छोटे छोटे लुकमे उठाकर खाना सुन्नत है। खाने में पाँचों उँगलियों और हथेली को आलूदा करलेना ख़िलाफ़े सुन्नत और ख़िलाफ़े तहज़ीब है। जो जाहिलों और गँवारों का तरीक़ा है।

2– खाने के बाद उँगलियों और बरतन को चाट चाट कर साफ़ कर डालना सुन्नत और बाइसे ख़ैरो बरकत है।

3– खाते वक़्त जो लुकमा गिर पड़े उसको साफ़ करके खा लेना सुन्नत है। गिरे हुए लुकमे को छोड़ देना अपने खाने में शैतान को हिस्से दार बनाना है। जो कोई मुसलमान पसन्द नहीं कर सकता।

4– अगर उँगलियों को खुद न चाटे बल्कि अपनी बीवी बच्चों या ख़ादिमों शागिर्दों और मुरीदों को चटा दे और उसको अक़ीदत के साथ तबर्रुक समझकर यह लोग चाट लें तो यह भी सुन्नत और मुबारक तरीक़ा है।

वाज़ेह रहे कि आजकल मग़रबी तहज़ीब के शैदाई लोग बरतन और उँगलियों के चाटने को बद तहज़ीबी समझते हैं और इस सुन्नते मुबारका पर अ़मल करने वालों का मज़ाक उड़ाते और तहकीर करते हैं। यह उन लोगों की सबसे बड़ी बद तहज़ीबी है कि एक सुन्नत को वह ख़िलाफ़े तहज़ीब बताते हैं। जो उनकी जिहालत और गुमराही का एक गन्दा और घिनौना निशान है। मुसलमानों को हरगिज़ इससे मुताअस्सिर होकर शरमाना नहीं चाहिये बल्कि अलल ऐलान दस्तरख़्वान पर उँगलियों और बरतन को चाट कर अपने प्यारे नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत अदा करनी चाहिये। और इस सुन्नत का मज़ाक उड़ाने वालों को अपने क़ौल व अमल से दन्दान शिकन जवाब देना चाहिये। और इस मसअला की हमेशा तबलीग़ व तलकीन करते रहना चाहिये कि किसी सुन्नत को तहक़ीर समझकर उस का मज़ाक उड़ाना या उससे नफ़रत करना कुफ्र है।(मआज़ल्लाह मिन्हु) वल्लाहु तआ़ला अअ़्लम।

जौ की रोटी और खजूर का सालन

हदीस :– हज़रत यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु तआला अन्हुमा से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को देखा कि आपने जौ की रोटी का एक टुकड़ा लिया और उस पर एक खजूर रख कर फ़रमाया कि यह खजूर इस रोटी का सालन है फिर आपने उसे खा लिया।

हज़रत यूसुफ़ बिन अब्दुल्लाह :– यह मशहूर सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम रदियल्लाहु तआला अन्हु के फ़रज़न्द हैं और यह खुद भी सहाबी हैं। जब यह मदीना मुनव्वरा में पैदा हुए तो लोगों ने इनको हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किया तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इनको अपनी गोद में बिठा लिया और शफ़कत से हाथ फिरा कर यूसुफ़ नाम रखा। और इनके लिए दुआ फ़रमायी। इनकी कुन्नियत अबू याकूब है यह ख़ानदान बनी इस्राईल यानी हज़रत यूसुफ़ बिन याकूब अलैहिमस्सलाम की औलाद में से हैं।

शरहे हदीस :– दूसरी बहुत सी हदीसों की तरह यह हदीस भी खुराक के मामले में हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सादगी की रौशन दलील है कि हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जौ की रोटी कभी सिरका के साथ कभी ज़ैतून के तेल के साथ कभी उबले हुए गोश्त से, कभी खजूर से तनावल फ़रमा लिया करते थे। और आप कभी लज़ीज़ और पुरतकल्लुफ़ खानों या सालनों की फ़रमाइश या ख़्वाहिश नहीं फ़रमाते थे। बहर हाल खजूर से रोटी खाना शंहशाहे कौनैन सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुन्नत है।

मुसलमानों को चाहिये कि ज़िन्दगी भर में कभी कभी इस सुन्नत पर भी अमल करके अदाऐ सुन्नत का अजरे अज़ीम हासिल करें कि छोटी से छोटी सुन्नतों पर भी अमल करना बड़े से बड़े सवाब और ख़ैर व बरकत और सआदते दारैन हासिल करने का बेहतरीन ज़रीआ है। और अगर मुसलमान ग़िज़ाओं और सालनों में सादगी की सुन्नत पर अमल पैरा हो जाऐं और भूक से कम खाने लगें तो अदाऐ सुन्नत के अलावा बहुत से अमराज़ और तरह तरह की बीमारियों से भी महफ़ूज़ रहेंगे।

मनक़ूल है कि हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर स़हाबी रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु की ख़िदमत में एक तबीब ने जवारिश पेश की तो फ़रमाया कि मुझे इसकी ज़रुरत ही नहीं है। क्योंकि मैं कभी पेट भर कर खाना खाता ही नहीं। ज़ाहिर है कि खाना जितना ही लज़ीज़ और पुर तकल्लुफ़ होगा आदमी ज़्यादा से ज़्यादा खा जायेगा। और ज़्यादा खाना बिला शुबा बीमारियों की मोहलक रेलगाड़ी का सिगनल बल्कि हरी झण्डी है। और कम खाना दर हक़ीक़त तन्दरुस्ती और सेहत का साइन बोर्ड है। अब तुम फ़ैसला कर लो कि सादी ग़िजाएं अच्छी हैं या पुर तकल्लुफ़ लज़ीज़ खाने ? लज़ीज़ और उ़म्दा उ़म्दा ग़िज़ाओं का खाना यक़ीनन मुबाह और जाइज़ है और हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम ने कभी इसको मना नहीं फ़रमाया है। मगर ईमान रखो के एक मोमिन के लिए सुन्नत पर अ़मल करने से बेहतर कोई दूसरा तरीक़ा ही नहीं हो सकता।

खजूर के साथ तरबूज और ककड़ी खाना

हदीस 1 :– ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम को ताज़ा खजूर ककड़ी के साथ खाते हुए देखा है।

हदीस 2 :– ह़ज़रत आ़यशा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से मरवी है कि नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम तरबूज़ को ताज़ा खजूर के साथ खाते थे।

इस ह़दीस को तिरमिज़ी ने रिवायत किया है। और अबू दाऊद ने इतना ज़्यादा और बयान किया है कि इसकी गर्मी उसकी ठन्डक को तोड़ देगी। (मिश्कात जि2 स367)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र :– यह ह़ज़रत अ़ली इब्ने अबी त़ालिब रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हु के भतीजे हैं जब इनके वालिद ह़ज़रत जाफ़र और इनकी वालिदा हज़रत असमा बिन्ते उमैस दोनों हिजरत करके मक्का मुकर्रमा से हबशा चले गये तो मुहाजरीने हबशा में सबसे पहले जो बच्चा ह़बशा में पैदा हुआ वह यही ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र हैं। यह बहुत सख़ी बेहद ह़लीम और बहुत ज़्यादा परहेज़गार सहाबी हैं। साथ ही अपनी ख़ुश मिज़ाजी में तो आप अपना जवाब नहीं रखते थे। और इनकी सख़ावत का तो यह आ़लम था कि लोग आ़म तौर पर इनको बहरुल जूद

यानी सख़ावत का समन्दर कहते थे। बल्कि यह मशहूर था कि मुसलमानों में इनके ज़माने के अन्दर इनसे बड़ा सख़ी पैदा नहीं हुआ। मदीना मुनव्वरा के अन्दर 80 हिजरी में नव्वे साल की उम्र पाकर वफ़ात पायी।

तबसरा :- मज़्कूरा बाला दोनो ह़दीसों का ह़ासिल यह है कि ककड़ी और तरबूज़ दोनों को यह शरफ़ ह़ासिल है कि हुज़ूरे अकरम स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने इन दोनों को खजूरों के साथ खाया है। और इसकी हि़कमत यह बयान फ़रमायी है कि खजूर की गर्मी तरबूज़ की ठन्डक को तोड़ देगी। और तरबूज़ की ठन्डक खजूर की गर्मी को तोड़ देगी। खजूर और तरबूज़ दोनों मोअ़्तदिल ग़िज़ा बन जायेंगी। और इनमें से कोई नुकसान नहीं पहुँचाएगी।

इस हदीस से मालूम हुआ कि गर्म ग़िज़ाओं के साथ कोई ठन्डी ग़िज़ा खाकर और ठन्डी ग़िज़ाओं के साथ कोई गर्म ग़िज़ा खाकर दोनों ग़िज़ाओं को मोअ़्तदिल बना लेना यह तिब्बे नबवी का वह तीरें बहदफ़ नुस्ख़ा है जो वह़ी इलाही के ज़रीअ़े मालूम हुआ है।

बहर हाल मुसलमानों को चाहिये कि इन दोनों को मसनून ग़िज़ाऐ समझकर ब नियते सवाब कभी कभी तरबूज़ और ककड़ी के साथ खजूरें खा लिया करें। कि अदाऐ सुन्नत के सवाबे अज़ीम से सरफ़राज़ होंगे। और ग़िज़ाए नबवी के समरात व बरकात से मुस्तफ़ीज़ होंगे। क्योंकि यह ईमान है कि हर सुन्नम पर अ़मल करना बेहतरीन इबादत और इन्तेहाई बाइसे ख़ैरोबरकत है। बहुत से बुर्ज़ुगाने दीन उल्माए मिल्लत व औलियाए उम्मत को इत्तिबाऐ सुन्नत की बदौलत बड़े बड़े दरजात व मरातिब की दौलत व करामत मिल गई है। जिनका मुक़द्दस तज़किरा बुज़ुर्गाने दीन की तारीख़ों में मज़कूर है।

ज़हर और जादू के ज़रर से हिफ़ाज़त

हदीस 1 :– हज़रत सअ्द रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से मरवी है इन्होंने कहा कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम से सुना है कि आप यह फ़रमा रहे थे कि जो शख़्स सुबह को सात अ़जवा खजूर खाले उसको ज़हर और जादू कोई नुक़सान नहीं पहुँचाएगा।

हदीस 2 :– हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मदीना की चढ़ाई वाली बस्तियों की अ़जवा खजूर में शिफ़ा है और बिला शुबा वह तिरयाक हैं अगर सुबह को खा ली जाऐं।

हज़रत सअ्द बिन अबी वक़्क़ास़ :– इस ह़दीस के रावी हज़रत सअ्द की कुन्नियत अबू इसहाक़ और इनके वालिद का नाम अबू वक़्क़ास है। यह इब्तिदाऐ इस्लाम ही में मुसलमान हो गये थे जबकि इनकी उम्र सत्तरह बरस की थी। यह उस ख़ुश नसीब दस सहाबा की फ़ेहरिस्त में हैं जो अ़श्रा मुबश्शिरा कहलाते हैं। कि इन दसों सहाबियों को एक मजलिस में एक साथ हुजूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने जन्नती होने की ख़ुशख़बरी सुनायी है। यह तमाम इस्लामी जिहादों में शरीक रहे और फ़ारस की जंगो में अफ़वाज के सिपह सालार होकर फ़ारस को फ़तह किया। हुजूर सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने इनके हक़ में यह दुआ फ़रमायी थी कि या अल्लाह अज़्ज़ावजल इनके निशाने को दुरुस्त फ़रमा दे। और इनकी दुआओं को मक़बूल फ़रमा। चुनाँचे यह मुस्तजाबुद दावात हुए कि इनकी दुआऐं ज़रुर मक़बूल हुआ करती थीं। और इनकी तीर अन्दाज़ी का निशाना कभी ख़ता नहीं करता था। बहुत ही जामेउल फ़ज़ाइल और साहिबे कमालात सहाबी हैं। यह अपने इस महल में जो मुक़ामे अतीक़ में था वफ़ात पा गये तो लोग इनके जनाज़े को अतीक़ से उठाकर मदीना मुनव्वरा लाए और जन्नतुल बक़ीअ् में सुपुर्दे ख़ाक किया। 55 हिजरी में वफ़ात पायी। और उ़म्र शरीफ़ सत्तर बरस से कुछ ज़ाइद हुई।

शरहे हदीस :– मज़कूरा बाला दोनों ह़दीसों का ह़ासिले मत़लब एक ही है कि अ़जवा खजूरों में ज़हरों और जादू के असरात से शिफ़ा है। और मदीना की चढ़ाई वाली बस्तियाँ जिनको आलिया कहते हैं वहाँ की

अजवा खजूरों में खुसूसियत से यह तासीर पायी जाती है। अजवा खजूर की यह तासीर या तो खुद उस खजूर की पैदाइशी खुदादाद तासीर है जैसा कि तमाम दवाओं में खुदा की पैदा की हुई तासीरात हैं। या अजवा खजूर में यह तासीर इसलिए पैदा होगई है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मदीना की खजूरों के हक़ में यह दुआ फ़रमा दी थी। और खुसूसियत के साथ मुक़ामे आलिया की अजवा खजूर के बारे में यह दुआ फ़रमा दी थी कि वह ज़हर और जादू के लिए तिरयाक़ बन जाए। इस दुआऐ नबवी की बदौलत अजवा खजूर में यह तासीर पैदा हो गई है।

हज़रत इमाम नवादी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि मदीना की खजूरों और ख़ास कर अजवा के बारे में जो खुसूसी तासीरात ज़िक्र की गई हैं उनकी हकीक़तों का इल्म अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सिवा किसी को भी नहीं है। लिहाज़ा इन पर ईमान रखना लाज़िमुल ईमान व वाजिबुल अमल है। जैसे नमाज़ की रकअतों की तादाद पर ईमान रखना ज़रुरी है। मगर इसकी हिकमतों को अल्लाह अज़्ज़ावजल और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सिवा कोई नहीं जानता। मसलन मग़रिब का फर्ज़ तीन रकअत और इशा का फ़र्ज़ चार रकअत क्यों है ? हमारे लिए ज़रुरी है कि हम ईमान रखें कि मग़रिब का फ़र्ज़ तीन रक़अत और इशा के फ़र्ज़ चार रकअत हैं। बाकी इसकी हिकमत क्या है ? हमारे लिए इसमें चूँ चरा यानी क्यों और क्योंकर जाइज़ नहीं है। इसी तरह हमको यह ईमान रखना ज़रुरी है कि अजवा खजूर सुबह को खा लेने से जादू और ज़हर का ज़रर नहीं होगा। बाकी ऐसा क्यों और किस वजह से है इसका इल्म अल्लाह अज़्ज़ावजल व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के सुपुर्द करना चाहिये।

अजवा खजूर :– मदीना मुनव्वरा की एक ख़ास और बेहतरीन खजूर है जिसके दाने आम खजूरों से कुछ छोटे और रंग बिल्कुल सियाह होता है। खाने में बहुत शीरीं और लज़ीज़ होती हैं। मदीना मुनव्वरा में आम तौर से लोग इस खजूर को जानते और पहचानते हैं। लिहाज़ा हाजियों को चाहिये कि अहले मदीना से दरयाफ़्त करके अजवा खजूर ज़रुर अपने साथ लाया करें और अपने अहलो अयाल को खिला कर शिफ़ा और फ़ुयूज़ो बरकात हासिल करें। कि इस खजूर की खुसूसियत के साथ हदीसों में

बहुत ज्यादा फ़ज़ीलत बयान की गई है उल्माए किराम को ख़ास तौर पर इस का ध्यान रखना चाहिये कि वह खुद भी इस तारीख़ी और करामाती खजूर को साथ लायें और अवाम में भी इसकी तबलीग़ व तलक़ीन करते रहें। कि वह बेचारे अपनी ला इल्मी की वजह से इस नेमत से महरुम रहते हैं हालाँकि मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का तकाज़ा है कि मुसलमान इस मसनून व महबूब फल से मुहब्बत व रग़बत रखें और इस बेहतरीन और पसन्दीदा खजूर को खा खिलाकर फैज़ व बरकत हासिल करते रहें।

मुज़िर ग़िज़ाओं से परहेज़

हदीस :– हज़रत उम्मे मुन्ज़र रदियल्लाहु तआला अन्हा कहती हैं कि मेरे यहाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाये और आपके साथ हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु भी थे। और हमारे यहाँ खजूरों के ख़ोशे लटक रहे थे तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उन खजूरों को खाने लगे और हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु भी हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ खाने लगे तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "उँह"ऐ अली ! तुम इसको न खाओ क्योंकि तुम बीमारी से उठे हो और अभी तुमको नक़ाहत है। हज़रत उम्मे मुन्ज़िर कहती हैं कि इसके बाद मैंने उन हज़रात के लिए जौ और चुकन्दर डाल कर खाना पकाया तो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ अली तुम इसको खाओ इस लिए कि यह तुम्हारे लिए बहुत ज़्याद मवाफ़िक है। (मिशकात जि 2 स366)

फ़वाइद व मसाइल :– हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु को खजूरें खाने से मना फ़रमाया और चुकन्दर और जौ की खिचड़ी खाने का हुक्म फ़रमाया। क्योंकि हज़रत अली रदियल्लाहु तआला अन्हु बीमारी से शिफ़ायाब हुए थे। लेकिन अभी नक़ाहत बाक़ी थी। तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने उन्हें खजूर जैसी सक़ील और देर हज़म ग़िज़ा से परहेज़ का हुक्म दिया। और जौ की खिचड़ी जो सरीउल हज़्म और बे ज़रर ग़िज़ा है उसको खाने का हुक्म दिया। हुजूर रहमतुल लिलआलमीन सल्लल्लाहु तआला अलैहि

वसल्लम के इस इरशादे नबवी से यह मसअ्‌ला वाज़ेह हो गया कि मरीज़ों और कमज़ोर लोगों को मुज़िर गिज़ाओं से परहेज़ करना यह तालीमे नुबुव्वत का वह अनमोल इरशादे गिरामी है जिसकी अहमियत व इफ़ादियत से दुनिया का कोई भी आकि़ल रुगरदानी नहीं कर सकता। यही वजह है कि दुनिया का हर तबीब और डाक्टर मरीज़ों को मुज़िर गिज़ाओं से परहेज़ कराता है। यहाँ तक बाज़ अतिब्बा का मकूला है कि " अल्हमयतो रासुद्‌दवाए" यानी परहेज़ तमाम दवाओं का सरदार है। ख़ूब समझ लो कि जो मरीज़ मुज़िर गिज़ाओं से परहेज़ नहीं करते और अपने जज़्बए हिर्स से मग़लूब होकर हर मुज़िर और मुफ़ीद गिज़ाओं पर हाथ मारते रहते हैं वह लोग न सिर्फ़ अपनी सेहत को बरबाद करते हैं बल्कि इरशादे नबुव्वत से मुँह मोड़कर फ़रमाने नबुव्वत पर अमल नहीं करते। और तर्के सुन्नत क वबाल में भी मुब्तिला हुआ करते हैं इस बात पर ईमान रखना लाज़िमुल ईमान है कि हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम रुहानी व जिस्मानी इलाजों के तबीबे आज़म हैं। लिहाज़ा आपके फ़रमाने नुबुव्वत पर अमल करना रुहानी व जिसमानी अमराज़ से सेहत व शिफ़ा याबी के लिए अकसीरे आज़म व तिरयाके अकबर है ख़ुदावन्दे करीम हम सब मुसलमानों को फ़रमाने नबुव्वत पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।(आमीन)

मक्खन के साथ खजूर खाना

हदीस :— हज़रत बसर सलमा के दोनों बेटों का बयान है कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम हमारे यहाँ तशरीफ़ लाऐ तो हम लोगों ने आपके सामने मक्खन और खजूर पेश किया। और हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम मक्खन और खजूर को पसन्द फ़रमाते थे।

तबसरा :— मक्खन के साथ ख़जूर खाना हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की महबूब व पसन्दीदा गिज़ा है इस लिए अदाऐ सुन्नत की नियत से जिसको यह दोनों चीज़े मयस्सर हों कभी कभी खा लेना बाअ़िसे ख़ैरो बरकत और मोजिबे अजरो सवाब है। क्योंकि एक मुसलमान के ईमान का तकाज़ा है कि वह हर उस चीज़ से मुहब्बत व रुग़बत रखे जो हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम को महबूब व मरग़ूब थी। हज़राते स़हाबा किराम रिज़वानुल्लाहे तआ़ला अ़लैहिम अजमाईन और हज़रात

तबेअ़ ताबेअ़ीन व उल्माऐ दीन व औलियाऐ कामेलीन का हमेशा से यही अमल और तरीक़ा कार रहा है जो बिला शुबाह बहुत ही अहसन व मुस्तहब व मुस्तहसन तरीक़ा है। अल्लाह तआ़ला हर मुसलमान को इसकी तौफ़ीक बख़्शे।

तिब और डाक्टरी उसूल से भी खजूर को मक्खन के साथ खाना निहायत ही मुक़व्वी ग़िज़ा और बेहतरीन जनरल टॉनिक है।

प्याज़ पका कर खाना सुन्नत है

हदीस :– हज़रत अबू ज़ियाद रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि किसी ने हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हा से प्याज़ के बारे में सवाल किया तो उन्होंने फ़रमाया कि आख़िरी खाना जो हुज़ूर सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने खाया उसमें प्याज़ पड़ी हुई थी। (मिश्कात जिल्द 2 सफ़ा 267)

तबसरा :– कच्चा लहसुन और कच्ची प्याज़ चूँकि बदबूदार होती है इस लिए हदीसों में इसके खाने की मुमानअ़त फ़रमायी है और हुज़ूर अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि –

" जो शख़्स कच्चा लहसुन और कच्ची प्याज़ खाये हुए हो उसको उस वक़्त तक मस्जिद में नहीं आना चाहिये जब तक उसकी बदबू जाइल ना हो जाए। और अगर उसको खाना ही हो तो उसको पका कर मार डालना चाहिये। यानी उसकी बदबू ख़त्म कर देनी चाहिये। (मिश्कात जि1 स70)

बहर हाल कच्चा लहसुन और कच्ची प्याज़ खाकर जब तक बू बाक़ी रहे मस्जिद में जाने की मुमानअ़त है मगर प्याज़ का पका कर खाना यह बिला कराहत जाइज़ बल्कि सुन्नत है।

बासी पानी और मीठा शर्बत

हदीस 1 :– हज़रत जाबिर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु रावी हैं कि नबीए करीम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम अपने एक सहाबी के साथ एक अन्सारी के पास तशरीफ़ ले गये और सलाम किया तो उसने सलाम का जवाब दिया। और वह अपने बाग़ मे पानी चला रहा था। तो नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर तुम्हारे पास पुरानी मशक में बासी पानी हो तो हमें पिला दो वरना फिर हम बाग़ की नाली से चुल्लू में लेकर पानी पी लेगें। तो उस अन्सारी ने अर्ज़ किया कि मेरे पास पुरानी

मशक में बासी पानी है। और वह छप्पर की तरफ़ चल पड़ा। फिर एक प्याले में पानी उंडेल कर उसमें बकरी का दूध दूह लिया। तो नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने नोश फ़रमाया। फिर अन्सारी ने दोबारा प्याला भर कर दिया तो हुजूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ सहाबी ने पिया। (मिश्कात जि2 स370)

हदीस 2 :– हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को तमाम पीने की चीज़ों में मीठा ठन्डा शर्बत बहुत पसन्द था।

तबसरा :– हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम दूध, खजूर का शर्बत और दूसरी पीने की चीज़े मसलन शहद और शहद का शर्बत नोश फ़रमाया करते थे। मगर शींरीं और ठन्डा पानी इन सब चीज़ों से ज़्यादा आपको महबूब व मरगूब था। यहाँ तक कि बीबी आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा बयान करती है कि नबी सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के पीने के लिए हज़राते सहाबा किराम मुक़ामे सक़या से मीठा पानी लाया करते थे। हालाँकि मुक़ामे सक़या का मदीना मुनव्वरा से इतना फ़ासिला है कि दो दिन में आदमी वहाँ पहुँचता था मगर चूँकि वहाँ के चश्में का पानी निहायत शींरीं, बहुत लज़ीज़ और ठन्डा होता था इसलिए हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम उसको बहुत पसन्द फ़रमाते थे। और उश्शाके नबवी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की ख़ातिरदारी और दिल जोई के लिए तवील सफ़र की मशक्कत बरदाश्त करके वहाँ से पानी लाया करते थे। हज़रत इमाम अल्लामा सियूती रहमतुल्लाह अलैहि का बयान है कि सक़या मक्का मोअज़्ज़मा और मदीना मुनव्वरा के दरमियान एक बहुत बड़ी बस्ती का नाम है। (मिशकात जिल्द 2 स371)

ग़म दूर करने वाला खाना

हदीस :– हज़रत आयशा रदियल्लाहु तआला अन्हा कहती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि "तलबीना" मरीज़ के दिल को तस्कीन व राहत पहुँचाने वाला है और यह बाज़ ग़मों को भी दूर करता है।

तलबीना :– यह एक किस्म का हरीरा है जौ का आटा दूध और शहद मिला कर बनाया जाता है। और इतना पतला पकाया जाता है कि उसका घूँट घूँट करके पी सकें। मरीज़ों के लिए यह बहुत ही बे ज़रर और निहायत ही लतीफ़ व मुस्किन गिज़ा है। चूँकि यह दवा ख़ाना नुबुव्वत का पैग़म्बरी नुस्ख़ा है जो बज़रिया वह़ी हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को मिला है इस लिए हर मोमिन को इस पर ईमाने कामिल और ऐतिकादे रासिख़ रखना लाज़िम है। कि यक़ीनन बिला शुबाह यह गिज़ा मरीज़ों के लिए तस्कीन बख़्श और रंज व ग़म दूर करने वाली है। और ईमान व ऐतिक़ाद के इस्लामी जज़्बे के साथ मरीज़ों को यह गिज़ा देनी चाहिये कि यक़ीनन इसमें ख़ैरो बरकत और फ़वाइद व मुनाफ़ेअ् के साथ अदाऐ सुन्नत की नियत से अजरो सवाब भी मिलेगा।

हर लुक़्मा और हर घूँट पर ह़म्दे इलाही

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला उस बन्दे से यक़ीनन खुश होता है जो एक लुक़मा खाये तो उसकी ह़म्द करे या एक घूँट पिये तो उसकी ह़म्द करे। (मिश्कात जि 2 स365)

तबसरा :– खाते वक़्त हर लुक़्मे पर अल्ह़मदो लिल्लाह कहकर खुदा का शुक्र अदा करना और पीने के वक़्त अल्ह़मदो लिल्लाह कहकर खुदा का शुक्र अदा करना इतनी बड़ी और बेहतरीन इबादत है कि खुदावन्दे करीम उस बन्दे से यक़ीनन खुश हो जाता है।

वाज़ेह रहे कि हर इबादत का मक़सदे आला खुदावन्दे कुद्दूस की रज़ा और उसकी खुशनूदी ही है। इससे बढ़ कर किसी बन्दे की खुश नसीबी और क्या होगी?कि खाना खाने और पानी पीने ही में उससे

ख़ुदावन्दे करीम ख़ुश हो जाये। काश हर मुसलमान को इस ह़दीस पर अ़मल करने की तौफ़ीक़ हो जाय।

खाने के आदाब में यह भी ख़ास तौर से सुन्नत है कि बिस्मिल्लाह पढ़ कर खाना शुरु करे और दाहिने हाथ से खाये। और बरतन में से अपनी ही तरफ़ से खाये। पूरे बरतन में इधर–उधर से हाथ न डाले। और हर लुक़्मे पर न हो सके तो खाना खाकर आख़िर में अल्हमदो लिल्लाह पढ़कर ख़ुदावन्दे करीम का शुक्र अदा करे। जब भी सुन्नत अदा हो जायेगी।

मुसलमानों से मुहब्बत करने वाला पहाड़

हदीस :– हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु का बयान है कि जंगे ख़ैबर से वापस आते हुए जब मदीना मुनव्वरा के क़रीब आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने ओहद पहाड़ को देखा तो उसकी तरफ़ इशारा करके इरशाद फ़रमाया कि यह ऐसा पहाड़ है जो हम लोगो से मुहब्बत करता है और हम लोग इससे मुहब्बत करते हैं। (बुख़ारी जि 1 स404)

तबसरा :– हदीसों से साबित है कि बाज़ बाज़ नबातात व जमादात में भी अल्लाह तआला मुहब्बत या अदावत का जज़्बा पैदा फ़रमा देता है। चुनाँचे बाज़ दरख़्त हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इशारे पर चल कर आये। बाज़ दरख़्तों ने सहाबा किराम व बुजुर्गाने दीन को फल दिया। बाज़ दरख़्तों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम पर झुक कर साया किया। इसी तरह बाज़ पत्थरों ने हुज़ूर अलैहिस्सलातो वस्सलाम को सलाम किया। बाज़ पहाड़ आपको अपनी चोटी पर क़दम रखते हुए देख कर खुशी से झूम उठे। बाज़ पहाड़ों ने मुजाहिदीन को पनाह दी। दरख़्त ग़रक़द के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह यहूदियों से मुहब्बत रखने वाला दरख़्त है। बहुत से पत्थर यहूदियों के दुश्मन हैं। चुनाँचे बुख़ारी शरीफ़ की हदीस है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के नुज़ूल के वक़्त जबकि मुजाहिदीने इस्लाम की यहूदियों से जंग होगी तो बाज़ पत्थर आवाज़ देगें कि ऐ मुजाहिदीन! मेरे पीछे एक यहूदी छुपा हुआ है तुम इसको क़त्ल कर दो। (बुख़ारी जि1स410)

इसकी बहुत सी मिसालें हैं कि मलाइका और इन्सानों और जिनों और हैवानों के अलावा नबातात व जमादात भी मुहब्बत व अदावत का जज़्बा रखते हैं। इसी बुनियाद पर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने हदीसे मज़कूरा में इरशाद फ़रमाया कि " ओहद एक ऐसा पहाड़ है जो हम मुसलमानों से मुहब्बत रखता है और हम मुसलमान उससे मुहब्बत रखते हैं।"

ओहद :– मदीना मुनव्वरा से तीन मील जानिबे शुमाल एक पहाड़ है। इस पहाड़ के बारे में यह खुसूसियत है कि यह पहाड़ मुसलमानों से मुहब्बत करता है और मुसलमान इससे मुहब्बत करते हैं। दूसरे किसी पहाड़ के बारे में यह मरवी नहीं है। लिहाज़ा इस खुसूसी हैसियत से यह पहाड़

फ़ज़लो शरफ़ में तमाम पहाड़ों से एक ख़ास इम्तियाज़ रखता है इसलिए मुस्तहब है कि मदीना तय्यबा की हाज़िरी के वक़्त ख़ुसूसियत के साथ इस पहाड़ की ज़ियारत को जायें। इसी पहाड़ के दामन में जंगे ओहद का मारका भी हुआ है। और वहीं शोहदाऐ ओहद के मुकद्दस मज़ारात भी हैं। इन सब जगहों पर ज़ियारत के लिए हाज़िरी देना फ़ातिहा ख़्वानी करना और दुआऐं माँगना मुस्तहब और बाइसे सवाब है।

हुजूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम की तलवार से अ़क़ीदत

हदीस :– हज़रत अली बिन हुसैन(ज़ैनुल आबेदीन) रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा जब यज़ीद के पास से रिहा होकर मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो हज़रत मसविर बिन मुख़्रमा सहाबी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि क्या आपको मुझसे कोई ज़रुरत है? तो इमाम ज़ैनुल आबेदीन ने फ़रमाया कि नहीं। हज़रत मसूर बिन मुख़्रमा ने कहा कि क्या आप मुझको रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम की तलवार अ़ता फ़रमा देंगे ? क्योंकि मुझे यह ख़ौफ़ है कि यज़ीदी लोग आप पर ग़ालिब होकर यह तलवार आप से छीन लेंगे। और मैं ख़ुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि अगर आपने मुझको यह तलवार अ़ता फ़रमादी तो कभी कोई भी इस तलवार तक नहीं पहुँच सकेगा। यहाँ तक कि मेरी जान चली जाए। (बुख़ारी जि 1 स 438)

हुजूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम के प्याले से मुहब्बत

हदीस :– हज़रत अनस बिन मालिक रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का बयान है कि हुजूरे अक़दस सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम का एक लकड़ी का प्याला जो मेरे पास था उसमें शिग़ाफ़ पड़ गया तो मैंने उसकी फटन को चाँदी की जंजीर से जकड़ कर बांध दिया। मशहूर हाफ़िज़े हदीस हज़रत आसिम अहवाल अ़लैहिर्रहमा का बयान है कि मैंने उस प्याले को देखा है और तबर्रुकन उसमें पानी भी पिया है। (बुख़ारी जिल्द 1 स 438)

तबसरा :– बुख़ारी शरीफ़ की इस हदीस से पता चलता है कि सहाबा किराम रदियल्लाहु तआला अन्हुम को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मुक़द्दस सामानों और आपके तबर्रुकात से किस दरजा वालेहाना मुहब्बत व उल्फ़त और किस क़दर आशिक़ाना अक़ीदत थी। और यह लोग इस तबर्रुकात की ताज़ीम व ऐहतिराम का किस तरह ऐहतिमाम किया करते थे। कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का प्याला जो लकड़ी का था उसमें शिगाफ़ पड़ गया तो तो हज़रत अनस रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उस को लोहे की कील या ताँबे पीतल वग़ैरह के तारों से जकड़ कर दुरुस्त कर लेना गवारा नहीं किया। बल्कि चाँदी की जंजीर से जकड़ कर उसकी फटन को बांध दिया। चाँदी की ज़ंजीर का प्याला में जकड़ना यह इस प्याले के ऐज़ाज़ व ऐहतराम का एक रौशन निशान है। फिर सहाबा किराम और ताबेईन और मशहूर मुहद्देसीन का तबर्रुकन इस प्याले में पानी पी लेना दलील है कि तबर्रुकाते नुबुव्वत से ख़ैरो बरकत हासिल करना यह हज़राते सहाबा किराम व ताबेईन व सालेहीन का हमेशा से दस्तूर व मामूल रहा है।

मश्क का मुँह काट कर रख लिया

हदीस :– हज़रत कबशा रदियल्लाहु तआला अन्हा कहती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मेरे पास तशरीफ़ लाये। और एक लटकी हुई मशक के मुँह से मुँह लगाकर पानी नोश फ़रमा लिया। तो मैंने मश्क का मुँह काट कर रख लिया।

तबसरा :– यह भी दौरे सहाबा में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुक़द्दस ज़ात के साथ मुसलमानों की वालेहाना अक़ीदत और आशिक़ाना मुहब्बत का एक नमूना है। मश्क के मुँह काट लेने की दो वजह थीं। 1. एक वजह यह थी कि चूँकि मश्क के मुँह को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने मुँह लगा दिया था। इस लिए हज़रते कबशा को यह गवारा नहीं था कि दूसरा कोई आदमी उस जगह मुँह लगाकर पानी पी ले। लिहाज़ा मश्क के उस हिस्से को उन्होंने काट लिया ताकि किसी दूसरे के इस जगह मुँह लगाने का इमकान ही न रहे। 2. दूसरी वजह यह थी कि चूँकि मश्क के मुँह को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने

मुँह लगा दिया। तो वह लबे पाक की बरकतों से मुतबर्रक हो गया। इसलिए हज़रत कबशा सहाबिया रदियल्लाहु तआला अन्हा ने उसको काट कर तबर्रुकन अपने पास रख लिया ताकि उसके घर में चमड़े का एक ऐसा बा बरकत टुकड़ा नसलन बादे नसलन मौजूद और बाइसे ख़ैरो बरकत रहे। जिसको हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक मरतबा दहने अक्दस और लबे अतहर लगाकर बरकतों का ख़ज़ाना बना दिया है। काश दौरे हाज़िर के मुसलमान सहाबा किराम के इस ईमान अफ़रोज़ अमल से हिदायत का नूर हासिल करके मुहब्बते रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की दौलते ला ज़वाल से माला माल होते।

हज़रत इब्ने उमर का कूफ़ियों पर गुस्सा

हदीस :– इब्ने अबी नेअ्म कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर सहाबी रदियल्लाहु तआला अन्हु के पास एक इराक़ (कूफ़ा) का रहने वाला आदमी आया और यह मसअ्ला पूछा कि एहराम की हालत में मक्खी का क़त्ल कर सकते हैं या नहीं?तो आप ने गुस्सा में भर कर फ़रमाया कि अहले इराक़(कूफ़ा वाले) आज मक्खी के क़त्ल का मसअला पूछ रहे हैं हालाँकि यही वह लोग हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के नवासे हज़रत इमाम हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हु को क़त्ल कर चुके हैं जिनके बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने यह इरशाद फ़रमाया है कि "यह दोनों(हज़रत इमाम हसन व हुसैन रदियल्लाहु तआला अन्हुमा) दुनिया में मेरे दो फूल हैं"।

तबसरा : – हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रदियल्लाहु तआला अन्हु का मतलब था कि आज कूफ़ी लोग अपने तक्वे का इस क़दर ढंढोरा मेरे आगे पीट रहे हैं के मक्खी के क़त्ल का मसअ्ला पूछने आये हैं। हालाँकि यह वह शक़ी व ज़ालिम लोग हैं जो करबला में फ़रज़न्दे रसूल सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम और ख़ानदाने नुबुव्वत के बहुत से शहज़ादों का गला काट चुके है। आप ने इन्तेहाई गज़बनाक होकर कूफ़ियों पर तन्ज़ करते हुए यह कलाम इरशाद फ़रमाया। क्योंकि करबला में होने वाले कूफ़ियों के मज़ालिम को सहाबा किराम उम्र भर नहीं भुला सकते थे। चुनाँचे यह हदीस दलील है कि शोहदए करबला रदियल्लाहु तआला अन्हुम की याद सहाबा

किराम के दिलों में तमाम उम्र बाक़ी रही और सहाबा किराम अपनी आख़िरी उम्र तक शोहदए करबला के मसाइब पर ग़म व गुस्सा का इज़हार इस तरह फ़रमाते रहे कि कूफ़ा वालों से नफ़रत व बे ज़ारी का ऐलान मजमअे आम में करते रहे और हज़रत इमाम हसन व इमाम हुसैन व अहले बैत के फ़ज़ाइल व मनाक़िब अलल ऐलान हज के मौसम में हिजाज के मजमअे में अ़ला रुऊसिल अशहाद ऐलानिया बयान फ़रमाते रहे। यह दलील है कि हज़राते सहाबा किराम रिद्वानुल्लाहि तआ़ला अ़लैहिम अजमईन को यक़ीनन बिला शुबाह अहले बैते नुबुव्वत से वालिहाना उल्फ़त व मुहब्बत रही। चुनाँचे सहाबा किराम की मुक़द्दस ज़िन्दगी की तारीख़ गवाह है कि शम्ऐ नुबुव्वत के परवाने यानी सहाबा किराम अहले बैते नुबुव्वत की उल्फ़त और उनकी ताज़ीम व तकरीम को लाज़िमुल ईमान व वाजिबु अमल समझते रहे और राफ़ज़ियों की इस बकवास की कोई दलील व सनद नहीं है। कि सहाबा किराम को अहले बैते नुबुव्वत से कोई मुहब्बत ही नहीं थी। अल अ़याज़ु बिल्लाहि तआ़ला।

अ़ब्दुद दीनार वद दिरहम

हदीस :– इब्ने अबी हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अन्हु से रिवायत है कि नबी स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया अब्दुद दीनार वद दिरहम(दीनार व दिरहम के बन्दे) और अ़ब्दुल ख़मीसता व अ़ब्दुल क़तीफता(कमली व चादर के बन्दे) का बुरा हाल हो कि अगर इसको दिया जाता है तो खुश रहता है और अगर उसको नहीं दिया जाता है तो नाराज़ हो जाता है। उसका बुरा हो। और वह अन्धा गिरे और अगर उसको काँटा चुभ जाये तो उसका काँटा निकालने वाला न हो।

तबसरा :– इस हदीस में माल व सामान के लालची मुसलमानों की मज़म्मत करते हुए हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम इन लोगों के लिए मुसीबत की दुआ़ फ़रमा रहे हैं। और इन माल के लालचियों के लिए हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने अ़ब्दुद दीनार वद दिरहम और अ़ब्दुल ख़मीसता वल क़तीफ़ता' फ़रमाया यानी यह लोग दीनार व दिरहम व कमली व चादर के बन्दे हैं। मतलब यह है कि यह लोग इन चीज़ों से इन्तेहाई मुहब्बत रखते हैं और इन चीज़ों के आ़शिक़ व लालची हैं।

2. इस हदीस में दीनार व दिरहम और कमली व चादर के लालची मुसलमान को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अब्दुद दीनार व दिरहम और अब्दुल ख़मीसता वल कतीफ़त यानी दीनार व दिरहम का बन्दा और कमली व चादर का बन्दा फ़रमाया।

इससे मालूम हुआ कि अब्द से मुराद यहाँ आशिक़ व लालची है अब्द से मुराद इबादत करने वाला या ममलूक हरगिज हरगिज नहीं है तो याद रखिये कि जिन मुसलमानों के नाम अब्दुल नबी या अब्दुल रसूल हैं इन नामों में भी अब्द के माने मुहिब व आशिक़ ही हैं और अब्दुल नबी व अब्दुल रसूल से मुराद यही है कि नबी व रसूल का आशिक। इस लिए इन नामों को शिर्क या गुनाह या ग़लत बताना सरासर ग़लत फ़हमी है। और अरबी के मुहावरात से जिहालत व ना वाक़िफ़ियत है। लिहाज़ा साबित हुआ कि अब्दुल नबी व अब्दुल रसूल नाम रखना शरअन जाइज़ व दुरुस्त है और हर गिज़ हरगिज़ इन नामों में कोई क़बाहत नहीं है। क्योंकि अब्द की इज़ाफ़त ग़ैरुल्लाह अज़्ज़वजल की तरफ़ बकसरत महफ़ूज़ है मसलन कुरआन मजीद में है कि वस्सॉलेहीन मिन इबादेकुम व इमाएकुम। और दौरे नुबुव्वत से आज तक बहुत से ऐसे नाम पाये जाते हैं जिन में अब्द की इज़ाफ़त अल्लाह अज़्ज़वजल के ग़ैर की तरफ़ हुई है। मसलन हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की सुहबत मुबारका सहाबियत के शरफ़ से सरफ़राज़ होने वाले अब्दुल मुत्तलिब बिन रबीआ रदियल्लाहु तआला अन्हु बर्सों मदीना मुनव्वरा में रहे। और यह हुज़ूर अलैहिस्सलाम के चचा हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब के पोते हैं। मगर हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इनके नाम को तब्दील नहीं फ़रमाया। हालाँकि आप की आदत करीमा थी कि हर उस नाम को जिसमें ज़रा भी क़बाहत हो आप बदल दिया करते थे। इसी तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के दौर में क़बीला अब्दुल क़ैस और क़बीला अब्दुल अशहल आम तौर पर मशहूर नाम थे। मगर हुज़ूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने इन नामों को न बदला। न इन नामों से कभी नफ़रत का इज़हार फ़रमाया। दौरे सहाबा के बाद ताबेअ़ीन के वक़्त में भी इस तरह के नाम मिलते हैं मसलन अब्दे ख़ैर। जिनकी कुन्नियत अबू अम्मारा हमदानी है। उन्होंने नबीए करीम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का ज़माना पाया है मगर चूँकि इनको

हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम की मुलाकात नसीब नहीं हुई इस लिए सहाबियत के शरफ़ से सरफ़राज़ न हो सके।

मगर जलीलुल क़द्र ताबेईन में आपका शुमार है। आप हज़रत अमीरुल मोमिनीन अली मुरतज़ा रदियल्लाहु तआला अन्हु के ख़ास सोहबत याफ़्ता हैं। और मुहद्दिसीन के नज़दीक सिक़ा और क़ाबिले इतमीनान मुहद्दिस हैं। आप कूफ़ा में रहते थे। और एक सौ बीस साल की उम्र में वफ़ात पायी।

इतने ज़मानए दराज़ तक आप मुहद्दिसीन के झुरमुट में और सहाबा किराम की ख़िदमत में हाज़िर बाश रहे मगर कभी किसी ने भी आपके नाम पर एतिराज़ नहीं किया। यह दलील है कि सहाबा किराम और ताबेईने इज़ाम के नज़दीक इस नाम में कोई ख़राबी नहीं है। दौरे ताबेईन के बाद उल्माए साबेक़ीन और सल्फ़ सॉलेहीन में भी बराबर अ़ब्दुल नबी व अ़ब्दुल रसूल नाम रखे जाते रहे। जिस पर मैंने एक मुफ़स्सल मज़मून लिखा है जो रिसाला फ़ैज़ुर्ररसूल में छप चुका है। जिसमें अ़ब्दुल रसूल व अ़ब्दुल नबी नाम वाले बड़े बड़े चन्द अकाबिर उ़ल्मा की फ़ेहरिस्त पेश की है। खुद फ़कीर राक़िमुल हुरुफ़ सफ़रे हरमैन तय्यबैन में एक महीना छब्बीस दिन मक्का मुकर्रमा और बारह दिन मदीना मुनव्वरा में हाज़िर रह कर मुहद्दिसे हरम शरीफ़ मौलाना सय्यद अ़ल्वी अब्बास मुफ़्ती मालकिया और मुदर्रिस मदरसतुल फ़लाह मौलाना मुहम्मद बिनुल अरबी उल जज़ाइरी मालिकी और हज़रत मुफ़्ती–ए– अह़नाफ़ मौलाना सअ़दुल्लाह साहब मक्की और अकाबिरे उल्मा की सोहबत और उनके दर्स में हाज़िर रहा। और उनकी मजलिसों में हल्ब व यमन और मिस्र व सूडान और अलजज़ाइर व मराकिश के पचासों उल्मा से मुलाकात की। मगर किसी ने भी मेरे नाम पर ऐतिराज नहीं किया। मक्का मुकर्रमा के मज़कूरा बाला तीनों जलीलु क़द्र उ़ल्मा ने मुझे ह़दीस की सनदों से नवाज़ा और मेरी सनदों पर अपने क़लम से मेरा नाम अब्दुल मुस्तफ़ा लिख कर अपनी मुबारक दुआओं से मुझे सरफ़राज़ फ़रमाया। इसी तरह मदीना मुनव्वरा में शैख़ुद्दलाइल मौलान सय्यद बाशली मदनी ने मुझे अपने क़लम से मेरा नाम लिख कर दलाइलुल ख़ैरात की इजाज़त अ़ता फ़रमायी। और बे हम्देहि तआ़ला किसी ने भी मेरे नाम अ़ब्दुल मुस्तफ़ा पर एतिराज़ नहीं किया। यह दलील है कि अरब व अजम में व जुज़ चन्द जाहिल वहाबी

मौलवियों के तमाम उलमाए हक़ के नज़दीक अब्दुल रसूल व अब्दुल नबी व अब्दुल मुस्तफ़ा वग़ैरह नामों से कोई क़बाहत नहीं।

बर्स की बीमारी का एक सबब

हदीस :– अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि धूप में गर्म होने वाले पानी से कभी गुस्ल मत किया करो क्योंकि बर्स (सफ़ेद दाग़) की बीमारी पैदा करता है।

तबसरा :– बर्स(सफ़ेद दाग़)यह एक ला इलाज बीमारी है अतिब्बा के नज़दीक इस मर्ज़ के बहुत से असबाब हैं जिनका तजकिरा इल्मे तिब की किताबों में मुफ़स्सल तौर पर मज़कूर है। अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने फ़रमाया कि धूप में गर्म होने वाले पानी से गुस्ल करना यह भी बर्स के मर्ज़ पैदा होने का एक सबब है। और बाद में आने वाले बाज़ तबीबों ने भी इसकी तस्दीक़ करते हुए तहरीर किया है कि धूप में गर्म होने वाले पानी को हरगिज़ हरगिज़ बदन पर नहीं डालना चाहिये। न उससे वुज़ू और गुस्ल करना चाहिये। कि इससे सफ़ेद दाग़ की बीमारी और बाज़ दूसरी बीमारियाँ भी पैदा हो जाती हैं लिहाज़ा इससे परहेज़ करना चाहिये।

ज़मानए हाल के मुलहिद क़िस्म के डाक्टर साहिबान इसको माने या न मानें लेकिन मुसलमान के लिए हज़रत उमर रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु का हकीमाना मक़ूला जो उन्होंने शिफ़ा ख़ाना नुबुव्वत से सीख कर बयान फ़रमाया है बहर हाल वाजिबुल ऐतिक़ाद व लाज़िमुल अ़मल है।

लिहाज़ा धूप में गर्म होने वाले पानी से न वुज़ू न गुस्ल करना चाहिये न उसका पीना चाहिये। गर्ज़ हर तरह उस पानी के इस्तेमाल से बचना चाहिये।

कलौंजी मौत के सिवा हर मर्ज़ की दवा है

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम से सुना है कि शोनीज़ (कलौंजी) मौत के सिवा हर मर्ज़ की दवा है।

तबसरा :– कलौंजी जिसको बाज़ जगह मुंगरीला भी कहते हैं जो प्याज़ के दानों की तरह काले रंग का एक खुशबू दार दाना होता है। और हिन्दुस्तान भर में हर जगह मिलता है और पापड़ और भुजिया वग़ैरह में अवाम इसको डाला करते हैं। इसके बारे में हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने वही के ज़रीअ़े मालूम करके ऐलान फ़रमाया है कि यह मौत के सिवा हर मर्ज़ की दवा है। लिहाज़ा मुसलमान इसको ख़ारिजी और दाख़िली तौर पर इस्तेमाल करके हर मर्ज़ से शिफ़ा हासिल कर सकते हैं। मज़बूत अक़ीदा और ईमाने कामिल शर्त है। सुबह को तीन चार माशा मर्ज़ से शिफ़ा हासिल करने की नियत से खा लेना चाहिये। इन्शाअल्लाह अ़ज़्ज़वजल ज़रुर शिफ़ा हासिल होगी।

यह फ़कीर राक़िमुल हुरुफ़ बहुत से मुहलिक व मूज़ी अमराज़ में मुबतला हुआ अगर हकीमों और डाक्टरों के इलाज के साथ साथ शिफ़ा खाना–ए– नुबुव्वत का यह इलाज भी यानी कलौंजी सुबह को खा लेना बरसहा बरस से मेरा मामूल रहा है। और अल्हम्दो लिल्लाह अ़ज़्ज़वजल इसी की बरकत है कि तक़रीबन तमाम अमराज़ से शिफ़ा पा गया। वल्लाहु तआ़ला अअ़लम।

मुसलमान और खजूर का दरख़्त

हदीस :– हज़रत इब्ने उ़मर रदियल्लाहु तआ़ला अन्हुमा ने रिवायत की है कि नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दरख़्तों में से एक ऐसा दरख़्त है कि इसके पत्ते नहीं झड़ते। और वह दरख़्त मुसलमान के मिस्ल है। तुम लोग मुझे बताओ कि वह कौन सा दरख़्त है? हज़रत इब्ने उ़मर(रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) ने कहा कि लोगों का ध्यान मैदानों के दरख़्तों में पड़ गया और मेरे दिल में यह ख़्याल वाक़ेअ़ हुआ कि वह दरख़्त खजूर का है।

लेकिन मैं अपनी कम उमरी की वजह से शर्मा गया और ख़ामोश रहा। फिर तमाम हाज़ेरीने सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम! आप हमें बता दीजिए कि वह कौन सा दरख़्त है ? तो आपने इरशाद फ़रमाया कि वह खजूर का दरख़्त है।

शरहे हदीस :– बुख़ारी शरीफ़ की एक दूसरी रिवायत में भी आया है कि " दरख़्तों में से एक दरख़्त ऐसा है कि उसकी बरकत मुसलमान की बरकत के मिस्ल है। इन दोनों रिवायतों का मा हसल और हासिले मतलब यही है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने खजूर के दरख़्त को मुसलमान के साथ तशबीह देते हुए यह इरशाद फ़रमाया कि खजूर का दरख़्त और मुसलमान इन दोनों में बहुत ज़्यादा मुशाबहत व मुनासबत है कि दोनों ही बा बरकत हैं।

मुशाबहत क्यों कर है ? :– खजूर के दरख़्त को हदीस शरीफ में जो मुसलमान के मुशाबह फ़रमाया गया है तो खजूर के दरख़्त को मुसलमान से क्या मुशाबहत है ? और किस बात में मुनासबत है? तो इस बारे में चन्द सूरतें हो सकती हैं।

1. जिस तरह खजूर का दरख़्त कि कभी इसके पत्ते नहीं झड़ते और वह बे रौनक नहीं होता इसी तरह कभी भी मुसलमान अपनी ईमानी ख़सलतो से ख़ाली होकर बे रौनक नहीं होता। बल्कि मुसलमान हमेशा अपनी ईमानी ख़साइल व इस्लामी फज़ाइल से आरास्ता रह कर खजूर के दरख़्त की तरह सदा बहार और हर ज़माने में सर सब्ज़ व शादाब रहता है।

2. जिस तरह खजूर का दरख़्त इतना बा बरकत और नफ़ा बख़्श है कि उसके हर हर जुज़ में हमेशा और लगातार मनफ़अ़तों और बरकतों का वजूद नमूदार होता रहता है कि जिस वक़्त खजूर का दरख़्त उगता है उस वक़्त से लेकर उसके सूख जाने और कट जाने के वक़्त तक उसमें मनफ़अ़तों और बरकतों का मजमूआ़ पाया जाता है। कि इसका गाभा और कच्ची पक्की गदर तर व सूखी खजूरें तरह तरह से खायी जाती हैं। इसके पत्तों से छप्परें और मकानात तामीर किये जाते हैं। इसकी लकड़ियाँ तामीरात और जलाने के काम आती हैं। इसकी गुठलियाँ जानवरों को खिलाते हैं इसकी छालों से रस्सियाँ बनाते हैं। और मसनदों तकियों और गद्दों में भरते हैं। ग़र्ज़ खजूर का दरख़्त अपनी इब्तिदा से इन्तिहा तक और पैदाइश से मौत तक बल्कि मौत के बाद तक मनफ़अ़तों और बरकतों का

खज़ाना है। कि मुसलमान के अक़वाल व अफ़आल अमल व किरदार नशिश्त व बरख़ास्त इसके मुआमलात व मअ़मूलात ग़र्ज़ मुसलमान की हर हर अदा और उसके हर हर हरकत व सुकून क़िस्म क़िस्म की मनफ़अ़तों और तरह तरह की बरकतों का ज़ुहूर होता रहता है यहाँ तक कि मुसलमान अपनी मौत के बाद भी लोगों को अपने रुहानी तसर्रुफ़ात से ख़ैरो बरकत और नफ़ा पहुँचाता रहता है।

3. जिस तरह खजूर का दरख़्त आंधियों और तूफ़ान के झोंकों की ज़द में पड़ कर भी न हिलता है न मुड़ता है न उसमें कोई लचक पैदा होती है बल्कि वह साबित क़दम रहकर सीधा खड़ा रहता है। इसी तरह सच्चा पक्का मुसलमान बे दीनी और बद मज़हबी की आंधियों और ला मज़हबियत के हज़ारों तूफ़ानों की ज़द में भी पड़ कर हमेशा अपने दीन व मज़हब पर साबित क़दम रह कर मज़बूती के साथ क़ायम रहता है न झुकता है न मुड़ता है न उसमें कोई लचक पैदा होती है न मुदाहनत और ढीले पन का मुज़ाहिरा करता है।

दो शिफ़ा देने वाली चीज़ें

हदीस :– हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊद रदियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लोग दो शिफ़ाओं को लाज़िम पकड़ो। एक शहद को और दूसरे कुरआन को।

तबसरा :– इस हदीस शरीफ़ में शहद और कुरआने मजीद को शिफ़ा देने वाली चीज़ें बल्कि इन दोनों को मुजस्सम शिफ़ा फ़रमाया गया है। इस तरह कुरआन मजीद में ख़ुदावन्दे कुद्दूस जल्ला जलालहु ने शहद के बारे में इरशाद फ़रमाया कि "फ़ीहे शिफ़ाउन लिन्नास" यानी शहद में तमाम इन्सानों के लिए शिफ़ा है। और कुरआन मजीद के बारे में ख़ुदावन्दे आलम ने यह इरशाद फ़रमाया कि " व नुनज़्ज़ेलु मिनल कुरआने मा हुवा शिफ़ाउन व रह़मतुल लिल मोअ़मिनीन" यानी कुरआन मजीद मोमिनों के लिए शिफ़ा और रह़मत है।

अलहासिल :– कुरआन व हदीस दोनों का यह फ़रमान है कि शहद और कुरआन में अमराज़ से शिफ़ा का सामान है यह और बात है कि शहद फ़क़त जिसमानी बीमारियों की दवा है और यह रोज़ाना का तजुर्बा है कि कुरआन मजीद की आयात में उन बीमारियों का इलाज है जिनका तमाम

अतिब्बा और डाक्टरों के पास कोई इलाज नहीं है। मगर कुरआन मजीद की आयतें इन सब अमराज़ का तीर बहदफ़ और बेहतरीन शाफ़ी इलाज हैं।

बड़ी बड़ी बलाओं से निजात

हदीस :– हज़रत अबू हुरैरा रदियल्लाहु तआला अन्हु कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर महीने में तीन दिन सुबह को शहद चाट ले तो उसको कोई बड़ी बला नहीं पहुँचेगी।

तबसरा :– यह हुज़ूर रहमते आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के शिफ़ा ख़ानए नुबुव्वत का तीर ब हदफ़ नुस्ख़ए शिफ़ा है जो आपको वही–ए–इलाही के ज़रीअ मिला है। लिहाज़ा इस नुस्ख़े की सदाक़त और इसके शिफ़ा बख़्श होने पर सिदक़ दिल से ईमान लाते हुए हर मुसलमान को इस पर अमल करके बड़ी बड़ी बलाओं के आज़ार से महफ़ूज़ बन जाना चाहिये। कि दर हक़ीक़त हर मर्ज़ से शिफ़ा और हर बला से निजात देने वाला खुदावन्दे आलम ही है और दवाओं और इन्सानी तदबीरों को उसी ने शिफ़ा और दफ़ाए बला का सबब बना दिया है। इस लिए यह भी बलाओं के टलने का सबब है और बलाओं का टालने वाला खुदावन्दे कुद्दूस ही है। और कितना मुख़्तसर और आसान नुस्ख़ा है कि हर छोटा बड़ा, मर्द औरत, अमीर ग़रीब सभी इसको इस्तेमाल कर सकते हैं। कि तोला भर या छः माशा शहद ख़ालिस सुबह सवेरे निहार मुँह बा वुज़ू होकर और यह नियत करके हर महीने में तीन दिन चाट लिया करे कि मुझ को कोई बला न पहुँचे। तो इन्शाअल्लाह तआला हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के इरशाद के बमोजिब बड़ी बड़ी बलाऐं और ला इलाज बीमारियाँ उसके क़रीब नहीं आयेंगी। और रोज़ाना कुरआने करीम की कुछ आयतें तिलावत करते रहें। ग़ौर फ़रमाईये के मज़कूरा बाला दोनों नुस्ख़े किस क़दर आसान हैं और इनका फ़ायदा कितना अज़ीमुश्शान है कि हर बड़ी बड़ी बलाओं से इन्शाअल्लाह तआला महफ़ूज़ रहेंगे।

पाँच गुनाह, पाँच अज़ाब

عن ابن عباس قال ما ظهر الغلول فی قوم الا القی الله فی قلوبهم الرعب. ولا فشا الزنا فی قوم الا كثر فيهم الموت. ولا نقص قوم المكيال الميزان الا قطع عنهم الرزق. ولاحكم قوم بغير حق الا فشافيهم الدم. ولا ختر قوم باالعهد الا سلط عليهم العرو.

अन इब्ने अब्बास क़ाला मा ज़हारल गुलूल फ़ी कौमिन इल्ला अलकियल्लाहु फ़ी कुलूबेहिमु र्रोअबि । वला फ़शज़्ज़िना फ़ी कौमिन कसोर फ़ीहिमल मौत। वला नक़स क़ौमिल मिकयालिल मीज़ान इल्ला क़ताउन अनहुमुर्रिज़क। वला हकमा क़ौमिन बेग़ैरिन हक़्क़े। इल्ला फशाफ़ीहिमिददम। वला ख़तरा कौमिन बिल अहद। इल्ला सलाता अलैहिमल उरवि।

तर्जुमा :– हज़रत अब्दुल्ला इब्ने अब्बास रदियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है उन्होने फ़रमाया कि जब किसी क़ौम में ख़ियानत ज़ाहिर और खुल्लम खुल्ला होने लगती है तो अल्लाह तआला उस क़ौम के दिल में उसके दुश्मनों का ख़ौफ़ और डर डाल देता है। और जब किसी कौम में ज़िनाकारी फैल जाती है तो उस क़ौम में बकसरत मौतें होने लगती हैं। और जो क़ौम नाप तौल में कमी करने लगती है तो उस कौम की रोज़ी काट दी जाती है। और जो क़ौम ना हक़ फ़ैसला करने लगती है तो उस कौम में खून रेज़ी फैल जाती है। और जो कौम अहद शिकनी और बद अहदी करने लगती है उस क़ौम पर उसके दुश्मन को ग़ालिब व मुसल्लत कर दिया जाता है।

शरहे हदीस :– जिस तरह दवाओं और गिज़ाओं में खुदावन्द कुद्दूस ने किस्म किस्म की तासीरात पैदा फरमायी हैं कि जहर मार डालता है तिरयाक ज़हर के असरात को ज़ाइल कर देता है बाज़ गिज़ाऐं सेहत को बरबाद करती है और बाज़ गिज़ाऐं तन्दरुस्ती को बढ़ाती हैं। इसी तरह इन्सान के अकवाल व अफ़आल में भी कुदरत ने किस्म किस्म की तासीरात रख दी हैं। मसलन आप की गाली दुनिया भर के इन्सानों को आपका दुश्मन बना देती है और आपकी दुआ दुनिया भर को आपका दोस्त

बना देती है। इसी तरह अगर आप किसी को मुक्का दिखायें तो वह आप पर ग़ज़बनाक हो जाता है और अगर आप किसी के आगे हाथ जोड़े हो तो वह आप पर रहम दिल हो जाता है।

इसी तरह समझ लीजिए कि इन्सान के हर क़ौल व अमल में कुदरत ने क़िस्म क़िस्म की तासीरें और तरह तरह के असरात पैदा फरमाये हैं। नेक आमाल और अच्छे अच्छे अक़वाल की तासीरात व असरात भी अच्छे हुआ करते हैं और बुरे आमाल पर बुरे अक़वाल की तासीरात व असरात भी बुरे हुआ करते हैं। हुजूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने इस हदीस में पाँच बुरे आमाल व उनकी बुरी तासीरों को बयान फरमाया है।

1. ख़ियानत की तासीर यह है कि जो क़ौम अमानत में ख़ियानत करने लगेगी। तो वह क़ौम अपने दुश्मनों से ख़ाइफ़,डरपोक और बुज़दिल हो जायेगी।

2. और जो क़ौम ज़िनाकारी की लानत में गिरफ़्तार हो जायेगी। तो उस क़ौम पर तरह तरह की बलाऐं बीमारियाँ और वबाऐं आयेंगी। और बकसरत लोग मरने लगेंगे। बाज़ बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जहाँ ज़िना वहाँ फना।

3. और जो क़ौम नाप तौल में कमी करने लगेगी तो उसका यह असर होगा कि उनकी रोज़ियों की बरकत कट जायेगी। वह उम्र भर रोज़ी कमाने के लिए दर बदर की ठोकरें खाते फिरेंगे। और हज़ारों लाखों कमाऐंगे भी मगर उनके दिल को चैन और रुह को सुकून और दौलत से क़रार नहीं हासिल होगा। और कुछ पता नहीं चलेगा कि दौलत कहाँ से आयी? और किधर चली गयी?

4. और जो काम नाहक़ फैसला करने की ख़ूगर हो जायेगी तो उस गुनाह का यह असर होगा कि उस क़ौल में क़त्ल व ख़ून रेज़ी की बला फैल जायेगी। और रोजाना रात दिन हर तरफ़ क़त्ल ही होते रहेंगे।

5. इसी तरह जो क़ौम अहद शिकनी और बद अहदी की राह पर चल पडेगी। उस कौम की इज्जत व इकबाल और उसकी सल्तनत के जाह व जलाल का ख़ात्मा हो जायेगा। और उस कौम पर उसके दुश्मनों का ग़लबा व इक़तिदार हो जायेगा।

चूँकि उन गुनाहों की यही तासीरात हैं और कोई चीज़ भी अपना ख़लक़ी असर दिखाऐ बग़ैर नहीं रह सकती। लिहाज़ा गुनाहों के वही

असरात होगें जो ऊपर बयान किये गये। आग पर उँगली रखकर लाख चिल्लाऐ मगर उँगली ज़रुर जल जायेगी। क्योंकि आग की तासीर ही जला देना है।

वाज़ेह रहे कि उन गुनाहों का यह अज़ाब सिर्फ़ दुनियावी अज़ाब है जो इस हदीस में बयान किया गया है। बाकी आख़िरत का अज़ाब उसके अलावा है और अज़ाबे जहन्नम है।

नबी का इल्म मा काना वमा यकून

عن عمر وبن اخطب الانصاری قال ﷺ بنا رسول الله ﷺ یومان الفجر وصعد علی المنبر فخطبنا حتی حضرت الظهر فنزل فصلی ثم صعدا المنبر فخطبنا حتی حضرت العصر ثم نزل فصلیٰ ثم صعدا المنبر حتی غربت الشمس فاخبرنا بما هو کائن الی یوم القیمة قال فاعلمنا احفظنا. (مشکوٰة، ص ۵۴۳)

अ़न अ़म्र बिन अख़्तबिल अन्सारी क़ाला स़ल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम बिना रसूलल्लाह स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम यौमानिल फजरे व सअिद अलल मिम्बरि फ़खतबना ह़त्ता ह़ज़रते ज़ोहर फ़नज़ला फसल्ला सुम्मा सअ़िदन मिम्बर फ़खतबना ह़त्ता ह़ज़रतिल असरे सुम्मा नज़ला फ़सल्ला सुम्म सइदल अल मिम्बर ह़त्ता गरबितिश शम्सु फअ़खबरना बिमा हुव काइनुन इला यौमिल क़ियामति क़ाला फआ़लम्ना अहफ़ज़ना।

तर्जुमा :– हज़रत अ़म्र बिन अख़्तब अन्स़ारी रद़ियल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है उन्होंने कहा कि एक दिन हम लोगों को रसुलल्लाह स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम ने फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई और मिम्बर पर चढ़ गये और ज़ोहर की नमाज़ तक ख़ुतबा पढ़ते रहे। फिर उतरे और नमाज़ पढ़कर फिर मिम्बर पर चढ़ गये और ख़ुतबा देते रहे। यहाँ तक कि अ़स्र की नमाज़ का वक़्त आ गया। फिर उतरे और नमाज़ पढ़ी। फिर मिम्बर पर चढ़ गये। और सूरज डूबने तक ख़ुतबा पढ़ते रहे। (उस दिन भर के ख़ुत्बे में) हम लोगो को हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने तमाम उन चीज़ों और बातों की ख़बर दे दी जो क़ियामत तक होने वाली हैं। तो हम सहाबा में सब से बडा आलिम वही है जिसने सबसे ज़्यादा उस ख़ुत्बे को याद रखा।

हज़रत अ़म्र बिन अख़त़ब :– इस हदीस के रावी हज़रत अ़म्र बिन अख़त़ब रद़ियल्लाहु तआ़ला अन्हु है। यह अन्सारी हैं और इनकी कुन्नियत अबू ज़ैद है। और मुह़द्दिसीन के नज़दीक इनकी कुन्नियत इनके नाम से ज़्यादा मशहूर है।

यह हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के साथ बहुत से ग़ज़वात में शरीके जिहाद रहे। हुज़ुर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक मरतबा मुहब्बत और प्यार से उनके सर पर हाथ फेर दिया और उनकी ख़ूबसूरती के लिए दुआ फ़रमायी जिसका यह असर हुआ कि उनकी सौ बरस की उम्र हो गयी थी मगर सर और दाढ़ी के चन्द बाल ही सफेद हुए थे। और आख़िरी उम्र तक चेहरे का हुस्न व जमाल बाक़ी रहा।

शरहे हदीस् :– 1. यह हदीस मुस्लिम शरीफ़ में भी है। इस हदीस का ख़ुलासा यह है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम नमाज़े फज्र से गुरुब आफ़ताब तक बजुज़ जोहर व अस्र पढने के, बराबर दिन भर ख़ुत्बे में ही मशगूल रहे। और सामेईन सुनते रहे। और उस ख़ुत्बे में हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने क़ियामत तक के होने वाले तमाम वाकिआत तमाम चीज़ों और तमाम बातों की सामेईन को ख़बर दे दी। सहाबा किराम में से जिस क़दर ज़्यादा इस ख़ुतबे को याद रखा। उतना ही बड़ा वह आलिम शुमार किया जाता है।

2. यह हदीस हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम के मोजिज़ात में से है कि क़ियामत तक के करोड़ों वाकिआत को हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने सिर्फ़ दिन भर के ख़ुतबे में बयान फरमा दिया। सही हदीसों से साबित है कि हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम को ख़ुदावन्द आलम ने यह मोअ्जिज़ा अता फ़रमाया था कि आप घोड़े पर ज़ीन कसने को हुक्म देते थे। और साइस घोडे की ज़ीन बाँधकर दुरुस्त करता था। इतनी देर में आप एक ख़त्म 'ज़बूर शरीफ़'' की तिलावत कर लेते थे। तो हुज़ूर नबी आख़िरुज़्ज़मा सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम मोअ्जिज़ात के जामेअ् हैं। अगर दिन भर में कियामत तक कि तमाम अहवाल व वाकिआत को बयान फरमा दें तो उसमें कौन सा तअज्जुब का मुकाम है ?

इस हदीस से मुन्दरजा ज़ैल मसाइल पर रौशनी पड़ती है।

1. हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम को ख़ुदावन्द आलम ने जिस तरह बहुत से मोजिज़ाना कमालात से नवाज़ा और तमाम अम्बिया और रसूलों में आप को मुमताज़ फ़रमाकर 'सय्यदुल अम्बिया और अफ़ज़लुल रसूल बनाया। इस तरह इल्मी कमालात का भी आपको वह कमाल बख़्शा

कि" मा काना वमा यकून" यानी रोज़े अज़ल से क़ियामत तक के तमाम उलूम का ख़ज़ाना आपके सीना नुबुव्वत में भर दिया। चुनाँचे इस मज़मून की बहुत सी आयात व अहादीस हमने अपनी किताब "कुरआनी तक़रीरें" में तहरीर कर दी हैं। यहाँ भी दो हदीसों का तरजुमा पढ़ लीजिए। मिशकात शरीफ़ की हदीस यह है –

हुज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैंने अपने रब अज़्ज़वजल को बेहतरीन सूरत में देखा तो उसने मुझ से फरमाया कि ऊपर वाली जमाअत किस चीज़ में बहस कर रही है ? तो मैंने अर्ज़ किया कि या अल्लाह ! तू ही इसको ज़्यादा जानने वाला है। फिर ख़ुदा वन्द आलम ने अपनी (कुदरत) की हथेली को मेरे दोनों शानों के दरमियान रख दिया तो मैंने उसकी ठन्डक को अपनी दोनों छातियों के दरमियान में पाया और जो कुछ आसमान व ज़मीन में है सब को मैने जान लिया है।

2. अल्लाह अज़्ज़वजल ने मेरे लिए दुनिया को उठा कर इस तरह मेरे सामने पेश फरमा दिया कि मैं तमाम दुनिया को और उसमें कियामत तक जो कुछ भी होने वाला है उन सब को इस तरह देख रहा हूँ जिस तरह मैं अपने हाथ की हथेली को देख रहा हूँ।

3. जिस तरह हूज़ूर स़ल्लल्लाहु तआला अ़लैहि वसल्लम " अफ़ज़लुल खल्क़" हैं उसी तरह आप स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम " अअ़लमुल ख़ल्क़" भी हैं। कि तमाम जिन व इन्सान और मलाइका के उलूम से बढ़कर आप का इल्म है। यहाँ तक कि हज़रत अल्लामा बूसीरी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपने कसीदा बुरदा शरीफ़ में फरमाया कि :–

ولو نا ديت حيالا استجابا　　　ولكن لا حياة لمن تنادى

فلو نارا نفخت بها اضاء ت　　　ولكن انت تنفخ فى الرماد

यानी रसूलुल्लाह स़ल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम दुनिया और उसकी सोकन यानी आख़िरत यह दोनों आपकी सख़ावत के समरात में से हैं। और लौह व क़लम का इल्म आपके उ़लूम का एक जुज़ है। वल्लाहु तआला अअ़लम।

पैग़म्बरी दुआयें

हदीस :– ख़ुदावन्दे कुद्दूस से दुआऐं माँगने की बड़ी फ़ज़ीलत और बेहद अहमियत है क्योंकि बन्दों का अपने रब्बे करीम के हुज़ूर गिड़गिड़ाकर अपनी हाजतों को अर्ज़ करना और अपनी आजिज़ी और ख़ुदावन्दे करीम की क़ुदरत व रबूबियत का इक़रार करते हुए उसकी रहमतों का उम्मीदवार होना यह बहुत बड़ी इबादत है। चुनाँचे हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में इरशाद फ़रमाया कि "अद्दुआओ हुवल इबादति" यानी दुआ इबादत है। और दूसरी हदीस में फ़रमाया" अद्दुआओ मुख़्ख़ुल इबादति" यानी दुआ तो इबादत का मग़्ज़ है। और एक हदीस में इरशाद फ़रमाया कि " लैसा शैउन अकरमा अलल लाहि मिनद दुआ" यानी कोई चीज़ अल्लाह तआला के नज़दीक दुआ से ज़्यादा इज़्ज़त वाली नहीं है। और हुज़ूर सय्यदे आलम सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम का यह भी इरशाद है कि " सलुल्लाह मिन फ़द्लिहि फ़ इन्नल्लाह युहिब्बु अयं युसअल" यानी तुम लोग अल्लाह अज़्ज़वजल से उसके फ़ज़्ल का सवाल करते रहो। क्योंकि अल्लाह तआला को यह पसन्द है कि उसके बन्दे उससे दुआ माँगते रहें।

और यह भी हदीस शरीफ़ में है कि " जो लोग अल्लाह तआला से नहीं माँगता अल्लाह तआला उससे नाराज़ हो जाता है।

दुआ माँगने वाले को कभी हरगिज़ नाराज़ नहीं होना चाहिये क्योंकि यह भी हदीस शरीफ़ में आया है कि बन्दों की दुआऐं तीन सूरतों में से एक सूरत में ज़रुर मकबूल होती हैं।

1. या तो उसकी माँगी हुई मुराद को ख़ुदावन्दे तआला दुनिया ही में बहुत जल्द अता फ़रमा देता है।

2. या उसकी दुआ को आख़िरत में उसके लिए नेकी का ज़रिआ बना देता है।

3. या उसपर आने वाली किसी मुसीबत का दफ़ा फ़रमा देता है।

अलग़रज़ फ़राइज़ व नवाफ़िल के बाद ज़िक्रे इलाही के बाद वअ़ज व मीलाद शरीफ के बाद किसी कारे ख़ैर के बाद मुबारक दिनों में, बरकत वाली रातों में,दिन रात की मक़बूल साअ़तों में हर दम और हर हाल में बन्दों को हुज़ूरे क़ल्ब और पूरी उम्मीद वारी के साथ अपनी दुआओं में अपनी हाजतों

का बारगाहे बे नियाज़ में निहायत आजिज़ी के साथ गिड़गिड़ाकर पेश करते रहना यह हुक्मे खुदावन्दी सुन्नते पैगम्बरी और बेहतरीन इबादत है। और दुआ का छोड़ देना सवाबे अज़ीम से महरुमी बहुत बड़ी बदनसीबी और बदतरीन शक़ावत व शरारत है।

यूँ तो दुआ जिस ज़बान मे भी और जिन लफ्ज़ों के साथ भी माँगें और बहर हाल और बहर सूरत वह बेहतरीन इबादत और बारगाहे खुदावन्दी में लायके मकबूलियत है मगर ख़ास कर वह दुआऐं जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम ने अपनी ज़बाने मुबारक से रब्बुल आलमीन जल्ला जलालुहू के दरबार में पेश फ़रमायी हैं। उन दुआओं के अल्फ़ाज़ की अहमियत उनकी ख़ैरो बरकत उनकी नूरानियत और मकबूलियत का क्या कहना। सुब्हानल्लाह! सुब्हानल्लाह! इसलिए हम मुनासिब समझते हैं कि इस जगह चन्द पैगम्बरी दुआऐं तहरीर करदें ताकि बिरादराने इसलाम इनका विर्द करके फ़ैज़ याब हों और मुझ गुनाहगार के लिए भी यह जरिआ मग़फ़िरत बनें।

गुनाहों की मुआफ़ी :– जो शख़्स दिन भर में एक सौ मरतबा यह दुआ पढ़ ले तो उसके सब गुनाह माफ़ हो जायेंगें अगरचे उसके गुनाह समुन्दर के झाग के बराबर हों। दुआ यह है।

"सुब्हानल्लाहि व बिहम्दिहि। سبحان الله وبحمده۔

2. जो शख़्स यह दुआ पढ़ता रहेगा उसके गुनाह इस तरह झड़ जायेंगे जैसे पतझड़ के ज़माने में दरख़्तों के पत्ते झड़ते हैं।

" अल्हमदो लिल्लाहि व सुब्हानल्लाहि वला इलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहु अकबर " الحمد لله وسبحان الله ولا اله الا الله والله اكبر۔

3. जो शख़्स यह दुआ पढ़ता रहेगा उसके तमाम गुनाह माफ़ हो जायेंगे। अगरचे उसने जिहाद से भागने का गुनाह किया हो।

"अस्तग़फ़िरुल्लाहल लज़ी ला इलाहा इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम।
استغفر الله الذی لا اله الاھو الحی القیوم۔

अदाए क़र्ज़ :–

1. जो इस दुआ को माँगे अल्लाह तआला उसके क़र्ज़ की अदाएगी का सामान कर देगा। सुबह शाम जिस क़दर भी हो सके इस दुआ

को पढ़ता रहे। दुआ यह है :–

اللهم انی اعوذبك من الهم والحزن واعوذبك من العجز والكسل واعوذبك من البخل

والجبن و اعوذبك من غلبة الدين و قهر الرجال۔

2. या इस दुआ को पढ़े तो अगरचे पहाड़ के बराबर उस पर कर्ज़ होगा अल्लाह तआ़ला उसके तमाम क़र्ज़ को अदा करा देगा। दुआ यह है :–

اللهم اكفنى بحلالك عن حرامك و اغنى بفضلك عمن سواك۔

अल्लाहुम्मा किफ़नी बिह़लालिका अ़न ह़रामिका व अग़निय बेफ़दलिका अ़म्मन सिवाका।

मज़कूरा बाला दोनों दुआ़ओं की हदीस मे कोई तादाद मुअ़य्यन नहीं है इस लिए जिस क़दर हो सके इन दुआ़ओं को बकसरत पढ़ता रहे।

बेचैनी दफ़ा हो :–

जब आदमी की किसी आफ़त या मुसीबत से बेचैनी बढ़ जाए तो इन दुआ़ओं में से किसी दुआ़ का पढ़ना शुरु करदे। इन दुआ़ओं की ह़दीस में कोई तादाद मुअ़य्यन नहीं है। जिस क़दर हो सके ज़्यादा से ज़्यादा पढ़े।

اللهم رحمتك ارجوا فلاتكلنى الى نفسى طرفة عين و اصلح لى شافى كله لا اله الا انت۔

अ़ल्लाहुम्मा रह़मतेका अरजू फ़ला तकिलनी इला नफ़सी तरफ़ता ऐनिन व अस्लेहे ली शाफ़ी कुल्लहु ला इलाहा इल्ला अन्ता।

لا اله الا الله العظیم الحکیم لا اله الا الله رب العرش العظیم لا اله الا الله

رب السموات والارض ورب العرش الكريم۔

2. ला इलाहा इल्लल्लाहुल अज़ीमुल ह़कीमु ला इलाहा इल्लल्लाहु रब्बुल अरशिल अ़ज़ीमि ला इलाहा इल्लल्लाहु रब्बुस समावाते वल अर्दे व रब्बुल अरशिल करीम।

मुसीबत दूर हो :–

जब भी किसी मुसीबत में मुब्तला हो तो इस दुआ को दिल लगाकर बकसरत पढ़ा करे। इन्शाअल्लाह तआ़ला मुसीबत बहुत जल्द दूर हो जायेगी। इस दुआ के पढ़ने की कोई तादाद मुक़र्रर नहीं है। जितना ज़्यादा हो सके पढ़े।

يا حی يا قيوم برحمتك استغيث۔

या हय्यो या क़य्यूमो बे रहमतिका अस्तग़ीसु।

मरीज़ की शिफ़ा के लिए :–

जब किसी मरीज़ की इयादत के लिए जाए तो सात मरतबा इस दुआ को पढ़ कर फूँक मारे। अगर मरीज़ की मौत न आ गई होगी तो इन्शाअल्लाह तआला उसको शिफ़ा हो जायेगी। दुआ यह है :–

اسئال الله العظيم العرش العظيم ان يشفيك۔

असआलुल्ला हल अज़ीमल अरशिल अज़ीमि अन यशफ़ीका।

अपने बदन में कोई दर्द या ज़ख़्म या मर्ज़ हो तो तीन मरतबा बिस्मिल्लाह पढ़कर और तकलीफ़ की जगह पर अपना हाथ रखकर सात मरतबा यह दुआ पढ़े। اعوذبعزة الله قدرته من شر ما اجد وما احاذر۔

अऊज़ो बि इज़्ज़तिल्लाहि क़ुदरतेहि मिन शर्रे मा अजेदु वमा उहाज़िर।

हर आफ़त व बला से महफ़ूज़ :–

अगर रोज़ाना तीन मरतबा सुबह को और तीन मरतबा शाम को यह दुआ पढ़ ले तो वह दिन रात में आने वाली बलाओं और आफ़तों से अमान में रहेगा। दुआ यह है।

بسم الله الذى لا يضر مع اسمه شئى فى الارض ولا فى السماء وهو السميع العليم۔

बिस्मिल्लाहिल लज़ी ला युदिर्रो मअ़ इस्मिहि शैउन फ़िल अर्दे वला फ़िस्समाए व हुवस्समीउल अलीम।

दुश्मन के ख़ौफ़ से अमान:–

जब किसी दुश्मन का ख़ौफ़ महसूस करे तो इस दुआ को बकसरत पढ़े। इन्शाअल्लाह तआला दुश्मन उसको कोई नुक़सान नहीं पहुँचा सकेगा।

اللهم انا نجعلك فى نحورهم و نعوذبك من شرورهم۔

अल्लाहुम्मा इन्ना/नजअ़लोका फ़ी नुहूरेहिम व नऊज़ोबिका मिन शुरुरेहिम।

बीमार को देखकर क्या पढ़े :–

अगर किसी बीमार या मुसीबत ज़दा को देखकर यह दुआ पढ़ ले तो उस बीमारी और मुसीबत से महफ़ूज़ रहेगा। दुआ यह है

الحمد لله الذى عافانى ممن ابتلاك به و فضلنى على كثير ممن خلق تفضيلا۔

अल्हमदो लिल्लाहिल लज़ी आफ़ानी मिम्मबतलाका बिही व फ़द्दल नी अ़ला कसीरिन मिम्मन ख़लाका तफ़दीला।

नींद में डरने की दुआ :–

जो शख़्स सोने में डर जाता हो या चौंकता हो तो यह दुआ पढ़ लिया करे। इन्शाअल्लाह तआला उसको कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा। दुआ यह है।

اعوذ بکلمات اللہ التامات من غضبہ و عقابہ وشر عبادہ و من ھمذات الشیاطین و ان یحضرون۔

अऊज़ो बे कलिमातिल्लाहित ताम्मति मिन गदबिहि व अक़ाबिहि व मिन हमज़ातिश शयातीन व अयं यहदरुन।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रदियल्लाहु तआला अन्हु अपनी बालिग़ औलाद को यह दुआ ज़बानी याद करा देते थे। और नाबालिग़ बच्चों को एक कागज़ पर तहरीर करके गले मे पहना देते थे।

जादू असर न करे :–

अगर कोई यह दुआ पढ़ता रहे तो उसपर जादू का कोई असर न होगा। दुआ यह है।

اعوذ بوجہ اللہ الذی لیس شئی اعظم منہ و بکلمات اللہ التامات التی لا یجاوز ھن بر و لا

فاجر و باسماء اللہ الحسنی ماعلمت وما لم اعلم من شر ما خلق و ذرأ و برأ۔

अऊज़ो बेबजहिल्लाहिल लज़ी लैसा शैउन आज़म मिन्हु व बेकलिमातिल्लाहित ताम्मतिल लती ला युजाविज़ुहुन्ना बरौं वला फ़ाजिरन वबे असमाइल्लाहिल हुस्ना मा अलिमतु व मालम अअ्लम मिन शर्रे मा ख़लका ज़रअ व बरअ।

निन्यानवे बीमारियों की दवा :–

जो "लाहौला वला कुव्वता इल्ला बिल्लाहि" لا حول ولا قوۃ الا باللہ۔ पढ़ता रहेगा वह निन्यानवे बीमारियों से निजात पायेगा। जिसमें से सब से छोटी बीमारी फ़िक्र व ग़म है। इस वज़ीफ़े की कोई तादाद मुक़र्रर नहीं है। जिस क़दर हो सके ज़्यादा पढ़े।

दुआए सफ़र :–

जब सफ़र के लिए मकान से निकले तो तीन मरतबा अल्लाहु अकबर कहे। फिर सवारी पर बैठ कर यह दुआ पढ़े।

سبحان الذی سخرلنا ھذا وما کنا لہ مقرنین و انا الی ربنالمنقلبون۔ اللھم انا نسئلك فی سفرنا ھذا البر والتقوی و من العمل ما ترضی اللھم ھون علینا سفرنا ھذا واطولنا بعدہ اللھم انت الصاحب فی السفر و الخلیفۃ فی الاھل اللھم انی اعوذبك من و عثاء السفر و کآبۃ المنظر و سوء المنقلب فی المال والاھل۔

सुब्हानल लज़ी सख़्ख़र लना हाज़ा वमा कुन्ना लहु मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिन लमुनक़लेबून। अल्लाहुम्मा इन्ना नस्अलुका फ़ी सफ़रिना हाज़ल बिर्र वत्तक़वा व मिनल अ़मलि मा तरदा। अल्लाहुम्मा हव्विन अ़लैना सफ़रना हाज़ा व अतवलना बुअदाहु अल्लाहुम्मा अनतस साहिबु फ़िस्सफ़रे वल ख़लीफ़तु फ़िल अहले अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ो बिका मिऊं व अ़साइस सफ़रे व काबतिल मुन्ज़रे व सूइल मुनक़लिबे फ़िल माले व अहले।

मन्ज़िल पर उतरने की दुआ़ :–

जब मुसाफिर किसी मन्ज़िल पर ठहरे तो यह दुआ पढ़ ले इन्शाअल्लाह तआ़ला उस मन्ज़िल पर उसको कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा। दुआ यह है।

اعوذ بکلمات الله التامات من شر ما خلق۔

अऊ़जो बे कलिमातिल्लाहित ताम्माते मिन शर्रे मा ख़लक़।

दूल्हा दुल्हन के लिए दुआ :–

जब दूल्हा दुल्हन को मुबारक बाद दी जाए तो यह दुआ पढ़े।

بارك الله لك و بارك عليكما و جمع بينكما فی خير۔

बारकल्लाहु लका व बारक अलैकुमा व जमाअ़ बैनाकुमा फ़ी ख़ैर।

औलाद शैतान ने महफूज़ हो :–

जो अपनी बीवी से सोहबत करते वक़्त यह दुआ़ पढ़ ले तो उस सोहबत से जो औलाद पैदा होगी शैतान उसको कोई ज़रर नहीं पहुँचा सकेगा। दुआ़ यह है।

بسم الله اللهم جنبنا و جنب الشيطان ما رزقتنا۔

बिरिमल्लाहि अल्लाहुम्मा जन्निबना व जन्निबिश शैतान मा रज़क़तना।

सोते वक़्त की दुआ़ :–

जब सोने लगे तो इन दुआओ में से कोई भी पढ़ कर सो जाए।

اللهم باسمك اموت واحيٰ۔

अल्लाहुम्मा बेइस्मिका अमूतो व अहया।

اللهم قنی عذابك يوم تجمع عبادك۔

अल्लाहुम्मा क़िनी अज़ाबका यौमा तजमओ इबादका।

जब जागे तो क्या पढ़े :–

जब नींद से बेदार हो ता यह दुआ पढ़े।

الحمد لله الذی احیانا بعد ما اماتنا و الیه النشور۔

अल्हम्दो लिल्लाहिल लज़ी अहयाना बअ़्दा मा अमातना व इलैहिन नुशूर।

बिस्तर पर लेटते वक़्त की दुआ:–

यह दुआ पढ़कर बिस्तर पर लेटे और सो जाए अगर उस रात में उसकी मौत आगई तो ख़ातिमा बिल ख़ैर होगा और अगर ज़िन्दा रहा तो ख़ैर में रहेगा दुआ यह है।

اللهم اسلمت نفسی الیك و وجهت وجهی الیك و فوضت امری الیك و الجأت ظهری الیك رغبة و رهبة الیك لا ملجا و لا منجا منك الا الیك امنت بکتابك الذی انزلت و نبیك الذی ارسلت۔

अल्लाहुम्मा असलमतो नफ़सी इलैका वज्जहतो वजही इलैका व फव्वद़तो अमरी इलैका वल जातु ज़हरी इलैका रग़बतन व रहबतु इलैका ला मलजा वला मनजा मिन्का इल्ला इलैका आमनतु बिकिताबिकल लज़ी अन्ज़लता नबीय्येकल लज़ी अरसल्ता।

और एक मरतबा आयतल कुर्सी भी पढ़ ले। तो फ़रिश्ते के पहरे में शैत़ान और चोर से महफ़ूज़ रहेगा।

बाज़ार में जाने की दुआ :–

जब बाज़ार में दाख़िल हो तो यह दुआ पढ़ ले घाटे और नुक़्सान से बचेगा।

بسم الله اللهم انی اسئلك خیر هذه السوق و خیر ما فیها و اعوذبك من شرها و شر ما فیها اللهم انی اعوذبك ان اصیب صفقة خاسرة۔

बिस्मिल्लाहि अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोका ख़ैरा हाज़ेहिस्सूक़ व ख़ैरा मा फ़ीहा व अऊज़ो बिका मिन शर्रे हा व शर्रे मा फ़ीहा अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ोबिका अन उ़सीबा सफ़क़त ख़ासिरतन।

जानवर ख़रीदे तो यह दुआ पढ़े :–

जब कोई जानवर ख़रीदे तो उसकी पेशानी पर हाथ रख कर यह दुआ पढ़ लें ख़ैरो बरकत होगी और नुक़सान से बचा रहेगा। दुआ यह है।

اللهم انی اسئلك خیرها و خیرما جبلتها علیه و اعوذبك من شرها و شر ما جبلتها علیه۔

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोका ख़ैरहा व ख़ैरा मा जबल तहा अ़लैहि व अऊज़ोबिका मिन शर्रे हा व शर्रे मा जबलतहा अ़लैहि।

कुफ़्फ़ार के लश्कर के सामने यह पढ़े :–

जब कुफ़्फ़ार का लश्कर मुसलमान पर हमला आवर हो तो यह दुआ पढ़ें। इन्शा अल्लाह तआला कुफ़्फ़ार का लश्कर शिकस्त खाकर भाग जायेगा। दुआ यह है। اللهم استر عورتنا و امن روعاتنا۔

अल्लाहुम्मास्तुरु औरतिना व आमिन रौअतिना।

रुख़सत करने की दुआ :–

जब किसी को रुखसत करे तो यह दुआ पढ़े।

انستودع الله دينكم و اما ناتكم وخواتيم اعمالكم۔

अनसतौदिउल्लाह दीनकुम व अमानातिकुम व ख़्वातीमा अअ्मालिकुम

घर में दाख़िल होने की दुआ :–

जब कोई शख़्स अपने मकान में दाख़िल हो तो यह दुआ पढ़े।

اللهم اسئلك خير المولج و خير المخرج بسم الله ولجنا على الله و ربنا توكلنا۔

अल्लाहुम्मा अस्अलोका ख़ैरलमौलिजे व ख़ैरल मख़रजे बिस्मिल्लाहि व लुजना व अललल्लाहि रब्बिना तवक्कलना।

क्या पढ़कर घर में दाख़िल हो :–

जब घर में से निकले तो यह दुआ पढ़ ले।

بسم الله توكلت على الله اللهم انا نعوذبك من ان نزل او نضل او نظلم او نجهل او يجهل علينا۔

बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल लाहि अल्लाहुम्मा इन्ना नऊज़ोबिका मिन अन नज़िल्ला औ नदिल्ला औ नज़्लिमा औ नजहल औ यजहल अलैना। या यह मुख़्तसर दुआ पढ़ ले।

बिस्मिल्लाहि तवक्कलतु अलल्लाहि ला हौला वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

कुफ़्फ़ार से लड़ते हुए पढ़े :–

जब कुफ़्फ़ार से जंग करने लगे तो यह दुआ पढ़े।

اللهم انت عضدى ونصيرى بك احول وبك اصول وبك اقاتل۔

अल्लाहुम्मा अन्त उददी व नसीरी बिका अहवलु व बिका असूलू व बिका उक़ातिल।

हुजूरे अकरम सललल्लाहु तआला अलैहि वसल्लम जंग के दौरान इस दुआ का विर्द फ़रमाते थे।

नया चाँद देख कर पढ़े :–

اللهم اهله علينا بالامن و الايمان والسلامة والاسلام ربى و ربك الله۔

अल्लाहुम्मा अहिल्लाहु अलैना बिल अमने वल ईमाने वस्सलामते वलइस्लाम रब्बी व रब्बुकल्लाह।

मजसिल से उठते वक़्त यह पढ़े:–

जब किसी मजलिस से उठे तो यह दुआ पढ़ ले।

سبحانك اللهم و بحمدك اشهد ان لا اله الا انت استغفرك و اتوب اليك۔

सुब्हाना कल्लाहुम्मा व बेहम्दिका अश्हदो अन ला इलाहा इल्ला अन्ता अस्तग़फ़िरुका व अतूबो इलैका।

उस मजलिस में जितने लग़वियात बोले होंगे सब माफ़ जो जायेंगे।

बे ख़्वाबी की दुआ :–

जिस किसी को नींद न आती हो इस दुआ को पढ़े। इन्शाअल्लाह तआला बे ख़्वाबी दूर हो जायेगी।

اللهم رب السموات السبع وما اظلت و رب الارضين وما اقلت و رب الشياطين وما اضلت كن لی جارا من شر خلقك كلهم جميعا ان يفرط علی احدمنهم ان يبغی عذ جارك و جل ثناء ك ولا اله غيرك لا اله الا انت۔

अल्लाहुम्मा रब्बस समावातिस सबअ़े वमा अज़ल्लत व रब्बल अरदीना वमा अक़ल्लत व रब्बश शयातीने व मा अदल्लतु कन ली जारन मिन शर्रे ख़लक़िका कुल्लेहिम जमीअ़ अयं युफ़रुता अलैय्या अहदिन मिनहुम अयं यबग़ा अज़्ज़ा जारुका। व जल्ला सनाउका वला इलाहा ग़ैरुका ला इलाहा इल्ला अन्ता।

फ़िक्र फ़ाक़ा दूर हो :–

मुफ़लिसी व ज़िल्लत दूर करने के लिए बकसरत पढ़ता रहे। दुआ यह है।

اللهم انی اعوذبك من الفقر و القلة و الذلة و اعوذبك من ان اظلم او اظلم۔

अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ोबिका मिनल फ़क़रे वल क़िल्लते वज़्ज़िलते व अऊज़ोबिका मिन अन अज़्लिम औ उज़लम।

मालदारी व नेकी के लिए :–

इस दुआ को बकसरत पढ़े। मालदारी व नेकी की तौफ़ीक़ इन्शाअल्लाह तआला बढ़ती जायेगी। दुआ यह है। اللهم انی اسئلك الهدی والتقی والعفاف والغنی۔

अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुकलहुदा वन्तुका वल अफ़ाफ़ा वल ग़िना।

शबे बराअ्त की दुआऐं

माहे शाबान की पन्द्रहवीं रात का नाम शबे बराअ्त यानी निजात वाली रात है। कुरआन मजीद में खुदावन्दे कुद्दूस ने इस मुबारक रात का ज़िक्र इस तरह फ़रमाया कि :–

"इस रात में हमारे हुक्म से हर हिकमत वाला काम तक़सीम कर दिया जाता है" (कुरआन, सूरह दख़ान)

यानी शबे बराअ्त में बन्दों की रोज़ियाँ उनकी अमवात व पैदाइश, लड़ाईयाँ ज़लज़ले, हादसात,गर्ज़ साल भर में होने वाले तमाम वाक़िआत के अह़काम अलग अलग तक़सीम कर दिये जाते हैं और हर काम के फ़रिश्तों को उनका काम सौंप दिया जाता है। जिसकी वह साल भर तक तअ्मील करते रहते हैं।

शबे बराअ्त में हुजूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम के अअ्माल :–

1. हज़रत आयशा रदि़यल्लाहु तआ़ला अ़न्हा फ़रमाती हैं कि मैंने देखा कि हुजूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम बक़ीउल ग़रक़द (क़ब्रिस्तान मदीना मुनव्वरा) में तशरीफ़ ले गये। और मुसलमान मर्दों औ़रतों और शहीदों के लिए दुआ़ फ़रमायी।

2. फिर क़ब्रिस्तान से वापस होकर नमाज़ में मशगूल हो गये और सजदे में बड़ी देर तक आप अपने परवरदिगार से चुपके चुपके यह दुआ़ करते रहे।

اعوذ برضاك من سخطك و اعوذ بعفوك من عقابك و اعوذبك منك لا احصى ثناء

عليك انت كما اثنيت على نفسك اقول كما قال اخى داؤد اعفر وجهى فى التراب لسيدى و

حق له ان يسجد۔

(ऐ अल्लाह अज़्ज़वल) पनाह माँगता हूँ मैं तेरी रज़ा के साथ तेरे ग़ज़ब से और पनाह माँगता हूँ मैं तेरी माफ़ी के साथ तेरे अ़ज़ाब और तुझसे तेरी ही पनाह माँगता हूँ। मैं तेरी कमा हक़्क़हु तारीफ़ की ताक़त नहीं रखता हूँ। तेरी ज़ात वैसी ही है जैसी खुद तूने अपनी तारीफ़ की है मैं वही कहता हूँ जो मेरे भाई दाऊद(अ़लैहिस्सलाम) ने कहा। मैं ख़ाक आलूदा करता हूँ अपने चेहरे को अपने मौला के लिए और वह इसी लायक़ है कि उसको सजदा किया जाय।

फिर हुजूर अलैहिस्सलातु वस्सलाम ने सजदे से सर उठाकर देर तक यह दुआ की। اللهم ارزقنی قلبا تقیا من الشرك نقیا لا فاجر و لا شقیا۔

अल्लाहुम्मर जुक़नी क़ल्बन तकिय्यन मिनश शिरके नक़िय्यन ला फ़ाजिरन वला शक़िय्यन।

ऐ अल्लाह अज़्ज़वजल! मुझको परहेज़गार दिल अता कर जो शिर्क से पाक व साफ़ हो। जो न बदकार हो न बदनसीब।

औलिए किराम के मअ्मूलात :–

शबे बरअ्त में बाद नमाज़े मग़रिब छः रकअ्तें नमाज़ नफ़ल पढ़ें और हर दो रकअ्त पर सलाम फेरें। और हर दो रकअ्त के बाद सूरह यासीन एक मरतबा या कुल हुवल्लाहु इक्कीस मरतबा पढ़ें। पहली बार सूरह यासीन दराज़िए उम्र के लिए पढ़ें। दूसरी बार रिज़्क़ की तरक्क़ी के लिए। और तीसरी बार दफ़–ए–बला के लिए फिर दुआ निस्फ़ शाबान पढ़ें।

दुआ–ए–निस्फ़ शाबान

بسم الله الرحمن الرحيم

اللهم یا ذالمن ولا یمن علیه یا ذالجلال والاکرام یا ذالطول والانعام لا اله الا انت ظهر الا جین۔ وجار المستجیرین۔ وامان الخائفین۔ اللهم ان کتبتی عندك فی ام الکتاب شقیا او محروما او مطرودا او مقترا فی الرزق۔ فامح اللهم بفضلك شقاوتی و حرمانی وطردی واقتار رزقی واثبتنی عندك فی ام الکتاب سعیدا مرزوقا موفقا للخیرات۔ فانك قلت و قولك الحق۔ فی کتابك المنزل۔ علی لسان نبیك المرسل یمحوا الله ما یشاء ویثبت۔ و عنده ام الکتاب۔ الهی بالتجلی الاعظم۔ فی لیلة النصف من شهر شعبان المکرم۔ التی یفرق فیها کل امر حکیم و یبرم ان تکشف عنا من البلاء والبلواء ما نعلم۔ وما لا نعلم وما انت به اعلم۔ انك انت الاعز الاکرم۔ و صلی الله تعالیٰ علی سیدنا محمد و علی اله و صحبه وسلم۔ والحمد لله رب العلمین۔

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम

अल्लाहुम्मा याज़ल मन्ने वला युमन्नो अलैहि या ज़ुल जलालि वलइकरामे या ज़त्तौले वल इन्आमे ला इलाहा इल्ला अन्ता जहरल लाजीन। व जारल मुस्तजीरीन। व अमानल ख़ाएफ़ीन। अल्लाहुम्मा इन कतबतनी इन्दका फ़ी उम्मुल किताबे शकिय्यन औ महरुमन औ मतरुदन औ मुकतरन फ़िर्रिज़्के। फ़महुल्लाहुम्मा बि फ़दलिका शकावती व हिरमानी व तरदी व इक़तितारा रिज़्क़ी व असबितनी इन्दका फ़ी उम्मिल किताबे सईदन मरज़ूक़न

मुवफ़्फ़क़न लिल ख़ैराते। फ़इन्नका क़ुलता व क़ौलुकल हक्क़ु। फ़ी किताबिकल मुन्ज़लि। अ़ला लिसाने नबिय्यकल मुरसले यमहुल्लाहु मा यशाओ व युस्बितो। व इन्दहु उम्मुल किताबे। इलाही बित्तजलीयिल अअ्ज़मे फ़ि लैयलतिन निस्फ़े मिन शहरे शअ्बानिल मुकर्रमे। अ़ल्लती युफ़रक़ु फ़ीहा कुल्लु अमरिन हकीमिन व युबरमु अन तकशिफ़ा अन्ना मिनल बलाए वल बल्वाए मा नअ्लमु वमा ला नअ़लमु अन्ता बिही अअ्लमु। इन्नके अन्तल अअज़्ज़ुल अकरमु। व सललल्लाहु तआ़ला अला सय्येदिना मुहम्मदिन व अला आलेहि व सहबिहि वसल्लिम। वल्हम्दो लिल्लाहि रब्बिल आलमीन।

दुआ–ए–निस्फ़ शाबान का तर्जमा

ऐ मेरे अल्लाह अज़्ज़वजल! तू ही सब पर एहसान करने वाला है और तुझ पर कोई एहसान नहीं कर सकता। ऐ बुज़ुर्गी और मेहरबानी रखने वाले और ऐ बख़्शिश व इन्आम वाले! तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तू ही गिरतों का थामने वाला है बे पनाहों का पनाह देने वाला। और डरने वालों का सहारा है। ऐ अल्लाह अ़ज़्ज़वजल! अगर तूने मुझे अपने पास उम्मुल किताब मे भटका हुआ,या महरुम,या कम नसीब, लिख दिया है तो ऐ अल्लाह अज़्ज़वजल! अपने फ़ज़्ल से मेरी ख़्वारी बदबख़्ती,रान्दगी और रोज़ी की कमी को मिटा दे। और अपने पास मुझे उम्मुल किताब में खुश नसीब वसीउर रिज़्क़ और नेक करदे। बेशक तेरा यह फ़रमाना तेरी किताब में जो तेरे नबी सल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम मुरसल पर नाज़िल की गई सच है कि अल्लाह तआला जो चाहता है मिटाता है और जो चाहता है साबित रखता है और उसी के पास उम्मुल किताब है। ऐ मेरे खुदा तजल्ली–ए– आज़म का सदक़ा इस शाबाने मुकर्रम की रात में जिस में हर हिकमत वाले कामों की तक़सीम और उनका निफ़ाज़ होता है मेरी बलाओं को दूर फ़रमा दे। ख़्वाह मैं उनको जानता हूँ या न जानता हूँ। और जिनसे तू वाकिफ़ है। बेशक तू ही सबसे बरतर और बढ़ कर एहसान करने वाला है। अल्लाह अ़ज़्ज़वजल की रहमत और सलामती हो हमारे आक़ा हज़रत मुहम्मद सलल्लल्लाहु तआ़ला अलैहि वसल्लम पर और उनकी आल और उनके असहाब पर। आमीन सुम्मा आमीन।

2. यह दुआ शबे बराअ़त में जितनी मरतबा पढ़ सकें पढ़ें।

اللهم انی اسئلك العفو والعافية والمعافاة الدائمة فی الدنيا والآخرة۔

अल्लाहुम्मा इन्नी असअलोकल अफ़वा वल आफ़ियता वल मुआफात–ददाइमता फ़िद दुनिया वल आख़िरता।

ए अल्लाह अज़्ज़वजल! मैं तुझ से दरगुज़र और आफ़ियत और हमेशा माफ़ी की दुनिया व आख़िरत में दुआ करता हूँ।

बाद हम्दे ख़ुदा व नाते रसूल
अर्ज़ करता है यह ज़लूम व जहूल
ऐ मिरे किर्दगार मेरे ख़ुदा
तुझपे ज़ाहिर है मुद्दआ मेरा
मैं तिरा एक बन्दए लाचार
दर पे हाज़िर हूँ तेरे गफ़्फ़ार
रहम कर मुझ पर ऐ रहीमो करीम
आम है सब पर तेरा लुत्फ़े अमीम
मैं हदीसों के फूल लाया हूँ
नज़रे बहरे कबूल लाया हूँ
बस यही है मिरी मुरादे दिली
फूल हो जाए मिरी दिल की कली
मेरी नज़रें कबूल हो जाये
मुझसे राज़ी रसूल हो जाये

वसल्लल्लाहु तआला अला ख़ैरे ख़लकिही मुहम्मदिन व आलेहि व सहबिहि अजमईन।

अब्दुल मुस्तफ़ा आज़मी

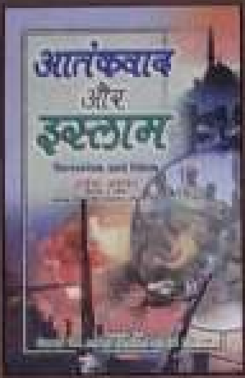
ख़ादिमुल हदीस, दारुल उलूम फैज़ुर्रसूल बराऊँ शरीफ जिला बस्ती।

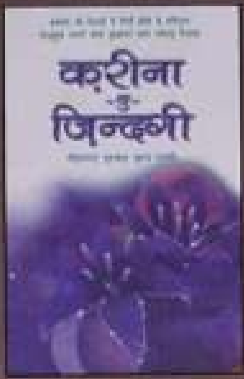
27 रमज़ान 1403 हिजरी, घोसी जिला आज़म गढ।

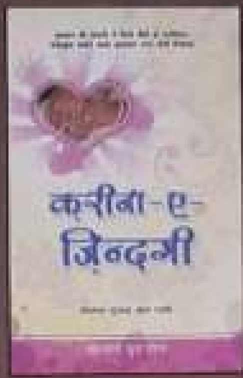
हिन्दी तर्जमा :–

मुहम्मद अमीनुल क़ादरी बरेलवी

जमादिल आख़िर 1430 हिजरी, जून 2009



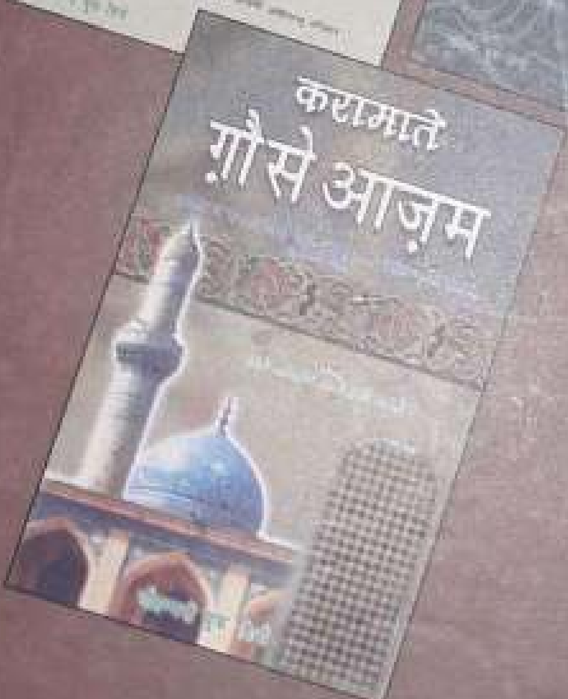












MOHAMMADI BOOK DEPOT
523, Waheed Kutub Market, Matia Mahal, Jama Masjid
Delhi-110006, Mob.: 9868937291, 9868649605

Rs. 90/-

Design by Mdi graphics
Md. Hashim
09868649605

ISBN 81-89437-80-1
9788189437800